अभिमत

सैंकड़ों सालों से छत्तीसगढ़ के किसानों ने धान की खेती की कई पद्धतियां विकसित की हैं। उनका पारंपरिक ज्ञान इसमें काफी है। बियासी पद्धति, जिसमें छिड़काव कर धान की खेती की जाती है, और जब बारिश होती है तो पौधे जब कुछ बड़े हो जाते हैं, तो खेत में हल चला दिया जाता है, जिससे खरपतवार नीचे दब जाती है, और जो पौधे दूर-दूर होते हैं, उन्हें पास रोपा दिया जाता है। इससे जमीन भी हवादार व पोली हो जाती है, जिससे पौधे की बढ़वार अच्छी होती है। इससे उत्पादन भी अच्छा होता है।

जलवायु बदलाव के दौर में डा. रिछारिया की याद

नवाचार

■ बाबा मायाराम

> **कृषि वैज्ञानिक आर.एच. रिछारिया ने अविभाजित मध्यप्रदेश (जिसमें छत्तीसगढ़ भी शामिल था) से धान की 17 हजार से ज्यादा देसी किसानों को एकत्र किया था जिसमें अधिक उत्पादकता देने वाली, सुगंधित व अन्य तरह से स्वादिष्टकिस्में शामिल थीं। डा. रिछारिया चावल की किस्मों के विशेषज्ञ थे। वे मानते थे देसी किस्मों को ही देश में धान की खेती की प्रगति का आधार बनाना चाहिए। उन्होंने पता लगाया था कि धान की किस्मों की विविधता का बहुत अमूल्य भंडार है।**

छत्तीसगढ़ में इन दिनों किसान बारिश न होने के कारण चिंतित हैं। कुछ किसानों ने छिड़काव कर धान की खेती की है, कई रोपा पद्धति से धान रोपाई के लिए बारिश का इंतजार कर रहे हैं। ऐसे समय में देसी बीजों की हल-बैल की खेती याद कर रहे हैं। मुझे याद आ रहे हैं विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. आर.एच. रिछारिया, जिनकी मान्यता थी कि धान की खेती का विकास स्थानीय प्रजातियों के आधार पर ही होना चाहिए। क्योंकि उनमें काफी विविधता है, और वे मौसम बदलाव का भी मुकाबला कर सकती हैं। आज इस कॉलम में इस पर ही चर्चा करना उचित होगा।

छत्तीसगढ़, देश में विशिष्ट विविधता वाला प्रदेश है। यहां भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के साथ पारिस्थितिकीय विविधता भी काफी है। यहां सबसे बड़ी आबादी आदिवासियों की है। छत्तीसगढ़ के मध्य में महानदी बहती है और यही इलाका धान की खेती के लिए प्रसिद्ध माना जाता है। आज धान के देसी बीजों की जगह उच्च उपज देने वाली किस्मों ने ले ली है। जबकि एक जमाने में देसी धान की खेती होती थी।

यहां खाद्यों और अनाजों की भी काफी विविधता थी। अलग-अलग खेती की पद्धतियां थीं। फसलें, दालें, तिलहन, फल, फूल, हरी पत्तीदार सब्जियां, कंद-मूल, मशरूम आदि भी होती थीं। यहां के आदिवासियों का जीवन मुख्य तौर पर जंगल पर आधारित रहा है। पारंपरिक रूप से छत्तीसगढ़ को धान के कटोरे के रूप में जाना जाता है। यहां इलाका धान की अद्भुत विविधता है। इनमें कई तरह के विशिष्ट सुगंधित, औषधीय व गुणधर्म वाले देसी धान शामिल हैं।

यहां कम अवधि की धान किस्मों के साथ लंबी अवधि की धान है, तो कम पानी में होने वाली धान के साथ गहरे पानी में होने वाले धान भी शामिल है। छोटे चावल से लेकर लंबे, महीन और विभिन्न आकारों वाले चावल होते हैं। लाल, सफेद, काले, और कई रंगों व गुणवत्ता वाले चावल शामिल हैं।

मुझे डा. आर.एच.रिछारिया से एक बार रायपुर में मिलने का मौका था, जब वे स्वतंत्र रूप से धान की जैविक खेती को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे थे। डा. रिछारिया ने किसानों और आदिवासियों के साथ धान की देसी प्रजातियों पर काम किया था। उन्हें न केवल संग्रहीत किया था, बल्कि उनके गुणधर्मों व उत्पादन संबंधी अध्ययन किया था। उन्होंने किसानों के परंपरागत ज्ञान को काफी सराहा था।

धान की खेती की एक बुनियादी विशेषता यह है कि यह लगभग पूरे भारत में बहुत अलग-अलग परिस्थितियों में उगाया जाता है। एक ही गांव और कई बार तो एक ही किसान अलग-अलग खेत में अलग-अलग प्रजाति का धान उगाया जाता है। प्रत्येक किस्म अलग-अलग परिस्थितियों के लिए, अलग-अलग गुणों के साथ उपयुक्त होती है। ये प्रजातियां वहां की मिट्टी, पानी, हवा के अनुकूल होती हैं।

सैंकड़ों सालों से छत्तीसगढ़ के किसानों ने धान की खेती की कई पद्धतियां विकसित की हैं। उनका पारंपरिक ज्ञान इसमें काफी है। बियासी पद्धति, जिसमें छिड़काव कर धान की खेती की जाती है, और जब बारिश होती है तो पौधे जब कुछ बड़े हो जाते हैं, तो खेत में हल चला दिया जाता है, जिससे खरपतवार नीचे दब जाती है, और जो पौधे दूर-दूर होते हैं, उन्हें पास रोपा दिया जाता है। इससे जमीन भी हवादार व पोली हो जाती है, जिससे पौधे की बढ़वार अच्छी होती है। इससे उत्पादन भी अच्छा होता है।

इसी तरह उतेरा पद्धति है, जिसमें धान की यानी बारिश की नमी में रबी फसल ली जाती है। उतेरा खेती में एक फसल कटने से पहले दूसरी फसल को बोया जाता है। यानी दूसरी फसलों की बुआई पहली फसल कटने के पहले ही कर दी जाती है। फसल के ठंडलों से खेत में जैव खाद बन जाती है। इस तरह की खेती छत्तीसगढ़ के कई गांव में की जाती है, हालांकि इसमें भी कमी आ रही है।

उतेरा पद्धति में धान की फसल जब खड़ी रहती है, जब उसमें फूल आने लगते हैं, फसल में 50 प्रतिशत फूल आ जाते हैं, तब उसमें दूसरी फसलें बोई जाती हैं। यह समय अक्टूबर आखिर में या नवंबर के पहले हफ्ते का होता है। यानी बारिश की नमी में धान की फसल के बीच तिवड़ा (खेसारी दाल),बटरी, अलसी, उड़द, सरसों व चना के बीज छिड़क दिए जाते हैं। इसमें सावधानी रखनी होती है कि खेत का पानी सूख जाए तभी बीजों का छिड़काव किया जाता है। इन फसलों को अलग-अलग नमी के हिसाब से छिड़कते हैं, या बोते हैं, एक साथ नहीं। क्योंकि हर बीज को अंकुरण होने के लिए अलग-अलग नमी चाहिए होती है, इसका किसानों को अनुमान है।

इसमें धान कटाई बहुत ही सावधानी से की जाती है, जिससे दूसरी फसलों को नुकसान न पहुंचे। खेत में धान के डंठलों के बीच से तिवड़ा उग जाता है, जिसके पौधे को ठंडलों से मदद भी मिलती है। मार्च के आसपास यह फसलें तैयार हो जाती हैं और फिर काट ली जाती हैं। यानी बारिश की नमी में ही दूसरी फसलें भी पक जाती हैं। यह छत्तीसगढ़ के किसानों का परंपरागत जाना माना तरीका है। जिसमें बारिश की नमी का सही उपयोग होता है और दो फसलें भी मिल जाती हैं।

इसी प्रकार, यहां किसान खेतों की मेड़ों पर भी अरहर, तिली, मूंग, अमाड़ी , भिंडी, बरबटी, झुनगा (बरबटी की तरह), चुटचुटिया(ग्वारफली) आदि लगाते हैं। यानी खेत में धान, उतेरा में तिवड़ा, अलसी, बटरी, सरसों, उड़द, चना आदि लगाते हैं और मेड़ पर भी अरहर, तिली, हरी सब्जियां लगाते हैं।

कुल मिलाकर, एक खेत में धान यानी चावल, दलहन व तिलहन सब कुछ हो जाता है। छत्तीसगढ़ की खान-पान की संस्कृति, तीज-त्यौहार व खेती से जुड़े हैं। यहां का प्रमुख भोजन चावल है, यानी भात, दाल और सब्जियां। सब कुछ किसान खेतों में उगा लेते हैं। अतिरिक्त फसलें होने से आर्थिक लाभ भी होता है। भोजन में भी पोषण मिलता है। यह मिश्रित फसलों का परंपरागत तरीका है।

पशुपालन भी इससे जुड़ा है। धान का पैरा (ठंडल) मवेशियों को चराने के काम आता है। बैल खेतों में जुताई करते थे। यह सब एक दूसरे से जुड़ा है। फसलों की कटाई हाथ से हंसिए से की जाती है। ठंडल बहुत छोटे होते हैं और उन्हें जलाने की जरूरत नहीं पड़ती। और जो गाय-बैल का गोबर होता है, उसे खेतों में डालते हैं जिससे मिट्टी उपजाऊ बनती है। यह मवेशियों व मनुष्य में आपसी समझौता होता है। पशुओं को खेतों से चारा मिलेगा और वे खेतों को गोबर खाद देंगे।

परंपरागत खेती में आत्मनिर्भरता होती है। किसानों का खुद का देसी बीज, गोबर खाद और खुद हाथ की मेहनत होती है। और इसमें पीढ़ियों के पारंपरिक ज्ञान का उपयोग होता है। यह स्वावलंबी होती है। जबकि रासायनिक आधुनिक खेती में बीज, खाद और कीटनाशक सभी कुछ बाजार से खरीदा जाता है। इसमें किसान की लागत बढ़ती है, किसान परावलंबी होता है।

लेकिन पिछले कुछ समय से परंपरागत खेती में कमी आई है। अब बैलों की जगह ट्रेक्टर से जुताई व फसलों की कटाई हारवेस्टर से होने लगी है। इसमें ठंडल बड़े होते हैं और इसे दूसरी फसल बोने के लिए किसान ठंडलों को जलाते हैं। इससे प्रदूषण होगा और गरमी की धान की फसल बोने से भूजल में कमी आएगी।

जबकि उतेरा जैसी पद्धतियां उपयोगी हैं। इससे किसानों को धान के साथ दलहन, तिलहन और अतिरिक्त उपज मिल जाती है। बारिश की नमी का उपयोग भी हो जाता है। दलहन व फली वाली फसलों से खेतों को नत्रजन भी मिलती है। भोजन के लिए चावल, दाल और सब्जियां मिल जाती हैं, जो छत्तीसगढ़ की खान-पान की संस्कृति भी है। यह खेती मिट्टी पानी के संरक्षण वाली है, जैव-विविधता व पर्यावरण का संरक्षण भी इससे होता है। और इसमें फसलों के ठंडल व पुआल जलाने की जरूरत नहीं पड़ती।

छत्तीसगढ़ के किसान खेती के लिए ज़मीन का स्वास्थ्य भी सुधारना भी जानते हैं। जिस प्रकार मनुष्य को भोजन में सभी प्रकार के पोषक तत्व चाहिए होते हैं, उसी प्रकार मिट्टी को भी उपजाऊ बनाने के लिए पोषक तत्व चाहिए। रासायनिक खेती के कारण ज़मीन की उर्वरा शक्ति कमजोर होती जा रही है और उर्वर बनाने वाले सूक्ष्म जीवाणु खत्म होते जा रहे हैं। रासायनिक खाद के इस्तेमाल से ज़मीन सख्त होती जा रही है। भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिए मिश्रित फ़सलों को खेतों में बोया जाता है। यह परंपरागत जाना माना तरीका है।

हरी खाद को बनाने के लिए ढनढनी, सन, सोल, चरौरा को भी बोकर फिर मिट्टी में सड़ा दिया जाता है, जिससे ज़मीन उत्तरोत्तर उर्वर बनती जाती है। उन्होंने बताया कि इस भाटा कमजोर ज़मीन को हरी खाद से ही उर्वर बनाया है। यह तकनीक किसान बहुत अच्छी तरह जानते हैं।

यहां बताना उचित होगा कि महान कृषि वैज्ञानिक आर.एच. रिछारिया ने अविभाजित मध्यप्रदेश (जिसमें छत्तीसगढ़ भी शामिल था) से धान की 17 हजार से ज्यादा देसी किसानों को एकत्र किया था जिसमें अधिक उत्पादकता देने वाली, सुगंधित व अन्य तरह से स्वादिष्ट किस्में शामिल थीं। डा. रिछारिया चावल की किस्मों के विशेषज्ञ थे। वे मानते थे देसी किस्मों को ही देश में धान की खेती की प्रगति का आधार बनाना चाहिए। उन्होंने पता लगाया था कि धान की किस्मों की विविधता का बहुत अमूल्य भंडार है। धान की विविधता जरूरी है क्योंकि विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल किस्मों को चुनकर उगाया जा सके। उनकी यह सोच आज जलवायु बदलाव के दौर में बहुत ही उपयोगी और विकेन्द्रित है। इससे बदलते मौसम के अनुकूल मिट्टी-पानी के हिसाब से खेती में देसी किस्मों का चुनाव कर खेती की जा सकती है। किसान मौसम के अनुकूल खेती पद्धति में भी बदलाव कर सकते हैं। जैव विविधता के साथ पर्यावरण का भी संरक्षण होगा। लेकिन क्या हम इस दिशा में बढ़ने को तैयार हैं?

बीता सप्ताह

20 जुलाई

- माइक्रो सॉफ्ट सरवर में खराबी आ जाने से दुनिया भर में कई सेवाएं प्रभावित हुई।
- छत्तीसगढ़ के प्रख्यात रंगकर्मी और उद्घोषक रहे मिर्जा मसूद का निधन हो गया।
- चीन ने शाक्सी प्रांत में प्राइयुआन सेटेलाइट लॉच सेंटर से एक नए पृथ्वी अवलोकन उपग्रह का प्रक्षेपण किया।
- बांग्लादेश में आरक्षण बंद करने को लेकर हुए हिंसा में 17 लोगों की मौत हो गई।

21 जुलाई

- सुल्तान इब्राहीम, सुल्तान इस्कंदर को औपचारिक रूप से मलेशिया के नए राजा के रूप में ताजपोशी की गई।
- अखिल भारतीय फुटबाल महासंघ ने आईएसएल टीम एफसी गोवा के स्पेनिश मनोलो मार्केज को भारतीय सीनियर पुरुष टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया।
- संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष मनोज सोनी ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।
- सुप्रीम के आदेश पर नेशनलल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने दोबारा यूजी मेडीकल में प्रवेश परीक्षा का रिजल्ट जारी किया।

22 जुलाई

- अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने राष्ट्रपति चुनाव नहीं लड़ने का ऐलान किया।
- चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग कर इतिहास बनाने और भारत का परचम लहराने वाले चंद्रयान -3 को विश्व अंतरिक्ष सम्मान से नवाजा जायेगा।
- इंग्लैंड के पूर्व कप्तान जो रूट इतिहास में 8वें सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी बन गए।
- केरल के मलप्पुरम जिले में एक 14 वर्षीय लड़के की निपाह वायरस से मौत हो गई।

23 जुलाई

- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में आर्थिक सर्वेक्षण पेश किया।
- सुप्रीम कोर्ट ने उ.प्र. सरकार के फैसले को रोका कहा कि कांवड़ मार्ग की दुकानों पर नाम लिखना जरूरी नहीं।
- अर्जेंटीना में इस साल डेंगू के करीब 5 लाख मामले दर्ज किए गए।
- भारतीय हाकी टीम के अनुभवी गोलकीपर पीआर श्री राजेश ने संन्यास का किया ऐलान।

24 जुलाई

- वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन ने लोकसभा में 7वीं बार बजट पेश किया।
- नीट पेपर लीक मामले में सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि नीट परीक्षा दोबारा नहीं होगी।
- म्यांमार के प्रधानमंत्री एवं राष्ट्री प्रशासन परिषद के अध्यक्ष मिन आंग हाइंग को अस्थायी रूप से राष्ट्रपति की जिम्मेदारी दी गई।
- टेनिस खिलाड़ी एंडी मरे ने कहा है कि वह 2024 पेरिस ओलंपिक के बाद सन्यास लेंगे।

25 जुलाई

- नेपाल में त्रिभुवन हवाई अड्डे पर एक विमान दुर्घटनाग्रस्त होने से 18 लोगों की मौत हो गई।
- जम्मू कश्मीर के कूपवाड़ा में गोलीबारी से एक जवान शहीद हो गया।
- ब्रिटेन के नए विदेश मंत्री डेविड लैमी अपनी यात्रा पर भारत पहुंचे।
- चीन के चांग ई-5 मिशन ने चंद्रमा पर खोजा पानी।

26 जुलाई

- छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने वार्डों के परिसीमन पर रोक लगाई।
- पेरिस ओलंपिक का उद्घाटन समारोह आज हुआ। भारत के शरत कमल, पीवी सिंधू बने ध्वजवाहक।
- सुप्रीम कोर्ट ने एक सुनवाई में अहम फैसला दिया कि खदानों पर कर लगाना राज्यों का अधिकार है।
- डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में हर घंटे डूबने से होती है 24 मौतें।

क्या हो जाएगी योगी की विदाई ?

उत्तर प्रदेश की राजनीति इस समय एक नाजुक मोड़ पर खड़ी है। गुजरात लॉबी और योगी आदित्यनाथ के बीच का सीधा संघर्ष जारी है। पिछले एक महीने से योगी आदित्यनाथ को हटाने के कयास लगाए जा रहे हैं। बहुत सारे प्रमाण मौजूद हैं जिससे जाहिर होता है कि उत्तर प्रदेश में नेतृत्व परिवर्तन अवश्यम्भावी है।

दरअसल, योगी आदित्यनाथ का हटना उसी दिन तय हो गया था, जब लोकसभा चुनाव के बीचों बीच नरेंद्र मोदी को यह कहना पड़ा था कि योगी आदित्यनाथ उनके मुख्यमंत्री हैं। नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने जब जिस मुख्यमंत्री को चाहा, हटा दिया। गुजरात में पहले दो-दो मुख्यमंत्री बदले गए, फिर पूरी कैबिनेट को ही बदल दिया गया। इसी तरह उत्तराखंड में भी दो मुख्यमंत्री बदले गए। हरियाणा में मनोहर लाल खट्टर को हटाकर नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बना दिया गया। लेकिन कहीं विरोध की कोई आवाज नहीं सुनाई पड़ी। इतना ही नहीं, मध्य प्रदेश में भारी बहुमत से चुनाव जिताने वाले शिवराज सिंह चौहान भी विद्रोह करने की हिम्मत नहीं जुटा सके। उनकी जगह पर मोहन यादव को मुख्यमंत्री बना दिया गया। शिवराज सिंह चौहान इतना भर कह पाए कि वे बीजेपी के एक समर्पित कार्यकर्ता हैं। उन्हें जो भी जिम्मेदारी मिलेगी, वे उसका पालन करेंगे। राजस्थान भारतीय जनता पार्टी की बेहद कद्दावर लीडर वसुंधरा राजे सिंधिया को भी एक झटके में मुख्यमंत्री की दौड़ से बाहर कर दिया गया। दिल्ली से भेजी गई पर्ची में लिखे हुए नाम को उन्हें खुद पढ़ना पड़ा। भजन लाल शर्मा का नाम पढ़कर वह खुद हतप्रभ थीं, कि उनकी जगह पर एक अनजाने से, पहली बार के विधायक को मुख्यमंत्री बनाया जा रहा है और उसके नाम का ऐलान खुद उनसे करवाया जा रहा है। तथापि उनमें बगावत करने की हिम्मत नहीं हुई। ऐसे में यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि क्या योगी आदित्यनाथ को इसी तरह हटाने की हिम्मत गुजरात लॉबी में नहीं है? नरेंद्र मोदी और अमित शाह का संगठन पर पूरा कब्जा है। पार्टी की कमान उनके हाथों में है। कॉरपोरेट लॉबी उनके पास है। नरेंद्र मोदी और अमित शाह को चुनौती देने वाला कोई नहीं है। बावजूद इसके योगी आदित्यनाथ को हटाने की हिम्मत अभी गुजरात लॉबी नहीं कर पा रही है। हालांकि नरेंद्र मोदी अगर आज चाहें तो वे योगी आदित्यनाथ को हटा सकते हैं और योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। लेकिन योगी आदित्यनाथ की अपनी यूएसपी है। वे हिंदुत्व का फायर ब्रांड चेहरा हैं। योगी आदित्यनाथ के सामने मोदी और शाह को खतरा यह है कि आगे चलकर वे भाजपा के हिंदुत्व के असली दावेदार के रूप में अपने आप को पेश कर सकते हैं।

प्रो. रविकांत

> **योगी आदित्यनाथ हिंदुत्व का कट्टर चेहरा हैं। वे सोशल इंजीनियरिंग करना नहीं जानते। शायद उनकी फितरत भी ऐसी नहीं है। जाहिर है कि भारत की सामाजिक व्यवस्था में सोशल इंजीनियरिंग या सामाजिक न्याय की राजनीति के बगैर अब सत्ता हासिल करना असंभव है। कोरोना काल में नरेंद्र मोदी ने एक जुमला दिया था- आपदा में अवसर। उत्तर प्रदेश में भाजपा की हार नरेंद्र मोदी के लिए आपदा में अवसर बन गयी है।**

गौरतलब है कि इस समय आरएसएस दो धड़ों नें बंटा हुआ है। इसी दरमियान मोहन भागवत ने भी नरेंद्र मोदी के नॉन बायोलॉजिकल वाले बयान पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रहार किया है। अब यह बहुत आसानी से समझा जा सकता है कि मोहन भागवत और नरेंद्र मोदी के बीच दूरियां हैं। आरएसएस का मोहन भागवत वाला धड़ा गुजरात लॉबी का विकल्प चाहता है। असल में यह गुट, नरेंद्र मोदी और अमित शाह की बीजेपी पर पकड़ को ढीली करना चाहता है। जाहिर तौर पर मोहन भागवत योगी आदित्यनाथ के साथ अप्रत्यक्ष रूप से खड़े हो सकते हैं। इसलिए नरेंद्र मोदी और अमित शाह योगी आदित्यनाथ को इतना कमजोर कर देना चाहते हैं, ताकि हटाने के बाद योगी कोई चुनौती ना बन सकें।

योगी आदित्यनाथ हिंदुत्व का कट्टर चेहरा हैं। वे सोशल इंजीनियरिंग करना नहीं जानते। शायद उनकी फितरत भी ऐसी नहीं है। जाहिर है कि भारत की सामाजिक व्यवस्था में सोशल इंजीनियरिंग या सामाजिक न्याय की राजनीति के बगैर अब सत्ता हासिल करना असंभव है। कोरोना काल में नरेंद्र मोदी ने एक जुमला दिया था- आपदा में अवसर। उत्तर प्रदेश में भाजपा की हार नरेंद्र मोदी के लिए आपदा में अवसर बन गयी है। यूपी में केवल तैंतीस सीटों पर भारतीय जनता पार्टी सिमट गई। फिर भी नरेंद्र मोदी सरकार बनाने में कामयाब रहे। लेकिन यह एनडीए की सरकार है। उत्तर प्रदेश बीजेपी के राम मंदिर आंदोलन का केंद्र है। एक तरह से हिंदुत्व का सबसे बड़ा गढ़ यूपी है। बीजेपी की हिंदुत्व राजनीति का सबसे ऊर्जस्वित और आक्रामक नारा जय श्रीराम रहा है। लेकिन नरेंद्र मोदी ने 4 जून के बाद जय श्रीराम का नारा लगाना बंद कर दिया। क्या उत्तर प्रदेश में केवल पराजय के कारण नरेंद्र मोदी ने ऐसा किया है? अथवा इसमें भी कोई राजनीतिक खेल छिपा हुआ है। उत्तर प्रदेश में बीजेपी की हार को विपक्ष हिंदुत्व की पराजय के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। खासतौर पर अयोध्या की हार ने हिंदुत्व पर बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं। दरअसल, नरेंद्र मोदी भी आरएसएस के सामने यूपी की हार को इसी रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं। अलबत्ता, नरेंद्र मोदी ने कारपोरेट मीडिया, आईटी सेल और पार्टी पर मजबूत पकड़ के कारण अपने ब्रांड को बहुत कमजोर नहीं होने दिया। भाजपा के 240 के आंकड़े को नरेंद्र मोदी केवल ब्रांड मोदी की परफॉर्मेंस के रूप में दिखाना चाहते हैं। उनका मकसद यह दिखाना है कि बहुमत नहीं मिलने के पीछे हिंदुत्व की असफलता है। इस तीर से नरेंद्र मोदी सीधे तौर पर योगी आदित्यनाथ का शिकार करना चाहते हैं। मोदी का मकसद यह बताना है कि योगी के हिंदुत्व के सहारे भारतीय जनता पार्टी कभी सत्ता में नहीं पहुंच सकती। इतना ही नहीं योगी आदित्यनाथ को केवल एक जाति के नेता के तौर पर टैग करने की भी कोशिश चल रही है। विपक्ष का आरोप रहा है कि योगी आदित्यनाथ ठाकुरवादी हैं। गुजरात लॉबी भी विपक्ष के इस आरोप को पुख्ता करना चाहती है। सरकारी नियुक्तियों से लेकर डीएम, एसपी और थानेदारों की तैनातियां; इस आरोप को मजबूत करती हैं। अगड़ी जातियों को छोड़कर अन्य जातियों पर हिंदुत्व का प्रभाव नगण्य है। अनुमान के तौर पर यह कहा जा सकता है कि हिंदुत्व के आधार पर भारतीय जनता पार्टी को 15 से 20 फ़ीसदी वोट मिल सकता है। योगी आदित्यनाथ को ब्राह्मण विरोधी भी स्थापित करने का खेल चल रहा है। इसीलिए केशव प्रसाद मौर्य के साथ बृजेश पाठक भी प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी के साथ होने वाली गुप्त मीटिंग में शामिल थे।

4 जून के नतीजों के बाद लम्बे समय तक उत्तर प्रदेश में बीजेपी की हार पर खामोशी बनी रही। लेकिन जब नरेंद्र मोदी एनडीए की सरकार बनाने में कामयाब हो गए तो उसके बाद उत्तर प्रदेश के नेताओं द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से योगी आदित्यनाथ को हार के लिए जिम्मेदार ठहराने की कोशिश की जाने लगी। योगी आदित्यनाथ पर तो यह भी आरोप लगाया गया कि चुनाव में प्रशासन ने बीजेपी की मदद नहीं की। गोया, बीजेपी चुनाव प्रशासन की मदद से जीतना चाहती थी, जनता के जरिए नहीं। इसी दरमियान पिछड़ी जाति से आने वाले अनेक नेता अचानक योगी आदित्यनाथ पर हमलावर हो गए। अनुप्रिया पटेल ने योगी सरकार पर ओबीसी आरक्षण की अनदेखी करने का आरोप लगाया। ओमप्रकाश राजभर और संजय निषाद ने तो यहां तक आरोप लगा दिया कि उन्हें चुनाव हराने में योगी सरकार का योगदान है। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने भाजपा की प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में योगी पर हमला बोलते हुए कहा कि संगठन सरकार से बड़ा है। इसके बाद दिल्ली से लौटकर उन्होंने योगी आदित्यनाथ की सरकार पर बड़ा हमला बोलते हुए आरक्षण के साथ खिलवाड़ करने का आरोप जड़ दिया। केशव प्रसाद मौर्य ने मांग की, कि कॉन्ट्रैक्ट और ठेके की नौकरियों में भी आरक्षण का अनुपालन होना चाहिए। दरअसल, इसके जरिए गुजरात लॉबी योगी आदित्यनाथ को पिछड़ा विरोधी साबित करना चाहती है। केशव प्रसाद मौर्य हों या अनुप्रिया पटेल, संजय निषाद हों या ओमप्रकाश राजभर ये तमाम मोहरे हैं। इन मोहरों के जरिए वजीर को निशाना बनाया जा रहा है। जाहिर तौर पर योगी आदित्यनाथ सोशल इंजीनियरिंग के लिए नहीं जाने जाते। पिछड़ों में उनकी कोई खास पहुंच और पहचान भी नहीं है। पहले विपक्षियों द्वारा और अब उनकी ही पार्टी के तमाम नेताओं द्वारा आरक्षण नहीं देने और ओबीसी समाज की अवहेलना करने का आरोप पुख्ता करने की कोशिश हो रही है। यही असली दांव है जिसके जरिए गुजरात लॉबी योगी आदित्यनाथ को राजनीतिक रूप से निपटाना चाहती है। आरोपों का यह दौर अभी और चलने वाला है। योगी आदित्यनाथ को ठाकुरवादी और खास तौर पर पिछड़ा विरोधी साबित करने के बाद उनकी विदाई की तारीख पक्की होगी। इस प्रकार सांप भी मर जाएगा और लाठी भी नहीं टूटेगी!

पीएसयू बैंकों के 'फील गुड' से परे देखना

रोजगार सृजन और मध्यम व छोटे उद्योगों (एमएसएमई) को रोजगारों का प्रमुख प्रदाता बनाने के उद्देश्य से केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के बजट भाषण में कहा गया कि 'पीएसयू बैंक बाहरी मूल्यांकन पर निर्भर रहने के बजाय एमएसएमई को ऋण देने के लिए अपनी क्षमता का निर्माण करेंगे।' यह स्पष्ट है कि बैंकों पर एमएसएमई को ऋण देने में वृद्धि करने का दबाव होगा; उन्हें नए ऋण मूल्यांकन मॉडल बनाने के लिए कहा गया है, जैसा कि वित्त मंत्री ने अपने बजट भाषण में उल्लेख किया है। इसके अलावा सरकार चाहती है कि बैंक बढ़ी हुई सीमा के साथ मुद्रा ऋण दें। हालांकि इस योजना ने खुद कई सवाल खड़े किए हैं और इसके परिणामों को संदिग्ध माना जाता है।

यह हमें उस लंबी कहानी की ओर ले जाता है कि सरकार को बैंकिंग प्रणाली, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की किस प्रकार आवश्यकता है और वह उनका किस प्रकार उपयोग करती है, तथा उसने इन बैंकों के साथ क्या किया है।

बैंकों को मुनाफा कमाना चाहिए लेकिन मुनाफा ही बैंकिंग का एकमात्र उद्देश्य नहीं हो सकता। हमें सामाजिक लाभ को मापना भी सीखना होगा।

अभी भारत में सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकिंग 'फील गुड' के दौर से गुजर रही है। 2024 में पीएसयू बैंकों ने 2019 में 0.82 लाख करोड़ रुपये के घाटे के मुकाबले 1.47 लाख करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया। प्रतिशत के लिहाज से सकल एनपीए 2019 में 12.03 प्रतिशत से घटकर 2024 तक 3.49 फीसदी हो गया है, जबकि शुद्ध एनपीए 4.95 प्रतिशत से घटकर 0.75 फीसद हो गया है। पिछले वर्ष की तुलना में 2020 में कारोबार में वृद्धि 5.46 प्रतिशत थी, जबकि 2024 में यह 2023 के मुकाबले 12.06 प्रश है। एकमात्र चिंता बाजार हिस्सेदारी है जो 2019 में 71.1 प्रतिशत थी और 2024 में घटकर 64.40 फीसदी हो गई है। इसका मतलब है कि निजी क्षेत्र के बैंकों की बाजार हिस्सेदारी 28.90 फीसदी से बढ़कर 35.60 प्रतिशत हो गई है और इसके भीतर नई पीढ़ी के निजी क्षेत्र के बैंकों की बाजार हिस्सेदारी 2019 में 23.78 प्रतिशत से बढ़कर 2024 में 31.02 फीसद हो गई है। इस अवधि के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की बाजार हिस्सेदारी 6.70 प्रतिशत कम हो गई है जो बैंक ऑफ बड़ौदा की बाजार हिस्सेदारी से अधिक है- 6.49 प्रतिशत। इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक का निजीकरण किए बिना बैंक ऑफ बड़ौदा के आकार के बराबर बैंकिंग व्यवसाय का निजीकरण हो गया है।

देवीदास तुलजापुरकर

> **बैंक सीधे उधार देने के बजाय सह-उधार या अप्रत्यक्ष उधार का सहारा लेने के लिए प्रेरित होते हैं। उत्पादों और सेवाओं में नवाचार के नाम पर, एसबीआई ने ऋण का असाइनमेंट पोर्टफोलियो की बिक्री-खरीद आदि जैसे विभिन्न उपकरण पेश किए हैं ताकि बैंक ओवरहेड लागतों को बचाने के लिए प्रत्यक्ष उधार से बच सकें। यह सब लागत को कम करने में मदद करता है लेकिन अंततः ग्राहक ही भुगतान करता है। सेवा शुल्क में भी बेतहाशा वृद्धि हुई है, साथ ही उन सेवाओं पर भी शुल्क लगाया गया है जो पारंपरिक रूप से मुफ़्त थीं।**

हम जो देख रहे हैं वह नियामक यानी भारतीय रिजर्व बैंक और मालिक यानी भारत सरकार द्वारा एक साथ नीतिगत नुस्खों की अभिव्यक्ति है। इस अवधि के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में विलय के कारण एक बड़ा व्यवधान आया। 2019 में देना बैंक और विजया बैंक का बैंक ऑफ बड़ौदा में विलय कर दिया गया जबकि 2020 में एक बड़ा विलय हुआ जिसमें छह बैंक समाप्त विलीन हो गए। इस विलय के परिणामस्वरूप सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की शाखाओं की संख्या 2019 के 89,870 से घटकर 2024 में 87,009 हो गई। यानी 2,861 शाखाएं कम हुईं जबकि निजी क्षेत्र के बैंकों के मामले में यह संख्या 2019 में 27,380 से बढ़कर 38,216 हो गईं। यानी 10,838 शाखाएं बढ़ीं। इस प्रकार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की शाखाओं की हिस्सेदारी 2019 में 76.65 प्रतिशत से घटकर 2024 में 69.48 फीसदी हो गई है, जबकि निजी क्षेत्र के बैंकों की हिस्सेदारी 23.35 फीसद से बढ़कर 30.52 प्रतिशत हो गई है और इसके भीतर नई पीढ़ी के निजी क्षेत्र के बैंकों की हिस्सेदारी 16.95 फीसदी से बढ़कर 23.87 प्रतिशत हो गई है। यह एक कारण है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने निजी क्षेत्र के बैंकों के मुकाबले बाजार हिस्सेदारी खो दी है।

2020 में भारतीय स्टेट बैंक को नई पीढ़ी के निजी क्षेत्र के यस बैंक को संकटग्रस्त बैंक में 11,760 करोड़ रुपए यानी 49 प्रतिशत हिस्सेदारी डालकर उसे बचाने के लिए कहा गया था। 2017-18 में, इसने 6,547 रुपए करोड़ का घाटा और 2018-19 में 862.23 करोड़ रुपए का मामूली लाभ दर्ज किया था। 2020 में यस बैंक में 11,760 करोड़ रुपए का निवेश करने के बावजूद, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया 14,487 करोड़ रुपए का प्रभावशाली लाभ दर्ज करने में सक्षम था। सरकार ने, जो निजीकरण की वकालत कर रही थी और बाजार अर्थशास्त्र की भाषा बोल रही थी, स्वयं स्टेट बैंक को बीमार यस बैंक को बचाने के लिए मजबूर किया लेकिन स्टेट बैंक को 51 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल करने के लिए थोड़ा और निवेश करने की अनुमति नहीं दी। सरकार के विचार में यह कदम अनुत्पादक तथा आत्मघाती साबित होता क्योंकि सरकार तथाकथित सुधारों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

बैंक सीधे उधार देने के बजाय सह-उधार या अप्रत्यक्ष उधार का सहारा लेने के लिए प्रेरित होते हैं। उत्पादों और सेवाओं में नवाचार के नाम पर, एसबीआई ने ऋण का असाइनमेंट पोर्टफोलियो की बिक्री-खरीद आदि जैसे विभिन्न उपकरण पेश किए हैं ताकि बैंक ओवरहेड लागतों को बचाने के लिए प्रत्यक्ष उधार से बच सकें। यह सब लागत को कम करने में मदद करता है लेकिन अंततः ग्राहक ही भुगतान करता है। सेवा शुल्क में भी बेतहाशा वृद्धि हुई है, साथ ही उन सेवाओं पर भी शुल्क लगाया गया है जो पारंपरिक रूप से मुफ़्त थीं।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि इस अवधि में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से केवल बैंक ऑफ महाराष्ट्र ने 2019 में 1.15 प्रश से 2024 में 1.32 फीसदी तक अपनी बाजार हिस्सेदारी देखी। यह बैंक घाटे से मुनाफे में आने वाले सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से पहला था और प्रदर्शन के लगभग सभी मापदंडों में शीर्ष स्थान पर है। इस प्रकार इस बैंक ने साबित कर दिया है कि आकार मायने नहीं रखता। यह सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में विलय करके बड़े बैंक बनाने की आत्मघाती नीति का प्रमाण है, मानों आकार ही समस्याओं का समाधान कर सकता है।

सरकार पीएसयू बैंकों की तुलना निजी क्षेत्र के बैंकों से करती है; लेकिन वह उम्मीद करती है कि पीएसयू बैंक अपनी सभी योजनाओं और नीतियों के कार्यान्वयन में सबसे आगे रहें और उन्हें दूरदराज के इलाकों तक पहुंचाएं। यह पीएसयू बैंकों को आर्थिक दृष्टि से घाटे में चलने के लिए मजबूर करता है लेकिन लाभ यह है कि पीएसयू बैंक सामाजिक दृष्टि से लाभ कमा रहे हैं। लेखा लाभ बनाम सामाजिक लाभ एक पुराना विरोधाभास है।

तत्कालीन आरबीआई गवर्नर रघुराम राजन के कहने पर एसेट क्वालिटी इंस्पेक्शन के परिणामस्वरूप सार्वजनिक बैंकों के व्यवसाय मॉडल में बड़ा बदलाव आया है। घाटे में चल रही इकाई से लाभ कमाने वाली इकाई में बदलने के लिए जमा या अग्रिम पर ब्याज दर में बदलाव करने की बहुत कम गुंजाइश थी। उन बैंकों के पास एकमात्र विकल्प प्रशासनिक लागत को कम करना था। इसके साथ सरकारी बैंकों ने बड़े पैमाने पर आउटसोर्सिंग और संविदा रोजगार का सहारा लिया। इन सबने कर्मचारियों की लागत को कम करने में मदद की है, लेकिन इसने सिस्टम को उजागर कर दिया है जिसके परिणामस्वरूप परिचालन धोखाधड़ी का बड़ा जोखिम है।

यह सब लागत को कम करने में मदद करता है, लेकिन अंततः ग्राहक ही भुगतान करता है। सेवा शुल्क में भी बेतहाशा वृद्धि हुई है, साथ ही उन सेवाओं पर भी शुल्क लगाया गया है जो पारंपरिक रूप से मुफ़्त थीं। इस प्रकार अब कम निवल मूल्य वाले ग्राहक जिन्हें जन धन के कार्यान्वयन के साथ बैंकिंग के दायरे में लाया गया था, उन्हें सेवाओं के लिए लागत का भुगतान करना पड़ रहा है और परिणामस्वरूप अब वे इसे छोड़ रहे हैं। अब समय आ गया है कि सरकार भारत में बैंकिंग की भूमिका और जिम्मेदारी पर अपना रुख स्पष्ट करे, जो अभी भी गरीबी, बेरोजगारी और आर्थिक असमानता से जूझ रही एक विकासशील अर्थव्यवस्था है। बैंकों को लाभ दर्ज करना चाहिए लेकिन लाभ बैंकिंग का एकमात्र उद्देश्य नहीं हो सकता। हमें सामाजिक लाभ को मापना भी सीखना होगा।

(लेखक अखिल भारतीय बैंक कर्मचारी संघ के संयुक्त सचिव और बैंक ऑफ महाराष्ट्र के पूर्व निदेशक हैं। सिंडिकेट : द बिलियन प्रेस)

https://t.me/AllNewsPaperPaid

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770
ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

"राष्ट्र को सशक्त बनाने के लिए सामाजिक परिवर्तन के साथ तीव्र आर्थिक विकास भी जरूरी है। -अटल बिहारी वाजपेयी

पांच अंतरराष्ट्रीय संगठनों की संयुक्त रिपोर्ट का यह कहना बेहद गंभीर है कि दुनिया का हर ग्यारहवां व्यक्ति भुखमरी से जूझ रहा है। चरम मौसमी घटनाएं जिस तरह उत्पादन पर असर डाल रही हैं, उसे देखते हुए सतत कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक समुदाय के मिलकर काम करने की जरुरत ज्यादा बढ़ गई है।

ताकि कोई भूखा न रहे

दुनिया में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र की नवीनतम रिपोर्ट ने हमारे सामने पुनः एक कठोर सच्चाई को उजागर किया है कि दुनिया का हर ग्यारहवां शख्स भुखमरी से जूझ रहा है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन, अंतरराष्ट्रीय कृषि विकास कोष, यूनिसेफ, विश्व खाद्य कार्यक्रम और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा संयुक्त रूप से जारी रिपोर्ट 'द स्टेट ऑफ फूड सिक्योरिटी ऐंड न्यूट्रिशन इन द वर्ल्ड 2024' बताती है कि वर्ष 2023 में करीब 73.3 करोड़ लोग खाली पेट सोने को मजबूर थे। चिंता की बात है कि 2019 की तुलना में इस संख्या में 15.2 करोड़ की बढ़ोतरी हुई है, लेकिन बड़ी चिंता इस तथ्य को लेकर होनी चाहिए कि पिछले तीन वर्षों से यह आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। रिपोर्ट की इस चेतावनी को भी गंभीरता से लिए जाने की जरूरत है कि दुनिया 2030 तक भूख को शून्य के स्तर पर ले जाने के सतत विकास लक्ष्य से काफी पीछे रह गई है। अफ्रीका या लैटिन अमेरिका के मुकाबले एशिया में भूख का सामना करने वाली आबादी का प्रतिशत बेशक स्थिर है, लेकिन यह दुनिया भर में भूख का सामना करने वाले आधे से ज्यादा लोगों का घर है, इसलिए यह चिंताजनक है। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा को लेकर हमारी नीतियां और योजनाएं अब तक पर्याप्त साबित तो नहीं ही हुई हैं, कोरोना महामारी, जलवायु परिवर्तन और क्षेत्रीय संघर्ष जैसे कारणों ने इस संकट को और भी गहरा कर दिया है। रिपोर्ट के अनुसार, स्वस्थ आहार तक आर्थिक पहुंच की कमी भी एक गंभीर मुद्दा है, जिससे वैश्विक आबादी का करीब एक-तिहाई से ज्यादा हिस्सा प्रभावित हो रहा है। जाहिर है कि भुखमरी केवल भोजन की कमी का ही नहीं, बल्कि असमानता से जुड़ा मुद्दा भी है, जो कम आय वाले देशों में ज्यादा स्पष्ट दिखती है। इन देशों की 71.5 फीसदी आबादी स्वस्थ आहार का खर्च वहन नहीं कर सकती है, जबकि उच्च आय वाले देशों में यह आंकड़ा मात्र 6.3 फीसदी है।

इसके अतिरिक्त, बढ़ती खाद्य महंगाई, जलवायु परिवर्तन और आर्थिक मंदी भी खाद्य असुरक्षा व कुपोषण के बढ़ने की बड़ी वजह बनी हुई हैं। चरम मौसमी घटनाएं जिस तरह उत्पादन पर असर डाल रही हैं, उसे देखते हुए पर्यावरण संरक्षण और सतत कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक समुदाय के मिलकर काम करने की जरूरत ज्यादा बढ़ गई है। विश्वव्यापी समस्या बन चुकी भुखमरी से निपटने के लिए विकसित और विकासशील देशों के बीच सहयोग व संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण महत्वपूर्ण है, साथ ही, खाद्य उत्पादन और वितरण की प्रणाली में सुधार की भी जरूरत है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भोजन हर जरूरतमंद तक पहुंचे।

आखिर द्रमुक की समस्या क्या है

द्रमुक अलगाववादी संस्कृति को बढ़ावा देती है। यदि वित्त मंत्री ने बजट भाषण में तमिलनाडु का उल्लेख नहीं किया है, तो इसका यह मतलब नहीं कि द्रमुक अन्य दक्षिणी राज्यों को नीति आयोग की बैठक में भाग लेने से रोके। 2004 से 2014 के बीच यूपीए के छह बजट भाषणों में तमिलनाडु का उल्लेख नहीं हुआ था।

द्रमुक, वाईएसआर कांग्रेस और माकपा जैसे दक्षिणी राजनीतिक दल केंद्रीय बजट को तोड़-मरोड़कर उसका विश्लेषण कर रहे हैं और संकीर्णतावाद तथा क्षेत्रीयतावाद को भड़का रहे हैं। इंडिया गठबंधन में शामिल सभी राजनीतिक दलों ने प्रभावी ढंग से एक आख्यान पेश किया कि मोदी सरकार का बजट अपने सहयोगी नेताओं-नीतीश कुमार (बिहार) और चंद्रबाबू नायडू (आंध्र प्रदेश) को खुश करने के लिए था। पिछले दो दिनों से लोकसभा और राज्यसभा में विपक्ष की बहस 'कुर्सी बचाओ बजट' के नारे पर ही टिकी रही। लेकिन टीवी बहसों और प्रिंट मीडिया में बजट के सकारात्मक विश्लेषण ने प्रधानमंत्री मोदी और वित्त मंत्री को जरूर खुश किया होगा। हालांकि समाजवादी पार्टी की प्रतिक्रिया में थोड़ी स्पष्टता है। इसका कारण यह है कि अखिलेश यादव जानते हैं कि बिहार उत्तर प्रदेश से सटा हुआ राज्य है।

आर राजगोपालन
वरिष्ठ पत्रकार

जाने-माने अर्थशास्त्री स्वामीनाथन अय्यर ने अपनी टिप्पणी में कहा कि जब कोई अर्थव्यवस्था आगे बढ़ती है, तो उसका वित्त मंत्री भी बजटीय आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकता है। 8.2 फीसदी जीडीपी वृद्धि, कर प्राप्तियों में निरंतर उछाल और रिजर्व बैंक से बंपर लाभांश के बल पर निर्मला सीतारमण ने एक ही तीर से राजनीतिक और आर्थिक निशाने साधे हैं। आलोचकों ने पहले ही अनुमान लगाया था कि अगर बिहार के नीतीश कुमार और आंध्र प्रदेश के चंद्रबाबू नायडू को भाजपा ने शांत नहीं किया, तो वे सरकार के लिए परेशानियां खड़ी कर सकते हैं। भले ही विशेष दर्जे की उनकी मांग पूरी न हुई हो, लेकिन बजट में दोनों राज्यों को भारी मात्रा में धन दिया गया है, जिससे फिलहाल उन्हें संतुष्ट होना चाहिए।

30 जुलाई को जब निर्मला सीतारमण बजट पर हो रही बहस का जवाब देंगी, तो निश्चित रूप से वह द्रमुक द्वारा फैलाए गए झूठ का खंडन करेंगी। आखिर द्रमुक के इतना नाराज होने की वजह क्या है? दरअसल, पड़ोसी राज्य आंध्र प्रदेश के नायडू के पास केवल 18 सांसद हैं, लेकिन उस राज्य को 15 हजार करोड़ रुपये मिले, मगर 39 सांसदों वाले तमिलनाडु को कुछ भी नहीं मिला। इस हीन भावना ने द्रमुक को केंद्र सरकार के खिलाफ जाने के लिए मजबूर किया। द्रमुक नेता एमके स्टालिन ने प्रधानमंत्री मोदी को धमकी दी है कि यदि केंद्र सरकार शासन पर ध्यान देने के बजाय लगातार विरोधी पार्टियों के नेताओं को निशाना बनाती रहेगी, तो वह अलग-थलग पड़ जाएगी। जबकि नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार करके द्रमुक खुद को अलग-थलग महसूस कर रही है। धमकी देकर वह अपना और ज्यादा नुकसान कर रही है।

द्रमुक कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडिया गठबंधन का हिस्सा है, जिसने भाजपा के अबकी बार 400 पार के नारे को भारी झटका दिया और दक्षिणी राज्य में भाजपा को लगातार दूसरी बार हार का सामना करना पड़ा। स्टालिन की टिप्पणी ऐसे वक्त में आई है, जब विपक्षी नेताओं ने केंद्र सरकार और बजट पर हमला बोला है। द्रमुक हमेशा रोती रहती है और अलगाववादी संस्कृति को बढ़ावा देती है। द्रमुक ने न केवल नीति आयोग का बहिष्कार करने का आह्वान किया, बल्कि तेलंगाना कांग्रेस के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी, माकपा के मुख्यमंत्री पी विजयन और कर्नाटक के कांग्रेसी मुख्यमंत्री सिद्धरमैया को नीति आयोग का बहिष्कार करने के लिए इकट्ठा किया। दिलचस्प बात यह है कि इन राज्यों में कावेरी जल संकट, सीमा विवाद और तमिल-तेलुगू-कन्नड़ भाषा अवरोध जैसे अंतरराज्यीय विवाद हैं। ये राज्य तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) के चंद्रबाबू नायडू को भारी रकम मिलने से ईर्ष्या करते हैं।

तमिलनाडु के भाजपा प्रमुख के अन्नामलाई ने स्टालिन को बहुत अच्छा जवाब दिया है-यदि निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में तमिलनाडु शब्द का उल्लेख नहीं किया है, तो इसका मतलब यह नहीं कि नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार किया जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा, 2004 से 2014 के बीच यूपीए सरकार के दौरान छह बजट भाषण ऐसे थे, जिनमें पी चिदंबरम ने तमिलनाडु या तिरुवल्लुवर का उल्लेख नहीं किया था। कम से कम भाजपा के घोषणापत्र में यह आश्वासन तो है कि तिरुक्कुरल और इसके लेखक तिरुवल्लुवर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी। द्रमुक भाजपा के ऐसे सकारात्मक पहलुओं को क्यों नजरअंदाज करती है? तमिलनाडु के पूरी तरह बहिष्कार संबंधी मुख्यमंत्री स्टालिन के आरोप का जवाब देते हुए अन्नामलाई ने कहा, 'तमिलनाडु के मुख्यमंत्री लोगों को बरगलाने की कोशिश कर रहे हैं कि बजट भाषण में जिन राज्यों का उल्लेख है, केवल उन्हीं को लाभ मिलेगा, जबकि पिछली यूपीए सरकार ने 2 जी घोटाले जैसे भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया था, जिसमें द्रमुक भी शामिल थी।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट पेश करने के अगले दिन संसद में अपनी बात को अच्छी तरह से रखा। उन्होंने इस दावे को 'अपमानजनक' बताते हुए खारिज किया कि 'आंध्र प्रदेश और बिहार ने बजटीय आवंटन का बड़ा हिस्सा हड़प लिया है'। दिलचस्प बात यह है कि ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस संसद में बहुत आक्रामक थी, लेकिन वह खुद नीति आयोग की बैठक में भाग ले रही हैं। इस तरह वह दक्षिणी सहयोगियों के बहिष्कार के आह्वान के खिलाफ जा रही हैं। यह सही है कि निर्मला सीतारमण बजट पर राजनीतिक आक्रोश का पूर्वानुमान लगाने में विफल रही हैं और इससे कांग्रेस को बजट को उत्तर प्रदेश विरोधी बताने का मौका मिल गया। यह संवेदनशील मुद्दों पर विचार करने के लिए भाजपा के लिए एक सबक है। मोदी एक चतुर राजनीतिज्ञ हैं और वह जरूर सुधार करेंगे।

क्या द्रमुक 2026 के विधानसभा चुनाव की तैयारी कर रही है? जाहिर है कि केंद्र और मोदी विरोधी कोई भी बात अल्पसंख्यक वोट बैंक के लिए मुफीद है। एमके स्टालिन ने मोदी के खिलाफ नकारात्मक अभियान चलाकर 2021 का विधानसभा चुनाव जीता, स्टालिन ने 2024 में भी यही पैंतरा दोहराया, और उन्हें 40 सांसदों का फायदा मिला। इसलिए स्टालिन केंद्र एवं मोदी की आलोचना करके 2026 के तमिलनाडु विधानसभा में भारी जीत की उम्मीद कर रहे हैं। अफसोस की बात है कि दक्षिण के चार राज्यों-तमिलनाडु, तेलंगाना, केरल एवं कर्नाटक उत्तरी राज्यों को चेतावनी दे रहे हैं, जबकि राहुल गांधी जैसे नेता वायनाड लोकसभा से इस्तीफा देकर कह रहे हैं कि दक्षिण भारतीयों का दिमाग उत्तर भारतीयों से बड़ा है।

जीवन धारा

राल्फ वाल्डो इमर्सन

अपने अतीत का गुलाम मत बनें। उदात्त समुद्र की गहराई में डुबकी लगाएं, और दूर तक तैरें, ताकि आप नए आत्म-सम्मान, नई शक्ति और उन्नत अनुभव के साथ लौट सकें।

प्रकृति व पुस्तकें उन आंखों के लिए हैं, जो उन्हें देखती हैं

इस दुनिया में दुनिया की राय के अनुसार जीना आसान है; एकांत में अपनी राय के अनुसार जीना भी आसान है; लेकिन वह व्यक्ति महान है, जो भीड़ के बीच में भी एकांत की स्वतंत्रता को मधुरता के साथ बनाए रखता है। अपने लिए हमने जो सपना देखा है, उसे जीने का साहस करना चाहिए और आगे बढ़कर उन सपनों को साकार करना चाहिए। एक ऐसी दुनिया में स्वयं बने रहना, जो लगातार आपको कुछ और बनाने की कोशिश कर रही है, सबसे बड़ी उपलब्धि है। हमेशा याद रखें, जीवन की लंबाई नहीं, बल्कि गहराई मायने रखती है। और जब कभी काफी अंधेरा हो जाए, तो आप सितारों को देख सकते हैं। और अपने दिल पर यह लिख लें कि हर दिन साल का सबसे अच्छा दिन है। आपने वह कर लिया है, जो आप कर सकते थे। कुछ गलतियां जरूर हुई होंगी, जितनी जल्दी हो सके उन्हें भूल जाना ही बेहतर है। कल एक नया दिन आएगा, जिसकी शुरुआत शांति से और बहुत ऊंचे मनोबल के साथ करनी चाहिए, ताकि पुरानी बकवास से परेशान न हों।

हर मिनट जब आप गुस्से में होते हैं, तो आप खुशी के साठ सेकंड खो देते हैं। आपको साहस की आवश्यकता है। आप जो भी रास्ता चुनें, हमेशा कोई न कोई आपको यह बताने के लिए मौजूद होता है कि आप गलत हैं। हमेशा ऐसी कठिनाइयां आती रहती हैं, जो आपको यह विश्वास दिलाने के लिए प्रेरित करती हैं कि आपके आलोचक सही हैं। शांति की अपनी जीत होती है, लेकिन उन्हें जीतने के लिए बहादुर पुरुषों और महिलाओं की आवश्यकता होती है। हमेशा वही करें, जिसे करने से आप डरते हैं। धूप में जिएं, समुद्र में तैरें, जंगली हवा पिएं और हमेशा प्रकृति से जुड़े रहें। प्रकृति की गति को अपनाएं : उसका रहस्य धैर्य है। अपने हिस्से में आने वाली हर अच्छी चीज के लिए आभारी होने और लगातार धन्यवाद देने की आदत डालें। अपने कामों को लेकर बहुत ज्यादा डरपोक और संकोची न बनें। सारी जिंदगी एक प्रयोग है। आप जितने ज्यादा प्रयोग करेंगे, उतना ही बेहतर होगा। आप वही बन जाते हैं, जिसके बारे में आप दिन भर सोचते रहते हैं। अपने अतीत का गुलाम मत बनें-उदात्त समुद्र में डुबकी लगाएं, गहरे गोते लगाएं, और दूर तक तैरें, ताकि आप नए आत्म-सम्मान, नई शक्ति और उन्नत अनुभव के साथ वापस लौट सकें, जो पुराने को समझेगा और अनदेखा करेगा। जिस काम को हम लगातार करते रहते हैं, उसे करना आसान हो जाता है। ऐसा नहीं है कि उस काम की प्रकृति बदल गई है, बल्कि ऐसा है कि करने की हमारी शक्ति बढ़ गई है। प्रकृति और पुस्तकें उन आंखों के लिए हैं, जो उन्हें देखती हैं। बहुत सी आंखें घास के मैदान से गुजरती हैं, लेकिन बहुत कम लोग इसमें फूल देख पाते हैं। अपनी समस्याओं से प्रेरित मत होइए। अपने सपनों के नेतृत्व में आगे बढ़िए। महानता से अधिक सरल कुछ भी नहीं है; वास्तव में, सरल होना ही महान होना है।

सितारों को देखें

सूत्र

अगर कोई व्यक्ति अकेला रहना चाहता है, तो उसे सितारों को देखना चाहिए। इस बात को लेकर सावधान रहिए कि आप किस पर अपना दिल लगाते हैं, क्योंकि यह निश्चित रूप से आपका होगा। दुनिया उस आदमी के लिए रास्ता बनाती है, जो जानता है कि वह कहां जा रहा है। खुशी बिखेरिए, क्योंकि जीवन एक यात्रा है, कोई मंजिल नहीं।

दूसरा पहलू

म्यूनिख ओलंपिक की आतंकी घटना के बाद भारत के पूर्व पुलिस अधिकारी अश्विनी कुमार को ओलंपिक की सुरक्षा सौंपी गई थी।

वह भारतीय जिसने किया ओलंपिक खेलों को सुरक्षित

पेरिस ओलंपिक खेलों का आगाज हो गया है, लेकिन इन खेलों से साउथ दिल्ली की फ्रेंड्स कॉलोनी का सीधा रिश्ता है। इस कॉलोनी में कुछ बरस पहले तक एक सज्जन रहते थे, जिनकी वजह से ओलंपिक खेलों का आयोजन सुरक्षित हुआ। अगर 1972 के म्यूनिख ओलंपिक खेलों में हुए इस्राइली खिलाड़ियों के कत्लेआम के बाद फिर ओलंपिक खेलों में कभी उस तरह का भयानक हादसा नहीं हुआ, तो उसका श्रेय जाता है भारत के पूर्व पुलिस अधिकारी अश्विनी कुमार को। म्यूनिख घटना के बाद अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने अश्विनी कुमार से गुजारिश की कि वह आगामी शीतकालीन और ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों की सुरक्षा व्यवस्था को मेजबान देश के साथ मिलकर देखें। अश्विनी कुमार आजादी से पहले इंपीरियल पुलिस सर्विस के अधिकारी थे। स्वतंत्रता के बाद वह भारतीय पुलिस सेवा में शामिल कर लिए गए थे। वह भारतीय ओलंपिक संघ से भी सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे।

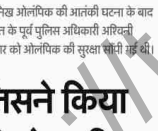

विवेक शुक्ला

अश्विनी ने मांट्रियल, मास्को, लॉस एंजिलिस, सिओल, बार्सिलोना, अटलांटा तथा सिडनी के ओलंपिक खेलों की सुरक्षा को देखा था।

उन्होंने मॉन्ट्रियल (1976), मास्को (1980), लॉस एंजिलिस (1984), सिओल (1988), बार्सिलोना (1992), अटलांटा (1996) व सिडनी (2000) के ओलंपिक खेलों की सुरक्षा व्यवस्था को देखा और मेजबान देश की सुरक्षा एजेंसियों को जरूरी इनपुट्स दिए। उन्होंने सिडनी ओलंपिक के बाद बढ़ती उम्र के कारण अपनी जिम्मेदारी छोड़ दी थी। उनका मुख्य फोकस खेलों के पहले दिन और अंतिम दिन की सुरक्षा पर रहता था। वह मानते थे कि इन्हीं दोनों दिनों में आतंकी हमला करने की फिराक रहते हैं। अश्विनी कुमार आईओसी के दो अध्यक्षों क्रमशः लॉर्ड किलिनन और जेए समारांच के विश्वासपात्र थे। उनको देश ने पहली बार तब जाना था, जब उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों के हत्यारे सुच्चा सिंह को नेपाल में जाकर पकड़ा था। इससे पहले भारत सरकार ने उन्हें 1951 में सौराष्ट्र के खूंखार डाकू भूपत गिरोह को खत्म करने के लिए भेजा था। वहां पर भी वह सफल हुए थे। हॉकी में तो मानो उनकी जान बसती थी। उन्होंने अपनी एक बेटी का नाम ही हॉकी रख दिया था। पंजाब पुलिस के महानिदेशक रहते हुए वह भारतीय हॉकी संघ के अध्यक्ष बने। उन्होंने पंजाब पुलिस और बीएसएफ में दर्जनों खिलाड़ियों को नौकरी दी। उनमें बलबीर सिंह सीनियर, अजीतपाल सिंह, उधम सिंह आदि शामिल हैं।

अश्विनी कुमार को देश ने पहली बार तब जाना था, जब उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों के हत्यारे सुच्चा सिंह को नेपाल में पकड़ा था। उन्होंने 1951 में सौराष्ट्र के खूंखार डाकू भूपत गिरोह को भी खत्म किया था।

आंकड़े

व्यस्ततम एयरपोर्ट

भारत के सबसे ज्यादा व्यस्त एयरपोर्ट की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, घरेलू यात्री अब विमान से बड़े स्तर पर यात्रा कर रहे हैं।

दिल्ली	5.37
मुंबई	3.79
बंगलूरु	3.25
हैदराबाद	2.02
कोलकाता	1.71

संबंधित एयरपोर्ट की यात्री संख्या, आंकड़े करोड़ में हैं। स्रोत : MoCA

रंतिदेव ने दूसरों के दुख दूर करने के लिए अपने राज्य की पूरी संपत्ति दान कर दी थी। यहां तक कि 48 दिन भूखे रहने के बाद जो भोजन मिला, वह भी दूसरों को दे दिया।

भगवान ने ली रंतिदेव की परीक्षा

रघुवंश में रंतिदेव नाम के बड़े ही दानी राजा हुए। उन्होंने दूसरों के दुख दूर करने के लिए अपने राज्य की सारी संपत्ति दान कर दी। वह और उनका परिवार जंगल में चला गया। उनका पूरा परिवार 48 दिन तक भूखा रहा। 49वें दिन भगवान ने उनके धैर्य और दानवीरता की परीक्षा लेने के लिए स्वादिष्ट पकवान भेजे। वह और उनका परिवार भोजन करने ही वाला था कि एक ब्राह्मण उनके पास पहुंचा और कहा कि राजन! मैं भूखा हूं। उन्होंने पहले ब्राह्मण को भोजन कराया।

फिर बचा हुआ भोजन परिवार वालों को बांट दिया। इसके बाद जो बचा था, उसे वह खुद खाना चाहते थे, लेकिन तभी एक व्यक्ति वहां पहुंचा और उसने कहा, मुझे बहुत भूख लगी है। राजा ने अपने हिस्से का भोजन भी उसको दे दिया। राजा अब पानी पीकर रहना चाहते थे। इतने में ही एक व्यक्ति और पहुंचा और उसने पानी भी पी लिया। राजा अपनी भूख-प्यास मिटाने के बजाय दूसरों की मदद करने से संतुष्ट थे।

अंतर्यात्रा
संकलित

दरअसल ये ब्रह्मा, विष्णु और महेश, तीनों ही भगवान थे। उन्होंने प्रकट होकर रंतिदेव को वर मांगने के लिए कहा। रंतिदेव ने कहा कि प्रभु आप अंतर्यामी हैं। मैं यही चाहता हूं कि किसी को भी मेरे द्वारा दुख न हो। रंतिदेव की ऐसी निष्ठा देखकर भगवान काफी प्रसन्न हुए। उन्होंने रंतिदेव और उनके परिवार को वह गति प्रदान की, जो योगियों को भी दुर्लभ है।

आज का इतिहास

निशानेबाजी के इतिहास में एक बड़ा मील का पत्थर बना

27 जुलाई का दिन देश के निशानेबाजी के इतिहास में एक बड़ा मील का पत्थर बना, जब जसपाल राणा ने इटली के मिलान शहर में 1994 में 46वीं विश्व निशानेबाजी चैंपियनशिप के जूनियर वर्ग में स्वर्ण पदक हासिल किया। उन्होंने रिकार्ड स्कोर (569/600) बनाकर तहलका मचा दिया था । विश्व निशानेबाजी के नक्शे पर जसपाल राणा का यह पहला स्वर्णिम हस्ताक्षर था। उन्होंने इसके बाद बहुत सी सफलताएं हासिल कर देश का नाम रोशन किया, लेकिन उनका यह पहला सुनहरा कदम हमेशा यादगार रहेगा। देश दुनिया के इतिहास में 27 जुलाई की तारीख पर दर्ज अन्य महतवपूर्ण घटनाओं का सिलसिलेवार ब्यौरा इस प्रकार है। 1789 में पहली फेडरल एजेंसी द डिपार्टमेंट ऑफ फॉरेन अफेयर्स की स्थापना।

विरासत ही हमारी पहचान है

विरासत अतीत की कहानी बताने के साथ भविष्य को आकार देती है। यह सामूहिक स्मृति का संग्रह है, जो हमें एक राष्ट्र के रूप में परिभाषित करता है।

सच्चिदानंद जोशी

संरक्षण

भारत, एक सांस्कृतिक चेतना, महान परंपराओं और समृद्ध विरासत का देश, 42 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों का घर है। इनमें से 34 सांस्कृतिक, सात प्राकृतिक और एक, कंचनजंघा राष्ट्रीय उद्यान, मिश्रित प्रकार का है। यूनेस्को द्वारा विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त विरासत स्थलों की संख्या के मामले में भारत छठे स्थान पर है। ये विरासत स्थल मानव सभ्यता में भारत के योगदान के जीवंत प्रतीक हैं, जो पर्यटन, शिक्षा और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जैसा कि भारत पहली बार 46वें विश्व विरासत सत्र की मेजबानी कर रहा है, वैश्विक ध्यान विरासत के संरक्षण पर केंद्रित है। यह आयोजन विश्व मंच पर भारत की पहचान और विरासत के संरक्षण और प्रचार के महत्व को रेखांकित करता है। इन प्रयासों को टिकाऊ बनाने के लिए युवा पीढ़ी में विरासत संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी और जागरूकता की भावना पैदा करना अत्यंत आवश्यक है, जो स्कूल से शुरू होकर विश्वविद्यालय शिक्षा तक फैली हो। भारत में विरासत स्थल, भीमबेटका की प्रागैतिहासिक गुफाओं से लेकर ताजमहल तक और अजंता व एलोरा से लेकर सुंदरबन की प्राकृतिक भव्यता तक, भारत के समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक इतिहास को समेटे हुए हैं। ये स्थल हर साल लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जो अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन विरासत स्थलों से उत्पन्न पर्यटन स्थानीय व्यवसायों का समर्थन करता है, रोजगार पैदा करता है, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, ये स्थल शैक्षिक संसाधनों के रूप में काम करते हैं, जो भारत के इतिहास, वास्तुकला और प्राकृतिक सौंदर्य के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। वे अतीत से मूर्त संबंध प्रदान करते हैं, जो मानव सभ्यता की यात्रा को समझने में मदद करते हैं।

भारत में कई कम ज्ञात स्थल भी हैं, जिनका अपार ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यात्मक मूल्य है। ये स्थल, हालांकि अभी तक यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं हैं, लेकिन संरक्षण के योग्य हैं। इनमें से एक है कोटुमसर गुफा, जो छत्तीसगढ़ के जगदलपुर के पास स्थित एक चूना पत्थर की गुफा है, जो पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। ओडिशा के खुर्दा जिले में स्थित शिशुपालगढ़, जो कभी राजा खारवेल की राजधानी थी, प्राचीन भारत के शहरी नियोजन और वास्तुकला कौशल को प्रदर्शित करता है। महाराष्ट्र के रायगढ़ में कोंकण तट के पास एक छोटे से द्वीप पर स्थित मुरुद जंजीरा किला भारत के सबसे मजबूत किलों में से एक है, जिसने कई हमलों को विफल कर दिया था। मध्य प्रदेश का एरण कई ऐतिहासिक कलाकृतियों का घर है, जिसमें विशाल वराह प्रतिमा और भगवान विष्णु को समर्पित एक मंदिर शामिल है। झारखंड के दुमका में स्थित मालुटी के टेराकोटा मंदिर अपनी उत्कृष्ट नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है, जो विभिन्न पौराणिक दृश्यों और स्थानीय परंपराओं को चित्रित करते हैं।

युवा पीढ़ी को इन स्थलों के महत्व के बारे में शिक्षित करना और संवेदनशील बनाना आवश्यक है। स्कूली स्तर पर शैक्षिक कार्यक्रमों में विरासत स्थलों की यात्राएं, संरक्षण विशेषज्ञों के साथ इंटरैक्टिव सत्र और ऐसी परियोजनाएं शामिल होनी चाहिए, जो छात्रों को विरासत के विभिन्न पहलुओं पर शोध करने के लिए प्रोत्साहित करें। विश्वविद्यालय स्तर पर, विरासत संरक्षण को सभी विषयों में आधार पाठ्यक्रमों में शामिल किया जा सकता है। इतिहास, पुरातत्व, वास्तुकला और पर्यावरण विज्ञान के पाठ्यक्रम विरासत संरक्षण पर विशेष मॉड्यूल प्रदान कर सकते हैं। साथ ही युवाओं को इस क्षेत्र में कॅरिअर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। सरकार को इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाने चाहिए और युवाओं को इनकी ओर आकर्षित करना चाहिए।

भारत में 46वीं विश्व धरोहर सत्र पीएम मोदी की धरोहर को संरक्षित करने की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। इन प्रयासों को वास्तव में प्रभावी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि युवा पीढ़ी को धरोहर संरक्षण के महत्व के बारे में शिक्षित और संवेदनशील बनाया जाए। अकादमिक पाठ्यक्रमों में कम प्रसिद्ध स्थलों को शामिल करना और स्थानीय समुदायों को इन स्थलों के संरक्षण में शामिल करना धरोहर संरक्षण के प्रति जागरूकता और समर्थन बढ़ाने में मदद करेगा। हमारी विरासत हमारी पहचान है। यह हमारे अतीत की कहानी कहती है और हमारे भविष्य को आकार देती है।

Special arrangements by Amar Ujala

स्वत्वाधिकारी रामगोपाल इन्वेस्टमेन्ट्स प्रा.लि. के लिए मुद्रक, प्रकाशक समीर माहेश्वरी द्वारा नवभारत प्रेस, नवभारत भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जी.ई.रोड, रायपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित. प्रधान संपादक : समीर माहेश्वरी, संपादक : राजेश आर. जोशी* (पी.आर.बी. कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिये जिम्मेदार)
■ रायपुर फोन : 0771-4343434, 2535555-66-77, ■ भुवनेश्वर : 0674-2380511/2380518 ■ बिलासपुर : 07752-230591, 407748, 224563 ■ वर्ष 65 ■ अंक 164 (रजि.नं. 13045/59 आरएनआई), पो. रजिस्टर्ड नं. छ.ग./रायपुर संभाग/61/2022-24 ■ भिलाई फोन : (0788) 2294181, 4030655

सेना सुधार प्राथमिकता

कारगिल विजय दिवसकी २५वीं वर्षगांठ पूरे राष्ट्रके लिए प्रेरक और रोमांचक होनेके साथ ही भारतीय जवानोंके शौर्य और पराक्रमका जीवन्त इतिहास भी है। आजसे २५ वर्ष पूर्व १९९९ में भारतको उत्तरी कश्मीरमें एक अप्रत्याशित कठिन चुनौतीका सामना करना पड़ा। १८ हजार फुटकी ऊंचाईपर पाकिस्तानी घुसपैठसे जो खतरा उत्पन्न हुआ, वह अकल्पनीय था। भारतीय सेनाके जवानोंने अपने जानकी बाजी लगाकर लद्दाखकी महत्वपूर्ण पहाड़ियोंपर कब्जा करनेवाले पाकिस्तानी सैनिकोंको पीछे धकेल दिया और इस युद्धमें शानदार विजय हासिल की। इस विजयको प्राप्त करनेमें हमारे ५२७ जवान शहीद हुए और १३७३ घायल हो गये, जबकि ४०० से ज्यादा पाकिस्तानी मारे गये। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी १९९९ की जंगके नायकोंको श्रद्धांजलि देनेके लिए शुक्रवारको लद्दाखके कारगिल वार ममोरियल गये और लगभग बीस मिनटके सम्बोधनमें उन्होंने पाकिस्तानको कड़ा सन्देश देते हुए आतंकवाद, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, अग्निपथ योजनाकी चर्चा की और विपक्षकी भूमिकापर भी सवाल उठाया। उनका यह कहना सही है कि पाकिस्तान प्राक्सी वारके जरिये चर्चामें बना रहना चाहता है। उसने इतिहाससे कुछ नहीं सीखा। आतंकवादके उसके हर प्रयास विफल रहे। मैं आज जहां खड़ा हूं, वहांसे आतंकवादके आकाओंतक मेरी आवाज पहुंच रही होगी। उनके मंसूबे कभी सफल नहीं होंगे। प्रधान मंत्रीके सम्बोधनमें भारतीय सेनाओंमें सुधारकी बात सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही और उन्होंने कहा कि सेनामें सुधार हमारी पहली प्राथमिकता है। अग्निपथ योजना इसीका हिस्सा है। संसदमें दशकोंतक सेनाको युवा बनानेकी चर्चा होती रही लेकिन इस बदलावकी इच्छाशक्ति नहीं दिखायी गयी। हमारे लिए सेनाका मतलब १४० करोड़ देशवासियोंकी सुरक्षा और शान्तिकी गारण्टी है। अग्निपथ योजनाके जरिये हमने इसे साकार किया है। यह दुर्भाग्यकी बात है कि इतने संवेदनशील विषयको कुछ लोगोंने राजनीतिका विषय बना दिया है। उन्होंने विपक्षपर निशाना साधते हुए यह भी कहा कि ऐसा भ्रम फैलाया जा रहा है कि सरकार पेंशनके पैसे बचानेके लिए यह योजना लेकर आयी है। उन्होंने यह भी आश्वस्त किया कि सेनाओंकी ओरसे किये गये इस फैसलेका मैंने सम्मान किया है। हम राजनीति नहीं राष्ट्रनीतिके लिए काम करते हैं। राष्ट्रकी सुरक्षा सर्वोपरि है। जो भी हो, प्रधान मंत्री मोदी सेनामें सुधारके प्रति जिस प्रकारसे संकल्पित हैं, वह समय सापेक्ष है। सेनामें सभी स्तरोंपर सुधारकी आवश्यकता है। इस दिशामें सतत आगे बढ़नेकी जरूरत है।

राज्योंके हितमें बड़ा फैसला

सर्वोच्च न्यायालयका केन्द्र सरकारको खनिज अधिकारोंपर कर लगानेसे वंचित किया जाना न्यायसंगत और राज्योंके हितमें है। प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी.वाई. चन्द्रचूड़की अध्यक्षतावाली नौ सदस्यीय बड़ी पीठका यह ऐतिहासिक फैसला खदान एवं खनिज सम्पन्न राज्योंको भारी राजस्वको प्रोत्साहित करनेवाला है। पीठका यह स्पष्टीकरण केन्द्र सरकारके लिए बड़ा सबक है कि खनिज अधिकारोंपर कर लगानेका उसे अधिकार नहीं है। इस सम्बन्धमें पीठकी यह टिप्पणी महत्वपूर्ण है कि राज्योंकी खदानों और खनिज वाली भूमिपर कर लगानेका अधिकार राज्योंका है, क्योंकि सम्पदापर कर लगानेकी विधायी शक्ति राज्योंके पास है। पीठकी इस टिप्पणीसे स्पष्ट है कि खनिज सम्पदापर केन्द्रका कर लगाना राज्योंके अधिकारपर अतिक्रमण है। शीर्ष न्यायालयने केन्द्र सरकारकी उन दलीलोंसे असहमति जतायी कि खनन एवं खनिज सम्पदापर कर लगानेके सम्बन्धमें केन्द्रके पास सर्वोच्च शक्तियां हैं और राज्योंकी विधायी शक्ति सीमित है। अपने व्यापक प्रभाववाले फैसलेमें शीर्ष न्यायालयका रायल्टीको कर माननेसे इनकार करना न्यायसंगत है, क्योंकि यह खननका पट्टा या ठेका लगनेके बदलेमें दिया जानेवाला भुगतान है जिसे कर नहीं माना जा सकता है। शीर्ष कोर्टके इस फैसलेसे खनिज एवं खदान सम्पन्न राज्य ओडिशा, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और राजस्थानको फायदा होगा। हालांकि अभी एक पेंच फंसा हुआ है कि यह फैसलेकी तिथिसे लागू होगा या पूर्वकी तिथिसे इसपर शीर्ष कोर्टका फैसला गुरुवारको आयगा। वैसे फैसला चाहे जबसे लागू हो यह राज्योंके हितमें है। इससे खनिज सम्पदा सम्पन्न राज्योंकी राजस्व वृद्धिका मार्ग प्रशस्त हो गया।

लोक संवाद

प्लास्टिकका विकल्प

महोदय,-देशमें खानेकी पैकेजिंगमें प्लास्टिककी थैलियोंके उपयोगको न्यूनतम करनेके उद्देश्यसे ही पिछले कुछ समयमें केले, ताड़ और ऐसे ही बड़े पत्तोंका इस्तेमाल कर फूड पैकेजिंग तैयार करनेके स्टार्टअप सामने आये हैं। विदेशोंमें भी वैज्ञानिकों द्वारा फूड पैकेजिंगके लिए प्लास्टिकका अच्छा और सस्ता विकल्प ढूंढ़नेके प्रयास जारी हैं। डेनमार्कके वैज्ञानिक फूड पैकेजिंगके लिए प्लास्टिककी जगह घासके रेशोंका इस्तेमाल करनेपर काम कर रहे हैं। दरअसल घासके रेशे सौ फीसदी बायोडिग्रेडेबल और डिस्पोजेबल हैं, जिनसे पर्यावरणको कोई नुकसान नहीं होता। चूंकि घाससे बनी डिस्पोजेबल पैकेजिंग सौ प्रतिशत बायोडिग्रेडेबल होगी, ऐसेमें यदि कोई इसे इस्तेमालके बाद बाहर भी फेंक देगा, तब भी यह स्वत: ही नष्ट हो जायगी। डीआरडीओ द्वारा कुछ समय पहले दो निजी संस्थाओंके साथ साझेदारीमें प्लास्टिक बैगके इस्तेमालको कम करनेके उद्देश्यसे प्राकृतिक और पौधोंपर आधारित फूड ग्रेड सामग्रियोंसे पर्यावरण अनुकूल पैकेजिंग बैग विकसित किये गये। यह टिकाऊ और किफायती भी हैं। इनसे पर्यावरणको कोई नुकसान भी नहीं होगा और तीन महीनोंमें ही ये प्राकृतिक रूपसे गल सकते हैं। डीआरडीओके मुताबिक ये बायोडिग्रेडेबल बैग बनाते समय इनकी क्षमता और प्राकृतिक रूपसे गलने जैसे फैक्टर्सका ध्यान रखा गया। ट्रिपल डब्ल्यूकी तकनीक मौजूदा संयंत्रोंको संशोधित कर उन्हें खाद्य अपशिष्टसे लैक्टिक एसिड बनानेमें सक्षम बनाती है, जिसका उपयोग पेय पदार्थों तथा व्यक्तिगत देखभाल जैसे क्षेत्रोंमें किया जाता है और पॉलीलैक्टिक एसिड नामक जैव-आधारित प्लास्टिकके निर्माणमें भी इसका इस्तेमाल होता है। जर्मन स्टार्टअप ब्लूकॉन बायोटेकने जैव-प्लास्टिकके लिए लैक्टिक एसिड उत्पादनकी नयी तकनीक विकसित की है। इसमें पराली, कपास और चुकंदरकी खोईका उपयोग कर जैव-प्लास्टिकको और अधिक टिकाऊ और पेट्रोलियम आधारित प्लास्टिकके मुकाबले किफायती बनाया जाता है। इसी प्रकार एक कनाडाई स्टार्टअप इन दिनों पौधोंसे प्लास्टिकका उत्पादन करता है, जिसे पारम्परिक प्लास्टिककी तुलनामें कम ऊर्जाका उपयोग कर और कम कचरा पैदा करते हुए बनाया जाता है। इसकी विशेषता है कि यह आसानीसे खादमें परिवर्तित हो सकता है, जिससे यह लैंडफिलमें जानेसे बच जाता है। प्लास्टिकको भले ही पूरी तरह नहीं हटा सकते लेकिन इसके वैकल्पिक समाधानोंसे पर्यावरण संरक्षणमें मददगार होगा। -**आर.पी. सिंह, वाया ईमेल।**

रोजगारके मोरचेपर सफल बजट

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमणने बजट घोषणाओंमें रोजगार सृजनपर खासा ध्यान देते हुए कई तरहकी योजनाओंका प्रस्ताव रखा। युवाओंको रोजगारके अवसर मुहैया करानेकी योजनाओंका ऐलान किया। कौशल विकासके साथ इंटर्नशिप और पहली बार नौकरी पानेवालोंको एक महीनेका वेतन सरकारकी तरफसे देनेकी व्यवस्था होगी।

❒ डा. ओ.पी. त्रिपाठी

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमणने बजट घोषणाओंमें महिलाओंके लिए आवासका भी ख्याल रखा है। असलमें, मोदी सरकारकी तीसरी पारीके पहले आम बजटमें रोजगारके लक्ष्योंको प्राथमिकता दी गयी है। दरअसल हालके लोकसभा चुनावोंमें भाजपाके निराशाजनक प्रदर्शनके मूलमें रोजगार संकट बड़ी वजह बताया गया। तभी तीसरी पारीके बजटका मूलमंत्र रोजगार सृजन रहा। कहीं न कहीं युवा मतदाताओंको संतुष्ट करने हेतु बजटमें नौकरियों एवं कौशल विकासको प्राथमिकता दी गयी है। इसी क्रममें विनिर्माण क्षेत्रमें रोजगार सृजन हेतु योजना लायी गयी। महत्वपूर्ण बात यह कि अगले पांच सालोंमें करीब एक करोड़ युवाओंके कौशल विकास हेतु शीर्ष पांच सौ कम्पनियोंमें इंटर्नशिपके मौके मुहैया करानेकी घोषणा की गयी। वही, औपचारिक क्षेत्रके कार्यबलका हिस्सा बननेपर युवाओंको एकमुश्त राशिका योगदान भविष्य निधिमें किया जायगा। मोदी सरकारकी तीसरी पारीमें रोजगारको प्राथमिकताका पता इस बातसे चलता है कि पांच योजनाओंके जरिये रोजगार एवं कौशल विकासके लक्ष्योंको हासिल करनेके लिये दो लाख करोड़ रुपयेका प्रावधान किया गया है। निस्संदेह कौशल विकासको प्राथमिकताकी योजना एक सार्थक कदम है, लेकिन यह सरकारकी प्रतिबद्धता एवं उद्योगोंके सहयोगपर निर्भर करेगा। नयी नौकरियोंकी सृजन क्षमता रखनेवाले सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमोंपर बजटमें विशेष ध्यान दिया गया। यह प्रयास आत्मनिर्भर भारतकी सोचके साथ ही वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ाने और नयी नौकरियां पैदा करनेमें सक्षम होगा। कहीं न कहीं अपने मूल मध्यमवर्गीय वोट बैंकके दृष्टिगत वेतनभोगी कर्मियोंको करमें राहत एवं सेवानिवृत्त कर्मियोंकी पेंशनमें मानक आयकर कटौतीकी सीमा घटाकर संबल दिया गया। इस कदमसे चार करोड़ कर्मियों एवं पेंशनभोगियोंका फायदा होनेकी बात कही जा रही है। वहीं गठबंधन धर्मका पालन करते हुए बिहार एवं आंध्रप्रदेशके सत्तारूढ़ दलोंकी आकांक्षाके अनुरूप विशेष वित्तीय पैकेजोंकी घोषणा अपरिहार्य थी।

ग्रामीण क्षेत्रोंमें डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चरके जरिये किसानोंकी भूमि, ऋण एवं वित्तीय सेवाओंको चुस्त-दुरुस्त बनानेका प्रयास होगा। इस बजटसे एक बात तो तय है कि प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदीकी प्राथमिकताओंमें बदलाव आया है। वहीं, पूंजीगत व्ययमें वृद्धि और राजकोषीय घाटा कम करनेका प्रयास सराहनीय है। भारतमें बजट केवल केन्द्र सरकारका लेखा-जोखा नहीं है। यह सरकारके लिए प्राथमिकता और अपने द्वारा नियोजित संसाधनोंको स्पष्ट करनेका सबसे बड़ा अवसर है। दिलचस्प होगा कि सरकार स्व-रोजगारके निमित्त क्या-क्या कदम उठाती है।

वित्तमंत्रीने बताया है कि बजटमें हम विशेष रूपसे रोजगार, कौशल विकास, एमएसएमई और मध्यम वर्गपर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। वित्तमंत्रीने कहा कि ४.१ करोड़ युवाओंके लिए रोजगार, कौशल विकास और अन्य अवसर उपलब्ध करानेकी योजनाओं और उपायोंके लिए पांच सालकी अवधिमें दो लाख करोड़ रुपयेका प्रावधान किया गया है। इसके अलावा शिक्षा, रोजगार और कौशलके लिए १.४८ लाख करोड़ रुपयेका निर्धारण है। बजटमें स्टार्टअपमें सभी श्रेणीके निवेशकोंके लिए 'एंजल कर' समाप्त करनेकी घोषणा हुई है। साथ ही मोबाइल फोन और सोनेपर कस्टम ड्यूटीमें कुछ कटौती की गयी है। वित्तमंत्रीने बिहारके लिए एक्सप्रेसवे, बिजलीघर, हेरिटेज कारिडोर और नये हवाई अड्डों जैसी बुनियादी ढांचा परियोजनाओंपर ६०,००० करोड़ रुपये खर्च करनेकी घोषणा की है। आंध्र प्रदेशके लिए बहुपक्षीय एजेंसियोंके माध्यमसे वित्तीय सहायतामें १५,००० करोड़ रुपये आवंटित किये गये हैं। फिलहाल राजग सरकारने कृषि क्षेत्रके विकास लिए नया रोडमैप इस बजटके माध्यमसे देशके सामने रखा है। सरकारकी दूसरी पारीमें लम्बे चले किसान आन्दोलनके सबक और नये आन्दोलनकी सुगबुगाहटके बीचमें केन्द्रने किसान एवं कृषिको अपनी प्राथमिकताओंमें रखा है। बजटके जरिये किसानोंकी आयमें स्थिरता, उत्पादकता एवं आर्थिक विकासके लक्ष्यको हासिल करनेपर बल दिया है। खासकर जलवायु परिवर्तनके संकटसे जूझती खेतीको कवच प्रदान करनेकी कोशिश है। दो सालके भीतर एक करोड़ किसानोंको प्राकृतिक खेतीके लिए तैयार करनेकी योजना है। करीब दस हजार जैव निवेश संसाधन केन्द्रोंके जरिये प्राकृतिक खेतीके लक्ष्योंको पाया जायगा। हालके दिनोंमें प्रतिकूल मौसम एवं भंडारण केन्द्रोंके अभावमें उपभोक्ताओंको महंगी एवं किसानको नुकसानका सामना करना पड़ा है। इस मकसदसे सब्जी उत्पादन बढ़ाने और आपूर्ति शृंखलाको सुव्यवस्थित करने हेतु बजटमें किसान उत्पादक संघटनों, सहकारी समितियों और स्टार्टअपको बढ़ावा देनेपर बल दिया गया है। ये संस्थाएं सब्जियोंके संग्रहण, भंडारण और विपणनमें सार्थक भूमिका निभाते हुए किसानोंको बेहतर दाम दिलानेका प्रयास करेंगी। साथ ही फसलोंको होनेवाला नुकसान कम किया जायगा। इसके अलावा उन फसलों एवं बागवानीकी किस्मोंको बढ़ावा देनेका संकल्प है जो जलवायु परिवर्तनके नकारात्मक प्रभावको निष्प्रभावी बनाकर स्थिर कृषि उत्पादन सुनिश्चित कर सकें। साथ ही तिलहन उत्पादनमें आत्मनिर्भरता हासिल करनेके मकसदसे सरसों, मूंगफली, तिल, सोयाबीन एवं सूरजमुखीकी खेतीको बढ़ावा देनेके उपाय बजटमें प्रस्तुत किये गये हैं। जिससे तिलहन उत्पादक किसानोंकी आय बढ़े तथा आयातित खाद्य तेलोंपर देशकी निर्भरताको कम किया जा सके।

मोदी सरकारकी तीसरी पारीका पहला बजट रोजगार सृजनकी सबसे कठिन चुनौतीका सामना कर रहा है। बहुत कम जनसंख्याको सरकारी और कारपोरेट क्षेत्रमें रोजगार मिल सकता है। अधिकांश लोग स्व-रोजगारके माध्यमसे ही सार्थक रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। अनौपचारिकसे औपचारिक हर स्तरके एमएसएमईके क्रमिक लेकिन तेजीसे विकासके रोडमैपको मजबूत करनेकी जरूरत है। नीति समर्थन तंत्रका लक्ष्य विनिर्माण इकाइयोंको अंतरराष्ट्रीय स्तरतक लानेका होना चाहिए ताकि वे वैश्विक प्रतिस्पर्धाका सामना कर सकें और टिकाऊ और स्थायी रोजगार सृजित कर सकें।

सरकारको भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निर्धारित विशेष उल्लेख खाता (एसएमए) तंत्रको संशोधित करनेके लिए कदम उठाने चाहिए और उसकी सीमाको दुगना करना चाहिए। इस कठिन दौरमें जब आपूर्ति शृंखलाएं वैश्विक रूपसे बाधित हैं, छोटे व्यवसायोंसे ३० दिनमें भुगतानकी उम्मीद करना जबकि उनके अपने बिल बड़े कारपोरेट्स और सरकारी एजेंसियोंसे लंबित रहते हैं, बेतुका है। एक एमएसएमई समर्पित बैंककी सख्त जरूरत महसूस की जा रही है जिसकी शाखा हर जिलेमें हो। यह बैंक एमएसएमई ऋण देनेमें सर्वश्रेष्ठ प्रथाओंका स्रोत बने। उच्च निवेश सीमाके कारण अधिकांश एमएसएमई पीएलआई योजनासे बाहर रहते हैं। भारतीय सूक्ष्म और लघु एवं मध्यम उद्यम महासंघने मौजूदा और नयी एमएसएमईके लिए रोजगार आधारित योजनाका प्रस्ताव रखा है। एक बहुस्तरीय शिकायत निवारण और प्रतिक्रिया तंत्रकी भी सख्त जरूरत है। ग्रामीण क्षेत्रोंमें डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चरके जरिये किसानोंकी भूमि, ऋण एवं वित्तीय सेवाओंको चुस्त-दुरुस्त बनानेका प्रयास होगा। इसके बावजूद सरकारको इन योजनाओंके क्रियान्वयनकी बाधाओंको प्राथमिकताओंके आधारपर दूर करना होगा। फिलहाल इस बजटसे एक बात तो तय है कि प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदीकी प्राथमिकताओंमें बदलाव आया है। वहीं पूंजीगत व्ययमें वृद्धि और राजकोषीय घाटा कम करनेका प्रयास सराहनीय है। भारतमें बजट केवल केन्द्र सरकारका लेखा-जोखा नहीं है। यह सरकारके लिए अपनी प्राथमिकताओंकी घोषणा करने, अपना रोडमैप, संस्थागत ढांचा और अपने द्वारा नियोजित संसाधनोंको स्पष्ट करनेका सबसे बड़ा अवसर है। यह देखना दिलचस्प होगा कि सरकार स्व-रोजगारके निमित्त क्या-क्या कदम उठाती है।

चिन्ताजनक है लोकतंत्रमें हिंसा

भारतने अमेरिकाके पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्पपर हुए हमलेकी कड़ी निन्दा की है और कहा कि राजनीति और लोकतंत्रमें हिंसाका कोई स्थान नहीं है। लोकतंत्रमें राजनीतिक हिंसाका उमड़ता प्रभाव पूरे विश्वके लिए चिन्ताजनक है।

❒ डा.वरिंद्र भाटिया

आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशनके एक पेपरके मुताबिक लोकतंत्र और हिंसाका अपवित्र और गहन संबंध है। यहांतक कि दुनियाके सबसे परिपक्व लोकतंत्र भी इस तरहके गहरे संबंधको खत्म करनेमें असमर्थ रहे हैं। उदाहरणके लिए १९८० के दशकके उत्तरार्ध और २००० के दशकके बीच ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, नीदरलैंड, इटली और जर्मनी जैसे पश्चिमी यूरोपके देशोंमें चरमपंथी समूहोंकी ओरसे राजनीतिक हिंसाका विस्फोट देखा गया। हालके वर्षोंमें दुनियाने यूनाइटेड किंगडम (यूके) में ब्रेक्सिट मुद्दे, संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) में ब्लैक लाइव्स मैटर आन्दोलन और २०२० और २०२४ के अमेरिकी चुनावोंपर राजनीतिक हिंसाकी घटनाएं देखी हैं। भारत जैसा दुनियाका सबसे बड़ा लोकतंत्र भी राजनीतिक हिंसासे कभी अलग नहीं रहा है। जहांतक देशी लोकतंत्रके राजनीतिक कटु सत्यका सवाल है तो भारतमें लोकतांत्रिक शासनकी जो प्रणाली विकसित हुई है, चाहे कोई माने या न माने, वह अब सेवाकी बजाय सत्ता और शक्ति केंद्रित हो गयी है। पश्चिमके विकसित देशोंमें जन-प्रतिनिधि लोगोंकी सेवा करनेके लिए चुने जाते हैं, जबकि भारतमें लोगोंपर शासन करनेके लिए जन-प्रतिनिधि चुने जाते हैं।

चुनाव जीतनेपर मिलनेवाली असीमित सत्ता और पैसा समूची राजनीतिक और चुनावी प्रक्रियाको किसी न किसी रूपमें भ्रष्ट और हिंसक बना रहे हैं। पश्चिम बंगाल, बिहार जैसे राज्योंमें हिंसक राजनीतिक संघर्ष अकसर देखनेको मिलते हैं। लोकतंत्रकी व्यवस्था कमालकी है। आज भी लोकतंत्र शासन व्यवस्थाके उपलब्ध तरीकोंमेंसे एक बेहतर विकल्प माना जाता है, क्योंकि यह बुनियादी मानवीय मूल्योंके आधारपर पनपता है। लोकतंत्रका मतलब होता है जवाबदेहीके साथ समाजके हितमें समाजके साथ मिलकर निर्णय लेना और उन्हें लागू करना। वैसे तो देश चलानेके लिए कई तरहकी व्यवस्थाओंके विकल्प मौजूद रहे हैं, लेकिन उन सबमें लोकतंत्रको सबसे बेहतर व्यवस्था माना गया है, क्योंकि इस व्यवस्थामें अलग.अलग विचारों, मतों, परिस्थितियोंको ध्यानमें रखकर निर्णय लिये और लागू किये जाते हैं। यह केवल संख्याओं या बहुमतसे चलनेवाली व्यवस्था नहीं है। बहुमतके निर्णयको लागू करनेसे पहले यह देखना होता है कि व्यापक समाजके हितमें क्या है। कहीं इससे अन्याय तो नहीं हो रहा है। कहीं किसीके साथ भेदभाव या शोषण तो नहीं हो रहा है। याद रहे कि लोकतंत्रमें मूल्यों, उसूलों, मानकोंका सबसे ज्यादा महत्व होता है। यदि बहुमतवाली व्यवस्था मूल्योंसे भटक कर निर्णय लेने लगे तो परिवार, समाज और देशको बहुत नुकसान पहुंचता है। लोकतांत्रिक समाज ज्यादा गहरा और स्थिर होता है। यदि कभी देशके ऊपर कोई संकट आता है, तब लोकतांत्रिक समाज इससे निबटनेका काम केवल सरकारपर नहीं छोड़ देता है, बल्कि लोग खुद भी समाधान खोजनेमें जुट जाते हैं। लोकतंत्रमें राजनीतिक हिंसाकी मौजूदगीका एक बड़ा कारण संवादहीनता भी है। लोकतंत्रकी पहली और सबसे बड़ी जरूरत संवाद है। यह एक ऐसा भावनात्मक तत्व होता है, जो लोगोंको जोड़ता है। संवादसे ही एक-दूसरेके प्रति स्वीकार्यता पैदा होती है। जब भी लोकतंत्रको तोडना होता है, तब सबसे पहले संवादको तोड़ा जाता है। कोई भी व्यक्ति जब अपना मत व्यक्त करता है, तब हिंसासे, डरसे, भयसे, दबावसे उसे अपना मत वापस लेनेके लिए मजबूर किया जाता है। यही राजनीतिक हिंसाका मूल तत्व होता है। आज अमेरिकी लोकतंत्रको लेकर हमारी सोच सवालिया निशान लगा रही है। असलमें डोनाल्ड ट्रम्पपर हमला अमेरिकामें नफरतकी बुनियादपर बनाये जा रहे अमरिकी समाजकी भयानक तस्वीर है। एक ताजा अमेरिकन सर्वेमें पाया गया कि दस प्रतिशत लोग बल प्रयोगके जरिये भी ट्रम्पको रास्तेसे हटानेके पक्षधर हैं, तो सात प्रतिशत ऐसे लोग भी हैं जो हर ताकतका इस्तेमाल कर ट्रम्पको सत्तामें लानेके समर्थक हैं। यह रस्साकशी भी वहां राजनीतिक हिंसाके लिए एक कारक हो सकती है। शिकागो विश्वविद्यालयके प्रोफेसर रॉबर्ट पेप, जो शिकागो प्रोजेक्ट ऑन सिक्योरिटी एंड थ्रेट्सके डायरेक्टर भी हैं, ने नेशनल सर्वेका हवाला देते हुए कहा कि दस प्रतिशत अमेरिकी वयस्क नागरिक, जिनमेंसे एक-तिहाईके पास बंदूकें हैं, वह इस बातसे सहमत हैं कि डोनाल्ड ट्रम्पको राष्ट्रपति बननेसे रोकनेके लिए बलका प्रयोग उचित है। लोकतंत्रमें राजनीतिक हिंसाकी मौजूदगी किसी भी शासकीय व्यवस्थाके लिए ठीक नहीं है। भारतमें हो रही पॉलिटिकल किलिंग्सकी संख्या चिंताजनक है। देशमें २०१७ से २०१९ के बीच, यानी महज दो सालके भीतर करीब २३० हत्याएं राजनीतिक कारणोंसे हुईं। इनमें सबसे अधिक ४९ हत्याएं झारखंडमें हुईं। इसके बाद २७ हत्याएं पश्चिम बंगालमें हुईं और २६ हत्याएं बिहारमें हुईं। ये आंकड़े सरकारने लोकसभामें रखे थे। केरलमें भी राजनीतिक हत्याओंके खूब मामले सामने आये हैं। २००६ से २०२१ के बीच १२५ पालिटिकल मर्डर हुए। इनमेंसे ३० मर्डर तो २०१६ से २०२१ के बीच ही हो गये। पश्चिम बंगालमें भी बीते कई सालोंसे स्थिति चिन्ताजनक है। पूरे विश्वमें राजनीतिक हिंसाको रोकनेके लिए राजनेताओंको आगे आना होगा। मीडियाकी शिक्षामें टू स्टेप फ्लो मॉडल नामकी थ्योरी पढ़ाई जाती है। इस थ्योरीमें कहा गया है, मास मीडियाके मुकाबले लोग ओपिनियन लीडर्स (नेता) की बातोंसे प्रभावित होते हैं। इसलिए राजनीतिक हिंसाको रोकनेके लिए यह भी कहना जरूरी है कि विश्वके समस्त राजनेता संयमके साथ शब्दोंका इस्तेमाल करें। राजनीतिक हिंसाके व्यक्तियों, समुदायों और समाजोंपर दूरगामी परिणाम होते हैं। यह सामाजिक सामंजस्यको कमजोर करती है, संस्थाओंमें विश्वासको कम करती है और राजनीतिक स्थिरताको बाधित करती है।

इसके प्रभाव तत्काल और दीर्घकालिक दोनों हो सकते हैं। व्यक्तिगत स्तरपर, राजनीतिक हिंसासे जान-मालकी हानि, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक आघात, विस्थापन और आजीविकामें व्यवधान होता है। हिंसासे प्रभावित समुदाय सामाजिक विभाजन, अविश्वास और टूटे हुए रिश्तोंका अनुभव करते हैं। आर्थिक गतिविधियां अकसर बाधित होती हैं, जिससे गरीबी, बेरोजगारी और आर्थिक गिरावट आती है। राजनीतिक हिंसाका शासन और मानवाधिकारोंपर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। यह कानूनके शासनको चुनौती देती है, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओंको कमजोर करती है और अभिव्यक्तिकी स्वतंत्रताको प्रतिबंधित करती है। राजनीतिक हिंसाके माहौलमें मानव अधिकारोंका उल्लंघन, जैसे कि पीड़ा, गायब होना और न्यायेतर हत्याएं, आम बात हो जाती हैं। इसके अलावा राजनीतिक हिंसाके अंतरराष्ट्रीय परिणाम हो सकते हैं। यह क्षेत्रीय अस्थिरताको बढ़ावा दे सकती है, शरणार्थियोंके प्रवाहको बढ़ा सकती है और उग्रवाद-आतंकवादके लिए प्रजनन आधार प्रदान कर सकती है। राजनीतिक हिंसाके अतिशय प्रभाव पड़ोसी देशोंको बाधित कर सकते हैं, अंतरराष्ट्रीय संबंधोंको खराब कर सकते हैं और शांति निर्माणके प्रयासोंमें बाधा डाल सकते हैं। राजनीतिक हिंसासे निबटनेके लिए एक व्यापक दृष्टिकोणकी आवश्यकता है, जो इसके मूल कारणोंसे निबटे और स्थायी शांतिको बढ़ावा दे। कानूनका शासन मजबूत हो और संवाद-सुलहको बढ़ावा मिले।

आत्माकी परिपूर्णता

❒ श्रीराम शर्मा

आत्माकी परिपूर्णता प्राप्त कर परमात्मामें प्रतिष्ठित होनेके दो मार्ग हैं। एक प्रयत्नपूर्वक प्राप्त करना और दूसरा अपने आपको सौंप देना। प्रथम मार्गमें विभिन्न साधनाएं करनी पड़ती हैं, चिंतन, मनन, ज्ञान के द्वारा विभिन्न उपक्रमोंमें सचेष्ट रहना पड़ता है। दूसरी ओर सम्पूर्ण भावसे परमात्माके प्रति समर्पण करना पड़ता है। तरह-तरहकी साधनाएं, विधि-विधानोंका अविलंबन लेकर ईश्वरप्राप्तिकी आकांक्षा रखनेवाले बहुत मिल सकते हैं, किन्तु संपूर्ण भावसे अपने परमदेवके समर्पण हो जानेवाले, जीवनमें सर्वत्र ही परमात्माको प्रतिष्ठित करनेवाले, अपनी समस्त बागडोर प्रभुके हाथों सौंप कर उसकी इच्छानुसार संसारके महाभारतमें लड़नेवाले अर्जुन विरले ही होते हैं। अर्जुन स्वयं एक नैष्ठिक साधक, दृढ़व्रती थे। जीवनमें कठोर साधनाओं, तपश्चर्याओंके द्वारा उन्होंने अनेकों उत्कृष्ट सफलताएं अर्जित की थीं। किन्तु इन सबके बावजूद रणक्षेत्रमें हुए विषाद, खिन्नताको वे शांत न कर सके, न अपने कर्तव्यका निर्धारण ही। मोह और विषादसे खिन्नमना अर्जुन अंतमें भगवनानके चरणोंमें गिरकर कहने लगे। कार्पण्यदोषोपहतस्वभाव: पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढ़चेता:। यच्छ्रेय: स्यानिश्चितं ब्रूहि तन्मे, शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम॥ अर्थात्-हे प्रभो! कायरता रूपी आंतरिक दोषके द्वारा मेरा साहसिक स्वभाव आहत हो गया। मैं धर्म सम्मूढ़, हूं। मैं आपकी शरणमें आया आपका शिष्य हूं। जिसमें मेरा निश्चित रूपसे हित है, वह मुझे बताइये। जीवनभरकी साधना, साधु संगति, उपासना, ज्ञानार्जनके बावजूद संत कबीर अपने आपमें संतुष्ट नहीं हुए। अंतमें अपने समस्त जीवनको प्रभु समर्पण करनेमें ही उनको जीवनका संतोष लाभ मिला। प्रभुप्राप्तिकी प्रमुख बाधा विभिन्न साधनाओं, व्रत, तपश्चर्याओंमें अपनी शक्तिका परिचय देकर अपनी साधनाका हिसाब लगानेवाले साधकोंमें एक प्रकारका विशेष सात्विक अहंकार पैदा हो जाता है और यही एक दीवार बनकर आत्मा और परमात्माके बीच अवरोध खड़ा कर देता है। इसे ही शास्त्रकारोंने ज्ञानजन्य अंधकार कहा है। यही कारण है कि ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी, सिद्ध, योगी बनना दूसरी बात है, किन्तु सम्पूर्ण भावसे परमात्माकी उपलब्धि करना, उसमें प्रतिष्ठित होना सर्वथा भिन्न है। विभिन्न साधनाओंके रहते भी अपने समस्त कर्तव्य, अहंकार, निजत्वकी भावनाओंको मिटाकर समस्त जीवनको प्रभु चरणोंमें समर्पण किये बिना परमात्मामें प्रतिष्ठित होना संभव नहीं है। समर्पण द्वारा परमात्मामें प्रतिष्ठित होनेका सरल और सहज मार्ग है अपनी शक्ति सामर्थ्य, कर्तव्यके अभिमानका त्याग करना और सम्पूर्ण भावसे परमात्माको अपने आपका निवेदन समर्पण करना। तब सर्वत्र ही सबके साथ समानता, नम्रता, उदारता आत्मीयताका संबंध बढ़ता जाता है।

क्या पेंशनरोंकी सिसकियां सुनेगी सरकार

❒ डा. सुशील कुमार

पेंशनर्स धरतीके सबसे सुखी जीव होते हैं, परन्तु तबतक जबतक उन्हें उनकी पेंशन नियमित रूपसे मिलती रहती है। एक कहावत है कि एक बार सरकारी नौकरी लग जाय तो पेंशन लग गयी। इसका अभिप्रेत अर्थ यह भी है कि अब कोई चिंताकी बात नहीं, काम करो या न करो। वैसे तो जीनेका अधिकार सभीका है, परन्तु क्या पेंशनका अधिकार सभीका नहीं होना चाहिए। एक देश एक शिक्षा नीति, वन रैंक वन पेंशन, एक राष्ट्र एक चुनाव जैसे नारे प्राय: हवामें उछलते दिखाई देते हैं, परन्तु क्या कभी सुना है कि देशमें एक-सी पेंशन हो। पेंशनकी बात करना बर्रके छत्तेमें हाथ डालना है, सो मैं अपनी बिरादरीकी ही बात करूंगा, भले ही मेरे मनमें यह विश्वास दृढ़तासे जमा हुआ है कि देशके सभी नागरिकोंको जीवन निर्वाह योग्य पेंशन मिलनी ही चाहिए। सरकारी और सरकारी जैसी नौकरीकी बातें जब कानमें पड़ने लगती हैं तो लगता है मानो किसीने कानोंमें शीशा डाल दिया हो। कृषि महाविद्यालय, पालमपुरकी स्थापना अगस्त, १९६६ में हुई। कृषि विश्वविद्यालय बना प्रथम नवंबर सन् १९७८ को और सन् १९७० से सन् ७८ तक महाविद्यालय हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालयका अंग रहा। तब पेंशनका प्रावधान नहीं था, कंट्रीब्यूटरी प्रोविडेंड फंडका प्रावधान था। फिर धीरे-धीरे लोगोंका ध्यान पेंशनकी ओर गया, क्योंकि सरकारी सेवामें तो शुरूसे ही पेंशन थी। कृषि विश्वविद्यालयमें पेंशनकी अलख जगानेवाले अन्य लोगोंके साथ-साथ अधीक्षक सोम दत्त शर्माका नाम प्रमुख रूपसे कौंधता है। वह बड़ी बड़ी रिप्रेजेंटेशन बनाकर राजनेताओंको देते रहे और यूनिवर्सिटीके माध्यमसे भी सरकारको भिजवाते रहे। उनके सर्विस कालमें तो पेंशन संभव नहीं हो सकी, परन्तु बीसवीं शताब्दीके अंतिम चरणमें यह योजना साकार हो गयी और यूनिवर्सिटी कर्मचारियों और अधिकारियोंकी बल्ले-बल्ले हो गयी। पेंशन या सीपीएफके लिए आप्शंज ली गयीं। अधिकांश लोगोंने पेंशनके पक्षमें निर्णय लिया और लगभग अस्सी नब्बे लोगोंने सीपीएफ चुना, क्योंकि उस समयकी गणनाके अनुसार सेवानिवृत्तितक राशि निन्यानवे लाखतक बनती दिखाई देती थी, बादमें उनका क्या हुआ, प्रबुद्ध लोग जानते हैं। उन्हें कोर्टकी शरणमें जाना पड़ा। उल्लेखनीय है कि जब कृषि विश्वविद्यालयका गठन हुआ, उस समयके एक्ट तथा स्टैच्यूट्समें नियम ९:२७ में लिखा हुआ है कि यूनिवर्सिटीके कर्मचारी हिमाचल सरकारके कर्मचारियोंके समान होंगे अर्थात् सेवाके नियमों, अधिनियमोंमें बराबरीका प्रावधान बना रहेगा। परन्तु ज्यों-ज्यों आर्थिक कठिनाइयां बढ़ती जा रही हैं, सारी मार पेंशनरोंपर पड़ने लगी है। अभीतक कुल १७३४ पेंशनर्ज हैं, जिनमेंसे लगभग एक हजार पचास पंजीकृत सभाके सदस्य हैं। जो सेवारत कर्मचारी हैं, उनकी संख्या पेंशनर्जसे भी कम है। दस-बारह वर्ष पहले किन्हीं कारणोंसे पालमपुर कृषि विश्वविद्यालयके पेंशनर्जकी पेंशन छह-सात महीनेके लिए बंद हो गयी थी। उस समय सभीने उच्च न्यायालय तथा हिमाचल विधानसभाके माध्यमसे मासिक पेंशन सुनिश्चित करवा ली थी, परन्तु पेंशनके अतिरिक्त जो लाभ अर्थात् नये वेतनमानके अनुसार संशोधित धनराशि, बकाया, कम्प्यूटेशन, लीव एन्कैशमेंट, मेडिकल बिलोंका भुगतान, पेंशन भत्तेमें उम्र ७५, ७०, ७५ के अनुसार वृद्धि समयपर न मिलना पेंशनर्जको परेशान करता है। सन् २०२२ से मेडिकल बिलोंका रुका भुगतान रोगग्रस्त पेंशनर्जको सिसकनेके लिए विवश कर देता है। क्या कोई इन सिसकियोंको सुननेका प्रयास भी करता है। पेंशनर्जके पूरे भुगतानके लिए जितना धन चाहिए, उससे बीस-पचीस करोड़ प्रति वर्ष कम मिलता है। एरियर लम्बित होते जाते हैं। वित्त नियंत्रक और कुलपति पालमपुरसे शिमलाकी सड़कें नापते रहते हैं। फिर पेंशनर्ज सभा बार-बार माननीय उच्च न्यायालय, शिमलामें याचिकाएं डालती रहती है और उसे मेरिटके आधारपर राहत मिलती भी है। और यदि यूनिवर्सिटी नियमानुसार समयपर पेंशन और दूसरे लाभ देती रहे तो सभा कोर्टमें क्यों जाय। दोनों तरफका कोर्ट खर्चा और समयकी बरबादी बच सकती है। अब भी कई याचिकाएं हाईकोर्टके विचाराधीन हैं। प्राय: सुननेमें आता है कि विश्वविद्यालयको वार्षिक ग्रांट पूरी नहीं मिलती और कभी-कभी तो यह भी कहा जाता है कि जेनरेट यौर ओन फंड्ज जैसे कोई उकताया हुआ बाप अपने बेटेसे कहे, अपना कमाओ और खाओ। ऐसे ही कुछ यूनिवर्सिटीके साथ हो रहा है। कृषि शिक्षाको समर्पित यह यूनिवर्सिटी स्टेट यूनिवर्सिटी है। इसमें विद्या प्रसार प्रमुख लक्ष्य है। प्रसार और अनुसंधान भी इसके लक्ष्योंमें है, परन्तु यह व्यापारिक स्थल नहीं है। फिर भी पेड सीट्ससे कुछ धनार्जन होता है। कुछ विभागोंमें रिवाल्विंग फंड भी होता है, परन्तु उससे इतना धनार्जन नहीं होता कि यूनिवर्सिटीका व्यय पूरा हो जाय। आश्चर्य होता है कि विश्वविद्यालयके लिए इंफ्रास्ट्रक्चर विकासके लिए तो सेंटरसे खूब धन आता है, परन्तु ह्यूमन रिसोर्सके लिए बहुत कम, सरवाइव करना भी बहुत मुश्किल हो रहा है। और परिणामत: यूनिवर्सिटीको जब कुछ देना होता है या कोई बकाया देना होता है तो प्रबंध बोर्डमें निर्णय ले लिया जाता है कि विद इमिडिएट इफेक्ट। जब पैसा होगा तो बकाया दे दिया जायगा। न पैसा होगा, न बकाया दिया जायगा, प्राय: यही स्थिति बनी रहती है और पेंशनर छटपटाते रहते हैं, सिसकियां भरते हैं और अस्पतालके लाखोंके बिल उनका मुंह चिढ़ाते रहते हैं। कुछ समस्याएं इसलिए भी पैदा होती हैं कि वेतन आयोगोंकी सिफारिशें समयपर लागू नहीं की जातीं, परिणामस्वरूप एरियरका बकाया बढ़ता जाता है और पेंशन यूनिवर्सिटीके लिए टेंशन बन जाती है। पेंशनर्जकी सभा वेलफेयर सभा है और इसका प्रयत्न रहा है कि पेंशनर्जकी समस्याओंका शांतिपूर्ण समाधान ढूंढ़ा जाय। अति होनेपर ही सभा हाईकोर्टका द्वार खटखटाती है, परन्तु सरकारकी उदासीनता अखरती जरूर है। पेंशनर्जकी सिसकियोंको सरकारको सुनना चाहिए, यह स्वस्थ और सदाशयपूर्ण पग होगा। यदि भविष्यमें ऐसा नहीं होगा तो फिर बूढ़े सत्तर या अस्सी पारके पेंशनर एसडीएम पालमपुरसे अनुमति लेकर चढ़ियार रोडपर धरना देनेसे भी गुरेज नहीं करेंगे।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

संपादकीय

बजट : रोजगार के शॉर्ट टर्म उपाय!

केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन के सातवें बजट में लोगों को सबसे ज्यादा उम्मीदें इस बात को लेकर थीं कि सरकार युवाओं को रोजगार देने की दृष्टि से क्या घोषणा करने वाली है। लेकिन सरकार ने बजट में जो किया, वह रोजगार बढ़ाने के अल्पकालिक उपायों के रूप में है। इससे सीधे तौर पर बहुत कम युवाओं को रोजगार मिलने वाला है। सरकार ने 4.1 करोड़ युवाओं को देश की 500 नामी कंपनियों में इंटर्नशिप कराने और इस अवधि में उन्हें साल या दो साल के लिए स्टायपेंड देने की बात कही है। जबकि आम जनता चाह रही थी कि बजट में केन्द्र कितने लोगों को नौकरियां देने वाली है, इसकी घोषणा करे। हकीकत में वैसा कुछ भी नहीं हुआ। लगता है कि सरकार लोकसभा चुनाव के निर्णायक मुद्दे बेरोजगारी को अभी भी हल्के में ही ले रही है। इस मोर्चे पर उसके पास हवाई वादे ही ज्यादा है। मोदी 1.0 में केन्द्र सरकार में कुछ भर्तियां हुईं। उसके बाद मामला ठप सा है। जबकि खुद मोदी सरकार द्वारा लोकसभा में दिए जवाब में माना गया है कि केन्द्र सरकार के करीब 10 लाख पद खाली पड़े हैं। ये स्वीकृत पद है। लेकिन सरकार इन्हें भरने के बजाए बाकी 75 फीसदी स्टाफ से ही काम चला रही है। जमीनी हकीकत यह है कि कई विभागों में बेहद कम स्टाफ में काम चलाया जा रहा है, क्योंकि नियुक्तियां ही नहीं हो रही हैं। मोदी सरकार ने पहले कार्यकाल में हर साल दो करोड़ रोजगार देने का वादा किया था, जो 10 साल में भी अधूरा है। सरकार का सारा जोर अब अमेरिका की तर्ज पर निजी क्षेत्र को बढ़ावा देकर रोजगार सृजित कराने और स्वरोजगार पर है। निजी क्षेत्र की नौकरियों में समस्या स्थायित्व की है और औसत लोगों के लिए वहां गुंजाइश कम है। ये कहां जाएं। आज की तारीख में अधिकांश युवा पक्की नौकरी के ख्वाहिशमंद हैं। आज देश में बेरोजगारी की दर 8.6 फीसदी है। यानी देश की लगभग 10 करोड़ से अधिक बेरोजगारों की फौज है। सरकार जिन 4.1 करोड़ लोगों को इंटर्नशिप की बात कर रही है, वह पांच साल के लिए है। यह ट्रेनिंग एक या दो साल की होगी। यानी एक साल में औसतन एक कंपनी को 16 हजार लोगों को ट्रेनिंग देनी होगी। इतनी सुविधा बहुत कम कंपनियों के पास है। अगर वो ट्रेनिंग दे भी दें तो उन्हें नौकरी की कोई गारंटी नहीं है। क्योंकि कंपनियां खुद जरूरत के हिसाब से ही स्टाफ रखती हैं और अब तो निजी क्षेत्र में खर्च करने के लिए एआई को बढ़ावा दिया जा रहा है। ऐसे में ट्रेंड लोगों को काम कौन और कितना देगा, यह अहम सवाल है। कहीं ऐसा न हो कि ये इंटर्न निजी क्षेत्र के अग्निवीर साबित हों। वित्त मंत्री ने बजट में रोजगार को बढ़ावा देने के लिए जो कुछ किया है, वह रोजगार को प्रोत्साहन देने के उपाय के रूप में है न कि सीधे नौकरी देने के रूप में। नौकरियां बढ़ाने के लिए बजट में जो ऐलान किए गए हैं, उनके मुताबिक़ पहली बार नौकरी हासिल करने वाले कर्मचारियों को एक महीने की सैलरी सरकार उनके बैंक खाते में ट्रांसफर करना भी बहुत सतही उपाय है। कंपनी किसी भी कर्मचारी को एक महीने के लिऐ क्यों रखेगी? जिसको रखेगी, उसे हर माह वेतन देना होगा। ऐसे में नए कर्मचारी को केवल एक माह का वेतन सरकारी खजाने से देना तात्कालिक लुभावना टोटका है। एक माह की तनख्वाह सरकारी खजाने से निकलवाने के लिए नियोक्ता को कितनी मशक्कत करनी पड़ेगी, यह समझा जा सकता है। ऐसे में कितने उद्योगपति इस पचड़े में पड़ना चाहेंगे, यह भी बड़ा सवाल है।

महाराष्ट्र की सियासत: प्याली में तूफान या....?

मुंबई में पवार साहेब और भुजबल की भेंट से एक दिन पहले पवार परिवार के दुर्ग बारामती में बड़ा जमावड़ा हुआ। इस जमावड़े ने इस बात की पुष्टि कर दी कि चाचा-भतीजे के बीच सुलह- समझौते की कोई संभावना नहीं है। 14 जुलाई को बारामती में उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने अपने विधानसभा चुनाव का बिगुल फूंका। इस मौके पर प्रफुल्ल पटेल, छगन भुजबल, सुनील तटकरे और धनंजय मुंडे समेत एनसीपी के प्रमुख नेता उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि अजित पवार सूबे के वित्तमंत्री भी हैं। उन्होंने लोगों से विपक्ष के बहकावे में नहीं आने की अपील की और संविधान में संशोधन जैसी बातों को कोरी गप्प बताया।

डॉ. सुधीर सक्सेना

फिलवक्त महाराष्ट्र अशांत हैं; सामाजिक और राजनितिक दोनों दृष्टियों से अशांत। यह अशांति वहां गहराती जा रही है। एक ओर मनोज जरांगे पाटिल का आंदोलन और दूसरी ओर लोकसभा के चुनावी नतीजों के बाद बनते- बिगड़ते सियासी समीकरण। सबकी प्रतिष्ठा दांव पर है। न सिर्फ मोदी और शाह, बल्कि उनके क्षेत्रीय क्षत्रप देवेन्द्र फडनवीस के लिए करो या मरो का सवाल है। यही स्थिति एकनाथ शिंदे और अजित पवार की है। उनके समक्ष अस्तित्व का विषम संकट हैं। शरद पवार और उद्धव ठाकरे के लिए यह उनके जीवन की कठिनतम अग्निपरीक्षा है। महाराष्ट्र की राजनीतिक रणभूमि का काबिले-गौर और दिलचस्प पहलू यह है कि हर योद्धा आहत है और व्रणों, दंश और पीड़ा के साथ जी रहा है। धुकधुकी सत्ता पक्ष और प्रति-पक्ष दानों शिविरों में है, लेकिन सत्ता शिविर यानि महायुति के अधिपतियों को यह डर सता रहा है कि कहीं उनके कुछ योद्धा बहिर्गमन कर प्रतिपक्ष यानि महागठबंधन के शिविर में न चले जाए।

इसमें शक नहीं कि महाराष्ट्र के नतीजे अप्रत्याशित रहे हैं। बीजेपी को ऐसे परिणामों की कतई उम्मीद नहीं थी। जाहिर है कि सहयोगी दल भी इसी गुमान में थे कि उनका बाल बांका न होगा। मगर नतीजे अलहदा आये। जिसे बीजेपी लगातार सियासी बट्टे-खाते में डाल रही थी, वहीं कांग्रेस सबसे बड़े दल के तौर पर उभरी। सबसे बड़ी बात यह कि महाराष्ट्र के मतदाताओं ने शरद पवार और उद्धव ठाकरे की दांव पर लगी प्रतिष्ठा की लाज रखी। यकीनन नतीजो ने इन दोनों नेताओं के लिए संजीवनी का काम किया। नतीजतन उद्धव की महत्वाकांक्षाएँ जहाँ नये सिरे से कुलांचे भरने लगी, वहीं अस्सी - पार के शरद पवार नये सिरे से मोर्चा बांधने की मुहीम पर निकल पड़े हैं। दो घाटों के बीच बह रही महाराष्ट्र की राजनीतिक धारा का प्रवाह इन दिनों काफी तेज है। इस प्रवाह को और गति देने का काम किया 15 जुलाई को काबीना मंत्री छगन भुजबल की शरद पवार से बैठक ने। छगन कभी बाल ठाकरे तो कभी शरद पवार के सहयोगी रह चुके हैं और उनकी ऊंगली सूबे की नब्ज पर रहती है। 15 जुलाई को छगन मुंबई में 'साहेब' के सिल्वर ओक स्थित आवास पर गये। महारथी शरद और रथी छगन की यह मुलाकात करीब 90 मिनट चली। बताया गया कि छगन चाहते हैं कि पवार साहेब मराठा और ओबीसी के आरक्षण पर जारी गतिरोध को हल करने में मदद करें। इसके एक दिन पहले ही महा विकास आघाड़ी ने आरक्षण पर सर्वदलीय बैठक का बहिष्कार किया था। आरक्षण को लेकर मराठा बिरादरी और ओबीसी समुदाय के बीच अर्से से तलवारें खिंची हुई हैं। मराठा जहाँ ओबीसी के अंतर्गत आरक्षण चाहते हैं, वहीं ओबीसी चाहते हैं कि उनके कोट से छेड़छाड़ नहीं हो। भुजबल ने कहा कि वह बहैसियत मंत्री या सियासत के लिए पवार साहेब से मिलने नहीं गये, बल्कि भयावह संकट के समाधान के लिए आये हुए हैं। स्थिति इतनी विकट है कि ओबीसी और मराठे आमने-सामने है। वे एक दूसरे के प्रतिष्ठानों का बायकॉट कर रहे हैं। पवार ने अखबारनवीसों से कहा कि उन्हें सरकार के प्रतिनिधियों की मराठा लॉबी के मनोज जरांगे पाटिल और ओबीसी-प्रतिनिधि लक्ष्मण हाके से बातचीत के ब्यौरे की कोई जानकारी नहीं है, लिहाजा वह तुरंत हस्तक्षेप नहीं कर सकते। किंतु वह मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से इस बाबत चर्चा कर बातचीत से सुलह की कोशिश करेंगे।

अपने राजनीतिक फैसलों को लेकर चर्चित रहे छगन भुजबल ने यह भी कहा कि इस मुलाकात में कोई लुकाछिपी नहीं है और वह इस पेचीदा संकट के समाधान के लिए किसी के भी दरवाजे पर जा सकते हैं। लेकिन इस बैठक ने कयासों के मद्धिम अलाव में सूखी छिपटियां डाल दी। छगन भुजबल ने कैफियत दी कि वह इस बैठक के बारे में अजित पवार और अन्य एनसीपी नेताओं को जानकारी देकर मिलने आये हैं। मगर यह किसी से छिपा नहीं हैं कि वह पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से खुश नहीं हैं। वजह यह कि उन्हें नाशिक से टिकट नहीं दिया गया और न ही उनके पुत्र को उपकृत किया गया।

जहां तक भुजबल को लेकर औरों के रवैये का प्रश्न है, भुजबल विवादास्पद नेता के तौर पर उभरे हैं। पार्टी और महायुति के भीतर भी उन्हें शक की नजर से देखने वालों की कमी नहीं है। आरक्षण के मुद्दे पर परिदृश्य में तेजी से उभरे जरांगे पाटिल भुजबल की भूमिका से खासे खफा हैं, वह कहते भी हैं कि विस्फोटक स्थिति के लिये भुजबल जिम्मेदार हैं। क्योंकि भड़काऊ भाषा का प्रयोग सबसे पहले उन्होंने ही किया। उन्होंने उसी प्लेट में थूका, जिसमें खाया। डिप्टी सीएम देवेन्द्र फडनवीस ने उन्हें जेल जाने से बचाया और काबीना मंत्री बनाया, लेकिन उन्होंने उन्हें भी नहीं बख्शा। उनके बारे में उन्होंने अनाप-शनाप बोला और पीएम मोदी पर भी लांछन लगाया। दिलचस्प तौर पर जरांगे पाटिल उपमुख्यमंत्री फडनवीस के बारे में भी अच्छी राय नहीं रखते। वह फडनवीस को संकट के समाधान में रोड़ा मानते हैं। गौरतलब है कि जरांगे पाटिल ने 13 जून को मराठा आरक्षण के मुद्दे पर अपना अनिश्चितकालीन अनशन एक माह के लिए टाल दिया था। तदंतर उन्होंने राज्य सरकार को 20 जुलाई तक का अंतिमेत्थम दिया। समस्या के हल नहीं होने से स्पष्ट है कि क्षुब्ध जरांगे पाटिल कोई ऐसा कठोर कदम उठा सकते हैं जो सरकार को उलझन और परेशानी में डाल दे। वह राजधानी मुंबई में लंबा कूच पर विचार कर रहे हैं और राज्य विधानसभा की सभी 288 सीटों पर प्रत्याशी खड़ा करने पर भी।

मुंबई में पवार साहेब और भुजबल की भेंट से एक दिन पहले पवार परिवार के दुर्ग बारामती में बड़ा जमावड़ा हुआ। इस जमावड़े ने इस बात की पुष्टि कर दी कि चाचा-भतीजे के बीच सुलह- समझौते की कोई संभावना नहीं है। 14 जुलाई को बारामती में उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने अपने विधानसभा चुनाव का बिगुल फूंका। इस मौके पर प्रफुल्ल पटेल, छगन भुजबल, सुनील तटकरे और धनंजय मुंडे समेत एनसीपी के प्रमुख नेता उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि अजित पवार सूबे के वित्तमंत्री भी हैं। उन्होंने लोगों से विपक्ष के बहकावे में नहीं आने की अपील की और संविधान में संशोधन जैसी बातों को कोरी गप्प बताया। उन्होंने बताया कि उन्होंने अमित शाह से चीनी का समर्थन मूल्य बढ़ाने का आग्रह किया है। अजित इस सारी कवायद का मकसद दरअसल अपनी सीट बचाना है। काका शरद पवार की बेटी सुप्रिया सुले के हाथों अपनी पत्नी सुनेत्रा पवार की हार का गम उन्हें साल रहा है। वह सन् 1997 से अब तक बारामती से सात बार विधानसभा के लिए चुने गये हैं, लेकिन शरद पवार ने अपने पालित भतीजे को उसी के किले में मात देने की कसम सी खा रखी है, लिहाजा अजित फूंक-फूंक कर कदम रख रहे हैं। शरद पवार के ताबड़तोड़ दौरों और गांव-गांव में सघन जनसंपर्क ने उनके माथे पर सलें डाल दी हैं। उन्हें यह भी पता है कि चाचा शरद उनके भतीजे युगेन्द्र पवार को बढ़ावा दे रहे हैं, और कोई ताज्जुब नहीं कि सन्निकट विधानसभा चुनावों में मुकाबला युगेन्द्र और अजित पवार के बीच हो।

दोनों पक्षों के बीच तलवारें खिंची हुई हैं। लोकसभा चुनाव के नतीजों ने महायुति के घटकों के मध्य समरसता और विश्वास को तार-तार कर दिया है। आरएसएस के मुखपत्र आगेर्नाइजर में छपे लेख पर यकीन करें तो सूबे में हार का दोषी बीजेपी के कार्यकर्ता एनसीपी (अजित) को मानते हैं। सांसद सुप्रिया सुले ने इसे महायुति का अंदरूनी मामला बताया। अलबत्ता माना जा रहा है कि बीजेपी अजित पवार से पिंड छुड़ाना चाहती है। इस बीच एनसीपी (अजित) को झटके लगने का दौर जारी है। 17 जुलाई को पिंपरी चिंचवड़ के प्रभावशाली नेता अजीत गव्हाणे समेत बीसेक स्थानीय नेताओं के शरद पवार धड़े में शामिल होने से एनसीपी (अजित) की स्थिति कमजोर हुई है। माना जा रहा है कि गव्हाणे भोसारी से बीजेपी के महेश लांडगे के खिलाफ शरद-धड़े के उम्मीदवार होंगे। इस बीच महाराष्ट्र पब्लिक सिक्यूरिटी बिल ने जहाँ सामाजिक कार्यकर्ताओं और बौद्धिकों की भुकुटि में बल डाले हैं वहीं कोल्हापुर में चलो विशालगढ़ मार्च ने नया बखेड़ा खड़ा कर दिया है। फलतः नवनिर्वाचित कांग्रेस सांसद छत्रपति शाहूजी महाराज गजपुर और मुस्लिम वाड़ी के पीड़ितो से मिले। गौरतलब है कि मार्च का आह्वान बीजेपी एमपी संभाजीराजे छत्रपति ने किया था। बीजेपी को यकीन है कि ऐसी घटनाओं से ध्रुवीकरण उसके पक्ष में होगा, जबकि इसे बूमरैंग मानने वालों की भी कमी नही है। बहुत मुमकिन है कि तूफान प्याली की कोरों तक सीमित नहीं रहे और उसका असर प्याली की कोरों के बाहर भी नजर आये।

अध्यात्म

जल्दबाजी में निर्णय न ले

एक राजा नगर भ्रमण करने के लिए राज दरबार से निकलता है। शाम को जब वह भ्रमण कर राज दरबार में आता है तो उनके पैरों में छाले पड़ जाते हैं। वह तुरंत अपने प्रजा को आदेश देता है कि पूरे गांव के सड़क को मखमल से ढक दिया जाए।

प्रजा आश्चर्यचकित हो जाती है और सोचते है कि भला इतने बड़े गांव को मखमल से ढकने के लिए कितने सारे पैसे लगेंगे इतने पैसे हम राजा से कैसे मांगे ? प्रजा मुखिया को यह सब बातें बताते हैं कि समस्या का हमें हल बताइए ? राजा ने आदेश तो दे दिया है पर हम राजा से पैसे कैसे मांगे ?

प्रजा का मुखिया राजा को पूछता है कि यह निर्णय आप किस कारण से ले रहे हैं आप मुझे बताइए ? राजा कहता है कि मैं जब नगर भ्रमण के लिए निकला था तो सड़क पर काफी सारे छोटे छोटे कंकर से मेरे पैर में छाले आ गए । मैं नहीं चाहता कि हमारे नगर में कोई भी व्यक्ति को यह परेशानी हो जो परेशानी से में जूझ रहा हु । मुखिया जवाब देते हुए कहते हैं इतनी छोटी सी बात के लिए आप करोड़ों का निवेश करोगे । इससे अच्छा रहेगा की हम मखमल के जूते बना देते हैं।

और पूरे नगर को मखमल के जूते वितरण कर देते। कम लागत में आपके समस्या का हल हो जाएगा। राजा ने इस बात पर सोच विचार किया और अंत में मुखिया के बातों को अमल में लाया।

राजा ने पूरे प्रजा को सिर्फ जूते बनवाने का आदेश दिया।

निष्कर्ष: कहानी से हमे यह सिख मिलती है की आज सभी अपने जीवन में कुछ न कुछ निर्णय लेते है और उसके लिए प्रयत्न भी करते है। पर सभी सफल क्यों नहीं हो पाते है ? क्योकि वे जल्दबाजी में हमेशा गलत निर्णय लेते है। जो व्यक्ति निर्णय लेने से पहले विचार करता है उस पर विश्लेषण करता है उसके निर्णय हमेशा सही होते है। जो व्यक्ति निर्णय बिना सोचे समझे लेता है उसके जीवन में उसका स्वयंम का निर्णय हानिकर सिद्ध होता है।

सिरसा में 'रंगीन भारत-खूबसूरत भारत' का संकल्प

हरियाणा के सिरसा में सक्रिय पर्यावरणवादी व जमींदार गुरविंद सिंह घुम्मन अपनी तरह का अनोखा मिशन चला रहे हैं। ये है 'ब्यूटीफूल इंडिया, कलरफुल इंडिया' अभियान। वे तमाम उपयोगी पौधे लगाकर और उपयोगी बीज बांटकर इस मिशन को अंजाम दे रहे हैं। इस अभियान के तहत 2018 में 7 किस्म के 167 पौधे सिरसा में लगाए। इस अभियान को लोगों व सामाजिक संगठनों की तरफ से सकारात्मक प्रतिसाद मिला। शहरवासियों ने चाव से पौधे लगाए। ये पौधे सार्वजनिक स्थल, सामाजिक संस्थाओं व धार्मिक संस्थाओं के परिसर में लगाए गए। आज भी उनके लगाए एक-एक पौधे की अच्छी देखभाल हो रही है।

कर्मयोगी

ऐसे वक्त पर जब दुनिया भयावह ग्लोबल वार्मिंग के संकट से जूझ रही है। इसके भयावह खतरे हमारे दरवाजे तक दस्तक देने लगे हैं। हमें खेत-खलियानों व मानव जीवन को बढ़ते तापमान से बचाने के लिए धरती को पेड़-पौधों से भर देना होगा। जो देश की खूबसूरती को चार चांद लगाएगी, वहीं हमारे वातावरण में तापमान को भी नियंत्रित करेगी। दरअसल, नई पीढ़ी ऐसी विरासत से वंचित है जिसे सदियों से हमारे पुरखों ने सजा-संवार कर रखा था। इसी उद्देश्य से हरियाणा के सिरसा में सक्रिय पर्यावरणवादी व जमींदार गुरविंद सिंह घुम्मन 'ब्यूटीफूल इंडिया, कलरफुल इंडिया' अभियान चला रहे हैं। वे तमाम उपयोगी पौधे लगाकर और उपयोगी बीज बांटकर इस मिशन को अंजाम दे रहे हैं।

वे मानते हैं कि बीज के बेहतर इस्तेमाल से हम अपनी प्राण वायु हवा को शुद्ध करके वायु प्रदूषण के भयावह खतरों से भी बच सकते हैं। वहीं दूसरी ओर अपने परिवेश को मोहक बना सकते हैं। उनका कहना है कि जहां खेती के संस्कार मुझे सिरसा के खैरपुर में पिता गुलजार सिंह से मिले, वहीं बागवानी के अनुभव माताजी श्रीमती जोगिंद्र कौर से मिले हैं। जिंदगी में मैंने भारत के विभिन्न राज्यों और विदेशों में खूब घूमने का अवसर मिला। दक्षिण भारत व विदेशों का भ्रमण किया तो फूलों वाले वृक्षों ने मन मोह लिया। देखे तो विचार आया कि ऐसा मनमोहक वातावरण भारत के हर शहर में क्यों नहीं।

शुरू में मेरे उनके मन में विचार आया कि इसकी शुरुआत अपने राज्य हरियाणा में अपने शहर सिरसा से क्यों न की जाए। प्रारंभ में प्रायोगिक तौर पर उन्होंने अपने मिशन का नाम 'ब्यूटीफूल इंडिया, कलरफुल सिरसा' रखा। इस अभियान के तहत अगस्त, 2018 में 7 किस्मों के 167 पौधे पुणे महाराष्ट्र स्थित एक नर्सरी से मंगवाकर अपने शहर सिरसा में लगवाए। इस अभियान को लोगों व सामाजिक संगठनों की तरफ से सकारात्मक प्रतिसाद मिला। शहरवासियों ने बड़े चाव से पौधे लगाए। पौधे सार्वजनिक स्थल, सामाजिक संस्थाओं व धार्मिक संस्थाओं के परिसर में लगाए गए। आज भी उनके लगाए एक-एक पौधे की अच्छी देखभाल हो रही है। गांवों में सरपंचों को जिम्मेदारी दी गई और समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से पौधों के बीज रोपित किये गए। उसके बाद वे 60 किस्म से अधिक गुणवत्ता के बीज लाये, जो कि गांव की फिरनी, धार्मिक स्थलों, पंचायत घरों, स्कूल, आंगनवाड़ी केंद्र इत्यादि में लगाए गए।

गुरविंद सिंह घुम्मन बताते हैं यह हमारा दुर्भाग्य है कि समय के साथ-साथ कई पेड़ों व पौधों की प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। विडंबना है कि उत्तर भारत में कीकर के पेड़ खत्म हो रहे हैं। निश्चित रूप से आज से 15-20 वर्ष बाद अगर कोई इनके बीज लेकर आएगा, तो लोग पूछेंगे कि ये पेड़ कौन सा है। दरअसल, मैं कोई नया बीज नहीं लेकर आया हूं। ये सभी बीज उत्तर भारत की जलवायु के अनुकूल हैं। सौभाग्य से प्रकृति की यह धरोहर आज भी दक्षिण भारत की कुछ नर्सरियों में उपलब्ध है। वे बताते हैं मैंने कई गांवों के भाइयों से इस बाबत बातचीत की तो उन्होंने बताया कि हमें न तो इन पौधों का पता है और न ही हमें यह ज्ञात है कि यह पौधे व बीज कहां से मिलेंगे। उनका सुझाव था कि आप हमें उच्च कोटि के बीज उपलब्ध करा दीजिए, हम किसान हैं, स्वयं पौधे रोपित कर लेंगे। दरअसल, उनके द्वारा दक्षिण भारत से लाए गए ये बीज तीन प्रकार के है। पैकेटों में जो सीरियल नंबर दिया हुआ है। दूसरे पर्चे पर सीरियल के साथ पौधों के नाम, फूलों व बगैर फूलों वाले पौधे विवरण लिखा हुआ है। किन-किन माह व समय पर पौधे रोपित होंगे। कालांतर कृषि व बागवानी के विशेषज्ञों से विचार- विमर्श के अनुसार हमारे क्षेत्र में जुलाई व अगस्त सभी बीजों को बोने के लिए अच्छा समय है। साथ ही इसका पुनः रोपण फरवरी मार्च में किया जा सकता है। गुरविंद सिंह घुम्मन बताते हैं ये बीज बड़े होकर वृक्षों का रूप लेंगे जो कि रंग बिरंगे फूलों से आपके क्षेत्र को महकाएंगे। उस महक से हमारी आने वाली पीढ़ियां आनंदित होंगी। अगर आप चाहते है कि हमारे बच्चे मुस्कुराए तो आओ चंद बीजों से इस धरा का श्रृंगार करें।

अध्ययन में पाया गया कि बहुसंख्यक भारतीय पारंपरिक पेड़ (टाली, कीकर, नीम, पीपल, सफेदा आदि) लगाते है। जो केवल हरियाली के लिए है, जबकि, घुम्मन का विचार है क्यों ना फूलों वाले हर्बल पेड़, पारंपरिक पेड़ और सुन्दर दिखने वाली झाड़ियां भी लगाई जायें। वे हैं कि वर्ष 2018 में मैंने फूलों वाले पेड़, हर्बल पेड़ और पारंपरिक पेड़ और झाड़ियां की सात किस्मों को पुणे की एक प्रसिद्ध नर्सरी से 167 पौधे खरीदे । पेड़ लगाने का यह कार्य क्षेत्र के पुजारियों, स्थानीय नेताओं, स्थानीय सरकारी प्रशासकों, पुलिस विभाग, सिरसा के उत्साही लोगों, छात्रों शिक्षकों और विभिन्न व्यवसायों से जुड़े नागरिकों की सहायता से पूरा किया गया।इन पेड़ों को सिरसा के आस-पास के अस्पतालों, सरकारी स्कूलों, पार्कों, पुलिस स्टेशनों और शहर के अन्य सार्वजनिक स्थानों सहित विभिन्न जगहों पर लगाया है। यह एक बड़ी सफलता थी परन्तु नर्सरी से ये पौधे खरीदना महंगा था, इसलिए विचार किया कि इस पहल को आगे बढ़ाने के लिए बीज खरीदना एक प्रभावी तरीका है। इसलिए 2019 उन्होंने 72 किस्मों के लगभग 125000 बीज खरीदे । इन बीजों के 1200 किट बनाए और हरियाणा में 500 गांवों में, पंजाब में 300 गांवों में और शेष 400 निजी और सरकारी स्कूलों, धर्मशालाओं, गुरुद्वारों, मंदिरों, चर्चों,ब्रह्मकुमारी आश्रम, कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना व हिसार आदि के पर्यावरण संरक्षणवादियों को बांटे। सिरसा में इस पहल की शुरुआत करने के बाद, मिशन का लक्ष्य सरकारी एवं निजी स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों, पार्कों, पवित्र स्थानों और अन्य सार्वजनिक क्षेत्रों में , देश के हर कोने, हर कस्बे, गांवों और यहां तक कि किसानों की ढाणियों तक पहुंचना रहा है। इसमें दो राय नहीं कि इसी प्रकार के बीज पूरे देश में उपलब्ध होने चाहिए।हम देश को संवारने तथा इस आन्दोलन का हिस्सा बनने के लिए देश के कॉरपोरेट घरानों, सामाजिक संगठनों, पर्यावरण विशेषज्ञ, संरक्षणवादियों, नागरिकों और केंद्र और राज्य सरकार के समर्थन हासिल करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। बेहतर होगा कि दुनिया के विभिन्न देशों रह रहे भारतीय एन. आर. आई. को भी अपने देश के प्रति प्रेम और लगाव का निमंत्रण दिया जा सकता है। उन्हें अपने पैतृक गांवों में बीज और पौधे दान करने के लिए प्रेरित किया जाए। इसके अलावा बीज विक्रेताओं और नर्सरी के संचालकों को भी इस आंदोलन में शामिल किया जाना चाहिए। इस अभियान के सिरे चढ़ने से इन सभी पेड़ों का उनके अतिरिक्त सौन्दर्य, रंग और छाया प्रदान करने के अलावा पर्यावरणीय लाभ भी होंगे। इस पहल में केवल सरकार द्वारा अनुमोदित पेड़ों का उपयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त हमें अपने विरासत में मिले पौधों और पेड़ों को संरक्षित करना चाहिए। इस तरह के अभियान चलाकर हम उन्हें विलुप्त होने से बचा सकते हैं। भारत पर्व, त्योहार व मेलों का देश है। राष्ट्रीय पर्वों में हजारों-लाखों लोग जुड़ते हैं। जिसके जरिये हम सामाजिक चेतना का प्रसार करके इस अभियान को सफल बना सकते हैं। साथ ही नए-नए पेड़ लगाकर अपने देश को सुन्दर बनाना चाहिए। कोशिश है कि इस मिशन के काम को आगे बढ़ाया जाए। इस महत्वपूर्ण पहल के लिए प्राथमिक तर्क यह है कि हम एक देश के रूप में एक ही पारंपरिक प्रकार के पेड़ लगाना जारी रखते हैं। लेकिन, घुम्मन का विचार यह है कि ऐसे पेड़ क्यों न लगाएं, जो पर्यावरणीय दृष्टि ही लाभकारी न हों बल्कि सौंदर्य बढ़ाने वाले भी हों। जिसका लाभ यह होगा कि आने वाली पीढ़ियों के लिए परिवेश अधिक जीवंत, रंगीन और आनंददायक बन पाएगा। श्री घुम्मन का मानना है कि यह एक नेक पहल है। इस सपने को पूरे देश में महसूस किया जाना चाहिए। हमारे भारत को सुंदर,रंग बिरंगा और स्वस्थ बनाने में हर भारतीय को अपना योगदान देना चाहिए।

आज का कार्टून

राशिफल

मेष
अपने कार्यक्षेत्र को लेकर लापरवाही न करें। कारोबार की स्थिति में सुधार आने की सम्भावना है। परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण रहेगा।

वृषभ
रुका हुआ धन आपको प्राप्त हो सकता है। अध्यात्मिक विषयों पर गूढ़ अध्ययन कर सकते हैं। उच्च अधिकारियों की नाराजगी झेलनी पड़ेगी।

मिथुन
आज का दिन संघर्षो से युक्त हो सकता है। जीवनसाथी के साथ विश्वास में कमी आयेगी। प्रियजनों की सलाह पर गम्भीरता से विचार करें।

कर्क
आपकी दैनिक आय में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्च पद मिल सकता है। अहंकार का प्रदर्शन न करें। थोड़े ही प्रयासों से आपके काम सफल हो जायेंगे।

सिंह
जीवनसाथी के साथ तालमेल बहुत ही अच्छा रहेगा। माता-पिता के प्रति व्यवहार अच्छा रखें। प्रेम सम्बन्धों को पारिवारिक सहमति मिल सकती है।

कन्या
नया कार्य शुरू कर सकते हैं। मित्रों के साथ अच्छा समय बिताना पसन्द करेंगे। प्रतियोगी परीक्षा में शुभ परिणाम प्राप्त होने के योग बन रहे हैं।

तुला
आज आपके घर में अचानक मेहमान आ सकते हैं। पति-पत्नी के बीच नोंकझोंक हो सकती है। आपकी सामाजिक छवि सुधर सकती है।

वृश्चिक
प्रभावशाली लोगों के बीच आपका सम्पर्क मजबूत होगा। शान्तिपूर्ण तरीके से समस्याओं का समाधान निकालने का प्रयास करें। समय का सदुपयोग अवश्य करें।

धनु
पड़ोसियों से झगड़ा होने की आशंका है। अपने काम की गुणवत्ता बढ़ाने का प्रयास करें। विरोधी आपके विरुद्ध षड्यंत्र रच सकते हैं। कार्यक्षेत्र में तनाव रहेगा। नयी सम्पत्ति खरीदने का विचार बना सकते हैं।

मकर
आज आपकी कोई मनोकामना आज पूर्ण हो सकती है। यदि आप किसी समस्या से परेशान हैं तो आपको उसका समाधान मिल सकता है। धैर्यवान होकर काम पूर्ण करें।

कुंभ
बहुमूल्य वस्तुओं को सँभाल कर रखें। पैतृक सम्पत्ति को लेकर विवाद उपजने की आशंका है। स्वभाव में गुस्सा और चिड़चिड़ापन अधिक हो सकता है।

मीन
वैवाहिक सम्बन्धों में प्रसन्नता का भाव रहेगा। मन में नये कार्यों को लेकर उमंग-उत्साह की भावना में वृद्धि होगी। मित्रों के ऊपर धन खर्च कर सकते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

सुप्रीम कोर्ट ने दी बड़ी राहत

सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र यानी एनसीआर में घर खरीदने वालों को बड़ी राहत दी है। फ्लैट का कब्जा नहीं पाने वालों को ईएमआई पेमेंट को लेकर बैंकों, वित्तीय संस्थानों या बिल्डरों द्वारा कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं की जाएगी। न ही उनके खिलाफ चेक बाउंस का मामला चलेगा। सबसे बड़ी अदालत दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी जिनमें खरीदारों की याचिकाओं को अन्य कानूनी विकल्पों की मदद लेने की बात कह कर खारिज कर दिया गया था। शीर्ष अदालत ने केंद्र, बैंकों समेत अन्य को नोटिस भी जारी किया। पीठ ने सभी मामलों पर अंतरिम रोक लगाई जिसके तहत बैंकों/वित्तीय संस्थानों या बिल्डर/डेवलपर की ओर से मकान खरीदारों के खिलाफ कोई भी कार्रवाई नहीं की जाएगी। पहले भी अदालत ने खरीदारों के पक्ष में सख्त फैसले दिए हैं। जब संसद में कानून पास होने के बाद कुछ रियल एस्टेट कंपनियों ने इस संशोधन को अदालत में चुनौती दी थी। दिवालिया कानून यानी इंसॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी में बदलाव कर खरीदार को डिफॉल्टर, डवलपर को उसकी रकम वापस देने संबंधी संशोधन किया गया था। खरीदारों का कहना है कि बैंक की तरफ से ऋण सीधा बिल्डर के खाते में जाता है। जो रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों का उल्लंघन है। देश में जिस तेजी से विकास हो रहा है, डेवलपर और बिल्डर सरकारी महकमें से मिली-भगत कर ऊंची-ऊंची इमारतें बना रहे हैं। मध्यम वर्ग को सपने दिखा कर मोटी रकम वसूली होती है। पूरा पैसे चुकाने के बावजूद हजारों लोग तय वक्त पर घर न मिलने से परेशान होकर बिल्डरों के दफ्तरों के चक्कर लगाते नजर आते हैं। विभिन्न कानूनी विकल्प होने के बावजूद उनकी सुनवाई नहीं होती। हालांकि यह फैसला खासकर एनसीआर के मकान खरीदारों के लिए है जबकि यह देश भर के नागरिकों के हित में लागू होना चाहिए। जनता की गाढ़ी कमाई के प्रति बैंकों- वित्तीय संस्थानों, बिल्डरों/डेवलपरों को खुली छूट देने के प्रति सबसे पहले सरकार ही जिम्मेदार है। यह फैसला उन खरीदारों को राहत देने वाला तो है ही, जो अपने घर का सपना दिखा कर खरीदारों को उचित जवाब तक नहीं देते वहीं लोन देकर कर्जदारों को जंजाल में फंसाने वालों को भी सबक लेना होगा।

शिक्षण प्रक्रिया में समावेशन अत्यावश्यक

वर्तमान शिक्षा के बदलते स्वरूप में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता जरूरी है जो हमारे देश की भावी पीढ़ी को नया आकार देगी और शिक्षकों की मजबूत पहचान सुनिश्चित करेगी। इसके लिए हमें अपने शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को नये परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की जरूरत है। इस दिशा में एनईपी-2020 ने शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता को उचित रूप से मान्यता दी है, जिसमें 21वीं सदी के सीखने के कौशल एवं सामग्री के साथ-साथ शिक्षा शास्त्र में उच्च गुणवत्तायुक्त प्रशिक्षण भी शामिल होगा और जो भावी शिक्षकों को बदलते समय की गति के साथ आगे ले जाएगा। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने हमेशा व्यक्ति के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया है। इसलिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को गौरवशाली भारतीय संस्कृति और विरासत को दृष्टिगत करते हुए नया स्वरूप दिया जाना चाहिए। शिक्षा सामूहिक सामाजिक प्रयास है जो सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक नागरिक गुणवत्तापूर्ण जीवन के लिए अनुशासित होकर अपनी पूर्ण कार्यक्षमता के साथ समाज का महत्त्वपूर्ण सदस्य बने। 21वीं सदी में हम जब वैश्विक समाज में रह रहे हैं तब शिक्षकों के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण के बहुमुखी कार्यक्रमों की जरूरत है। शिक्षा पाठ्यक्रम को इस तरह से संशोधित करने की भी आवश्यकता है कि वह समावेशी हो और उसमें आजीवन सीखने, शिक्षार्थियों के विकास और अनुप्रयोगों पर जोर हो। लोकतांत्रिक सिद्धांतों और मूल्यों पर भी बल दिया जाना चाहिए और भावी शिक्षकों के बीच राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत करने की दिशा में प्रयास होने चाहिए। पाठ्यक्रम को समाज की लगातार बदलती जरूरतों, नैतिक मानदंडों, प्रौद्योगिकी उन्नति और प्रसार एवं वर्तमान संदर्भ में दूरस्थ-वर्चुअल सीखने की पद्धति का भी संज्ञान लेना चाहिए। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद संपूर्ण भारत में अध्यापक शिक्षा का नियामक और पथप्रदर्शक है। आज उसकी भूमिका और भी बढ़ती जा रही है। इसने कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए भी हैं। इनमें से 4-वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) महत्त्वपूर्ण कदम है। एक ओर चार वर्षीय विशिष्ट पाठ्यचर्या का निर्माण किया गया है तो दूसरी ओर कुछ चयनित संस्थानों में यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है जहां नवीन आवश्यकताओं के अनुसार आधारभूत संरचना और मानव संसाधन उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (एनपीएसटी) अध्यापकों की गुणवत्ता का एक आधार प्रस्तुत करता है। इससे 21वीं सदी में अध्यापकों की कार्यदक्षता निर्धारित होगी ताकि बदलती तकनीक से वे स्वयं को कुशल बनाते रहे। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद का एक और अभिनव प्रयास राष्ट्रीय मेंटरिंग मिशन (एनएमएम) है।

राहुल गांधी का कद भी बढ़ा एवं राजनीतिक कौशल भी

आरती कुमारी

राहुल गांधी लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता बन गये हैं, यह उनका पहला संवैधानिक पद है, इससे पहले वे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं। इस बड़े पद के साथ उनकी जिम्मेदारियां भी बढ़ जायेंगी। दस वर्षों बाद लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता का पद मिला है। वैसे इस बार के चुनाव एवं चुनाव में मिली शानदार जीत के बाद राहुल गांधी का न केवल आत्मविश्वास बढ़ा है, बल्कि उनमें राजनीतिक कौशल एवं परिपक्वता भी देखने को मिल रही है, इससे यह प्रतीत होता है कि वे प्रतिपक्ष नेता के पद के साथ न्याय करते हुए अपनी राजनीति को चमकायेंगे एवं रसातल में जा चुकी कांग्रेस को सुदृढ़ करेंगे। वैसे देखा गया है कि प्रतिपक्ष के नेता बनने वाले अधिकांश लोग प्रधानमंत्री तक पहुंचे हैं। लेकिन राहुल गांधी को इसके लिये अभी लम्बा संघर्ष करना होगा, परिपक्व राजनीति एवं देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को साबित करना होगा। निश्चित ही राहुल गांधी का कद बढ़ा है और अब वे स्वल्प समय में ही कद्दावर नेता की तरह राजनीति करने लगे हैं। राहुल को देशभर में निकाली यात्राओं एवं चुनाव प्रचार में निभाई सशक्त भूमिका ने मजबूती दी है। राहुल की राजनीति को चमकाने में कन्याकुमारी से कश्मीर तक की 'भारत जोड़ो यात्रा' के अलावा मणिपुर से मुंबई तक की 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अब प्रतिनेता के रूप में उनकी एक नई यात्रा शुरु हो रही है जो उन्हें नई राजनीतिक ऊंचाई दे सकती है। देश को 10 साल बाद राहुल गांधी के रूप में विपक्ष का नेता मिला है, जो संसदीय राजनीति के लिए एक अच्छी खबर है। इससे लोकतंत्र को मजबूती मिलेगी एवं जनता की आवाज को जोरदार तरीके से उठाने एवं सरकार की नीतियों-योजनाओं पर तीखी नजर रखने एवं प्रभावी सवाल उठाने की स्थितियों को बल मिलेगा। लेकिन विपक्ष की नुमाइंदगी का मतलब यह नहीं कि वह हर मामले में सत्ता पक्ष के खिलाफ हो, बल्कि यह है कि वह हमेशा जनता के साथ हो और उसकी ओर से मुद्दे उठाए। नेता प्रतिपक्ष पद से सरकार के साथ ही विपक्ष पर भी जवाबदेही का दबाव बढ़ता है। राहुल की सुविधाएं बढ़ने के साथ जिम्मेदारियां भी बढ़ गयी है। 16वीं और 17वीं लोकसभा में कांग्रेस या अन्य विपक्षी दलों के पास इस पद के लिए आवश्यक 10 प्रतिशत सदस्य नहीं थे। कांग्रेस ने इस बार लोकसभा चुनाव में 99 सीट जीतकर इस पद को हासिल किया है। नेता प्रतिपक्ष के तौर पर राहुल गांधी केंद्रीय सतर्कता आयोग, केंद्रीय सूचना आयोग और राष्ट्रीय मानवाधिकार से जुड़े चयन के अलावा लोकपाल, मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों, केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) निदेशक जैसी प्रमुख नियुक्तियों पर महत्वपूर्ण पैनल के सदस्य भी होंगे। प्रधानमंत्री इन पैनल के प्रमुख होते हैं। नेता प्रतिपक्ष के रूप में राहुल गांधी को लोकसभा में पहली पंक्ति में सीट मिलेगी। यह सीट डिप्टी स्पीकर की सीट के बगल वाली होगी। इसके अलावा संसद भवन में सचिवीय तथा अन्य सुविधाओं से युक्त एक कमरा भी मिलेगा। विपक्ष के नेता को औपचारिक अवसरों पर कुछ विशेषाधिकार भी प्राप्त होते हैं। एक केन्द्रीय मंत्री को मिलने वाली सभी सुविधाएं राहुल गांधी को मिलेगी। राहुल गांधी इस बार उत्तर प्रदेश के रायबरेली लोकसभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए हैं। इससे पहले वह लोकसभा में केरल के वायनाड और उत्तर प्रदेश के अमेठी का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। वह पांचवीं बार लोकसभा पहुंचे हैं। इस बार के लोकसभा चुनाव ने कांग्रेस पार्टी को पुनर्जीवन दिया है। इस बार के चुनाव परिणाम ने कांग्रेस एवं उसके नेता राहुल को मनोवैज्ञानिक लाभ पहुंचाया है, जो उनके लिए एक बड़ी उपलब्धि बनी है। इससे कांग्रेस ने अपना आत्मविश्वास फिर से पा लिया है, जो कोई छोटी बात नहीं। और यह राहुल और प्रियंका गांधी की गतिविधियों में साफ झलकता है। साथ ही, अब इस बात को लेकर भी कांग्रेस में कोई दुविधा नहीं रह गई है कि गांधी परिवार ही सर्वोच्च है और पार्टी पर उसका पूरा नियंत्रण होगा। इसका यह भी मतलब है कि टीम-राहुल का सभी मामलों में फैसला अंतिम होगा। पार्टी अध्यक्ष पद छोड़ने के बाद से राहुल के पास कांग्रेस की कोई जिम्मेदारी नहीं थी। सदन के भीतर पहली बार वह कोई पद संभालने जा रहे हैं। ऐसे में राहुल के सामने चुनौती होगी कि वह किस तरह पूरे विपक्ष को साथ लेकर चलते हुए रचनात्मक विरोध की भूमिका को आकार देते हैं। कांग्रेस का सबसे बड़ा काम दलित और पिछड़े मतदाताओं ने यूपी में जो उनकी मदद की है, उनका विश्वास बनाए रखने का है। यह बड़ी सचाई है कि आज भी देश के महत्त्व के राज्यों में भाजपा को क्षेत्रीय दल शिकस्त दे रहे हैं। अगर क्षेत्रीय दलों के साथ कांग्रेस का गठजोड़ बना रहे, तो ही भाजपा पर दबाव आएगा। बड़ा सच यह भी है कि न भाजपा बदली है ना उसकी विचारधारा। भाजपा एवं नरेन्द्र मोदी को भले ही चुनावों में पूर्ण बहुमत न मिला हो, लेकिन वह ही आज ताकतवर है। यह भी समझना होगा कि भाजपा विपक्ष की ताकत से नहीं, बल्कि सरकार की बड़ी गलतियों एवं पार्टी के अति उत्साह से नुकसान में पहुंची है। यह भी एक तथ्य है कि मुस्लिमों के सक्रिय-समर्थन के बिना कांग्रेस को कामयाबी नहीं मिल सकती थी। निश्चित ही मुसलमानों के वोट की अहमियत कुछ-कुछ सीटों पर हार-जीत का फैसला कर गई है। भाजपा अपनी आगे की रणनीति इसी आधार पर बनाएगी और वो पिछले चुनावों के जैसी ही होगी। मतलब कि भाजपा कोई नई भाषा नहीं बोलने वाली है। वह आरोप लगाती रहेगी कि कांग्रेस अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण करती है। कांग्रेस के सामने चुनौती होगी कि वो इस आरोप को अपने पर आने न दे, ताकि भाजपा हिंदुओं के हितों की एकमात्र रक्षक है, ऐसा दावा ना कर सके। कांग्रेस को इस हिंदू-मुस्लिम राजनीतिक बवंडर से बचने के लिये अपनी रणनीति को बनाना होगा। बिना हिन्दू वोट के कांग्रेस सफल राजनीतिक पारी नहीं खेल सकती है। इसके साथ ही कांग्रेस को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सफलता और निष्फलता का सही आकलन कर लेना जरूरी है। जनता के समक्ष अपना आत्मविश्वास बढ़ाए रखना अच्छी बात है, लेकिन मोदी आज जिस जमीन पर खड़े हैं, जनता के बीच उनकी जो स्वीकार्यता है उसका सही आकलन करना कांग्रेस की आगे की रणनीति के लिए बेहद जरूरी होगा। राहुल गांधी सदन में विपक्ष की मजबूत आवाज बनकर उभरेंगे, इसमें सन्देह नहीं है। पक्ष एवं विपक्ष के बीच एक संतुलन बनना लोकतंत्र की खूबसूरती है एव अपेक्षा भी है। नेता प्रतिपक्ष के रूप में विपक्ष के नेता की प्रमुख भूमिकाओं में से एक सरकार की नीतियों पर 'प्रभावी' सवाल उठाना है। विपक्ष के नेता की भूमिका वास्तव में बहुत चुनौतीपूर्ण होती है क्योंकि उसे सरकार की विधायिका और जनता के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित करनी होती है। नेता प्रतिपक्ष के रूप में उन्हें सरकारी प्रस्तावों-नीतियों के विकल्प प्रस्तुत करने होते हैं। निश्चित तौर पर आने वाले दिनों में राहुल गांधी के नेतृत्व में विपक्ष अलग एवं ऊंचे स्तर पर अपने तेवर दिखा सकता है। सरकार के लिए कोई भी बिल पास कराना अब इतना आसान नहीं होगा। मोदी की स्थिर सरकार देने की जद्दोजहद के बीच मोदी और राहुल के बीच की टकराव की संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता है, लेकिन बावजूद इसके सदन में सकारात्मक वातावरण बना रहना भी जरूरी है। स्थिर सरकार देश की बड़ी जरूरत है, राजनेताओं से उम्मीद की जाती है कि एक बार जनादेश आने के बाद वे चुनावी दौर की कड़वाहट एवं आरोप-प्रत्यारोप की छिछालेदार राजनीति को भुलाते हुए जनता के हित में मिलकर काम करें। इस बार भी चुनाव में अपनी-अपनी पार्टियों के प्रचार की अगुआई करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी ने एक-दूसरे पर खूब हमले बोले हैं। अब उन बातों को पीछे छोड़ते हुए उन्हें बेहतर तालमेल वाले कामकाजी रिश्ते कायम करते हुए देशहित को सामने रखना होगा। राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठना होगा।

मुख्यमंत्री योगी के लिए आसान नहीं उत्तर प्रदेश में विधानसभा का मानसून सत्र का सामना करना

अशोक भाटिया, मुंबई

लोकसभा चुनाव नतीजे आने के बाद से सबसे ज्यादा चर्चा के केंद्र में उत्तर प्रदेश है। भाजपा में जिस तरह से सियासी गुटबाजी दिख रही है और उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने खुलकर मोर्चा खोल रखा है। इतना ही नहीं भाजपा के सहयोगी दल भी काफी मुखर हैं और अपनी ही सरकार पर सवाल खड़े कर रहे हैं तो समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव 37 सांसदों के साथ लखनऊ का मैदान छोड़कर दिल्ली के रण को चुन लिया है। इसके चलते उत्तरप्रदेश की सियासत में 29 जुलाई की तारीख काफी महत्वपूर्ण हो गई है, जिस पर अब सभी की निगाहें लगी हुई हैं। उत्तर प्रदेश का विधानसभा का मानसून सत्र 29 जुलाई से शुरू हो रहा है। इसी दिन सूबे के राज्यपाल आनंदीबेन पटेल का कार्यकाल भी समाप्त हो रहा है। अखिलेश यादव के विधायक पद से इस्तीफा देने के बाद विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष का 29 जुलाई से पहले चयन कर लेना है। ऐसे में विधानसभा सत्र से पहले मुख्यमंत्री योगी को पार्टी नेताओं के बीच जारी मनमुटाव को दूर करने के साथ-साथ सहयोगी दलों के विश्वास को भी जीतने की चुनौती होगी। इसीलिए मानसून सत्र पर सभी की निगाहें लगी हुई हैं। लोकसभा चुनाव नतीजे के बाद पहली बार सूबे में विधानसभा का सत्र शुरू होने जा रहा है। उत्तरप्रदेश में 80 में सबसे ज्यादा 37 सीटें जीतने के बाद से समाजवादी पार्टी के हौसले बुलंद है, जिसकी झलक लोकसभा में दिख रही है। ऐसे में समाजवादी पार्टी के विधायक विधानसभा में भी खासा उत्साहित नजर आ सकते हैं और अब तो कांग्रेस भी उनके साथ है। इस तरह समाजवादी पार्टी सदन से सड़क तक आक्रमक रुख अपनाए रखने का प्लान बनाया है। चुनावी नतीजे जिस तरह भाजपा के खिलाफ आए हैं, उसके बाद से ही बैकफुट पर है। ऐसे में विधानसभा में भाजपा के लिए विपक्षी दलों के मुद्दों का सामना करना आसान नहीं होगा। इस बार का विधानसभा सदन की कार्यवाही पर सभी की निगाहें होंगी और विपक्षी तेवर देखने वाला होगा। बिजली कटौती से लेकर कांवड़ रूट पर नेम प्लेट का मामला चल रहा है। इसके अलावा ओबीसी आरक्षण भी एक बड़ा मुद्दा बना हुआ है। मानसून सत्र में विपक्ष जहां सरकार को घेरने की पूरी तैयारी करके बैठा है तो भाजपा के सहयोगी दल भी अलग कशमकश में हैं। लोकसभा चुनाव के बाद से भाजपा नेताओं में खींचतान जारी है। केशव प्रसाद मौर्य और मुख्यमंत्री योगी में मनमुटाव की बातें हो रही है। इसके अलावा भाजपा सहयोगी दल अलग-अलग मुद्दों पर भाजपा और योगी सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है, लेकिन सत्र शुरू होने से पहले तक यह नहीं खत्म हुआ तो विधानसभा सदन में विपक्ष हावी हो जाएगा। ऐसे में भाजपा और सहयोगी दलों के बीच सियासी रिश्ते सुधारने का जिम्मा मुख्यमंत्री योगी के कंधों पर है, क्योंकि सरकार के वो ही मुखिया हैं। ऐसे में उनकी जिम्मेदारी सबसे अहम हो जाती है। लोकसभा चुनाव के बाद ही अपना दल (एस) की अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर नौकरियों में दलित और ओबीसी आरक्षण में भेदभाव का मामला उठाया था। निषाद पार्टी के अध्यक्ष और मंत्री डॉ. संजय निषाद ने भी सरकार को चेताया था कि जिन भी सरकारों ने आरक्षित वर्गों की उपेक्षा की उनका नुकसान ही हुआ। इसके अलावा बुलडोजर नीति पर भी सवाल खड़े किए थे। ऐसे ही बातें ओम प्रकाश राजभर ने भी किया था तो आरलडी प्रमुख जयंत चौधरी ने कांवड़ यात्रा वाले मार्ग वाली दुकानों में दुकानदारों के नाम लिखे जाने संबंधी आदेश की आलोचना करते हुए वापस लिए जाने की मांग की थी। इस तरह से सहयोगी दलों के सवालों को विधानसभा सत्र शुरू होने से पहले साधकर रखने की चुनौती है। मुख्यमंत्री योगी के लिए उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य भी चुनौती बने हुए है । केशव प्रसाद मौर्य ने बीते दिनों प्रदेश कार्यसमिति में बयान दिया था कि संगठन सरकार से बड़ा था, बड़ा है और हमेशा बड़ा रहेगा। सरकार और संगठन के बीच चल रही खींचतान का संदेश इन शब्दों ने दिया और फिर उसके बाद गत दिवस नई दिल्ली में केशव की पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मुलाकात ने उत्तर प्रदेश में बड़े बदलाव की अटकलों को हवा दे दी। यह सिर्फ इसलिए, क्योंकि न तो उपमुख्यमंत्री के यह शब्द नए हैं और न ही उत्तरप्रदेश में गुटबाजी नई है, लेकिन अन्य प्राथमिकताओं को लेकर चल रहे केंद्रीय नेतृत्व का जोर फिलहाल समन्वय पर है। हालांकि, जरूरी हुआ तो गुजरात की तर्ज पर सरकार और संगठन की समान सर्जरी के रूप में सामने आ सकता है। उत्तर प्रदेश में 2017 विधानसभा चुनाव में जब भाजपा की प्रचंड बहुमत के साथ जीत हुई और योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री बनाए गए तो कुछ समय तक सरकार चलने के बाद से ही सरकार में गुट आकार लेने लगे थे । सरकार में खुद को उपेक्षित महसूस करने वाले मंत्री, विधायक और संगठन पदाधिकारियों के पैरोकार तब भी उपमुख्यमंत्री केशव मौर्य बताए जाने लगे थे । ऐसे कई घटनाक्रम भी हुए जब बेलगाम नौकरशाही जनप्रतिनिधियों पर भारी पड़ी। उसी का परिणाम था कि दिसंबर, 2019 में लोनी विधायक नंद किशोर गुर्जर का समर्थन करते हुए सरकार के 100 से अधिक विधायक अपनी ही सरकार के विरुद्ध धरने पर बैठ गए थे। तब इन मामलों को हाईकमान के दखल से दबाया गया और 2019 के लोकसभा चुनाव की जीत ने सब छिपा दिया। फिर बारी 2022 के विधानसभा चुनाव की थी, लेकिन सरकार में चल रही गुटबाजी की चर्चा जोर पकड़ रही थी, तब एक अप्रत्याशित घटनाक्रम सामने आई। मुख्यमंत्री योगी जून, 2021 में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के सरकारी आवास पर पहुंच कर केशव ने उन्हें मिठाई खिलाई। बताया जाता है कि चुनाव में एकजुटता का संदेश देने के लिए यह मिलन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबले ने कराया था। फिर 2022 में भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में लौटी और गुटबाजी का घाव फिर दब गया। हाईकमान ने अगड़ा-पिछड़ा का संतुलन साधते हुए सिराथू से विधानसभा चुनाव हारने के बावजूद केशव को दोबारा उपमुख्यमंत्री बनाया। उनके साथ ब्रजेश पाठक को भी उपमुख्यमंत्री बनाया, लेकिन सरकार में गुटों का यह संघर्ष फिर भी चलता ही रहा। अब लोकसभा चुनाव में जब भाजपा को 29 सीटों का नुकसान हो गया तो यह घाव फिर सामने है। चुनाव परिणाम के बाद लगभग एक दर्जन विधायक सरकार में अपनी उपेक्षा की पीड़ा व्यक्त कर चुके हैं। हारे हुए प्रत्याशी आरोप लगा चुके हैं कि बेलगाम अफसरों को सत्ता का संरक्षण है। इधर, सरकार बनाम संगठन के बयानों के बाद जेपी नड्डा से केशव और प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी की मुलाकात को एक धड़ा इस रूप में प्रचारित कर रहा है कि उत्तरप्रदेश में बड़ा बदलाव हो सकता है। इशारा, मुख्यमंत्री बदले जाने को लेकर है, लेकिन सूत्रों का कहना है कि हाईकमान ने नेताओं को निर्देश दिया है कि ऐसी बयानबाजी न करें। उत्तर प्रदेश की राजनीति से जुड़े एक राष्ट्रीय पदाधिकारी का कहना है कि किसी एक धड़े की मुराद पूरी कर देना गुटबाजी का समाधान नहीं है। वैसे भी नेतृत्व अभी बजट से राज्य और गठबंधन के संतुलन, महाराष्ट्र, हरियाणा और झारखंड के चुनाव को प्राथमिकता पर लेकर चल रहा है। उत्तरप्रदेश में अभी समन्वय का रास्ता तलाशते हुए दस सीटों के उपचुनाव कराए जाएंगे। फिर भी आवश्यकता पड़ने पर सरकार और संगठन में वैसी ही सर्जरी की जाएगी, जैसी कि 2022 में बड़े बदलावों के साथ गुजरात में किया गया था। पर सबसे पहले जरूरी है उत्तरप्रदेश का मानसून सत्र सुख से निपट जाए।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

मेष राशि- आज आपका दिन बेहतरीन रहेगा। आज आपको सकारात्मक माहौल में काम करने का मौका मिलेगा। कलीग्स के साथ आपके रिश्ते अच्छे रहेंगे। आज आप कोई नया काम शुरू करेंगे। जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलने के योग हैं। आज आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आप दूसरों की मदद करने की हर संभव कोशिश करेंगे। आपकी किसी पारिवारिक समस्या का निवारण होने से आपको बहुत सुकून मिलेगा।

वृष राशि-आज आपका दिन आनंद से भरा रहेगा। आपको आज कोई खुशखबरी मिलेगी। नौकरी में प्रमोशन की प्रतीक्षा आज समाप्त होगी। नई पोस्ट पर काम का दबाव बढ़ेगा। आप पूरी सावधानी से काम करेंगे। आज आप घर परिवार की समस्याओं को सुलझाने में कामयाब रहेंगे। आपके लिए आर्थिक लाभ की स्थिति बनेगी।

मिथुन राशि-आपके लिए आज का दिन उत्तम रहेगा। अनेक साधनों से आर्थिक लाभ होने के संभावना है। संतान की ओर से सुखद समाचार की प्राप्ति होगी। नौकरी में सफलता के योग हैं, आपकी सैलरी बढ़ सकती है। जमीन जायदाद के मामलों में कुछ समस्या आएगी, लेकिन कोर्ट कचहरी में आपको सफलता मिलेगी।

कर्क राशि-आज आपका दिन खास रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपको अपनी काबिलियत दिखाने का मौका मिलेगा। नौकरी में काम का बोझ बढ़ सकता है, जिससे आप परिवार को समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन आप कार्यक्षेत्र और घर का अच्छी तरह तालमेल बनाकर रखेंगे। संतान को लेकर उलझने दूर होगी। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी।

सिंह राशि-आज आपका दिन उत्साह से भरा रहेगा। आप अपने निजी जीवन में चली आ रही उलझनों को खत्म करने में कामयाब रहेंगे। पारिवारिक जीवन में खुशियां आएंगी। कार्य क्षेत्र में आपको अच्छी सफलता मिलेगी। सरकारी नौकरी का प्रयास कर रहे लोगों को नए अवसर मिलने की संभावना है। राजनीति से जुड़े लोगों का रुतबा बढ़ेगा। आज आप किसी सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं। लोग आपके विचारों से प्रभावित होंगे।

कन्या राशि-आज आपका दिन बदलाव लाने वाला है। आज आप अपनी दिनचर्या में बदलाव करेंगे। आज आप लोगों की मदद करने के लिए समय निकालेंगे। आज आपका स्वास्थ्य अच्छा रहने वाला है। जिससे आपकी निर्णय लेने की क्षमता में बढ़ोतरी होगी। व्यापार के विकास में किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह लेंगे। आज आपकी योजनाएं सफल होंगी। आपके लिए आमदनी के योग बनेंगे।

तुला राशि-आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। आपके रुके हुए काम पूरे होंगे। जिससे आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा और पूरे मनोबल के साथ आप कार्यक्षेत्र में अपने कार्यों को पूरा करेंगे। नौकरी में ट्रांसफर के योग हैं। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। परिवार के साथ आप खूबसूरत जगहों पर घूमने जा सकते हैं। जीवनसाथी के साथ आपकी बॉन्डिंग अच्छी रहेगी। अचानक आपके सामने कुछ चुनौतियां आएंगी, लेकिन आप आसानी से उनसे बाहर निकल जायेंगे।

वृश्चिक राशि-आज आपका दिन बेहतर रहेगा। आज आपकी कुछ नये लोगों से मुलाकात होगी। आज आपके प्रयासों से आपको सफलता मिलेगी। आपके लिए अचानक धन लाभ की संभावना बनेगी। कार्यक्षेत्र में आपके काम को देखते हुए अच्छी पदोन्नति मिलेगी। आप अपने काम के कारण काफी व्यस्त रहेंगे और परिवार को समय कम दे पाएंगे।

धनु राशि-आज आपका दिन रोज से बेहतर रहेगा। आप अपनी नौकरी बदलने का प्रयास करेंगे। इसमें आपको सफलता मिलने की संभावना है। आपकी सैलरी में वृद्धि होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में संतुलन बना रहेगा। आपको किसी पारिवारिक समारोह में शामिल होने का मौका मिलेगा। आपके परिवारिक जीवन में सुख शांति रहेगी। आप अपने जीवनसाथी के साथ घर की जिम्मेदारियों को पूरा करने में सफल रहेंगे।

मकर राशि-आज आपका दिन फायदेमंद रहेगा। पारिवारिक जीवन में खुशियां आएंगी। बहुत समय से रुके हुए काम पूरे होंगे। कार्यक्षेत्र में आपको सहकर्मियों का साथ मिलेगा। आप अपने मित्रों के साथ आनंदपूर्वक दिन बिताएंगे। आपका दांपत्य जीवन खुशहाल रहेगा। आज आप जीवनसाथी के साथ खरीदारी करने में व्यस्त रहेंगे। घर में कोई फंक्शन होने की संभावना है। कुछ लोग साझेदारी में व्यापार शुरू करेंगे।

कुंभ राशि-आज आपका दिन मंगलमय रहेगा। आपके लिए परिस्थितियां अनुकूल रहेंगी। कार्यस्थल पर विरोधी कुछ मुश्किलें खड़ी करेंगे। लेकिन आप अपने काम पर फोकस करेंगे। आपकी एकाग्रता आपको सफलता दिलाएगी। आपकी बचत योजनाएं कामयाब रहेंगी। आपको निवेश करने का सुनहरा मौका मिलेगा।

मीन राशि-आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आपको दोस्तों के साथ समय बिताने का मौका मिलेगा। रिश्तेदारों के साथ छोटी मोटी यात्रा हो सकती हैं। आपकी यात्रा सुखद रहेगी। पारिवारिक रिश्तो में आपसी प्रेम बढ़ेगा। किसी पुराने मामले को लेकर न्यायालय का फैसला आपके पक्ष में आएगा। नौकरी में प्रमोशन के योग बन रहे हैं। इस दौरान आपको आपकी मेहनत से अच्छे धन लाभ की संभावना है।

शब्द सामर्थ्य -130

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं :
1. अनुचित, असत्य, जो ठीक न हो 3. बेवजह, बिनाकारण, व्यर्थ 4. हल्कीनींद, चकमा, धोखा 6. शक्कर पानी आदि का मीठा घोल 10. सोते से उठाना, सावधान करना, प्रदीप्त करना 11. चरमसीमा, सीमांत 14. पानी, आंसू 15. बैठा हुआ, विराजित 16. नृत्य 17. मृतप्राय, मृत्यु के करीब 19. जल, अम्बु 22. उपहार, भेंट 23. खबर, संदेश।

ऊपर से नीचे
1. गणपतिजी, 2. मांगनेवाला, पाने की इच्छा करने वाला 3. मिट्टी के रंग का, मटमैला 5. चला आता हुआ क्रम प्रथा, प्रणाली, रीति-रीवाज, 7. निशाचर, रात में विचरण करने वाला 8. पेड़ का धड़ा जहां से शाखाएं निकलती है, 9. मिठाई, खाने की मीठी चीज 12. शासन, गुसबात 13. श्रद्धा, स्त्री, जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य 15. विपत्तिग्रस्त, दुखी, अभागा 16. प्रसिद्ध, नामवर 18. स्वप्न, ख्वाब 20. करीब, नजदीक, समीप 21. सुबह, प्रातः, सबेरा।

1		2				3		
				4	5			
6	7		8					9
	10				11	12	13	
	14				15			
16								
17			18			19		
					20		21	
22					23			

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 129 का हल

अ	भि	षे	क	■	प	स	■	■
जा	त	■	थ	प	थ	पा	ना	■
य	र	का	नी	■	भ्र	■	र	श्मि
ब	घा	■	र	क	ष्ट	प्र	द	■
■	त	ना	त	नी	■	र्व	■	ब
अ	■	मा	■	ज	मा	त	■	ल
स	जा	■	■	■	■	क	ज	रा
बा	■	बे	स	हा	रा	■	ग	म
ब	गु	ला	■	रा	ज	दू	■	त

सूडोकु नवताल- 7139

★★★★ मध्यम

		9		5		2		4
4	5				9	7	1	8
				7			5	3
	8	2	7		5			6
1	3			4			7	2
5			1		2	8	3	
8	4			9				
3	6	1	2				9	5
2		5		1		6		

Jagrutidaur.com, Bangalore

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
■ पहेली का केवल एक ही हल है।

सूडोकु नवताल -7138 का हल

7	8	6	4	1	3	5	9	2
5	9	4	7	8	2	1	6	3
1	2	3	6	9	5	7	4	8
9	3	8	2	6	1	4	7	5
2	7	5	8	4	9	6	3	1
6	4	1	5	3	7	2	8	9
3	5	9	1	7	4	8	2	6
8	1	7	9	2	6	3	5	4
4	6	2	3	5	8	9	1	7

देशप्राण स्वतंत्र हिन्दी दैनिक

केंद्र को झटकाः खनिज करों पर फैसला राज्यों के हक में

आखिरकार केंद्र और राज्यों के बीच अधिकारों की कानूनी लड़ाई तार्किक परिणति तक पहुंच ही गई है। देश की शीर्ष अदालत ने फैसला सुनाया है कि किसी भी राज्य के खनिजों पर देय रॉयल्टी एक कर नहीं है। साथ ही स्पष्ट किया कि राज्यों के पास खानों, खनिजों और खनिज-युक्त भूमि पर कर लगाने की विधायी क्षमता निर्धारित है। दरअसल, इस सारे विवाद के मूल में खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 रहा है। इस अधिनियम का हवाला देते हुए केंद्र सरकार की दलील थी कि केवल संसद ही खनिजों पर कर लगा सकती है। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने इस बाबत फैसला सुनाया कि कानून राज्यों को खानों और खनिज विकास पर कर लगाने से प्रतिबंधित नहीं करता है। निश्चित रूप से इस फैसले से प्राकृतिक संपदा से संपन्न गरीब राज्यों मसलन झारखंड और ओडिशा को विशेष रूप से लाभ होने की उम्मीद जगी है। ये राज्य केंद्र द्वारा खानों और खनिजों पर लगाये गए हजारों करोड़ों रुपये के करों की वसूली की मांग करते रहे हैं। निस्संदेह, यदि केंद्र सरकार राज्यों की माली हालत के मद्देनजर उनकी जरूरतों तथा आकांक्षाओं के प्रति संवेदनशील होती तो निश्चित रूप से इस विवाद को बातचीत के जरिये सुलझाया भी जा सकता था। जब लंबे समय तक इस मामले का निस्तारण नहीं हो सका तो अन्ततः देश की शीर्ष अदालत को गतिरोध तोड़ने के लिये हस्तक्षेप करना ही पड़ा। इसमें दो राय नहीं है कि केंद्र और राज्यों के बीच कई मुद्दों पर टकराव कोई नई बात नहीं है। लेकिन देखने में आया है कि हाल के वर्षों में यह विवाद आम बात हो चला है। निश्चित रूप से किसी भी राष्ट्र की संघीय व्यवस्था के लिये ये टकराव व विवाद कोई शुभ संकेत तो कदापि नहीं हैं। इसमें दो राय नहीं कि कुछ मुद्दे सहमति, सामंजस्य और संवेदनशीलता से भी सुलझाए जा सकते हैं। जिससे राज्यों के आर्थिक संकट को भी दूर किया जा सकता है। दरअसल, इस बात पर गंभीर विमर्श की जरूरत है कि हाल के वर्षों में केंद्र-राज्यों के बीच कलह के मामले लगातार क्यों बढ़ते जा रहे हैं। निस्संदेह, इस टकराव के राजनीतिक निहितार्थ भी हैं। इस विवाद को हाल में संसद में प्रस्तुत आम बजट के परिप्रेक्ष्य में भी देखा जा सकता है। यही वजह है कि वर्ष 2024-25 के केंद्रीय बजट में राजग गठबंधन में शामिल बिहार तथा आंध्र प्रदेश के लिये घोषित विशेष पैकेजों ने विपक्ष को गैर भाजपा शासित राज्यों से कथित भेदभाव के आक्षेपों के साथ सवाल उठाने का मौका दिया है। विपक्ष ने केंद्र सरकार पर राजनीतिक रूप से पक्षपात वाला बजट बनाने का आरोप लगाया है। इतना ही नहीं कई विपक्षी राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने बजट में भेदभाव का आरोप लगाते हुए आगामी 27 जुलाई को होने वाली नीति आयोग की बैठक में शामिल न होने की बात कही है। जो कि केंद्र व राज्यों के बीच टकराव की अप्रिय स्थिति को ही दर्शाता है। यदि अतीत के पन्ने पलटें तो वर्ष 1980 के दशक के उत्तरार्ध में, सरकारिया आयोग ने सहकारी संघवाद के सिद्धांतों के आधार पर सामंजस्यपूर्ण संघ-राज्य संबंधों की जरूरत पर बल दिया था। वहीं दूसरी ओर सरकारिया आयोग ने चेतावनी देते हुए स्पष्ट किया था कि देश में शक्तियों के अधिक केंद्रीकरण ने लोगों की समस्याओं का समाधान करने की बजाय उसमें और वृद्धि कर दी है। केंद्र सरकार के लिये बेहतर होगा कि आयोग की रिपोर्ट पर पड़ी धूल को साफ करके उसका बेहद बारीक व संवेदनशील ढंग से अध्ययन करे। इस तरह के आक्षेपों के बीच एक बात तो साफ है कि एक शक्तिशाली केंद्र भारत जैसे विकासशील देश को विकसित भारत में कदापि नहीं बदल सकता है। वहीं केंद्र व राज्यों में सामंजस्य व सहयोग के रिश्ते भारत जैसे संघीय ढांचे वाले देश को निश्चित तौर पर मजबूती ही देंगे। कोर्ट के हालिया फैसले को केंद्र को एक सबक के रूप लेना चाहिए। अन्यथा केंद्र व राज्यों में टकराव का यह अंतहीन सिलसिला बदस्तूर जारी रहेगा।

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में सबला कमला

अरुण नैथानी

इस साल के अंत में दुनिया के सबसे ताकतवर लोकतंत्र संयुक्त राज्य अमेरिका में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में दावेदारी से लगता है कि उपराष्ट्रपति कमला हैरिस की किस्मत चमक सकती है। अब तक राष्ट्रपति पद के लिये डेमोक्रेट प्रत्याशी के रूप में मजबूत दावेदारी कर रहे जो बाइडेन ने इस चुनावी दौड़ से अपने को अलग कर लिया है। बाइडेन ने यह कदम बढ़ती उम्र के चलते उन पर रेस से बाहर होने के लिए बढ़ रहे दबाव के बीच उठाया। रिपब्लिकन प्रत्याशी पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से टीवी बहस में पिछड़ने के बाद लगता था कि उम्रदराज बाइडेन के मुकाबले ट्रंप सशक्त दावेदार हैं, लेकिन कमला हैरिस के डेमोक्रेटिक प्रत्याशी के रूप में सामने आने से तस्वीर बदल गई है। अब ट्रंप बाइडेन की जगह सबसे ज्यादा उम्रदराज प्रत्याशी बन गए हैं।

बहरहाल, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मौजूदा राष्ट्रपति जो बाइडेन ने उपराष्ट्रपति कमला हैरिस की उम्मीदवारी का समर्थन किया है। जिससे अब यह चुनाव दिलचस्प हो चला है। अमेरिकी इतिहास में कमला हैरिस राष्ट्रपति पद के लिये पहली अश्वेत महिला दावेदार हैं। डेमोक्रेट्स के लिये यह एक ऐसा जोखिम जो उन्हें उठाना पड़ेगा। दरअसल, ट्रंप अमेरिका में श्वेतवाद के प्रबल समर्थक हैं। ऐसा ही जोखिम बाइडेन ने कमला को उपराष्ट्रपति पद के लिये चुनकर उठाया था। बहरहाल, अमेरिका में धीरे-धीरे डेमोक्रेट कमला के पक्ष में खुलकर सामने आने लगे हैं। बहरहाल, कमला की दावेदारी पर अगले महीने शिकागो में होने वाले डेमोक्रेट्स के राष्ट्रीय सम्मेलन में अंतिम मोहर लगेगी। कमला के लिए धनात्मक पक्ष यह है कि वे बाइडेन के बाद दूसरे नंबर के संवैधानिक पद पर विराजमान हैं। जाहिर है कि डेमोक्रेट्स एक महिला व एक अश्वेत प्रत्याशी की दावेदारी को शायद ही नकार सकें। हालांकि, उपराष्ट्रपति कार्यकाल की कुछ नाकामियों का खामियाजा भी कमला को भुगतना होगा। खासकर अवैध प्रवासियों वाले मुद्दे पर उनकी आलोचना हुई है। हालांकि, गर्भपात के अधिकारों के मुद्दे पर उनकी कामयाबी रही है। बहरहाल, अब कमला की दावेदारी से ट्रंप के लिये चुनौतियां बढ़ गई हैं। हालांकि, अभी कमला की दावेदारी को महत्वाकांक्षी डेमोक्रेट्स की चुनौती मिल सकती है। फिलहाल, कमला हैरिस के आने से अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव खासा दिलचस्प हो गया है। रिपब्लिकन को डेमोक्रेट्स के विरोध के लिये नये मुद्दे गढ़ने पड़ेंगे।

वहीं दूसरी ओर भारत में कमला हैरिस की राष्ट्रपति पद की दावेदारी सामने आने से खासा उत्साह है। दरअसल, भारतीय मूल की मां और जमैका मूल के पिता डोनाल्ड हैरिस की बड़ी संतान कमला को भारतवंशी की तरह देखा जाता है। हालांकि, कहना कठिन है कि उनका भारत व भारतीय संस्कारों से लगाव कितना भावनात्मक और कितना राजनीतिक है। अमेरिका में भारतीयों का एक वर्ग मानता है कि वे भारतीयों के बजाय अफ्रीकी समुदाय के अश्वेतों के मुद्दों पर अधिक सक्रिय रही हैं। हालांकि, वह अपनी भारतीय मूल की पहचान का जिक्र भारतीयों के बीच बखूबी करती रही हैं। उपराष्ट्रपति चुनाव में भी वे भारतवंशियों को लुभाने के लिये अपने अतीत व तमिलनाडु में अपनी ननिहाल से जुड़े अनुभवों का जिक्र करती रही हैं। निस्संदेह, कमला एक बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी राजनेता हैं। यही वजह है कि उपराष्ट्रपति पद के लिये कमला हैरिस के चयन के समय बाइडेन ने कहा था कि मैं देश के लिये नया नेतृत्व तैयार कर रहा हूं। लगता है आज उनके राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी बनने से वह घड़ी आ गई है।

आज भले ही कमला अमेरिका में प्रतिष्ठित अश्वेत नेता हों, लेकिन उन्होंने भारत से अपने जुड़ाव को कभी नकारा नहीं। कैलिफोर्निया के ऑकलैंड में जन्मी कमला ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की। फिर कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से कानून की डिग्री लेकर वकालत शुरू की। वर्ष 2014 में यहूदी वकील डगलस एम्पहॉप से यहूदी व भारतीय परंपराओं से विवाह रचाया। वैसे उनकी छवि अफ्रीकी अमेरिकी राजनेता के रूप में बनी है। एक वजह यह भी है कि बाइडेन ने अमेरिका में भारतीय व अफ्रीकी मूल के निर्णायक वोटों के मद्देनजर कमला की राष्ट्रपति पद की दावेदारी का समर्थन किया है। आज अमेरिका में कमला हैरिस की छवि एक उदार, आधुनिक मूल्यों की पक्षधर तथा मानवाधिकारों के लिये संघर्ष करने वाली महिला के रूप में बनी है। निस्संदेह, कमला हैरिस एक मुखर वक्ता और करिश्माई बहस करने वाली राजनेता हैं।

उल्लेखनीय है कि चेन्नई में जन्मी उनकी मां श्यामला गोपालन ऐसे वक्त पर सात समुंदर पार अमेरिका जाने का साहस जुटा सकी थी, जब अकेली लड़की को विदेश पढ़ाने की अनुमति देना बेहद मुश्किल माना जाता था। दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद वह वर्ष 1958 में न्यूट्रिशन और एंडोक्रिनोलॉजी में पीएचडी करने अमेरिका गई थीं। बाद में ब्रेस्ट कैंसर के क्षेत्र में शोधार्थी बनीं। कालांतर में बर्कले में मानवाधिकारों के लिये संघर्ष करते हुए श्यामला डॉनल्ड हैरिस के संपर्क में आईं और उनसे विवाह किया। बाद में हैरिस से तलाक होने के बाद श्यामला ने भारतीय संस्कारों के साथ कमला व उनकी बहन माया की परवरिश की।

आज भले ही कमला अमेरिका में प्रतिष्ठित अश्वेत नेता हों, लेकिन उन्होंने भारत से अपने जुड़ाव को कभी नकारा नहीं। कैलिफोर्निया के ऑकलैंड में जन्मी कमला ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की। फिर कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से कानून की डिग्री लेकर वकालत शुरू की। वर्ष 2014 में यहूदी वकील डगलस एम्पहॉप से यहूदी व भारतीय परंपराओं से विवाह रचाया। वैसे उनकी छवि अफ्रीकी अमेरिकी राजनेता के रूप में बनी है। एक वजह यह भी है कि बाइडेन ने अमेरिका में भारतीय व अफ्रीकी मूल के निर्णायक वोटों के मद्देनजर कमला की राष्ट्रपति पद की दावेदारी का समर्थन किया है। आज अमेरिका में कमला हैरिस की छवि एक उदार, आधुनिक मूल्यों की पक्षधर तथा मानवाधिकारों के लिये संघर्ष करने वाली महिला के रूप में बनी है। निस्संदेह, कमला हैरिस एक मुखर वक्ता और करिश्माई बहस करने वाली राजनेता हैं। जिसे उनके वर्ष 2016 में सीनेटर बनने, कैलिफोर्निया की अटॉर्नी जनरल व मौजूदा उपराष्ट्रपति की भूमिका ने समृद्ध किया है। हालांकि, अमेरिकी में बसे चार मिलियन अमेरिकी भारतवंशियों में से अधिकांश उनके राष्ट्रपति बनने से भारतीय रुतबा बढ़ने की बात कह रहे हैं, लेकिन कुछ का मानना है कि कश्मीर आदि मुद्दों पर भारत के प्रति उनका रुझान बहुत सकारात्मक नहीं रहा है।

कारगिल विजय दिवस पर विशेषः मिसाल कायम करते झुंझुनू के जवान

रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान में शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनू जिले के अमर सपूतों की इस वीर भूमि के रणबांकुरों ने जहां स्वतंत्रता पूर्व के आन्दोलनो में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया था। वहीं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सेना द्वारा लड़ी गयी लड़ाइयों में भी इस धरती की माटी में जन्मे वीरों ने समय-समय पर अपना पराक्रम दिखाया हैं। वीरों की इस धरती ने सदियों से जन्म लेते रहे सपूतों के दिलों में देशभक्ति की भावना को प्रवाहित किया हैं। वास्तव में यहां की धरती को यह वरदान सा प्राप्त होना प्रतीत होता हैं कि इस पर राष्ट्रभक्ति के कीर्तिमान स्थापित करने वाले लाडेसर ही जन्म लेते हैं। चाहे 1948 का पाकिस्तानी कबायली हमला हो या 1962 में चीन से युद्ध हो या 1965 व 1971 का भारत-पाक युद्ध। यहां के वीरों ने मातृभूमि की रक्षा हेतू सदैव अपना जीवन बलिदान किया हैं। सेना के तीनों अंगों की आन की रक्षा के लिये यहाँ के नौजवान सैनिकों के उत्सर्ग को राष्ट्र कभी भुला नही सकता हैं।

राजस्थान में झुंझुनू जिले के नवयुवकों में सेना में भर्ती होने की बहुत पुरानी परम्परा रही हैं। यहां के गांवों में घर-घर में सैनिक होता हैं। सेना के प्रति यहां के लगाव के कारण अंग्रेजो ने यहां एक सैनिक छावनी की स्थापना कर ह्यशेखावाटी ब्रिगेड ह्यका गठन किया था। देश रक्षा के लिये सेना में शहादत देना राजस्थान की परम्परा रही है। झुंझुनू जिले के वीर जवानो को उनके शौर्यपूर्ण कारनामों के लिये समय-समय पर भारत सरकार द्वारा विभिन्न अलंकरणों से नवाजा जाता रहा हैं। अब तक इस जिले के कुल 130 से अधिक सैनिकों को वीरता पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। जो पूरे देश में किसी एक जिले के सर्वाधिक हैं।

इसे भी पढ़ेंः Kargil Vijay Diwas 2024भारतीय सैनिकों के साहस और बलिदान की याद दिलाता है कारगिल विजय दिवस भारतीय सेना में योगदान के लिये झुंझुनू जिले का देश में अव्वल नम्बर हैं। वर्तमान में इस जिले के 55 हजार जवान सेना में कार्यरत हैं। वहीं जिले में करीबन 60 हजार भूतपूर्व सैनिक व अर्धसैनिक बलों के जवान हैं। आजादी के बाद भारतीय सेना की और से राष्ट्र की सीमा की रक्षा करते हुये यहां के 486 जवान शहीद हो चुके हैं। जो पूरे देश में किसी एक जिले से सर्वाधिक है। कारगिल युद्व के दौरान पूरे देश में 527 जवान शहीद हुए थे जिनमें यहां के 19 सैनिक शहीद हुये थे जो पूरे देश में किसी एक जिले से शहादत देने वालों में सर्वाधिक जवान थे। झुंझुनू जिले से अब तक 486 से अधिक सैनिक जवान सीमा पर शहीद हो चुके हैं।

यहां के गांवों में लोक देवताओं की तरह पूजे जाने वाले शहीदों के स्मारक इस परंपरा के प्रतीक हैं। इस जिले के वीरों ने बहादुरी का जो इतिहास रचा है उसी का परिणाम है कि भारतीय सैन्य बल में उच्च पदों पर सम्पूर्ण राजस्थान की ओर से झुंझुनू जिले का ही वर्चस्व रहा है। इस क्षेत्र के सैनिकों ने भारतीय सेना में रहकर विभिन्न युद्धो में बहादुरी एवं शौर्य की बदौलत जो वीरता पदक प्राप्त कियें हैं वे किसी भी एक जिले के लिये प्रतिष्ठा एवं गौरव का विषय हो सकता हैं। सीमा युद्ध के अलावा जिले के बहादुर सैनिकों ने देश मे आंतरिक शान्ति स्थापित करने में भी सदैव विशेष भूमिका निभाई हैं। सीमा संघर्ष एवं नागा होस्टीलीटीज हो या आपरेशन ब्लू स्टार या श्रीलंका सरकार की मदद हेतु किये गये ऑपरेशन पवन अथवा कश्मीर में चलाया गया आतंकवादी अभियान रक्षक या कारगिल युद्व। सभी अभियान में यहां के सैनिको ने शहादत देकर जिले का मान बढ़ाया हैं।

झुंझुनू जिले के हवलदार मेजर पीरूसिंह शेखावत को 1948 के युद्व में वीरता के लिये देश का सर्वोच्च सैनिक सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया जा चुका है। परमवीर चक्र पाने वाले पीरूसिंह शेखावत देश के दूसरे व राजस्थान के पहले सैनिक थे। यहां के सैनिकों ने द्वितीय विश्व युद्व में भी बढ़चढ़ कर भाग लिया था। आज भी यहां द्वितीय विश्व युद्व के पूर्व सैनिकों की विधवाओं को सरकार से पेंशन मिल रही है।

यहां के जवानो ने सेना के सर्वोच्च पदों तक पहुंच कर अपनी प्रतीभा का प्रदर्शन किया है। इस जिले के चित्तोसा गांव के एडमिरल विजय सिंह शेखावत भारतीय नो सेना के अध्यक्ष रह चुकें है। वहीं स्व. कुंदन सिंह शेखावत थल सेना में लेफ्टिनेंट जनरल व भारत सरकार के रक्षा सचिव रह चुके हैं। जे.पी. नेहरा, सत्यपाल कटेवा, लेफ्टिनेंट जनरल केके रेपस्वाल सेना में लेफ्टिनेंट जनरल पद से सेवानिवृत्त हुये हैं। लेफ्टिनेंट जनरल बसंत कुमार रेपस्वाल सेना सेवा कोर में कार्यरत हैं। इसके अलावा यहां के काफी लोग सेना में मेजर जनरल, ब्रिगेडियर, कर्नल, मेजर सहित अन्य महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत है। देश में झुंझुनू एकमात्र ऐसा जिला हैं जहां सैनिक छावनी नहीं होने के उपरान्त भी गत पचास वर्षो से अधिक समय से सेना भर्ती कार्यालय कार्यरत है। जिससे यहां के काफी युवकों को सेना में भर्ती होने का मौका मिल पाता है।

जिले में इतने अधिक लोगों का सेना से जुड़ाव होने के उपरान्त भी सरकार द्वारा सैनिक परिवारों की बेहतरी व सुविधा उपलब्ध करवाने के लिये बहुत कुछ किया जाना अभी बाकी है। कारगिल युद्व के समय सरकार द्वारा घोषित पैकेज में यह बात भी शामिल थी कि हर शहीद के नाम पर उनके गांव में किसी स्कूल का नामकरण किया जायेगा मगर जिले के ऐसे कई शहीदों के नाम पर अब तक सरकार ने स्कूलों का नामकरण कई नहीं किया है।

झुंझुनू जिले के दोरासर गांव में सैनिक स्कूल प्रारम्भ हो चुकी है जिसका लाभ सेना में जाने वाले यहां के युवाओं को मिलेगा। 19 साल पहले हमने करगिल तो जीत लिया था, लेकिन शहीदों के परिवारों के सामने आज भी समस्याओं के कई करगिल खड़े हैं। जिन पर जीत दर्ज करनी अभी बाकी हैं। सरकार द्वारा झुंझुनू जिले को देश का सैनिक जिला घोषित कर यहां के सैनिक परिवारों को सुविधाएं उपलब्ध करवाने की तरफ पर्याप्त ध्यान दे तो आज भी झुंझुनू क्षेत्र से अनेक पीरू सिंह पैदा होकर देश के लिये प्राण न्योछावर कर सकते हैं। झुंझुनू जिले के सैनिकों की बहादुरी देखकर कवि ने अपनी रचना में भी झुंझुनू के वीरो का गुणगान इस प्रकार किया है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

बेंजामिन नेतनयाहू

समर्थन पाने के प्रयास

बेंजामिन नेतनयाहू ने अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित करते हुए गाजा युद्ध के लिए समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया। इसराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतनयाहू ने कांग्रेस में भाषण देते हुए अमेरिका से एकजुटता का आह्वान किया है। हालांकि, उनकी अपने देश में लोकप्रियता घट रही है और विरोध बढ़ रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका की कांग्रेस को संबोधित करते हुए नेतनयाहू ने अमेरिकन विधि-निर्माताओं का आह्वान किया कि वे गाजा में जारी सैनिक कार्रवाइयों का समर्थन करें। बढ़ती हिंसा तथा हताहत सिविलियनों की संख्या बढ़ने की पृष्ठभूमि में दिया गया यह भाषण नेतनयाहू की प्रतिबद्धता रेखांकित करता है कि वे इसराइल के सर्वाधिक शक्तिशाली सहयोगी का अडिग समर्थन चाहते हैं। उन्होंने जोर दिया कि इसराइल को गाजा में सक्रिय चरमपंथी समूहों, खासकर हमास से अपने अस्तित्व पर खतरा है। प्रधानमंत्री नेतनयाहू ने सैनिक कार्रवाई को इसराइली समुदायों को प्रभावित करने वाले राकेट हमलों तथा वर्तमान समय में जारी आतंकी हमलों की आवश्यक प्रतिक्रिया बताया। लेकिन नेतनयाहू के भाषण में फिलिस्तीनी क्षेत्रों में मानवाधिकार उल्लंघनों पर बढ़ती अंतरराष्ट्रीय चिन्ताओं को संबोधित नहीं किया गया था। 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' तथा 'ह्यूमन राइट्स वाच' समेत अनेक मानवाधिकार संगठनों ने इन क्षेत्रों में अनेक मानवाधिकार उल्लंघन उजागर किए हैं।

गाजा में मानवीय संकट नाकेबंदी के कारण और गंभीर हुआ है जिससे लोगों और वस्तुओं का आवागमन अत्यधिक सीमित हो गया है। इससे भोजन, पानी और चिकित्सा देखभाल जैसी आवश्यक वस्तुओं की कमी हो गई है। गाजा में वर्तमान आक्रमण 250 दिन से अधिक समय से जारी है जिसमें बड़े पैमाने पर मौतें और विनाश हुआ है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार इसराइली हमलों में 34,000 से अधिक लोग मारे गए हैं तथा 77,000 से अधिक घायल हुए हैं। मृतकों में लगभग 72 प्रतिशत महिलायें और बच्चे हैं। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख वोल्कर तुर्क ने कहा है कि 'हर दस मिनट में' गाजा में कोई बच्चा मारा जाता है या घायल होता है। इसराइल की कार्रवाई अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन तथा सामूहिक दंड है जिसमें निरपराध सिविलियन जनसंख्या को बहुत भारी नुकसान उठाना पड़ता है। इससे मानवीय संकट गहरा रहा है। इसराइल के मुख्य सहयोगी के रूप में अमेरिका इसराइल-फिलिस्तीन टकराव की दिशा तय करने में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। इस समर्थन से अमेरिका की आलोचना हो रही है क्योंकि वह शांति तथा मानवाधिकारों को बढ़ावा देने में अपने प्रभाव का प्रयोग कर सकता है। अमेरिका द्वारा उपलब्ध कराए हथियारों का प्रयोग इसराइल फिलिस्तीन में सिविलियनों के खिलाफ कर रहा है जो भयानक समय का सामना कर रहे हैं। अमेरिकी जनता तथा कांग्रेस के कुछ सदस्यों में ज्यादा संतुलित दृष्टिकोण की पैरोकारी की जा रही है। अमेरिका से अपील की जा रही है कि वह मानवाधिकार उल्लंघनों पर कठोर दृष्टिकोण अपनाते हुए टकराव का टिकाऊ व न्यायोचित समाधान निकालने के राजनयिक प्रयासों का समर्थन करे। दोनों पक्षों के वैध सरोकारों को संबोधित करने वाले समावेशी व समग्र दृष्टिकोण से ही टिकाऊ शांति संभव होगी। इस क्षेत्र में न्याय व मानवाधिकारों की पैरोकारी की अमेरिका की नैतिक एवं रणनीतिक जिम्मेदारी है। अमेरिका बेंजामिन नेतनयाहू से कह सकता है कि वे गाजा पर संयुक्त राष्ट्रसंघ के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए सिविलियन ठिकानों पर बमबारी बंद करें ताकि हताहत सिविलियनों की संख्या न्यूनतम की जा सके। इस प्रकार अमेरिका इस क्षेत्र में स्थाई शांति की दिशा में केन्द्रीय भूमिका निभा सकता है।

दीर्घकालीन विकास को लक्षित बजट

केन्द्रीय बजट 2024-25 दीर्घकालीन विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि करता है। भारत तेज विकास के लिए अपनी असाधारण क्षमता का लाभ उठाने की स्थिति में है।

दीपक सूद
(लेखक, एसोचैम के महासचिव हैं)

केंद्रीय बजट 2024-25 दीर्घकालीन विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि करता है। भारत तेज विकास के लिए अपनी असाधारण क्षमता का लाभ उठाने की स्थिति में है। भारत की आर्थिक शक्ति मजबूत करने की दिशा में लक्षित 2024-25 वित्त वर्ष के केन्द्रीय बजट में प्रगतिशील सुधारों की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इस बजट में एमएसएमई, ई-कामर्स व स्टार्टअप की प्रगति के अनेक प्राविधान किए गए हैं। इससे 'विकसित भारत' की दिशा में देश के रोडमैप के लिए अतिरिक्त समर्थन जुटाया गया है। वित्त मंत्री सुश्री निर्मला सीतारमण ने गरीब, महिला, युवा और किसान को सशक्त बनाने के लिए अनेक प्राविधान इस बजट में किए हैं। बजट में उनके द्वारा की गई घोषणायें एकदम सही समय पर सामने आई हैं। इनसे भारतीय अर्थव्यवस्था को 'अमृत काल' में आगे बढ़ाने तथा नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने की प्रतिबद्धता प्रकट की गई है। इन प्रयासों से भारत का कद उभरती विश्व व्यवस्था में और आगे बढ़ेगा। पिछले दस साल में भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया में दसवें नंबर की अर्थव्यवस्था से आगे बढ़ते हुए अब दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने लगभग 60 बाद पहली बार लगातार मिले अपने तीसरे कार्यकाल में देश की अर्थव्यवस्था को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने की प्रतिज्ञा की है। मोदी की तीसरी सरकार का पहला बजट इस दिशा में बढ़ने की प्रतिबद्धता प्रकट करता है।

इस बजट में एमएसएमई को और मजबूत करने के प्रयास किए गए हैं। बजट में उचित ही औद्योगिक पिरामिड के सबसे निचले स्तर पर मौजूद एमएसएमई को आगे बढ़ाने के प्रयास शामिल हैं जिसमें उसे आसानी से मिलने वाले कर्जों की व्यवस्था की गई है। भातर में वर्तमान समय में 633.9 लाख एमएसएमई हैं। इनमें से 99 प्रतिशत सूक्ष्म उद्यमों की परिभाषा में आते हैं जिनकी संख्या 630.5 लाख है। 10 मिलियन रुपयों तक निवेश वाले सूक्ष्म उद्यमों को छोटे या मझोले उद्यम न बन पाने के पीछे एक प्रमुख कारण उनकी औपचारिक कर्ज तक पहुंच न होना था। 'मुद्रा लोन' की धनराशि दूनी करने तथा नई 'सिडबी' शाखायें स्थापित करने के माध्यम से ये संगठन अब आसानी से कर्ज तक पहुंच सकेंगे।

अन्य कदमों, जैसे 'मैनडेटरी ट्रेड रिसीवेबल्स डिस्कांउटिंग सिस्टम' से तरलता को बढ़ावा मिला है, जबकि औद्योगिक पार्क एमएसएमई को बहु-प्रतीक्षित डिजिटल समर्थन प्रदान करेंगे जो आमतौर से उनकी पहुंच में नहीं था। इसके साथ ही एमएसएमई के लिएनई कर्ज गारंटी योजनाओं ने बिना बंधक या तीसरे पक्ष की गारंटी के कर्जों की उपलब्धता सहज की है। इससे छोटे बिजनेस मालिकों पर वित्तीय बोझ कम होगा तथा उद्यामिता को बढ़ावा मिलेगा। इस सकारात्मक समर्थन से इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में जोखिम से बचने की प्रवृत्ति छोड़ने का विश्वास पैदा होगा और वह 2047 का लक्ष्य बना कर तेजी से आगे बढ़ेगा। इस बजट में सरकार ने कौशल संवर्धन तथा रोजगार सृजन को केन्द्र में रखा है। इस बजट के माध्यम से सरकार ने देश के नौजवानों में कौशल संवर्धन तथा रोजगार के अवसर बढ़ाने की आवश्यकता पर सकारात्मक प्रतिक्रिया की है। कौशल संवर्धन पर लगातार जोर देने से प्रशिक्षण संस्थानों तथा बड़े निगमों को पेशेवर रूप से प्रशिक्षित श्रमशक्ति तैयार करने के दृष्टिकोण से सहभागिता में सहायता मिलेगी। यह प्रशिक्षित श्रमशक्ति आसानी से बड़े एमएसएमई परिवेश में समाहित होगी, जबकि वर्तमान समय में इसे अक्सर प्रशिक्षण उद्देश्यों के लिए पैसे की कमी अनुभव होती है। लेकिन योजनाओं का समुचित क्रियान्वयन महत्वपूर्ण होगा ताकि रोजगार सृजन के प्रयास सही दिशा में आगे बढ़ सकें।

मोदी सरकार ने अपने तीसरे कार्यकाल के इस बजट से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के उल्लेखनीय प्रयास किए हैं। हालांकि, भारत का पिछले वर्षों में तेजी से शहरीकरण हुआ है, पर इसके बावजूद देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था बड़ी संख्या में जनसंख्या की आजीविका का आधार बनी हुई है। मोदी सरकार पिछले दस साल से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देने के प्रयास कर रही है। इस प्रकार वर्तमान बजट में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सरकार की ओर से मिलने वाले समर्थन का उद्देश्य इस क्षेत्र को मजबूत करना है जो देश की लगातार आर्थिक वृद्धि के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। बजट 2024 में कुछ महत्वपूर्ण घोषणायें की गई हैं जिनका उद्देश्य अनाजों व तिलहनों में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा इनका उत्पादन बढ़ाना है। बजट में उठाए गए कदमों से नए आर्थिक क्लस्टर बनाने में व्यापक रूप से सहायता मिलेगी जो अर्थव्यवस्था का निरंतर विकास सुनिश्चित करेंगे। बजट का उद्देश्य एक करोड़ किसानों को 'प्राकृतिक खेती' में प्रशिक्षण देना है। इसके साथ ही किसानों को मार्केटिंग, प्रमाणन व ब्रांडिंग, आर्गेनिक फार्मिंग, आदि क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण देने की योजना है। इन सबसे किसानों की अर्थव्यवस्था तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बहुत गति मिलेगी। सरकार ने भोजन की उपलब्धता पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को संबोधित करने का लक्ष्य बनाया है। इससे सरकार का ग्रामीण परिस्थितिकी में दीर्घकालीन व टिकाऊ विकास का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। सरकार ने इस बजट के माध्यम से स्टार्टअप और ई-कामर्स को आगे बढ़ाने के लिए स्पष्ट कदम उठाए हैं।

बजट में 'एंजल टैक्स' समाप्त करने की घोषणा की गई है। इससे पूरे देश के स्टार्टअप सिस्टम में खुशी की लहर दौड़ गई है। 2012 में लागू किए गए 'एंजल टैक्स' को गैर पंजीकृत कंपनियों द्वारा भारतीय निवेशकों को जारी किए गए शेयरों से एकत्रित पूंजी पर लगाया जाता था, यदि शेयरों का मूल्य कंपनी की 'फेयर मार्केट वैल्यू'-एफएमवी से अधिक हो। इसी प्रकार ई-कामर्स का प्रयोग करने वाले व्यापारियों और कारीगरों को इस बजट में राहत दी गई है। इन पर टीडीएस न केवल घटाया गया है, बल्कि टीडीएस विलंब से जमा करने को अपराध की श्रेणी से हटा दिया गया है। इससे वर्तमान समय में ई-कामर्स निर्यात जो 2 बिलियन डालर है, उसके 2030 तक 350 बिलियन डालर होने की उम्मीद है। कस्टम ड्यूटी में परिवर्तन से सरकार का इरादा उन कारीगरों और व्यापारियों को सहायता देना है जो अपनी चीजें वेबसाइटों से बेचते हैं।

यह कदम 'मेक इन इंडिया' रणनीति के अनुरूप है। तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था होने के कारण भारत की ऊर्जा आवश्यकतायें तेजी से बढ़ रही हैं। छोटे नाभिकीय रिएक्टरों में निजी निवेश प्रोत्साहन तथा नाभिकीय ऊर्जा के नए रूपों में आरएंडडी को बढ़ावा देने के माध्यम से बजट भारत की 'ऊर्जा सुरक्षा' रणनीति सुनिश्चित करने का प्रयास करता है। विभिन्न क्लस्टरों में नियमित 'ऊर्जा आडिट' के माध्यम से बड़े वाणिज्यिक थर्मल प्लांटों की स्थापना तथा भंडारण नीति को गति देकर बजट भारत को बढ़ती ऊर्जा मांग से निपटने का अवसर देता है। हालांकि, हमारे 'हरित ऊर्जा' लक्ष्य बहुत महत्वाकांक्षी हैं और 'हरित ईंधनों' की दिशा में परिवर्तन के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है।

भूमि रिकार्डों का 'डिजिटलीकरण' बजट में प्रस्तावित एक महत्वपूर्ण कदम है। इसका भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रगति पर संभवतः सर्वाधिक प्रभाव पड़ेगा। हमारी भूमि के विशाल हिस्से, खासकर ग्रामीण भारत में अक्सर समुचित दस्तावेजीकरण न होने के कारण विवादों को जन्म देते हैं। यह बड़ी परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण की बड़ी बाधा है। पूरे भारत में भूमि रिकार्डों के डिजिटलकरण से सरकार विधि व्यवस्था में अनेक मामलों में बिचौलियों को समाप्त करने में सफल होगी तथा भूमि विवादों की संख्या में कमी आएगी। इस प्रकार कुल मिला कर केन्द्रीय बजट 2024-25 दीर्घकालीन टिकाऊ वृद्धि के लिए सरकार की प्रतिबद्धता मजबूत करता है। रणनीतिक निवेशों तथा अग्रगामी नीतियों से भारत वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में सफल होगा तथा अपना सामाजिक-आर्थिक विकास करेगा। 'विकसित भारत' का रास्ता अनेक चुनौतियों से भरा है, लेकिन टिकाऊ दृष्टिकोण व प्रगतिशील नीतिगत समर्थन से हम यह सपना पूरा कर सकते हैं।

बजट के द्वारा राजकोषीय व रोजगार संतुलन

> बजट राजकोषीय अनुशासन के मार्ग पर चल रहा है, भले ही पीएम मोदी गठबंधन सरकार की अगुआई कर रहे हों।

कुमारदीप बनर्जी
(लेखिक नीति विश्लेषक हैं)

मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का ग्यारहवां पूर्ण-कालिक बजट राजकोषीय अनुशासन के मार्ग पर चल रहा है, भले ही वह गठबंधन सरकार की अगुआई कर रहे हों। 4 जून के आश्चर्यजनक नतीजों ने प्रधानमंत्री मोदी को उनके करियर में शायद पहली बार गठबंधन सरकार दिलाई, लेकिन इसके बावजूद उनके बजट प्रस्तावों को रोका नहीं जा सका, जिसमें पृष्ठभूमि में ठोस अर्थशास्त्र के साथ-साथ राजनीतिक भी शामिल था।

बजट से पहले, कई लोगों ने उम्मीद की थी कि वित्त अधिनियम इस साल के अंत में होने वाले हरियाणा, महाराष्ट्र और झारखंड के राज्य चुनावों को ध्यान में रखते हुए लोकलुभावन होगा। हालांकि निर्मला सीतारमण की जेब से जो निकला, वह एक ऐसा दस्तावेज था, जिसने लोकलुभावन मांगों के आगे झुकने के बिना दीर्घकालिक विकास और सभ्य बुनियादी ढाँचे के खर्च के मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चुना। सरकार द्वारा उजागर किया गया मुख्य विषय रोजगार है। देश के युवाओं के लिए लाखों नौकरियों के सृजन के लिए घोषित योजनाओं की व्यवहार्यता के बारे में बजट के बाद के विश्लेषण में सवाल उठाए गए हैं।

भारत की कुछ सबसे बड़ी कंपनियों में प्रति वर्ष लाखों युवाओं को सरकारी वजीफा देने का वादा करने वाली प्रशिक्षु योजना तभी गेम चेंजर साबित हो सकती है, जब इन युवा प्रशिक्षुओं को ध्यानपूर्वक प्रशिक्षित किया जाए, ताकि उनका कार्यकाल समाप्त होने के बाद उन्हें औपचारिक रूप से नौकरी मिल सके। अपेक्षाकृत अकुशल कार्यबल की प्रचुर उपलब्धता के बारे में गंभीर चिंताएँ हैं, जो बिना कोई सार्थक कौशल सीखे बड़े

कार्यालयों में काम करते रहते हैं।

ईपीएफओ से जुड़ी नई नौकरी प्रोत्साहन योजना के बारे में भी इसी तरह के सवाल उठाए गए हैं, जिसके कई पहलू हैं, जो संभवतः एक सुविचारित नीति को अंधेरे कोने में धकेल रहे हैं। यह कहा जा सकता है कि नीतिगत धक्का मुख्य रूप से अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत अधिक युवाओं को औपचारिक मानक कार्यबल के भीतर लाना और उनमें शुरू से ही वित्तीय साक्षरता अनुशासन पैदा करना है।

हालांकि, यह वित्तीय साक्षरता तब धराशायी हो जाती है जब कोई सट्टा इक्विटी बाजार में निवेश करने वाले किसी भी निवेशक के लिए कर संरचनाओं में किए गए बदलावों को देखता है। पूंजीगत लाभ कर की बढ़ी हुई दर और नई आयकर व्यवस्था को बढ़ावा देना, वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम के विपरीत प्रतीत होता है, सरकार चाहती है कि युवा पहले महीने के वेतन सब्सिडी के रूप में 15,000 रुपये का पूरा लाभ उठाने का बीड़ा उठाएं। पहले की कर व्यवस्थाओं ने औपचारिक नौकरी क्षेत्र में प्रवेश करने वाले किसी भी युवा के लिए वित्तीय जिम्मेदारी की भावना पैदा की, जिसमें कई लोगों ने भविष्य में कर छूट का दावा करने और बचत करने के साधन के रूप में कम से कम एक उत्पाद चुना। इसने उन्हें कामकाजी पेशेवरों के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान एक लंबे वित्तीय अनुशासन पथ पर आगे बढ़ाया, जो अब धीरे-धीरे आसान होता दिख रहा है। सरकार के पास प्रति-तर्क यह हो सकता है कि वे चाहते हैं कि उपभोक्ता अर्थव्यवस्था पहले बढ़े, जिसका नेतृत्व युवा करें, जो अपनी नई नौकरियों में मिलने वाले मासिक वेतन से खाद्य पदार्थों, मनोरंजन आदि पर खर्च करने के लिए अधिक इच्छुक हो सकते हैं। हालांकि, यह उन्हें बचत की आदत डालने से रोकता है, जो बारिश के दिनों या कोविड जैसे संकटों के दौरान उपयोगी होती है। हां, सरकार ने राजकोषीय अनुशासन को बनाए रखने में अच्छा काम किया, उम्मीद से बेहतर जीडीपी वृद्धि और केंद्रीय बैंक से भारी लाभांश भुगतान से उत्साहित। खाद्य पदार्थों को छोड़कर कुल मुद्रास्फीति भी सहनीय स्तरों के भीतर है, जिससे सरकार को कल्याणकारी परियोजनाओं पर खर्च करने के लिए एक सहारा मिल रहा है, जो उसे लगता है कि आवश्यक है। केंद्रीय बजट 24-25 असंतुष्ट मतदाताओं को वापस लुभाने का एक प्रयास है। 4 जून के नतीजों से भाजपा ने जो सबक लिया है, वह यह है कि युवा विशाल मंदिरों, कुछ स्मार्ट चमचमाती ट्रेनों और अपने मेड इन इंडिया फोन में सस्ते मोबाइल डेटा को लेकर उत्साहित हैं।

लेकिन वे तेजी से पैसा कमाने, एक आकर्षक व्यवसाय करने के लिए उत्सुक हो रहे हैं, जो उनकी महत्वाकांक्षी जीवन शैली को आगे बढ़ाए। फिर गठबंधन की राजनीति के दबाव और खींचतान है, जिसमें एनडीए के दो सहयोगी टीडीपी और जेडी(यू) अपने मुख्य निर्वाचन क्षेत्रों की सेवा करने के लिए अपनी इच्छा सूची रखते हैं। एक दीर्घकालिक पासा फेंका गया है, शायद एनडीए 3.0 ने इस बजट के साथ गोल्डीलॉक्स संतुलन हासिल कर लिया है।

आप की बात

कारगिल युद्ध की स्मृति

कारगिल युद्ध की 25वीं वर्षगांठ पर हम शहीदों को नमन कर रहे हैं। इस युद्ध ने भारत को कई सबक दिए हैं। पहले जहां सैनिकों के पांच पर्याप्त संसाधन, जैसे बुलेट प्रूफ जैकेट और बर्फ में पहनने वाले जूते नहीं थे, वहीं वे आज सबको उपलब्ध हैं। 25 साल में सेना का कायापलट हो गया है और अब उसके पास अनेक आधुनिक संसाधन मौजूद हैं। फिर भी देश की सुरक्षा में लगे सैनिकों के लिए निरंतर नई तकनीकों और मजबूत गुप्तचर तंत्र को अद्यतन बनाने की आवश्यकता है। सेना के भीतर घुसे विदेशी जासूसों या उनको गुप्त जानकारी देने वालों की पहचान कर कठोर दंड देने की जरूरत है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की नई तकनीक का उपयोग पूरे देश की सीमा पर ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि घुसपैठियों का स्वचालित ढंग से सफाया जा जाए। इस्राइल ने अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिए तकनीक का व्यापक विकास कर अनेक ऐसी तकनीकें भारत को भी सौंपी हैं। इनसे उन दुर्गम इलाकों में भी सटीक निगरानी संभव होगी जहां सैनिकों को पहुंचने व गश्त करने में कठिनाई होती है। लेकिन इस्राइल पर हुए भयंकरतम आतंकी हमले से स्पष्ट है कि केवल तकनीक पर निर्भर रहना ठीक नहीं होगा। कारगिल शहीदों को सही श्रृद्धांजलि सीमाओं की सुरक्षा को अभेद्य बनाना होगा।

– **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

संघ की बढ़ती स्वीकार्यता

केंद्र सरकार ने मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर खंडपीठ के समक्ष शपथ पत्र देकर कहा है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों में केंद्रीय कर्मचारियों के शामिल होने पर अब केंद्र को कोई आपत्ति नहीं है। संघ एक गैर राजनीतिक संगठन है एवं अन्य संगठनों की तरह इसकी गतिविधियों में याचिकाकर्ता को शामिल होने का पूरा अधिकार है। केंद्र सरकार ने वर्ष 1966 से संघ की गतिविधियों को राजनीतिक मानकर केंद्रीय कर्मचारियों को इसमें शामिल होने पर प्रतिबंध लगा रखा था। अब यह प्रतिबंध हटा लिया गया है। अपनी प्रखर व स्पष्ट राष्ट्रवादी विचारधारा के कारण आरएसएस कांग्रेस समेत अनेक ऐसे राजनीतिक दलों के निशाने पर रहा है जो मुस्लिम तुष्टीकरण को अपने वोटबैंक का माध्यम बना कर जनता को संघ के खिलाफ भड़काते रहे हैं। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने भारत-चीन युद्ध के समय संघ की प्रशंसनीय भूमिका को देखते हुए उसे गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया था। संघ के स्वयंसेवक देश में अनेक आपदाओं के समय राहत कार्यों से अपनी पहचान बना चुके हैं। ऐसे में सरकारी कर्मचारियों को संघ के कार्यक्रमों में भाग लेने पर प्रतिबंध का कोई औचित्य नहीं था।

– **मनमोहन राजावत,** शाजापुर

परीक्षा व्यवस्था

सुप्रीम कोर्ट ने नीट यूजी परीक्षा को निरस्त नहीं किया, हालांकि उसने परीक्षा में हुई गड़बड़ी को स्वीकार किया है। पेपर लीक के खिलाफ सख्त कानून अलग-अलग राज्य बना रहे हैं। इसके बजाय केंद्र को ही सभी बड़ी परीक्षाओं के लिए पूरे देश में एक कानून लागू करना चाहिए। पेपर लीक व किसी कोचिंग सेंटर के कई छात्रों का अत्यधिक नंबर लाने जैसी विसंगतियों के पुख्ता सबूत हैं। इन विकृतियों को देखते हुए पेपर सेट करने व उनको परीक्षा केन्द्रों तक पहुंचाने की एकदम नई व्यवस्था पर विचार होना चाहिए। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा ऐसा सॉफ्टवेयर बनाया जाए जो एक ही विषय के लिए कई तरह के प्रश्न पत्र बनाएं और यह प्रश्न पत्र परीक्षा से एक घंटे पूर्व सभी परीक्षा केंद्रों पर ऑनलाइन पहुंचाया जाए। इससे परीक्षा में मानवीय दखल पूरी तरह खत्म होने से कोई हेराफेरी संभव नहीं होगी। यदि परीक्षा परिणाम एक सप्ताह में जारी हो जाएं तो शिक्षा माफिया कोई गड़बड़ी नहीं कर पाएंगे। इससे परीक्षाएं पूरी तरह पारदर्शी होंगी। इसके साथ ही इंटरव्यू में भी पक्षपात समाप्त करने के प्रयास किए जाने चाहिए। परीक्षा व्यवस्था में परिवर्तन के सुझावों पर सभी पक्षों की राय लेकर केन्द्र व राज्यों के स्तर पर प्रभावशाली कदम उठने चाहिए।

सुभाष बुडावन वाला, रतलाम

बाढ़ की विभीषिका

बाढ़ की विभीषिका अनेक स्थानों पर दिख रही है। फिर चाहे वह मुंबई, पूना, गुजरात, राजस्थान, हिमाचल, यूपी और बिहार हो, हर बाढ़ से मुसीबत आ रही है। पानी घरों में घुस रहा है, सड़कें डूब रही हैं, घरों में दरारें पड़ रही हैं तो कहीं पुल और पहाड़ दरक रहे हैं। यदि बरसाती पानी की संग्रहण व्यवस्थाओं पर ध्यान दिया जाए तो कभी पानी की कमी नहीं होगी। लेकिन वर्षा जल के प्राकृतिक संरक्षक, वर्षा को बुलाने वाले तथा भूमिगत जल भंडारों के भरने में सहायक हरे-भरे जंगल कट रहे हैं और हरियाली उजड़ रही है। दूसरी ओर सीमेंट- कंक्रीट के नए-नए जंगल उभर रहे हैं जो पानी के प्राकृतिक बहाव में बाधा डालने के साथ ही बरसाती पानी को भूमिगत जल भंडारों तक पहुंचने से रोकते हैं। इससे सरकारों और जनता को पौधरोपण की याद आती है पर उनकी रखवाली भगवान् भरोसे छोड़ दी जाती है। शहरों में लगे पेड़ों की जड़ें चारों ओर पत्थरों, डामर या कंक्रीट से घिर जाती हैं और पेड़ों की अकाल मौत का कारण बनती हैं। नगर नियोजन, वृक्षारोपण व हरियाली की सुरक्षा में समन्वय बनाना जरूरी हो गया है।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 139

दूर होगी बाजार की कमी

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने म्युचुअल फंड निवेशकों के लिए एक परिसंपत्ति वर्ग का प्रस्ताव रखा है। इस संबंध में एक मशविरा पत्र 16 जुलाई को प्रकाशित किया गया और प्रस्तावित योजना पर सार्वजनिक टिप्पणियां 6 अगस्त तक स्वीकार की जाएंगी। यह नया परिसंपत्ति वर्ग परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनियों (एएमसी) को इजाजत देगा कि वे फंड पैकेजिंग में उच्च जोखिम, उच्च रिटर्न वाली रणनीतियों को शामिल कर सकें। यह उन निवेशकों के लिए होगा जिनमें जोखिम लेने के साथ-साथ वित्तीय क्षमता भी मौजूद होगी। प्रस्ताव में इन उत्पादों को पोर्टफोलियो प्रबंधन योजनाओं (पीएमएस) और 'वनीला' म्युचुअल फंड्स के बीच में कहीं रखने की बात है। इसके लिए न्यूनतम निवेश मूल्य 10 लाख रुपये है जो पीएमएस के लिए तय 50 लाख रुपये की सीमा से कम है।

इन योजनाओं को लॉन्च करने वाली एएमसी को मुख्य निवेश अधिकारी नियुक्त करना होगा जिसके पास कम से कम 5,000 करोड़ रुपये की संपत्ति का प्रबंधन करने का न्यूनतम 10 वर्ष का अनुभव हो। इसके अलावा फंड प्रबंधक ऐसे होंगे जिन्हें कम से कम 3,000 करोड़ रुपये की संपत्ति के प्रबंधन का न्यूनतम सात वर्ष का अनुभव हो। एएमसी का खुद भी कम से कम तीन साल से संचालन हो रहा हो और उसके प्रबंधन में न्यूनतम 10,000 करोड़ रुपये की संपत्ति होनी चाहिए।

ये प्रस्तावित म्युचुअल फंड जहां म्युचुअल फंड की तरह सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी), सिस्टमैटिक विदड्रॉल प्लान और सिस्टमैटिक ट्रांसफर प्लान पेश करेंगे, वहीं इस नई परिसंपत्ति श्रेणी के फंड प्रबंधकों के पास यह लचीलापन होगा कि वे हेजिंग के अलावा अन्य उद्देश्यों से ऐसी रणनीतियां इस्तेमाल कर सकता है जिनमें डेरिवेटिव का इस्तेमाल किया गया हो। नई परिसंपत्ति श्रेणी के फंड को अलग तरह से ब्रांड करना होगा ताकि निवेशक उसमें और कम जोखिम वाले म्युचुअल फंड में अंतर कर सकें। इन फंड में यूनिट भुनाने की आवृत्ति को समायोजित करने में अधिक लचीलापन होगा ताकि प्रबंधकों के समक्ष अचानक नकदी की कमी की स्थिति न बने।

पत्र में यह भी सुझाया गया है कि यूनिट को एक्सचेंज ट्रेडेड फंड या ईटीएफ की तरह शेयर बाजार में भी सूचीबद्ध करना होगा ताकि आसानी से इनमें प्रवेश और निर्गम संभव हो सके। पत्र का सुझाव है कि फंड की इस नई श्रेणी के जरिये 'लॉन्ग-शॉर्ट' पोर्टफोलियो तैयार किया जाए ताकि बढ़ती या गिरती शेयर कीमतों का लाभ उठाया जा सके। इसके साथ ही 'इनवर्स ईटीएफ' मॉडल भी बनाया जा सकता है ताकि फंड के पोर्टफोलियो को विपरीत दिशा में एक मानक ईटीएफ तक पहुंचाया जा सके। ऐसी रणनीतियों से फंड डेरिवेटिव की मदद से कीमतों में उतार-चढ़ाव का लाभ ले सकेंगे। ऐसी रणनीतियां हेज फंडों द्वारा अपनाई जाती हैं जो उच्च रिटर्न हासिल कर पाते हैं भले ही बाजार की दिशा कुछ भी हो। परंतु इनमें भी बहुत जोखिम होता है और सावधानीपूर्वक प्रबंधन करने की आवश्यकता होती है क्योंकि इनमें भारी नुकसान भी हो सकता है। प्रस्ताव का एक उद्देश्य संसाधनों और जोखिम क्षमता वाले निवेशकों को अपंजीकृत, अनधिकृत संस्थाओं का सहारा लिए बिना उच्च जोखिम वाली रणनीतियों में भाग लेने की अनुमति देना है। ऐसे औपचारिक परसंपत्ति वर्ग के अभाव में भारी धनराशि वाले निवेशक अक्सर उन योजनाओं की ओर चले जाते थे जिन्हें अज्ञात संस्थाओं द्वारा चलाया जाता। ये इतने अधिक रिटर्न की बात कहतीं जो हकीकत से कोसों दूर होता। विनियमित माहौल में सेबी को उम्मीद है कि इन अनधिकृत योजनाओं को बाजार से बाहर किया जा सकेगा और उनकी जगह विनियमित फंड ले लेंगे। इस नई परिसंपत्ति वर्ग को औपचारिक रूप प्रदान करना दरअसल इस बात को स्वीकार करना है कि इस प्रोफाइल के निवेशकों की जरूरत क्या है। यह उन्हें अपंजीकृत कारोबारियों से एक किस्म का संरक्षण भी मुहैया कराती है।

बहरहाल अगर यह नया परिसंपत्ति वर्ग गति पकड़ता है तो सेबी और एक्सचेंजों को डेरिवेटिव में उछाल से निपटना होगा और निगरानी सख्त करनी होगी। अगर यह सब किया जा सका तो नई परिसंपत्ति श्रेणी बाजार में मौजूद एक कमी को दूर करेगी।

विनय सिन्हा

सुधार पर दीर्घकालिक नजरिये की आवश्यकता

भविष्य में आर्थिक सुधार उत्पाद बाजार के बजाय कारक बाजार पर केंद्रित होने चाहिए। बजट की घोषणाओं के हवाले से सुधार के संबंध में राय दे रहे हैं वी एस कृष्णन

भारत में बजट को लेकर इतनी उत्सुकता और उम्मीदें क्यों होती हैं? सामान्यतया तो दुनिया के अन्य देशों की तरह इसे भी सालाना लेखा कवायद ही होना चाहिए। परंतु भारत में यह अलग इसलिए है कि 1990 के दशक के सुधार के दौरान बजट न केवल व्यापक नीतिगत सुधार की घोषणा का माध्यम बना था बल्कि उसमें ही मध्यम से लंबी अवधि की प्राथमिकताओं का ब्योरा भी दिया गया था।

इस बजट में नीतियों से अधिक कार्यक्रमों पर जोर दिया गया। यह बजट रोजगार को लेकर खासकर युवा बेरोजगारी को लेकर सरकार की चिंताओं को जाहिर करता है। सरकार ने जो प्राथमिकताएं सामने रखी हैं वे कई तरह से इस क्षेत्र की समस्याओं को दूर करना चाहती हैं। संतोषजनक बात यह थी किस सरकार राजकोषीय विवेक को लेकर अपनी प्रतिबद्धता पर टिकी रही और चालू वर्ष में राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी के 4.9 फीसदी पर लाने का लक्ष्य तय किया। अंतरिम बजट में इसके 5.1 फीसदी रहने का अनुमान जताया गया था। यह वादा भी किया गया कि अगले वर्ष इसे 4.5 फीसदी तक लाया जाएगा। कराधान के मोर्चे पर अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष दोनों करों की प्रक्रिया को सहज बनाने तथा योजनाओं और रियायतों की बहुलता को धीरे-धीरे चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने की बात कही गई है। प्राथमिकता वाले अन्य क्षेत्रों में कर विवादों में कमी लाना शामिल है। इस प्रयास में, अप्रत्यक्ष कर जैसे उत्पाद शुल्क और सेवा करों से संबंधित विरासती कर मामलों में अपील दायर करने की मूल्य सीमा बढ़ा दी गई है। करदाताओं को दी जाने वाली सेवाओं के डिजिटलीकरण को भी प्राथमिकता देने की बात कही गई है ताकि कर भुगतान के अनुभव को कम तनावपूर्ण बनाया जा सके। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) लागू होने से बजट में इससे संबंधित नीतिगत घोषणाएं नहीं हो पाई हैं, क्योंकि इनका निर्णय केंद्र और राज्यों की संयुक्त जीएसटी परिषद द्वारा किया जाता है।

वित्त मंत्री ने यह अवश्य कहा कि आगे चलकर दरों को युक्तिसंगत बनाया जाएगा और प्रक्रियाओं को सहज बनाया जाएगा ताकि कारोबारी सुगमता में इजाफा किया जा सके। सीमा शुल्क के मोर्चे पर कुछ विशिष्ट प्रस्ताव अवश्य दिए गए जहां सरकार ने एक बार फिर 18 प्रतिशत की औसत सीमा शुल्क दर को कम करके 10 फीसदी से कम करने का अवसर गंवा दिया। बजट में एक तीन स्तरीय शुल्क ढांचा पेश किया जा सकता था जहां न्यूनतम दर कच्चे माल और घटकों पर होती, उससे कुछ ऊंची दर मध्यवर्ती वस्तुओं पर और सबसे ऊंची दर तैयार वस्तुओं पर लागू होती। यदि ऐसा किया जाता तो इनवर्टेड ड्यूटी ढांचे की दिक्कत भी दूर हो जाती। इसके बजाय सरकार ने क्षेत्रवार रुख अपनाने का तय किया। उसने ऐसे कई उद्योगों के कच्चे माल और घटकों बुनियादी सीमा शुल्क दर कम कर दी जिन्होंने निर्यात में अच्छा प्रदर्शन किया है। इनमें समुद्री निर्यात, सोने के आभूषण, प्लैटिनम (सोने और प्लैटिनम के आभूषणों पर लगने वाले सीमा शुल्क में उल्लेखनीय कमी की गई है), मोबाइल फोन और चार्जर तथा कुछ इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों में इस्तेमाल होने वाले कलपुर्जे शामिल हैं।

बजट में सोलर सेल और पैनल के निर्माण में काम आने वाले पूंजीगत उपकरणों पर आयात शुल्क में भारी कमी की गई। इसके अलावा अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा जैसे रणनीतिक रूप से अहम क्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले महत्त्वपूर्ण खनिजों के आयात पर भी शुल्क कम किया गया है। श्रम के गहन इस्तेमाल वाले क्षेत्रों मसलन चमड़ा और वस्त्र आदि में भी चुनिंदा कच्चे माल पर राहत प्रदान की गई है। वस्त्र क्षेत्र में ड्यूटी इनवर्जन (जहां कच्चे माल पर अंतिम उत्पाद से अधिक कर लगता है) की समस्या को हल करने के लिए सरकार ने मेथिलीन डाइफिनाइल डिसोसाइनेट (एमडीआई) जैसे कच्चे माल पर आधारभूत सीमा शुल्क में कमी कर दी है। उसे स्पॉन्डेक्स यार्न (सिंथेटिक लचीला धागा) बनाने में इस्तेमाल किया जाता है।

देश के जलवायु लक्ष्य के अनुरूप ही सरकार ने पीवीसी फ्लेक्स बैनरों जैसे प्लास्टिक पर बुनियादी सीमा शुल्क बढ़ा दिया है। इस प्रकार का प्लास्टिक जैविक रूप से अपघटित नहीं होता है और पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह है। ऐसा इसका आयात कम करने के लिए किया गया है। बहरहाल, इन उद्योगों के लिए और भी काफी कुछ किया जा सकता था ताकि कच्चे माल और घटकों पर व्यापक रियायत के साथ रोजगार के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में और कदम बढ़ाए जा सकें।

बजट भाषण का एक दिलचस्प पहलू यह था कि सरकार कारक बाजार सुधार के लिए वृहद आर्थिक ढांचा तैयार करेगी। उदाहरण के लिए भूमि बाजार जो कृषि और शहरीकरण पर असर डालता है, स्वास्थ्य और शिक्षा को प्रभावित करने वाला श्रम बाजार और कुल कारक उत्पादकता वृद्धि के लिए जरूरी उद्यमिता को ध्यान में रखकर ढांचा बनाया जाएगा।

यह बात महत्त्वपूर्ण है क्योंकि सन 1990 के दशक के सुधार उत्पाद बाजार पर केंद्रित थे और शुल्क नीति से संबंधित सुधार किए गए थे। नया ढांचा सुधार को लेकर दिलचस्प विचार पेश कर सकता है, खासकर नियामकीय ढांचे को ध्यान में रखते हुए। बहरहाल, इसके लिए केंद्र, राज्यों और स्थानीय सरकारों के बीच साझेदारी की आवश्यकता होगी। केंद्र सरकार अपने दम पर जिन सुधार को लागू कर सकती थी वे पूरे हो चुके हैं और कारक बाजार सुधार के लिए राज्यों और स्थानीय सरकारों के साथ सक्रिय सहयोग और मशविरे की आवश्यकता होगी। शायद यह अवसर है कि जीएसटी परिषद जैसा ढांचा बनाया जाए जो भूमि और श्रम बाजार सुधार को अंजाम दे सके। ऐसा संस्थान इन सुधार को लेकर सहमति तैयार कर सकता है। सरकार वैट सुधार को लागू करने वाली पहले बनी मुख्यमंत्रियों की अधिकार प्राप्त समिति से भी विचार ग्रहण कर सकती है और इन संस्थानों का नेतृत्व विपक्ष शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों या वित्त मंत्रियों को सौंप सकती है। ऐसा करने से सुधार के लिए बेहतर माहौल बन सकता है। यह बात प्रधानमंत्री के उस हालिया पर्यवेक्षण के अनुरूप है जिसमें उन्होंने कहा था कि देश दल से अधिक महत्त्वपूर्ण है। ऐसे में विकसित भारत की ओर बढ़ने का आह्वान सहकारी संघवाद के प्रति जयघोष के साथ होना चाहिए।

(लेखक सीबीआईसी के पूर्व सदस्य हैं)

परियोजनाओं में देरी से बढ़ती लागत

अतार्किक विकल्प

देवाशिष बसु

पिछले दिनों सोशल मीडिया पुलों के ढहने, हवाईअड्डों की छतों के गिरने, नए-नए बने एक्सप्रेसवे के बह जाने या उनमें बड़ी दरारें बनने, नवनिर्मित हवाईअड्डों या ट्रेन स्टेशनों की छतों से बारिश का पानी गिरने के संदेशों से भर गया। देशवासी निर्माणाधीन बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता को लेकर चिंतित हैं, खासतौर पर जब से सरकार ने बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे पर खर्च में भारी बढ़ोतरी की है। पिछले दो बजट में प्रत्येक में सरकार ने 10 लाख करोड़ रुपये से अधिक का आवंटन किया गया है और इस आवंटन स्तर को बनाए रखने की योजना है। लेकिन चिंता केवल बन रहे बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता को लेकर ही नहीं है, बल्कि एक बड़ा सवाल देश की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के निर्माण में लगातार होने वाली देरी भी है। यह आंकड़ों में भी दिखाई देता है जो सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा पेश किया गया है।

1 अप्रैल, 2024 तक यह मंत्रालय 1873 परियोजनाओं की निगरानी कर रहा था जिन्हें 612 परियोजनाओं (1,000 करोड़ रुपये और इससे अधिक की लागत वाली) और 1,261 बड़ी परियोजनाओं (150-1,000 करोड़ रुपये तक की) में विभाजित किया गया था। इन 1,873 परियोजनाओं में से 449 परियोजनाओं की लागत स्वीकृत लागत से कहीं अधिक बढ़ गई जबकि 779 परियोजनाओं को देरी का सामना करना पड़ा। इन परियोजनाओं की लागत 26.87 लाख करोड़ रुपये होने की उम्मीद थी लेकिन अब इनकी लागत में 18.65 प्रतिशत की उछाल आई है और यह 31.88 लाख करोड़ रुपये हो गई है।

इत्तफाक से सबसे बड़ा खर्च सड़क परियोजनाओं का है (1,093 परियोजनाओं की निगरानी की जा रही है) जहां लागत में तेजी काफी कम है और यह महज 8.38 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 8.68 लाख करोड़ रुपये तक है। लेकिन रेलवे में क्रियान्वयन की रफ्तार सही नहीं रही जिसके खाते में स्वीकृत परियोजनाओं का दूसरा सबसे बड़ा हिस्सा है। करीब 249 रेलवे परियोजनाओं पर काम चल रहा है जिनकी मूल लागत 4.44 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर अब तक 6.85 लाख करोड़ रुपये हो गई है जो 54 प्रतिशत की तेजी को दर्शाता है। जल संसाधन परियोजनाओं के क्षेत्र की लागत में बढ़ोतरी देखी जा रही है और यह 200 प्रतिशत बढ़ गई है। करीब 23,466 करोड़ रुपये की मूल मंजूरी के मुकाबले ऐसा अनुमान है कि इन परियोजनाओं पर 69,700 करोड़ रुपये खर्च होंगे। परमाणु ऊर्जा, पेट्रोलियम और बिजली तीन ऐसे क्षेत्र हैं जहां लागत में भारी उछाल देखी गई है।

अब हम बात करते हैं उन परियोजनाओं की जिनमें देरी हो रही है। उक्त मंत्रालय द्वारा निगरानी की जा रही 1873 परियोजनाओं में से 701 परियोजनाएं समय पर हैं जबकि 779 परियोजनाओं में देरी हो रही है। इनमें से 202 परियोजनाओं में 1-12 महीने तक की देरी हुई, 181 परियोजनाओं में 13-24 महीने की देरी, 277 परियोजनाओं में 25-60 महीने और 119 परियोजनाओं को 60 महीने से अधिक समय की देरी का सामना करना पड़ा है।

औसत समय-सीमा 36.04 महीने या तीन वर्ष थी। इससे भी खराब बात यह है कि मंत्रालय के पास 393 परियोजनाओं के चालू होने की समय-सीमा के बारे में कोई जानकारी नहीं है। हाल के वर्षों में सरकार स्पष्ट रूप से इस संख्या को कम करने की दिशा में काम कर रही है। लेकिन वित्त वर्ष 2018 में निगरानी की जा रही 1,232 परियोजनाओं में से 55 प्रतिशत (या 731 परियोजनाओं) खुली थीं यानी उनके पूरा होने की कोई निश्चित समय-सीमा नहीं थी।

परियोजनाओं में हो रही देरी से चिंतित प्रधानमंत्री ने पिछले साल फरवरी महीने में सभी सरकारी एजेंसियों को निर्माण पूर्व कार्यों को पूरा करने के लिए कहा जिनमें पहले से ही जरूरी चीजों का हस्तांतरण और भूमि अधिग्रहण करने जैसी प्रक्रिया शामिल है। एक राष्ट्रीय दैनिक में प्रधानमंत्री के हवाले से कहा गया, 'क्या आपको देरी को लेकर दुख नहीं होता (परियोजनाओं को पूरा करने में होने वाली देरी)।' मार्च 2015 में सरकार ने 'प्रगति' का गठन किया जो सक्रिय प्रशासन और समय पर क्रियान्वयन के लिए गठित संस्था का संक्षिप्त नाम है। इसका मकसद दो उन मुद्दों को जोड़ना था जिनका एक-दूसरे से कोई ताल्लुक नहीं है जैसे कि जनता की शिकायतों का निवारण और परियोजनाओं पर समय पर अमल करना। उस वक्त सरकारी प्रेस विज्ञप्ति में दावा किया गया था कि प्रगति एक विशिष्ट संवाद मंच है जो तीन तकनीकों जो जोड़ता है जिनमें डिजिटल डेटा प्रबंधन, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी शामिल है जो भारत सरकार के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों और परियोजनाओं की निगरानी और समीक्षा के साथ-साथ राज्य सरकारों द्वारा चिह्नित परियोजनाओं के लिए जरूरी हैं।

निश्चित तौर पर प्रगति का बेहद कम प्रभाव पड़ा है और केवल उन परियोजनाओं में वृद्धि हुई है जिनकी पूरा करने की तारीख है जबकि बड़ी तादाद में ऐसी परियोजनाएं हैं जिन्हें पूरा करने की कोई तारीख नहीं है।

मंत्रालय ने लागत में बढ़ोतरी के जो कारण बताए हैं उनमें मूल लागत का कम आकलन, विदेशी मुद्रा विनिमय दरों और वैधानिक शुल्क में परिवर्तन, पर्यावरण सुरक्षा और पुनर्वास उपायों की लागत, भूमि अधिग्रहण की लागत, परियोजनाओं के दायरे में परिवर्तन और समय-सीमा में होने वाली देरी।

समय सीमा में देरी के कारणों को कुछ इस तरह सूचीबद्ध किया गया है, जैसे कि परियोजनाओं के दायरे में बदलाव, अतिक्रमण, अदालती मामले और बुनियादी ढांचे के समर्थन में कमी, भूमि अधिग्रहण में देरी, वन/पर्यावरण मंजूरी, परियोजना की फंडिंग के लिए करार, इंजीनियरिंग, निविदा, ऑर्डर, उपकरणों की आपूर्ति की विस्तृत प्रक्रिया के साथ ही स्थानीय प्रशासन द्वारा मंजूरी मिलना शामिल है।

ये सभी कारण सर्वविदित हैं और दशकों से चले आ रहे हैं। कोई भी सरकार सत्ता में रहे, लागत और समय-सीमा में देरी का कारण बनने वाली व्यवस्था में कोई बदलाव नहीं हुआ है। हमें यह मान लेना चाहिए कि ये सभी कारक भविष्य में भी लागत और समय-सीमा में देरी का कारण बनते रहेंगे। इस पृष्ठभूमि में रक्षा उत्पादन, शहरी बुनियादी ढांचा, रेलवे, अक्षय ऊर्जा, परिवहन, जल आपूर्ति आदि पर किए गए भारी वृद्धि वाले खर्चों का क्या होता है? केंद्र सरकार का पूंजीगत व्यय, कुल व्यय के प्रतिशत के रूप में वित्त वर्ष 2024 में, वित्त वर्ष 2014 के 14 प्रतिशत से बढ़कर असाधारण रूप से 28 प्रतिशत पर पहुंच गया। उसी कानूनी, सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक तंत्र के दायरे में काम करते हुए देरी और लागत कई गुना बढ़ने वाली है।

बुनियादी ढांचा कारोबार में जुड़ी कंपनियों को सरकार के भारी खर्च से फायदा हुआ है। इनमें से कई कंपनियां सूचीबद्ध हैं और पिछले दो वर्षों में इनकी शेयर कीमतों में भारी तेजी देखी गई है। विडंबना यह है कि समय और लागत में देरी से उन्हें शायद और मदद मिलेगी। लेकिन देरी और अधिक लागत के व्यापक आर्थिक परिणाम होते हैं। बढ़ते हुए राजकोषीय घाटा और मुद्रास्फीति के दबाव के अलावा अधिक खर्च करने का मतलब यह होता है कि फिर उन क्षेत्रों के लिए कम पूंजी उपलब्ध होगी जहां पूंजी की वास्तव में आवश्यकता है जैसे कि प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य जिसमें भारत बहुत कम पूंजी निवेश करता है।

(लेखक मनीलाइफडॉटइन के संपादक और मनीलाइफ फाउंडेशन में ट्रस्टी हैं)

आपका पक्ष

भारत को शक्ति संबंधों का आकलन करना होगा

जिस वक्त भारत कोविड महामारी के दौर से गुजर रहा था उस वक्त चीन ने भारत के साथ लगी अपनी सीमा के पास सैनिकों की संख्या बढ़ा दी थी। इससे पहले साल 2017 में भारत और चीन के बीच भूटान के पास सटी सीमा पर तनाव रहा जो 71 दिन तक चला। 2020 में गलवान घाटी में दोनों देशों के सैनिकों के बीच झड़प हुई, जिसके बाद से भारत और चीन के बीच तनाव जारी है। गलवान के बाद दोनों देशों ने सरहद पर सैनिकों की तैनाती बढ़ाई है। साथ ही भारत ने क्वाड सहयोग संगठन के तहत जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के साथ सुरक्षा को लेकर बातचीत बढ़ाई है। जब भी चीन की बात आती है, तो भारत और अमेरिका को एक दूसरे से यथार्थवादी अपेक्षा रखनी चाहिए। अमेरिका को यह पहचानना होगा कि चीन को संतुलित करने के अपने प्रयास में भारत अन्य साझेदारियों को बनाए रखने की संभावना रखता है जिसमें रूस के साथ साझेदारी भी शामिल है जो अमेरिका को पसंद नहीं आ सकती है। दोनों देशों के नीति निर्माताओं और विश्लेषकों के लिए यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि केवल चीन पर आधारित भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी न तो वांछनीय है और न ही टिकाऊ है। भारत को विशेष रूप से अमेरिका, चीन और रूस के बीच शक्ति संबंधों में बदलाव का लगातार आकलन करना चाहिए। भारत का ध्यान अमेरिका के साथ अपने संबंधों को मज़बूत करने, रूस के साथ अपने दीर्घकालिक संबंधों को बनाए रखने और चीन के साथ कठिन संबंधों को प्रबंधित करने के लिए नई संभावनाओं का लाभ उठाने पर होना चाहिए। भारत के लिए आगे की राह में एक संतुलित और सक्रिय दृष्टिकोण शामिल होना चाहिए, जिसमें अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए तथा वैश्विक स्थिरता एवं प्रगति में सकारात्मक योगदान देते हुए बदलती विश्व व्यवस्था को निर्देशित करने के लिए, अमेरिका से पर्याप्त सावधानी रखते हुए वैश्विक साझेदारी, आर्थिक विकास, रणनीतिक पैंतरेबाजी व मजबूत कूटनीति का लाभ उठाया जाए।

सुधीर कुमार सोमानी, देवास

करगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ पर शुक्रवार को द्रास स्थित युद्ध स्मारक पर सेना के जवानों ने शहीदों को सलामी दी

आफत बन रही सुकून देने वाली बारिश

देश के कुछ राज्यों में बारिश लोगों के लिए आफत बनती जा रही है। मुंबई की बारिश से लोग वाकिफ ही हैं। वहां हल्की बारिश के बाद सड़कों पर चलना मुश्किल हो जाता है। दिल्ली में भी कुछ देर की बारिश पूरी राजधानी को थमने पर मजबूर कर देती है। पहाड़ी राज्यों में बादल फटने के कारण गाद और मलबा सड़कों पर आ जाता है। वहीं मैदानी इलाकों में बाढ़ के कारण गांव टापू में तब्दील हो रहे हैं। मॉनसूनी बारिश की आफत पिछले कुछ वर्षों में दिखाई पड़ने लगी है। इससे पहले बारिश के बाद लोग इसका आनंद लेते थे न कि परेशान होते थे। बारिश के कारण आने वाली आफत की मुख्य वजह जिम्मेदार अधिकारियों की अनदेखी है जो बेतरतीब और अवैध निर्माण के समय आंखें मूंद लेते हैं। इससे बारिश के पानी की निकासी नहीं हो पाती है जिससे लोगों को काफी नुकसान हो रहा है।

मोहित कुमार, नई दिल्ली

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो – पीटीआई

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल हनोई में वियतनाम की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव और पूर्व राष्ट्रपति गुयेन फू ट्रोंग के राजकीय सम्मान के साथ हुए अंतिम संस्कार में गुरुवार को शामिल हुए। गुयेन फू ट्रोंग का 19 जुलाई को निधन हो गया था।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

अनमोल वचन

उत्साहहीन, दुःख में डूबा और निर्बल इंसान कभी कोई महान काम नहीं कर सकता।
-रामायण

बाज आए अमेरिका

भारत और अमेरिका के संबंध क्या पटरी से उतर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 8-9 जुलाई की रूस यात्रा के संबंध में अमेरिका के सहायक विदेश मंत्री डोनाल्ड लू ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि प्रधानमंत्री मोदी की रूस यात्रा के संदेश और समय ने अमेरिका को भारत की ओर से निराश किया है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन रूसी राष्ट्रपति पुतिन को युद्ध अपराधी घोषित कर चुके हैं। जाहिरा तौर पर ऐसे हालात में प्रधानमंत्री मोदी की रूस यात्रा पर अमेरिका से इसी तरह की प्रतिक्रिया अपेक्षित थी। डोनाल्ड लू से पहले नई दिल्ली में अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा था कि अमेरिका और भारत के रिश्ते हाल के वर्षों में व्यापक बने हैं, लेकिन इनकी बुनियाद ज्यादा पुख्ता नहीं है। उन्होंने भारत की स्वतंत्र विदेश नीति और रणनीतिक स्वायत्तता पर भी सवाल खड़े किए थे। पश्चिमी देशों की मीडिया ने भी मोदी की रूस यात्रा की आलोचना करते हुए यहां तक कह दिया कि भारत पर भरोसा नहीं किया जा सकता। यह इत्तेफाक था कि जिस समय मोदी की रूस यात्रा हुई थी, उसी दौरान वाशिंगटन में सैन्य संगठन नाटो की शिखर वार्ता आयोजित थी जिसमें रूस विरोधी रणनीति का प्रारूप तैयार किया गया था। भारत के विदेश मंत्रालय ने डोनाल्ड लू की प्रतिक्रिया पर सधी हुई प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि भारत और रूस के संबंधों पर चर्चा करते हुए व्यावहारिक वास्तविकता को ध्यान में रखना चाहिए। दोनों देशों के संबंध आपसी हितों पर आधारित हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद अमेरिका सहित पश्चिमी देश भारत और विशेषकर मोदी के प्रति बेरुखी का रवैया अपनाने लगे हैं। आगे चलकर यह रुख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष विरोध में बदल सकता है। ऐसे में रूस के साथ संबंधों को और मजबूत बनाया जाना आवश्यक है। प्रधानमंत्री मोदी शायद इसी सोच को आगे बढ़ा रहे हैं। लोगों को याद होगा कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 1970 के दशक में ऐसी ही रणनीति अपनाई थी। भारत ने तत्कालीन सोवियत संघ के साथ मैत्री संधि की थी जिसके कारण बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के समय भारत अमेरिका की चुनौती का सामना कर सका। भारत एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। ऐसे में अमेरिका और पश्चिमी देश नई दिल्ली को चाह कर भी अस्थिर नहीं कर सकते। लेकिन भारत को अपनी ओर से सतर्क रहने की जरूरत है क्योंकि भारत और रूस के बीच बढ़ता सैन्य सहयोग अमेरिका की आंखों में किरकिरी पैदा करता रहेगा। अमेरिका का भारत के प्रति क्या रुख रहेगा यह आने वाले दिनों में स्पष्ट होगा।

करों पर अधिकार

खनिजों पर देय रॉयल्टी कोई कर नहीं है और संविधान के तहत राज्यों के पास खदानों और खनिजयुक्त भूमि पर कर लगाने का विधायी अधिकार है। सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र द्वारा खदानों और खनिजों पर लगाए गए हजारों करोड़ रुपये के करों की वसूली पर फैसला दिया। झारखंड और ओडिशा जैसे खनिज समृद्ध राज्यों ने इन करों की वापसी के लिए अदालत से आग्रह किया था। नौ न्यायाधीशों की खंडपीठ ने राज्यों से इस पर लिखित दलीलें मांगी हैं। 8:1 के बहुमत के फैसले में कहा कि खनिजों पर देय रॉयल्टी नहीं है। संविधान की दूसरी सूची की प्रविष्टि 50 के अंतर्गत संसद को खनिज अधिकारों पर कर लगाने की शक्ति नहीं है। पीठ ने माना कि खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 1957 राज्यों को खदानों तथा खनिजों पर कर लगाने से प्रतिबंधित नहीं करता। 1989 के शीर्ष अदालत के फैसले में कहा गया था कि खनिजों पर रॉयल्टी कर है। उसमें रॉयल्टी को वह भुगतान बताया गया था जो उपयोगकर्ता पक्ष बौद्धिक संपदा या अचल संपत्ति-परिसंपत्ति के मालिक को देता है। ये राज्य हजारों करोड़ की वसूली पिछली तारीख से आदलत के मार्फत करवाना चाहते हैं। सामाजिक व्यवस्था में राज्य यथासंभव सामाजिक, आर्थिक, विकास संबंधी, सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, आरोग्यता, शिक्षा जैसे साधन मुहैया कराता है। राज्य सरकारें सभी व्ययों तथा कर निर्धारण की जिम्मेदारी निभाती हैं। राज्यों और केंद्र के दरम्यान कई बार खींचतान की स्थिति उत्पन्न होती रहती है। खासकर जिन राज्यों में विपक्षी दलों की सरकार होती हैं, उन्हें केंद्र की नीतियों या आर्थिक मदद को लेकर सहयोगपूर्ण रवैया न रखने जैसी शिकायतें आम हैं। निःसंदेह केंद्र संविधान के तहत कानून बनाता है और राष्ट्रीय स्तर की नीतियों के विकास और कार्यान्वयन का जिम्मा उसी का होता है परंतु राज्यों के अधिकारों की पूरी तरह अनदेखी नहीं कर सकता। ओडिशा और झारखंड प्रमुख खनिज उत्पादक राज्य हैं, जिनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं रही। इसलिए अदालत का यह फैसला उनके विकास में महत्त्वपूर्ण साबित हो सकता है।

कटाक्ष/ कबीरदास

समर्थन मूल्य

ये किसानों को मोदी जी से क्या प्रॉब्लम है! बताइए, निर्मला जी के लगातार सातवें बजट का रिकार्ड बनाने का जश्न ठीक से शुरू भी नहीं हो पाया था; निर्मला जी के बजट की खुद निर्मला जी और टीम की व्याख्याएं पूरी भी नहीं हुई थीं, तब तक किसान चल पड़े विश्वासघात के खिलाफ आंदोलन का ऐलान करने। वही हर बार वाली रट-इस बार भी धोखा दिया, पर एमएसपी नहीं दिया; हमारा न्यूनतम समर्थन मूल्य कहां है! हम एमएसपी लेकर रहेंगे!

पर किसान भाइयों को भी समझना चाहिए कि इतनी उतावली ठीक नहीं है। और उन्हें इतना स्वार्थी भी नहीं होना चाहिए कि वो ही एमएसपी लेकर रहेंगे। मोदी जी हमेशा से एकदम क्लिअर हैं कि एमएसपी उन्हें भी मिलेगी। एमएसपी सब को मिलेगी। एमएसपी अडानी जी को भी मिलेगी। एमएसपी अंबानी जी को भी मिलेगी। एमएसपी, चुनावी बॉन्ड हों या नहीं हों, बोरों में भरकर टैम्पो में लदवाए जाएं या नहीं लदवाए जाएं, नोट भिजवाने वालों को जरूर मिलेगी। ऊंची-ऊंची कुर्सियों पर बैठकर सरकार के काम आने वालों को भी एमएसपी मिलेगी। अकेले किसानों को नहीं मिलेगी। और हां एमएसपी सबसे पहले किसानों को नहीं मिलेगी। किसानों से बड़े दूसरे भी हैं एमएसपी के दावेदार। एमएसपी, विधायकों, एमपी लोगों को भी मिलेगी। पहले तो दूसरों की सरकार गिराने वालों, केसरिया सरकार बनाने वालों, आवाजाही कर के दिखाने वालों को मिलेगी। किसान भाई धीरज रखें, आएगा, उनका भी नंबर आएगा। अब तो बाकायदा बजट से ही एमएसपी बंटने की शुरुआत भी हो गई है। नीतीश बाबू भारी सा बोझ सिर पर लादकर ले तो गए हैं, समर्थन मूल्य का! चंद्रबाबू नाइडू भी। लग्गा लग गया है। मोदी जी की एमएसपी में देर है, अंधेर नहीं है! हां! इसमें जरूर थोड़ा कन्फ्यूजन है कि नीतीश, नायडू को जो मिला है, न्यूनतम समर्थन मूल्य है या अधिकतम समर्थन मूल्य। समर्थन लेने वाले की तरफ से देखो तो यह अधिकतम समर्थन मूल्य लग सकता है, पर समर्थन देने वाले के लिए तो यह हमेश न्यूनतम समर्थन मूल्य ही होगा। खैर! शुरुआत हो गई है, अधिकतम कहो या न्यूनतम, एमएसपी का प्रवाह बना रहेगा। किसानों को कभी दूसरों की खुशी से खुश होना भी सीखना चाहिए-किसी को तो एमएसपी मिल रही है।

आंकड़ों में घटते-बढ़ते हिन्दू

पाकिस्तानी जनगणना

पंकज चतुर्वेदी

पाकिस्तान ब्यूरो आफ स्टेटिस्टिक(पीबीएस) ने पिछले दिनों आंकड़े जारी कर बताया कि पाकिस्तान में हिन्दुओं की आबादी बढ़ गई है। इस्लामिक राष्ट्र पाकिस्तान में 2017 में हिन्दुओं की आबादी 35 लाख थी जो 2023 में बढ़कर 38 लाख तक पहुंच गई। समझना होगा कि पाकिस्तान के हिन्दू बाहुल्य रेगिस्तानी इलाकों में कभी सलीके से जनगणना होती ही नहीं है, फिर वहां सिखों को अलग से गिना जाता है। सरकार की आंकड़ों को अब पाकिस्तान में निर्वाचित हिन्दू नेता ही फर्जी बता रहे हैं। समझना होगा कि एक तो पाकिस्तान में हिन्दू लड़कियों के जबरन अपरहण और धर्म परिवर्तन पर कभी कड़ी कार्रवाई होती नहीं, दूसरा वहां सरकार भी नहीं चाहती कि अल्पसंख्यकों की वास्तविक संख्या दिखाई जाए। उमरकोट के आसपास सैकड़ा भर गांव हिन्दू बाहुल्य हैं, और वहां सड़क, पानी, स्कूल जैसी सुविधाएं हैं नहीं।

पाकिस्तान के बड़े संगठनों, पाकिस्तान हिन्दू काउंसिल के चेयरमैन डॉ. रमेश कुमार वांकवानी और मुतहिदा राष्ट्रीय मूवमेंट की प्रांतीय असेंबली सदस्य डॉ. मंगला शर्मा इन आंकड़ों को झूठ बताते हुए दस्तावेज प्रस्तुत कर रहे हैं कि सरकारी रिकार्ड में 2017 में हिन्दुओं की आबादी 44 लाख 44 हज़ार 870 गिनी गई थी। असलियत में आज आबादी एक करोड़ से अधिक है। अल्पसंख्यकों पर होने वाले अत्याचार और भेदभाव पर पर्दा डालने के लिए इस तरह के फर्जी आंकड़े पेश किए जा रहे हैं। पीबीसी के आंकड़े तो ईसाइयों की आबादी में सात लाख की बढ़ोतरी बता कर उनकी संख्या 33 लाख पहुंचने का दावा कर रहे हैं। वहां पारसी महज 2348 रह गए लेकिन सिखों की संख्या का खुलासा नहीं किया गया है।

पाकिस्तान में 1951 में 1.60 फीसद हिन्दू आबादी थी। 1961 में 1.45 फीसद, 72 में 1.11, 1981 में 1. 85 और 2017 में 1.73 फीसद हिन्दू आबादी थी। इस साल यह आंकड़ा घट कर 1. 61 फीसद रह गया है। चूंकि बड़ी संख्या में हिंदुओं के पास राष्ट्रीय पहचान पत्र (एनआईसी) है ही नहीं, सो उनकी गणना होती नहीं वरना यह आंकड़ा एक करोड़ से अधिक होगा। देश में सबसे ज्यादा हिन्दू सिंध में, कुल आबादी का 8.73 फीसद हैं। पंजाब राज्य में 0.19, खैबर पख्तुन्बा में 0.02, बलोचिस्तान में 0.40 और इस्लामाबाद में 0.04 फीसद हिन्दू आबादी का सरकारी आंकड़ा है। राजस्थान से सटे थारपारकर जिले में सात लाख 14 हजार 698 हिन्दू रहते हैं, तो मीरपुरखास में पांच लाख के करीब, सग्घर में चार लाख 46 हजार हैं तो बदिन, हैदराबाद, टंडो मुहम्मद खान और रहीम यार खान जिलों में एक से डेढ़ लाख हिन्दू रहते हैं। यहां उमरकोट जिले की आबादी का 52.15 फीसद हिन्दू हैं और यहां के राजपूत शासक बड़े ताकतवर हैं। हिन्दू बाहुल्य इलाकों से भी कभी हिन्दू सांसद या विधायक चुने नहीं जाते क्योंकि इस आबादी के नाम ही वोटर लिस्ट में होते नहीं या उनके वोट और कोई डालता है।

पाकिस्तान में धर्म परिवर्तन विरोधी कानून बनते हैं लेकिन कट्टरपंथी जमात के विरोध के चलते ठंडे बस्ते में चले जाते हैं। दो साल पहले वहां 18 साल से कम के लोगों के धर्म परिवर्तन पर पाबंदी का कानून आया लेकिन मुल्ला-मौलवियों के विरोध के चलते वापस ले लिया गया। वहां धर्म परिवर्तन को श्वाब अर्थात पुण्य का काम कहा जाता है और इस्लामिक कानून के तहत ऐसी पाबंदी धर्म विरोधी कह कर गवर्नर ने कानून रद्द कर दिया था।

पाकिस्तान के मानवाधिकार आयोग की बीते साल की रिपोर्ट बेशर्मी से स्वीकार करती है कि देश में हर साल अल्पसंख्यक समुदाय की कोई एक हजार लड़कियों का धर्म परिवर्तन करवाया जाता है और ये 12 से 25 साल उम्र की होती हैं। 2004 से 2018 के बीच अकेले सिंध प्रांत में 7430 हिन्दू लड़कियों के अपरहण के मामले दर्ज किए गए, कहने की जरूरत नहीं कि वहां बड़ी संख्या में मामले थाना पुलिस तक जाते ही नहीं हैं। चूंकि सिंध के बड़े जागीरदारों के यहां अधिकांश हिन्दू मजदुर हैं, और वह भी तीन-तीन पीढ़ियों से लगभग बंधुआ मजदुर की तरह, सो उनकी कोई आवाज नहीं होती। कराची शहर में हिन्दू आबादी डॉक्टर जैसे पेशे में सर्वाधिक है, तो सब्जी बेचने वाले भी अधिकांश हिन्दू हैं।

पाकिस्तान का शिक्षा तंत्र सबसे जहरीला है, स्कूली किताबों में हिन्दुओं को खलनायक बताया जाता है और आजादी की लड़ाई में मुस्लिम लीग और कांग्रेस की भूमिका को हिन्दू-मुस्लिम टकराव, वहां की किताबों में देश के हिन्दुओं की वफादारी को भारत के साथ जोड़ा जाता है, वहां किसी भी किताब में किसी हिन्दू चरित्र की तारीफ की ही नहीं जाती। पाकिस्तान के संविधान के आर्टिकल 20-22 में धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लेख था लेकिन जुलाई, 1977 में जिया उल हक ने देश में मार्शल लॉ घोषित किया और संविधान में बदलाव कर गैर-मुस्लिमों की धार्मिक स्वतंत्रता पर कई पाबंदियां लगा दीं, पाकिस्तान में राष्ट्रपति मुस्लिम ही बन सकता है और सभी उच्च पदों पर मुस्लिम आयतों के साथ शपथ लेना अनिवार्य है। इसके कारण वहां हिन्दुओं को सदैव दोयम माना जाता है।

पाकिस्तान में हिन्दुओं पर सबसे बड़ा खतरा वहां का ईश निंदा कानून है जिसकी आड़ में भीड़ हिंसा में किसी को भी मार देने पर कोई खास कार्यवाही नहीं होती। हिन्दू या सनातन धर्म का कम से कम तीन हजार साल पुराना अतीत सरहद पार है-मोईन जोद्रो या हड़प्पा के रूप में और हिंगलाज और कटासराज मंदिर सहित कई प्राचीन इमारतों के रूप में, दुर्भाग्यपूर्ण है कि पाकिस्तान बनते समय मुहम्मद अली जिन्ना ने वहां धार्मिक आजादी की बात की थी लेकिन अब पाकिस्तान 'जिन्ना के पाकिस्तान से जेहाद के पाकिस्तान' में तब्दील हो गया है और इसका सबसे बड़ा खमियाजा हिन्दू आबादी को उठा पड़ रहा है। जनगणना के त्रुटिपूर्ण आंकड़े एक तरफ धर्मांतरण के पाप को ढंकने के काम आते हैं, तो दूसरी तरफ जिस आबादी का रिकार्ड नहीं उसके लिए मूलभूत सुविधाओं की चिंता करने की जरूरत नहीं रह जाती। भारत में नागरिकता कानून आने के बाद वहां से पलायन तेजी से हुआ है और शायद वहां की सरकार चाहती भी यही है लेकिन यह अनिवार्य है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय पाकिस्तान में हिन्दू धर्म और उससे जुड़े चिह्नों को सहेजने, हिन्दू आबादी को शैक्षिक और आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए पाकिस्तान सरकार पर दबाव बनाए।

> दुर्भाग्यपूर्ण है कि पाकिस्तान बनते समय मुहम्मद अली जिन्ना ने वहां धार्मिक आजादी की बात की थी लेकिन अब पाकिस्तान 'जिन्ना के पाकिस्तान से जेहाद के पाकिस्तान' में तब्दील हो गया है और इसका सबसे बड़ा खमियाजा हिन्दू आबादी को उठा पड़ रहा है। जनगणना के त्रुटिपूर्ण आंकड़े एक तरफ धर्मांतरण के पाप को ढंकने के काम आते हैं, तो दूसरी तरफ जिस आबादी का रिकार्ड नहीं उसके लिए मूलभूत सुविधाओं की चिंता करने की जरूरत नहीं रह जाती। भारत में नागरिकता कानून आने के बाद वहां से पलायन तेजी से हुआ है और शायद वहां की सरकार चाहती भी यही है

भारत के शहरों में मोटापे की समस्या ज्यादा

- भारत में वयस्कों में मोटापे की दर तीन गुना से भी अधिक हो गई है। विश्व मोटापा संघ की एक रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया में बच्चों में मोटापे की दर में सबसे अधिक वृद्धि भारत में हुई है
- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के मुताबिक, ग्रामीण भारत की तुलना में शहरी भारत में मोटापे की दर काफी ज्यादा है। शहरी भारत में यह दर 29.8 फीसद है, जबकि ग्रामीण भारत में 19.3 फीसद है

(स्रोत : मीडिया इन्पुट्स)

यदि बाइडन दोबारा राष्ट्रपति चुने जाने की दृष्टि से शारीरिक और मानसिक रूप से फिट नहीं हैं, तो अपने शेष बचे छह माह के कार्यकाल में कैसे फिट बने रह सकते हैं? उनकी फिटनेस को लेकर संदेहों के चलते अमेरिका के वैश्विक झंझावात से घिर जाने का अंदेशा है और विरोधी स्थिति का फायदा उठाते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संकट खड़े कर सकते हैं।

ब्रह्म चेलानी, सामरिक विशेषज्ञ
@Chellaney

महिलाओं की भागीदारी का महत्त्व

श्रम बल

हंसा मीना

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने एवं मजबूती के लिए शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार सरकार की प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर होने चाहिए। इसी को ध्यान में रखते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने सातवें बजट 24-25 में युवा शक्ति को प्रोत्साहित किया है। विशेष रूप से महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कौशल विकास पर सर्वाधिक ध्यान केंद्रित किया है।

लोक सभा चुनाव से पूर्व भाजपा ने महिलाओं से 'लखपति दीदी' के तहत आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का वादा किया था। मोदी के तीसरे कार्यकाल के प्रथम बजट में की गई महिला केंद्रित घोषणाओं में वह वादा पूर्ण होता नजर आ रहा है। प्रथम दृष्ट्या बजट रोजगारोन्मुखी प्रतीत हो रहा है क्योंकि इसमें सर्वाधिक ध्यान कौशल विकास पर दिया गया है। देश के श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी 37 प्रतिशत है, इसे बढ़ाने के लिए वित्त मंत्री ने मुख्य रूप से तीन योजनाओं का प्रावधान बजट में किया है। प्रथम-महिलाओं और लड़कियों के लिए कुल 3 लाख करोड़ रुपए का आवंटन, जो विभिन्न मंत्रालय मिलकर अगले एक वर्ष में खर्च करेंगे। द्वितीय-महिला रोजगार को बढ़ावा देने के लिए सरकार स्किलिंग प्रोग्राम चलाएगी। इसके लिए इंडस्ट्री मॉडल पर काम होगा। तृतीय-कार्यस्थल पर महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करना। इसके लिए महिला बाल विकास विभाग के बजट में 2.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है। अब स्टार्टअप के लिए युवा महिलाओं को आसान मदद मिल सकेगी। प्रधानमंत्री इंटर्नशिप स्कीम के तहत सरकार पांच साल में टॉप कंपनियों में एक करोड़ युवाओं को कौशल प्रशिक्षण दिलाएगी। यहां एक साल में 5000 रुपए प्रति माह भत्ता मिलेगा। यह योजना कंपनियों के लिए स्वैच्छिक है। युवाओं को रोजगार के लिए यह बेहतरीन मौका है।

संपत्ति खरीदना व्यक्ति के जीवन का सबसे बड़ा सपना होता है, इस सपने में सहयोगी बनते हुए मोदी सरकार ने अपने पिछले कार्यकाल में गरीब परिवारों को रियायती दरों पर आवास की सुविधा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसी कड़ी में आगे की राह को और आसान बनाते हुए बजट में पहली बार प्रावधान किया गया है कि प्रॉपर्टी खरीदने पर महिलाओं को स्टाम्प ड्यूटी देने पर राष्ट्रीय स्तर पर छूट प्रदान की जाएगी।

पिछले एक वर्ष में सोने-चांदी की कीमतों ने आसमान छू लिया था। इससे गरीब महिलाओं का आभूषण खरीदने का सपना धुंधला पड़ने लगा था। इस बार सात वस्तुओं पर कस्टम ड्यूटी घटाई गई है, जिनमें सोना-चांदी पर घटाई गई कस्टम ड्यूटी महिलाओं के लिए अधिक हितकर साबित होगी। बजट में आयातित सोना-चांदी पर कस्टम ड्यूटी 9 फीसद घटाई गई है जो पहले 15 फीसद थी। अब यह मात्र 6 फीसद लगेगी। अब महिलाएं राहत की सांस ले पाएंगी और उनका आभूषण खरीदना पहले की अपेक्षा आसान हो जाएगा। बजट में महिलाओं को औद्योगिक जगत में ऊंची छलांग लगाने का अवसर प्रदान किया गया है। छोटे और मध्यम उद्योगों (एमएसएमई) के विकास की गारंटी देकर महिलाओं को उद्यमी बनने का अवसर प्रदान किया है। लघु उद्योग विकास बैंक से छोटे उद्योगों को लोन मिलना आसान होगा। एमएसएमई को संकटकाल में बैंक ऋण सुविधा जारी रखने के लिए नई व्यवस्था की गई है, इससे इनके बंद होने का खतरा टलेगा। एमएसएमई क्लस्टरों को सेवाएं देने के लिए सिडबी की नई शाखाएं खोली गई हैं। एमएसएमई का व्यवसाय जारी रखने और एनपीए होने से बचाने के लिए संवर्धित निधि से गारंटी देखकर ऋण प्रदान किया जाएगा।

एनडीए सरकार को विगत कार्यकाल में महिला आरक्षण एवं महिला केंद्रित योजनाओं से अच्छी प्रतिक्रिया मिली थी। चूंकि महिलाएं प्रत्यक्ष तौर इन योजनाओं से लाभान्वित हुई थीं। अतः वर्तमान सरकार को उम्मीद है कि आगामी दिनों में कुछ राज्यों में होने वाले चुनावों में भी उन्हें इसका लाभ मिल सकता है। एनडीए सरकार ने महिलाओं को अच्छी योजनाओं का लाभ देकर अपना वोट बैंक तो सुरक्षित किया ही है साथ ही भावनात्मक रूप से जुड़ाव भी मजबूत किया है। बजट में महिलाओं को जो लाभ दिया गया है उससे प्रतीत हो रहा है कि सरकार का जो वोट बैंक छिटका है, बजट उसे कवर करने का पूर्ण प्रयास करेगा। बजट में प्रत्येक वर्ग को प्रत्येक क्षेत्र में लाभ देने का प्रयास किया गया। बजट को रोजगारोन्मुखी एवं युवा सोच को प्रोत्साहित करने वाला कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रकृति में 'सृजन' और बेहतरीन प्रबंधन की प्रतीक महिला परिवार का आधार स्तंभ होती है। यदि वह आर्थिक रूप से मजबूत है तो परिवार की नींव को दृढ़ता प्रदान करती है। इससे समाज को मजबूती मिलती है, और देश सुदृढ़ बनता है।

अहिंसा का जीवन

संत राजिन्दर

हम अपनी जिंदगी जीते हुए अक्सर अपने शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक पहलुओं को विकसित करने के लिए उनसे संबंधित सभी कार्यों को बड़े सुचारू रूप से करते हैं। हमारी यही कोशिश होती है कि हमारा शरीर स्वस्थ रहे, धन-संपत्ति से हम भरपूर रहें और दुनिया के जितने भी रिश्ते-नाते हैं, वो सब ठीक-ठाक रहें ताकि हमारी दुनिया की जड़ें मजबूत हों। इसके विपरीत यदि हम अपनी आध्यात्मिक जड़ों को विकसित करना चाहते हैं, तो हमें बाहरी दुनिया से ध्यान हटाकर एक नैतिक जीवन जीने का प्रयास करना होगा। अगर हमारा दिल सच्चा है और हम आध्यात्मिक जीवन जीना चाहते हैं तो अपने आध्यात्मिक वृक्ष (आत्मा) को सींचना है। किंतु अक्सर हम जीवन जीते हुए अपने शब्दों की अपेक्षा अपने कार्यों पर अधिक ध्यान देते हैं। महापुरुषों ने विचारों की ताकत को अच्छे से समझ कर स्वयं पर कड़ी निगरानी रखी है। इसलिए वे हमें भी शिक्षा देते हैं कि हम भी स्वयं के विचारों पर कड़ी निगरानी रखें। इसके लिए पिछली शताब्दी के महापुरुष परम संत कृपाल सिंह जी महाराज ने आत्म-निरीक्षण की डायरी बनाई जिसमें हमें अहिंसा, सत्य, पवित्रता, नम्रता और शाकाहारी भोजन जैसे सुणों को अपने जीवन में ढालने को कहा है। इसके अलावा, उन्होंने इन सुणों में मन, वचन और कार्य के द्वारा होने वाली खामियों को भी दर्ज करने को कहा है। इसके साथ-साथ हमें निष्काम-सेवा, सिमरन और ध्यान-अभ्यास पर दिया गया समय भी नोट करने को कहा है ताकि हम स्वयं पर निगरानी रख सकें कि हम आध्यात्मिक रास्ते पर कितनी प्रगति कर रहे हैं? सदाचारी जीवन में अहिंसा का जीवन जीना भी शामिल है। हमारे शब्दों और कार्यों के अहिंसक होने से पहले हमें अपने विचारों को अहिंसक करना होगा। अगर हम अपने विचारों पर नियंत्रण करेंगे, तभी हम अपने शब्दों और कार्यों को भी नियंत्रित कर सकते हैं। यदि हम प्रभु को पाने की इच्छा रखते हैं, तो हमें अपने अंदर अहिंसा का गुण धारण करना होगा। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि अहिंसा दूसरों को अहिंसक बनाने पर जोर देने के साथ शुरू होती है। यदि हम अहिंसा से भरपूर जीवन के लाभों के बारे में बात करते हैं तो सबसे पहले हमें स्वयं अहिंसा का जीवन जीना होगा।

रीडर्स मेल

अचंभित करता फैसला

हल्द्वानी प्रकरण कुछ समय पहले पूरे देश में चर्चा का विषय बना। मामला था रेलवे की जमीन पर अवैध अतिक्रमण का। देश में चर्चा आम है कि अनेकों रोहिंग्या और बांग्लादेशी सुनियोजित रूप से बसाए जा रहे हैं, इनको आधार कार्ड और राशन कार्ड जैसे मूलभूत दस्तावेज भी मुहैया कराए जाते रहे हैं, देश की आंतरिक सुरक्षा को ताक पर रखकर प्रशासन भी अपनी जिम्मेदारी निभाने में विफल है, लोकल इंटेलिजेंस भी सुसुप्त अवस्था में प्रतीत हो रहा है। उधर, माननीय न्यायालय का फैसला भी अचंभित करने वाला है जिसमें हल्द्वानी के घुसपैठियों का पुनर्वास सुनिश्चित करने पर बल दिया जा रहा है।

मनोज पुरुषार्थी, मेरठ

संस्कृत भाषा की अनदेखी

आम बजट में शिक्षा और युवाओं पर विशेष ध्यान दिया गया है, और भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से विभिन्न क्षेत्रों में निवेश की बात की गई है। हालांकि, एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है जो बजट में अनदेखा किया गया है, वह है संस्कृत भाषा और उससे संबंधित रोजगार के अवसरों का अभाव। संस्कृत, जो भारत की प्राचीनतम और समृद्ध भाषा है, आज भी लाखों लोगों के लिए आस्था और ज्ञान का स्रोत है। बावजूद इसके, सरकार ने इसके संवर्धन और पढ़ने-पढ़ाने के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता के मामले में कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। संस्कृत भाषा के संवर्धन और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए।

ऋषि वैभव मिश्र, केंद्रीय संस्कृत विवि

हावी होता मजबूत विपक्ष

18वीं लोक सभा की पिछले कुछ दिनों की बैठक से लगने लगा है कि यह संसद पिछली दो संसद (2014 व 2019) से एकदम भिन्न है। 16वीं एवं 17वीं लोक सभा के दौरान सत्ता पक्ष लोहे से भी ज्यादा मजबूत हुआ करता था। विपक्ष का जो भी सदस्य उससे टकराने की कोशिश करता था उसे या तो सदन से बाहर कर दिया जाता था या उसके सदस्यता समाप्त कर दी जाती थी। मगर अब तो विपक्ष शुरुआत से ही हमलावर है और सत्ता पक्ष बचाव की मुद्रा में दिखाई दे रहा है। तृणमूल कांग्रेस के सदस्य अभिषेक बनर्जी ने बुधवार को एनडीए सरकार पर तीखा हमला करते हुए आरोप लगाया कि लोक सभा में पेश बजट केवल भाजपा के गठबंधन सहयोगियों को संतुष्ट करने के लिए था। 'यह बिना किसी स्पष्टता या दृष्टि के बजट है जिसे भाजपा के गठबंधन सहयोगियों को संतुष्ट करने के लिए पेश किया गया है। इस बजट की योजना दो व्यक्तियों द्वारा अन्य दो को सद्भावना में रखने के लिए बनाई गई है।' स्पीकर ओम बिड़ला के साथ भी अभिषेक बनर्जी की तीखी नोकझोख देखने को मिली। नोटबंदी के जिक्र को जब स्पीकर ने पुराना कहकर रोकने की कोशिश की तो सांसद ने करारा जवाब देते हुए उनसे पूछा कि क्या उन्होंने नेहरू और आपातकाल पर सत्तारूढ़ सांसदों द्वारा उठाए गए सवाल को कभी रोकने की कोशिश की थी? कहते हैं न कि 'खत का मजमून भांप लेते हैं लिफाफा देख कर।' अगले पांच वर्षों में सत्तारूढ़ दल का क्या हश्र होने वाला है, समझा जा सकता है।

जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा • राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण
वर्ष-33, अंक 344

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। । समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

पैरिस ओलम्पिक : वैभव और जोश

पैरिस में सीन नदी पर ओलम्पिक का भव्य उद्घाटन हो चुका है। उद्घाटन समारोह की रंगीनियां देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा। यद्यपि उद्घाटन समारोह से पहले हाईस्पीड ट्रेन नैटवर्क पर हुए हमले में रंग में भंग जरूर डाला। खास बात यह है कि इस बार ओलम्पिक के लिए अलग से खेलगांव या आयोजन स्थल नहीं बनाए गए बल्कि आइफल टॉवर के लिए प्रसिद्ध इस शहर के बीच में प्रतिस्पर्धाएं आयोजित की जा रही हैं। फ्रांस सरकार ने मौजूदा बुनियादी ढांचे में ही सुधार करके उन्हें खेल स्पर्धाओं के लायक बना दिया है। ओलम्पिक को खेलों का महाकुम्भ कहा जाता है लेकिन इस महाकुम्भ के लिए फ्रांस ने नए निर्माण पर पैसा नहीं खर्च किया। शहर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों के साथ-साथ अस्थाई आवास की व्यवस्था की गई है। पैरिस के शहरी नियोजन ने समझदारी से काम लेते हुए शहर को ओलम्पिक आयोजन के लिए तैयार कर दिया है। कम संसाधनों का बेहतर उपयोग करके सारा काम किया गया है। पैरिस शहर में जिस तरह से बदलाव किए गए हैं, दूसरे देश भी उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। ओलम्पिक खेल अब आर्थिक ताकत और वैभव दिखाने का साधन बन चुके हैं। कोई समय था खेलों को शांति का प्रतीक माना जाता था और इसे दुनिया का सद्भाव दिखाने का सशक्त जरिया करार दिया जाता था। इसमें कोई संदेह नहीं कि समय के साथ-साथ खेलों में उत्कृष्ट प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ चुकी है। हर कोई जोश जज्बे और जुनून के साथ पदकों की होड़ में आगे निकलना चाहता है।

100 साल पहले भी फ्रांस ने ओलम्पिक खेलों की मेजबानी की थी। 1924 में पैरिस में 44 देशों के 3000 से ज्यादा एथलीटों ने भाग लिया था लेकिन अब रंगीनियों का शहर पैरिस 11,000 एथलीटों का स्वागत कर रहा है। उद्घाटन के अवसर पर सीन नदी के पुल पर 3000 से अधिक डांसर्स और कलाकारों की मौजूदगी, उनके कास्ट्यूम, 6 किलोमीटर लम्बी परेड और 100 नावों पर सवार एथलीटों के मार्च को देखकर ही फ्रांस की भव्यता का अनुमान लगाया जा सकता है। खुशी की बात यह है कि पैरिस ओलम्पिक में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या 50 प्रतिशत पहुंच गई है। दुनिया में पहली बार ओलम्पिक साल 1896 में हुए थे। उस समय एक भी महिला ने ओलम्पिक में हिस्सा नहीं लिया था, जिसके बाद वर्ष 1900 में 2.2 प्रतिशत महिलाएं ओलम्पिक का हिस्सा बनी थीं। 128 वर्ष बाद वह दिन आ ही गया जब ओलम्पिक के मैदान में जितनी संख्या में पुरुष मैदान में होंगे उतनी ही संख्या में महिलाएं भी मैदान में खड़ी होंगी। जो महिलाएं सालों से घर की चारदीवारी में बंद थी वे अब बाहर आकर आसमान छूने लगी हैं। आज वे अपने देशों के लिए गोल्ड, सिल्वर और ब्रांज मैडल जीत रही हैं।

> **100 साल पहले भी फ्रांस ने ओलम्पिक खेलों की मेजबानी की थी। 1924 में पैरिस में 44 देशों के 3000 से ज्यादा एथलीटों ने भाग लिया था लेकिन अब रंगीनियों का शहर पैरिस 11,000 एथलीटों का स्वागत कर रहा है। उद्घाटन के अवसर पर सीन नदी के पुल पर 3000 से अधिक डांसर्स और कलाकारों की मौजूदगी, उनके कास्ट्यूम, 6 किलोमीटर लम्बी परेड और 100 नावों पर सवार एथलीटों के मार्च को देखकर ही फ्रांस की भव्यता का अनुमान लगाया जा सकता है। खुशी की बात यह है कि पैरिस ओलम्पिक में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या 50 प्रतिशत पहुंच गई है।**

पैरिस की जमीन वो भूमि है जहां पर पहली बार महिलाओं ने ओलम्पिक की दुनिया में कदम रखा था और मुकाबले में उतरी थीं, वहीं पैरिस की यह वही जमीन है जहां से ओलम्पिक में महिलाओं का सफर 2 प्रतिशत से शुरू हुआ था, महज 22 महिलाएं टेनिस से लेकर कई मुकाबलों में सामने आई थीं । इस जमीन पर पहले भी इतिहास रचा गया था और एक बार फिर आज इतिहास रचा जाएगा, जब उसी जमीन पर जहां से 2 प्रतिशत से महिलाओं का ओलम्पिक में आने का सफर शुरू हुआ था, आज वहीं से 50 प्रतिशत महिलाएं मुकाबले में हिस्सा लेंगी। 1900 में पांच बार की विंबलडन चैंपियन ब्रिटिश टेनिस खिलाड़ी चार्लोट कूपर पहली महिला ओलम्पिक चैंपियन बनीं थी। 997 एथलीटों में से सिर्फ 22 महिलाएं मैदान में उतरी थीं, जिन्होंने टेनिस से लेकर घुड़सवारी, गोल्फ में मुकाबला किया था। जिसके बाद 1952 में महिलाओं की तादाद में इजाफा हुआ और यह 10.5 प्रतिशत पहुंच गई थी। 1964 में 13. 2 प्रतिशत, 1992 में 28.9 प्रतिशत हुई। जिसके बाद साल 2020 में महिलाओं की तादाद 40.8 प्रतिशत पहुंच गई थी और अब 2024 में 50 प्रतिशत हो गई है।

भारत से 117 एथलीटों का दल ओलम्पिक में भाग लेने पहुंचा है, जिसमें 70 पुरुष एथलीट और 47 महिला एथलीट हैं। भारत ने टोकियो ओलम्पिक में सात मैडल जीते थे। इस बार उम्मीद की जानी चाहिए कि भारत सात के आंकड़े को पार करने की पूरी कोशिश करेगा। कुश्ती में हमेशा ही हमें बहुत उम्मीदें रही हैं लेकिन इस बार संदेह है कि पहलवान कुछ अच्छा कर पाएंगे? कुश्ती को छोड़कर किसी भी दूसरे खेल के खिलाड़ी अपनी तैयारी को लेकर कोई शिकायत नहीं कर सकते। एथलैटिक्स में 29, निशानेबाजी में 21 और हाकी में 19 खिलाड़ियों में से 40 खिलाड़ी पहली बार ओलम्पिक में भाग ले रहे हैं। निश्चित रूप से इनमें अनुभव का अभाव तो होगा ही।

भारत की पदक की उम्मीदें बस कुछ एथलीट्स पर ही टिकी हैं। इसमें सबसे पहला नाम नीरज चोपड़ा का है। नीरज भले ही अभी तक 90 मीटर की दूरी तक जैवलिन थ्रो नहीं कर पाए हैं लेकिन उन्होंने लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है। वहीं बैडमिंटन पीवी सिंधू, चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी कमाल कर सकते हैं। इसके अलावा शूटिंग में मनु भाकर और सौरभ चौधरी मेडल के बड़े दावेदार हैं। पहली बार ओलम्पिक में हिस्सा लेने वाली बॉक्सर निकहत जरीन और निशांत देव ने पिछले कुछ समय में अच्छा प्रदर्शन किया है, इसलिए उनसे मेडल की उम्मीद की जा सकती है।

भारतीय हाकी टीम ओलम्पिक में मुश्किल ग्रुप में है और पिछले कुछ समय से वह अच्छे फार्म में भी नहीं है। इसलिए अनुभवी खिलाड़ियों को ही जान लगाकर खेलना होगा। फिर भी रोशनियां और फैशन के शहर में भारत द्वारा अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद की जाती है। खेल प्रेमी खेलों के साथ-साथ फ्रांस के वैभव और भव्यता का आनंद उठा सकते हैं।

आदित्य नारायण चोपड़ा
Adityachopra@punjabkesari.com

जो खुद घूसखोरी और धांधलियों....

वो फिर क्यों भ्रष्टाचार मिटाना चाहेंगे,
जो खुद घूसखोरी और धांधलियों से किसी सेवा में नियुक्तियां पायेंगे,
वे तो फिर जनसेवा से ज्यादा धन पर ही ध्यान दिखाएंगे,
और ऐसे नौकरशाह संघ लोक सेवा आयोग की बेदाग छवि पर दाग लगाएंगे...!!

गीता पाढा

किसानों की समस्याएं और राष्ट्रीय नेतृत्व

राकेश कपूर
संसद से सड़क तक
kapurakesh@gmail.com

किसानों की मांगों और समस्याओं को लेकर आजकल जो माहौल गरमाया हुआ है उसके कारणों की खोज करने पर हमें पता चलेगा कि स्वतन्त्रता के बाद से ही कृषि क्षेत्र को उन्नत बनाने के जो भी प्रयास सरकारों द्वारा किये गये उनका लक्ष्य खेती को लाभ प्रद बनाने का तो था मगर गरीब जनता के पेट भरने की गारंटी देना भी उनका कर्त्तव्य था। इस क्रम में पहले प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू की नीति बहुत स्पष्ट थी कि खेती के साथ-साथ भारत का औद्योगीकरण भी होना चाहिए जिससे अधिक से अधिक लोग खेती से उद्योगों में कार्यरत हों। किसानों के सबसे बड़े नेता चौधरी चरण सिंह का मतभेद नेहरू जी से इस मुद्दे पर था कि भारत को बड़े उद्योगों की जगह कुटीर व मध्यम क्षेत्र के उद्योगों पर जोर देना चाहिए।

चरण सिंह मूल रूप से गांधीवादी थे और गांधीवाद के ग्राम स्वराज व कुटीर उद्योग फार्मूले से पूर्णत: सहमत थे। मगर अब 2024 चल रहा है और भारत की अर्थव्यवस्था बाजार मूलक अर्थव्यवस्था हो चुकी है जो कि मूल रूप से भारतीय जनसंघ (भाजपा) का फलसफा है। आज किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रणाली को कानूनी बनाने की मांग कर रहे हैं अर्थात वे चाहते हैं कि सरकार जो समर्थन मूल्य उनकी विभिन्न फसलों या उपजों के लिए तय करे उससे कम पर बाजार में उनकी बिकवाली न हो। यह मांग पूरी तरह जायज ठहराई जा सकती है क्योंकि जब किसी फैक्टरी में काम करने वाला उद्यमी अपने उत्पाद की कीमत तय कर सकता है तो किसानों को यह अधिकार क्यों न मिले। मगर भारत भर में किसान विभिन्न राज्यों में फैले हुए हैं और कृषि राज्यों का विषय है अत: किसान की उपज अपने सम्बन्धित राज्य की मंडियों में ही बिकने के लिए आती है।

इस मामले में एक राष्ट्रीय कृषि नीति की पुन: आवश्यकता होगी हालांकि पहली जो राष्ट्रीय कृषि नीति बनाई गई थी वह तब बनाई गई थी जब 2002 में वाजपेयी सरकार में कृषि मन्त्री श्री नीतीश कुमार थे। वह आजकल बिहार के मुख्यमन्त्री हैं। यह राष्ट्रीय कृषि नीति बदलते सन्दर्भों में इसलिए भी बनाई जानी जरूरी है क्योंकि खेती के क्षेत्र में कार्पोरेट जगत का प्रवेश हो चुका है। खुदरा व्यापार तक में बड़े-बड़े उद्योग घराने उतरे हुए हैं। इससे छोटे व मंझोले किसानों के अस्तित्व पर किसी भी समय संकट आ सकता है। ऐसे वातावरण में यदि किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी गारंटी मांग रहे हैं तो उन्हें गलत कैसे कहा जा सता है?

पूरे देश ने देखा था कि दो साल पहले किसानों ने केन्द्र सरकार के तीन कृषि कानूनों का दिल्ली का घेरा डाल कर किस तरह विरोध किया था और परिणाम स्वरूप केन्द्र सरकार को इन तीनों कानूनों को वापस लेना पड़ा था। उस समय हमने देखा था कि किसानों के विभिन्न संगठन तो थे मगर कोई एक ऐसा राष्ट्रीय स्तर का नेता नहीं था जो देश के सभी किसानों का प्रतिनिधित्व कर सके। ऐसा राष्ट्रीय नेता स्वतन्त्र भारत में अभी तक केवल चौधरी चरण सिंह ही हुए हैं जिनकी बात को भारत भर के किसान आखिरी बात मानते थे। किसान संगठन आज भारत में बहुत सारे हैं और राज्यवार स्तर तक पर हैं मगर कोई ऐसा अखिल भारतीय गठन नहीं है जिसे राष्ट्रीय आवाज माना जा सके।

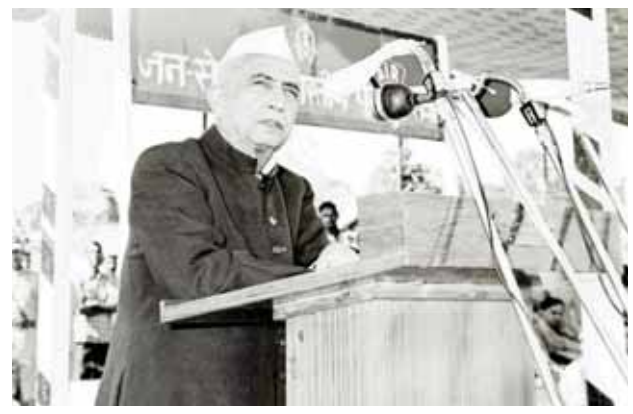

चौधरी साहब की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने किसानों के बीच धर्म व जातियों की दीवार को तोड़ कर एकता स्थापित की थी और यही उनकी सबसे बड़ी राजनैतिक पूंजी भी थी। चौधरी साहब ने अपनी इस राजनैतिक पूंजी का कभी बेजा इस्तेमाल भी नहीं किया और जब भी उन्हें सत्ता मिली उन्होंने पक्षपात भी नहीं किया बल्कि उल्टे किसानों से सामाजिक बुराइयों को त्यागने का आह्वान किया। दरअसल आज देश के किसानों को दूसरे चरण सिंह की सख्त जरूरत है जो किसानों की जमीनी समस्याओं को मिटाने का सपना पालता हो। विचार करने वाली बात यह है कि यदि ग्रामीण व कृषि अर्थव्यवस्था से जुड़े सभी लोग एक मंच पर जाति व धर्मनिरपेक्ष होकर आ जायें तो उनकी संख्या 80 प्रतिशत के करीब पहुंच जाती है। इस संख्या को यदि राजनैतिक शक्ति में बदल दिया जाये तो देश की नीतियां स्वयं ही ग्रामोन्मुखी व कृषि को सम्पन्नता देने वाली हो जायेगी और पूरी अर्थव्यवस्था का स्वरूप खुद ब खुद बदल जायेगा।

चौधरी साहब भारत में ऐसी ही क्रान्ति चाहते थे। मगर यह राजनीति ही है जिसने किसानों व खेतीहर जातियों को अलग-अलग खांचों में बांट रखा है। किसानों की अलग-अलग जातियां अलग-अलग राजनैतिक दलों की समर्थक हैं जिससे उनकी समेकित राजनैतिक शक्ति बन ही नहीं पाती और उनके हित एक होने के बावजूद अलग-अलग दिशाओं में मुड़ जाते हैं। जिस जातिगत जनगणना की बात राहुल गांधी कर रहे हैं वास्तव में वह कुछ और नहीं है बल्कि ग्रामीण व खेतीहर जातियों की जनगणना ही है।

सर्वाधिक पिछड़ा व दलित समाज ही खेती के काम में लगा हुआ है। यही वजह है कि आज भी सर्वाधिक रोजगार कृषि क्षेत्र ही प्रदान करता है। जबकि सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जी डी पी) में खेती का हिस्सा लगातार कम होता जा रहा है। यही वजह है कि भारत में आर्थिक विषमता लगातार बढ़ रही है शहरों में रहने वाले उच्च धनाड्य वर्ग के लोगों की आमदनी तेजी से बढ़ रही है और 90 प्रतिशत जनता की आमदनी स्थिरता की लगाम पकड़े हुए हैं। इन 90 प्रतिशत लोगों में से भी 34 प्रतिशत से अधिक लोग छह हजार रुपये मासिक से कम की आमदनी पर गुजारा कर रहे हैं। गांवों और कृषि क्षेत्र को हम यदि अपनी अर्थव्यवस्था में वरीयता देते हैं तो यह गैर बराबरी कम होगी और भारत खुशहाली के रास्ते पर जायेगा।

इस मामले में कृषि ऊपजों के न्यूनतम समर्थन मूल्य को यदि कानूनी गारंटी दी जाती है तो किसान को उसकी मेहनत की पूरी रकम मिलेगी जिसका बंटवारा कृषि क्षेत्र में लगे हुए अन्य लोगों को स्वाभाविक रूप से मिलेगा। जब हम खेती की बात करते हैं तो केवल जमीन मालिक किसान की बात ही नहीं करते बल्कि उसके साथ काम करने वाले भूमिहीन खेतीहरों की बात भी करते हैं। इनमें दिहाड़ी मजदूर भी शामिल होते हैं।

चौधरी चरण सिंह का फलसफा भी यही था कि यदि किसान आगे बढ़ेगा तो देश स्व: आगे बढ़ जायेगा। इस मामले में वह अमेरिका का उदाहरण दिया करते थे और समझाते थे कि किस प्रकार अमेरिका ने खेती में लगे लोगों की संख्या को घटा कर कृषि उत्पादन में नया कीर्तिमान बनाया और साथ ही अपना औद्योगीकरण किया और अपने लोगों को सम्पन्न बनाया। भारत अन्न उत्पादन में अब पूर्णत: आत्मनिर्भर है । यदि दलहन व तिलहन को छोड़ दें तो इसमें भी किसानों की लगन को देखते हुए आत्मनिर्भरता प्राप्त करना असंभव नहीं है। खेती में विविधीकरण को भी किसान आसानी से अपना रहे हैं।

क्या बंगाल के विभाजन की तैयारी में सरकार ?

ताक-झांक
आर.आर. जैरथ

राजनीतिक हलकों में, खास तौर पर पश्चिम बंगाल में, इस बात को लेकर हैरानी है कि मोदी सरकार राज्य में क्या करने जा रही है। केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार द्वारा उत्तर बंगाल को पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय (डीओएनईआर) के अंतर्गत लाने के प्रस्ताव के बाद संदेह पैदा हो गया है। तर्क दिया जा रहा है कि इसकी कई समस्याएं पूर्वोत्तर राज्यों जैसी ही हैं। मजूमदार के पास पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय का प्रभार है, यही वजह है कि उनके सुझाव ने पश्चिम बंगाल में खतरे की घंटी बजा दी है। क्या यह राज्य के विभाजन की दिशा में पहला कदम है? विपक्षी खेमे में कई लोगों को यही डर है। अप्रत्याशित प्रस्ताव की पृष्ठभूमि यह है कि उत्तर बंगाल वह क्षेत्र है, जहां भाजपा की राज्य में मजबूत उपस्थिति है और वह विधानसभा और लोकसभा दोनों में अपनी अधिकांश सीटें जीतती है। यह गोरखाओं और राजबंशी जैसे आदिवासियों का क्षेत्र है, जो खुद को बंगालियों से अलग मानते हैं।

दक्षिण बंगाल ममता बनर्जी का गढ़ है और भाजपा अब तक यहां कोई सफलता हासिल नहीं कर पाई है। उत्तर बंगाल को पूर्वोत्तर विकास मंत्रालय के अधीन लाकर केंद्र सरकार राज्य सरकार को दरकिनार करते हुए सीधे इसके विकास के लिए अतिरिक्त धनराशि जारी करने की स्थिति में होगी। मजूमदार का प्रस्ताव स्पष्ट रूप से उत्तर बंगाल में भाजपा की पकड़ मजबूत करने की एक राजनीतिक चाल है और कौन जानता है, विभाजन की मांग अगला कदम हो सकता है। गोरखाओं द्वारा अलग गोरखालैंड की मांग पहले से ही लंबे समय से लंबित है।

आमों के खास किस्से बताती किताब

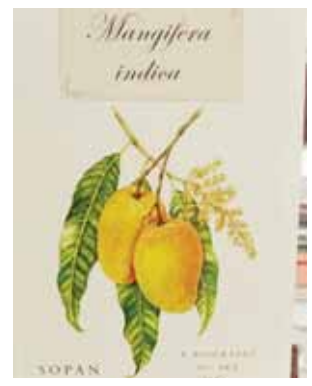

सपन जोशी द्वारा आमों पर लिखी गई नई किताब मंगिफेरा इंडिका : ए बायोग्राफी ऑफ द मैंगो में भारत में गर्मियों के फलों के राजा से संबंधित कई दिलचस्प किस्से हैं। एक खास किस्सा इंदिरा गांधी से जुड़ा है, जिन्हें तत्कालीन राष्ट्रपति जिया-उल-हक से रसीले अनवर रतौल आमों का एक डिब्बा मिला था। वह आमों के स्वाद और मिठास से इतनी प्रभावित हुईं कि पाकिस्तान से इस अनोखे फल के बारे में बात फैल गई। भारतीय मीडिया ने इसे पाकिस्तान के सबसे अनोखे आमों में से एक बताया। जब भारतीय आम के बागानों के मालिक इस खबर को पढ़ते हैं, तो वे भयभीत हो जाते हैं और तुरंत इंदिरा गांधी से मिलने का समय मांगते हैं। उन्होंने इंदिरा गांधी को आम का इतिहास समझाया और इस बात पर ज़ोर दिया कि यह प्रजाति भारत के उत्तर प्रदेश की मूल निवासी है। उन्होंने बताया कि जिस व्यक्ति ने सबसे पहले रटौल बोया था, उसका चचेरा भाई पाकिस्तान जाने पर पेड़ से एक कलम अपने साथ ले गया था और इस तरह रटौल आम सीमा पार से आया। जोशी

की किताब आम को श्रद्धांजलि है जो दशकों से भारतीय जीवन, संस्कृति और यहां तक कि हस्तशिल्प का एक अभिन्न अंग बन गया है। उनका कहना है कि उन्होंने भारत के युवाओं को इस फल की ऐतिहासिक यादें दिलाने के लिए यह किताब लिखी है।

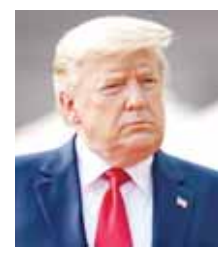

ट्रंप की जीत पर दांव लगा रहा चीन

यह दिलचस्प है कि चीनी मीडिया इस साल के अंत में होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रम्प की जीत पर दांव लगा रहा है। कई चीनी टिप्पणीकारों ने डेमोक्रेटिक उम्मीदवार कमला हैरिस के बारे में संदेह व्यक्त किया है और उन्हें लगता है कि उनके जीतने की संभावना कम है, क्योंकि उन्हें अनुभवहीनता है, खासकर विदेशी मामलों में। विडंबना यह है कि चीन इस बात को लेकर सतर्क है कि ट्रम्प के अमेरिका के अगले राष्ट्रपति बनने से वाशिंगटन और बाकी दुनिया के साथ उसके संबंधों पर क्या असर पड़ेगा, लेकिन मीडिया में आई खबरों में हत्या के प्रयास से निपटने के उनके तरीके की प्रशंसा की गई है। हालांकि, ट्रम्प और उनके साथी उम्मीदवार जे डी वेंस द्वारा की गई चीन विरोधी टिप्पणियों को लेकर चिंता है, जिन्होंने अमेरिका में चीनी आयात पर उच्च कर लगाने की मांग की है।

क्या बिहार, आंध्र को पैकेज देकर भाजपा ने की गलती ?

ऐसा लगता है कि भाजपा में यह धारणा बन रही है कि सरकार ने केंद्रीय बजट में आंध्र प्रदेश और बिहार के लिए वित्तीय पैकेजों का उल्लेख करके गलती की है। इस तथ्य को पकड़ कर विपक्ष ने अन्य राज्यों की अनदेखी करने के लिए सरकार की आलोचना की है और बजट को कुर्सी बचाओ बजट कहा है। भाजपा की वास्तव चिंता इस बात की है कि चुनावी राज्य महाराष्ट्र में यह धारणा बन रही है कि बजट में राज्य की अनदेखी की गई है। विधानसभा चुनाव से कुछ ही महीने दूर होने के कारण इस नकारात्मक धारणा को मिटाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र के भाजपा सांसदों के एक समूह से मुलाकात की और उनसे राज्य के लिए स्वीकृत करोड़ों रुपये के वधावन बंदरगाह परियोजना के बारे में संदेश फैलाने का आग्रह किया। इस

परियोजना की लागत 76,000 करोड़ रुपये से अधिक है और एक बार पूरा हो जाने पर यह दुनिया का दसवां सबसे बड़ा बंदरगाह होगा। माना जाता है कि मोदी ने महाराष्ट्र के अपने सांसदों से इस संदेश को फैलाने का आग्रह किया है। आगामी विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए महत्वपूर्ण हैं। महाराष्ट्र में विपक्षी दल इंडिया ब्लाक ने राज्य की 48 लोकसभा सीटों में से 30 पर कब्जा कर लिया है।

अब गरीब लोग निजी लैब्स में भी मुफ्त करवा सकेंगे मेडिकल टेस्ट

चंडीगढ़, (पंजाब केसरी) : मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने प्रदेश के गरीब लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ाने की दिशा में एक और जन हितैषी बड़ा फैसला लिया है। अब गरीब लोग सरकारी अस्पतालों के साथ-साथ निजी लैबस में भी मेडिकल टेस्ट मुफ्त करवा सकेंगे। सरकार के इस निर्णय से प्रदेश के लाखों लोगों को बड़ा लाभ मिलेगा। एक सरकारी प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि सरकार के संज्ञान में आया है कि सिविल अस्पतालों में उपचार के लिए आने वाले गरीब मरीजों को कई बार विभिन्न कारणों से डायग्नोस्टिक सेवाएं नहीं मिल पाती। इसलिए विभाग द्वारा सभी सीएमओ को निर्देश जारी किए गए हैं कि जिले में उपलब्ध मौजूदा संसाधनों को युक्तिसंगत बनाया जाए और आवश्यकता पडऩे पर स्थानीय निजी प्रयोगशालाओं और रेडियोलॉजिकल केंद्रों को एंपेनलड किया जाए, ताकि सभी लाभार्थियों को डायग्नॉस्टिक सेवाएं उपलब्ध हो सकें। अब लाभार्थी सरकारी डॉक्टर/ सीएमओ के प्रिस्क्रिप्शन पर एंपेनेल्ड लैब पर टेस्ट करा सकेंगे। सरकार द्वारा सिविल अस्पताल को दिए जाने वाले फंड से उन टैस्ट का भुगतान किया जाएगा।

हड़ताल जारी : न सरकार झुकी न डाक्टर

वहीं, सरकारी अस्पतालों में मांगों को लेकर डाक्टरों ने दूसरे दिन भी हड़ताल जारी रखी। वीरवार को मामले को सुलझाने के लिए मुख्यमंत्री के मुख्य प्रधान सचिव राजेश खुल्लर और स्वास्थ्य सचिव सुधीर राजपाल के साथ हरियाणा सिविल मेडिकल सर्विसेज एसोसिएशन (एचसीएमएस) के वार्ता के लंबे दौर चले थे, लेकिन शुक्रवार को न सरकार की ओर से एसोसिएशन पदाधिकारियों के साथ बातचीत करने की कोशिश की गई और न डाक्टर झुकते दिखे। हरियाणा में वर्तमान में डाक्टरों को पांच, दस और 15 साल की सर्विस पर एसीपी (एश्योर्ड करियर प्रमोशन) दी जा रही है, जबकि एचसीएमएस एसोसिएशन चार, नौ, 13 और 20 साल में एसीपी का लाभ मांग रही है।

बकाया न चुकाने पर दो बिल्डरों के दफ्तर सील

नोएडा, (पंजाब केसरी) : दादरी तहसील प्रशासन ने यूपी रेरा की आरसी के करीब 18 करोड़ रुपये का बकाया न चुकाने पर शुक्रवार को दो बिल्डरों के कार्यालय सील कर दिए। इन बिल्डरों को कई बार नोटिस जारी किए गए थे, लेकिन उन्होंने बकाया जमा नहीं कराया।

प्रशासन यूपी रेरा की आरसी का बकाया न चुकाने वालों बिल्डरों के खिलाफ कार्रवाई कर रहा है। शुक्रवार को दादरी तहसील प्रशासन की टीम ने ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित एसजेपी और मॉर्फियाश प्रोडेवलपर्स के दफ्तर सील कर दिए। एसजेपी पर रेरा की आरसी के 14.87 करोड़ रुपये और मॉर्फियाश प्रोडेवलपर्स पर रेरा के 3.56 करोड़ रुपये बकाया हैं। बकाया न चुकाने पर इन बिल्डरों पर कार्रवाई की गई। यदि बिल्डरों ने सील हटाकर फ्लैट बेचने का प्रयास किया तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी। पिछले वर्ष रेरा ने 3277 बिल्डरों के खिलाफ 1302 करोड़ रुपये की आरसी जारी की थी। दिसंबर तक प्रशासन 173 आरसी का मात्र 98.59 करोड़ ही वसूल पाया था।

बिना पेपर लीक हुए पंजाब में 43 हजार नौकरियां दी, हरियाणा में होता है हर पेपर लीक

बरवाला/डबवाली, (पंजाब केसरी): आम आदमी पार्टी विधानसभा चुनाव को लेकर जोर शोर से चुनावी मैदान में उतर चुकी है। इसी कड़ी में शुक्रवार को पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार भगवंत मान में हरियाणा में बरवाला और डबवाली से बदलाव जनसभा की शुरूआत कर दी है।

आम आदमी पार्टी अगले 15 दिन हरियाणा में 45 रैलियां करेगी। इस दौरान उनके साथ आम आदमी पार्टी वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष अनुराग ढांडा, प्रदेश उपाध्यक्ष हरपाल भट्टी, कुलदीप भांभू, अश्वनी दुल्हेड़ा, दलबीर किरमारा, पवन फौजी, सीपी गुप्ता, संजय बूरा, शक्ति सरपंच, रमेश गूंदली, नरेंद्र उकलाना, कुलदीप गदराना, हैप्पी रानिया, पूनम गोदारा, गुरचरण सिंह चौहान और मलकीत सिंह सिद्धू मौजूद रहे।

बदलाव जनसभा को संबोधित करते हुए सरदार भगवंत मान ने कहा कि आपका घर से चला हुआ एक एक कदम हमारे सिर माथे पर है। उन्होंने कहा आपका इतनी भारी संख्या में बाहर निकलना इस बात का संकेत है कि आज हरियाणा में एक नई कहानी लिखना चाहते हो। इनको राज करते हुए अनगिनत साल हो गए, जनता ने हर पार्टी को वोट दिया लेकिन सभी न हरियाणा का दिल तोड़ा और हरियाणा को लूटने का काम किया। यदि बीमारी किसी डॉक्टर से ठीक नहीं होती हो तो डॉक्टर बदल लेना चाहिए। इसलिए इस बार हरियाणा के लोग बदलाव के लिए वोट करें। उन्होंने कहा कि हरियाणा पंजाब के मेहनत करने वाले लोग हैं। हमें सबकुछ मिला, लेकिन अच्छी और सच्ची नीयत वाले नेता नहीं मिले। जितने भी नेता आए सबने अपने घरों को भरने का काम किया। किसी ने आम जनता का ख्यान नहीं किया। अब इसी व्यवस्था को बदलना है। पंजाब में मात्र ढाई साल में 43 हजार नौकरियां देकर आपके सामने खड़ा हूं।

नालागढ़ मेडिकल डिवाइस पार्क बनाएगी हिमाचल सरकार

शिमला, (विक्रान्त सूद) : हिमाचल प्रदेश के हितों को प्राथमिकता देते हुए राज्य सरकार ने जिला सोलन के नालागढ़ में मेडिकल डिवाइस पार्क अपने संसाधनों से बनाने का निर्णय किया है। राज्य सरकार ने 265 एकड़ भूमि पर 350 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाली इस परियोजना के लिए केंद्र सरकार से मिले 30 करोड़ रुपये लौटाने निर्णय लिया है। प्रदेश सरकार यदि इस राशि को वापस नहीं करती तो राज्य को कई आर्थिक नुकसान होंगे। राज्य सरकार को उद्योगपतियों को भूमि एक रुपए प्रति वर्ग मीटर, बिजली 3 रुपये प्रति यूनिट के अलावा दस वर्षों तक पानी, रखरखाव और गोदाम की सुविधा बिना किसी शुल्क के प्रदान करनी पड़ेगी। मेडिकल डिवाइस पार्क में बनने वाले अधिकांश उपकरण राज्य से बाहर बेचे जाएंगे, लेकिन इससे भी राज्य के खजाने को एनएसजीएसटी के कारण प्रत्यक्ष नुकसान होता।

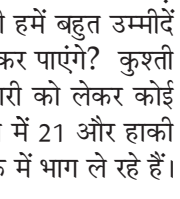

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

संवाद

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। शनिवार, 27 जुलाई 2024

रिश्तों पर पहल

LAC पर सामान्य स्थिति बहाल होना ज़रूरी

आसियान देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक के सिलसिले में वियतनाम गए विदेश मंत्री एस जयशंकर की चीनी विदेश मंत्री वांग यी से हुई मुलाकात बेहद महत्वपूर्ण है। यह एक महीने के अंदर ही दूसरा मौका है, जब दोनों नेताओं ने मिलकर वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर पिछले चार वर्षों से जारी गतिरोध को दूर करने के उपायों पर बातचीत की है।

कायम हैं मतभेद | दोनों के बीच इस बात पर सहमति बनी कि आपसी संबंधों को स्थिरता देना भारत और चीन के हित में है। लेकिन इस लक्ष्य की ओर बढ़ने के तरीकों पर दोनों देशों के बीच मतभेद अभी भी बने हुए हैं। चीन लगातार इस बात पर जोर देता रहा है और इस बार भी उसने यह संकेत दिया कि LAC पर जो हालात हैं, उसे न्यू नॉर्मल मानकर रिश्तों को सामान्य बनाने की ओर कदम बढ़ाना ठीक रहेगा। लेकिन विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत के इस रुख को एक बार फिर मजबूती से स्पष्ट किया कि सीमा पर शांति और LAC के लिए सम्मान सुनिश्चित करके ही रिश्तों को सामान्य बनाया जा सकता है।

जयशंकर मंत्री वांग यी से मिले

बदल रहा माहौल | हालांकि दुनिया के मौजूदा हालात को देखते हुए भारत में भी इस बात का अहसास बढ़ता जा रहा है कि सीमा से जुड़े मसलों को दोनों देशों के व्यापारिक सहयोग में ज्यादा समय तक आड़े आने देना किसी के लिए भी अच्छा नहीं है। अलग-अलग थिंक टैंकों या खास समूहों की तरफ से उठाई जा रही यह बात अब सरकार की ओर से भी कही जाने लगी है। इसी का ताजा उदाहरण है कि पिछले दिनों संसद में पेश किए आर्थिक सर्वे में चीन से होने वाले प्रत्यक्ष विदेश निवेश को आसान बनाने का प्रस्ताव रखा गया है।

चाइना प्लस वन | इसके पीछे अमेरिका और यूरोपीय देशों की चाइना प्लस वन पॉलिसी का फायदा उठाने की भावना हो सकती है। यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद रूस पर लगे प्रतिबंधों से उपजी परिस्थितियों में भारत ने उससे सस्ती दरों पर कच्चा तेल लेना और उसे रिफाइन करके अन्य देशों को भेजना शुरू करने में देर नहीं लगाई। इससे सभी संबंधित पक्षों को फायदा हुआ। यह एक तरह से पश्चिमी देशों की रूस प्लस वन पॉलिसी ही थी जिसका भारत ने फायदा उठाया। चाइना प्लस वन की जहां तक बात है तो मेक्सिको, दक्षिण कोरिया और वियतनाम जैसे देश तो उसका फायदा उठा रहे हैं, लेकिन भारत उनके मुकाबले में काफी पीछे है।

सुरक्षा और भू-राजनीतिक हित | बहरहाल, भारत अपनी सुरक्षा और भू-राजनीति से जुड़े हितों की अनदेखी नहीं कर सकता। ऐसे में LAC पर सामान्य हालात बहाल करने के सवाल को ठंडे बस्ते में डालने की चीनी पेशकश तो स्वीकार नहीं की जा सकती, लेकिन वहां जल्द से जल्द स्थिति सामान्य हो इसके प्रयास तेज जरूर किए जा सकते हैं।

दो दूनी चार

'बेचारे' प्रॉपर्टी बेचने वाले

रमेश तिवारी

सरकार ने ताजा बजट में टैक्स कम किया, पेंशन कल्चर को बढ़ावा दिया, कैपिटल गेंस का मकड़जाल खत्म किया, लेकिन एक बात पर बहस छिड़ गई। रीयल एस्टेट की बिक्री पर टैक्स के नए इंतजाम का विरोध हो रहा है।

शेयर, गोल्ड, रीयल एस्टेट जैसे असेट्स की बिक्री से जो लाभ होता है, वो कैपिटल गेंस के दायरे में आता है। उस पर सरकार टैक्स वसूलती है। रीयल एस्टेट के मामले में टैक्स पूरे लाभ पर नहीं वसूला जाता रहा है। महंगाई का फैक्टर जोड़कर इस लाभ को थोड़ा कम आंका जाता था। इससे टैक्स कम लगता था। ताजा बजट में फैसला हुआ है कि अब महंगाई का फैक्टर नहीं देखा जाएगा। इससे निवेशक को नुकसान होता, लेकिन टैक्स कम करके 20 पर्सेंट की जगह 12.5 पर्सेंट करने का प्रस्ताव है। अब नए इंतजाम में फायदा है या नुकसान, इस पर राय बंट गई है।

सरकार ने केस स्टडी के जरिये बताया है कि ज्यादातर लोगों को फायदा होगा। जिन लोगों ने 2001 से पहले प्रॉपर्टी खरीदी हो, उनके केस में महंगाई का फैक्टर अब भी जोड़ा जाएगा। इसके बाद की बात करें तो प्रॉपर्टी पांच साल भी पुरानी हो, उसका दाम महज 1.7 गुना भी बढ़ा तो नई व्यवस्था में लाभ होगा। सिर्फ उन्हीं लोगों को नुकसान होगा, जिनका औसतन सालाना रिटर्न 10 पर्सेंट से कम रहा हो। प्रॉपर्टी के मामले में इतनी कम कमाई के केस 10 पर्सेंट से भी कम होंगे।

विरोध करने वाले कह रहे हैं कि सरकार को नए इंतजाम भविष्य में खरीदी जाने वाली प्रॉपर्टी पर लागू करना चाहिए। आज से 10 साल पहले खरीदी जा चुकी प्रॉपर्टी पर नया इंतजाम लागू करना उचित नहीं है। नए सिस्टम से प्रॉपर्टी में कैश ट्रांजैक्शन को बढ़ावा मिलेगा। जो लोग प्रॉपर्टी में ज्यादा लाभ कमाने जा रहे हैं, उनसे ज्यादा टैक्स लेने की नीति होनी चाहिए थी। जिनकी प्रॉपर्टी के दाम महंगाई में जितनी तेजी से नहीं बढ़े हों, उनका नुकसान दोतरफा होगा। जो निवेशक कीमतों के ठहराव के चक्र के दौरान फंस गया, उसे भारी नुकसान होगा।

निश्चित रूप से सरकार का इरादा कैपिटल गेंस की संरचना को आसान बनाना था, लेकिन मुमकिन है कि प्रॉपर्टी बेचने वाले कुछ लोगों को इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़े। लाभ पर टैक्स लगाते समय महंगाई के फैक्टर को खारिज नहीं किया जा सकता है। महंगाई लाभ में अच्छा खासा हिस्सा खा जाती है। कुछ लोगों का कहना है कि रीयल एस्टेट सेक्टर में जो अनाप शनाप निवेश हो रहा था, अब उस पर रोक लगेगी। अगर निवेश करने वाले अपना पैसा दूसरे असेट्स में लगाएं तो घर सस्ते होंगे और आम लोगों के लिए उपलब्ध होंगे।

बहरहाल, सरकार अपना प्रस्ताव वापस लेने के मूड में नहीं दिख रही है। इसके बावजूद प्रॉपर्टी बेचने वाला खुद को हर हाल में टैक्स से बचा सकता है। इसके लिए लाभ का पैसा नई प्रॉपर्टी में लगाना होगा। दो साल बाद उस प्रॉपर्टी को फिर बेच दिया जाए, जिससे कम लाभ पर कम टैक्स लगेगा। प्रॉपर्टी बेचने से मिला पैसा कैपिटल गेंस बॉण्ड में भी लगाया जा सकता है, जिसमें कम से कम पांच साल का लॉकइन है, साल भर में 50 लाख की लिमिट है और रिटर्न भी बेहद कम है।

ऑफ दि ट्रैक

उम्र से बेअसर संगीत

दिलीप लाल

अल्जाइमर की बीमारी खुद से खुद को भुला देती है। अल्जाइमर की बीमारी ले जाती है डिमेंशिया तक, जिसमें मेमरी लॉस सबसे सामान्य समस्या है। WHO के मुताबिक, दुनियाभर में लगभग 5 करोड़ लोग डिमेंशिया से प्रभावित हैं। इसमें से 60-70% मामले अल्जाइमर रोग के हैं। यह संख्या दुनिया की कुल आबादी का लगभग 0.6% है। हालांकि यह प्रतिशत उम्र के साथ बढ़ता है। 85 साल और उससे ऊपर की उम्र के लोगों में यह बढ़कर लगभग 50% हो जाता है। लेकिन, एक चीज है जिसे अल्जाइमर और डिमेंशिया भी नहीं छीन सकते और वह है संगीत। वैज्ञानिक पत्रिका PLoS ONE में पब्लिश एक रिपोर्ट के मुताबिक, दिमाग सबकुछ भुला देता है, पर संगीत को लेकर हमारा प्यार नहीं। अलग-अलग बैकग्राउंड वाले 18 से 86 साल उम्र के लोगों पर किए गए अध्ययन में यह बात सामने आई कि संगीत को पहचानने की क्षमता उम्र के साथ प्रभावित नहीं होती। लोग उम्र के साथ नाम भूलने लगते हैं, चेहरे याद नहीं आते और अल्जाइमर के केस में तो बोलने में भी मुश्किल होती है, लेकिन दिमाग में बसे संगीत पर इन सबका असर नहीं पड़ता। बचपन में गुनगुनाए और सुने गए गीत ताउम्र याद रहते हैं। लोग जिन इंस्ट्रूमेंट को बजाना सीखते हैं, मसलन पियानो या हारमोनियम, उसे कभी नहीं भूलते। यूं म्यूजिक हमारी यादों को हमेशा के लिए सहेजकर रख सकता है।

US के वैश्विक सरोकारों से पल्ला झाड़ती दिख रही ट्रंप-वेंस की जोड़ी

ट्रंप के रुख़ से यह बेचैनी क्यों

हर्ष वी. पंत

अब जब राष्ट्रपति जो बाइडन खुद को चुनावी दौड़ से बाहर कर चुके हैं, उपराष्ट्रपति कमला हैरिस डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से अपना नामांकन पक्का करवाने की कोशिशों में लगी हैं। लेकिन रिपब्लिकन नैशनल कन्वेंशन इस महीने की शुरुआत में ही पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की वाइट हाउस के लिए उम्मीदवारी पर अपनी मुहर लगा चुका है।

आलोचक को बनाया रनिंग मेट | ट्रंप ने सीनेटर जेडी वेंस को अपना रनिंग मेट घोषित किया है। ट्रंप के वेंस कड़े आलोचक रहे हैं। वह उन्हें 'अमेरिका का हिटलर' और 'नैतिक त्रासदी' तक करार दे चुके हैं। लेकिन यह तो अतीत की बात है। ट्रंप पर हुए जानलेवा हमले के बाद, वेंस ने सीधे बाइडन पर उसका दोष मढ़ा। उन्होंने ट्वीट किया, 'बाइडन के कैंपेन की मुख्य बात यह रही है कि ट्रंप एक सर्वसत्तावादी फासिस्ट हैं, जिन्हें हर कीमत पर रोकना होगा। इसी नैरेटिव के चलते ट्रंप पर यह कातिलाना हमला हुआ है।' कन्वेंशन में भी उन्होंने ट्रंप की तारीफों के पुल बांधते हुए कहा कि वह देश के लिए अपना सबकुछ झोंक चुके हैं और यह भी कि उन्हें राजनीति में उतरने की कोई जरूरत नहीं है, सचाई यह है कि देश को उनकी जरूरत है।'

विदेश नीति का खाका | सबसे बड़ी बात यह कि उन्होंने ट्रंप-वेंस विदेश नीति का एक ऐसा खाका पेश किया, जो बाहरी दुनिया को लेकर रिपब्लिकन पार्टी के रुख को अमेरिकी राजनीति की पारंपरिक साझा जमीन से काफी दूर कर देता है। ट्रंप और वेंस की विदेश नीति का यह खाका दुनिया भर में हलचल पैदा कर रहा है।

चीन पर कड़ा रुख | ट्रंप-वेंस विदेश नीति का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है चीन को लेकर और कड़ा रुख। दोनों ने इस बात को बार-बार रेखांकित किया है, जो कुछ हद तक ठीक भी है कि पिछले कुछ दशकों की वॉशिंगटन की नीतियों के चलते अमेरिका सस्ते चीनी माल और सस्ते विदेशी श्रम से पाटा जा चुका है और आश्चर्य नहीं कि आने वाले दशकों में घातक चीनी फेंटेनाइल से भर जाए।

ट्रेड वॉर जारी रहा | अपने चार साल के कार्यकाल के दौरान ट्रंप हालांकि जब-तब चीनी नेता शी चिनफिंग के प्रति अपनी पसंदगी भी जाहिर करते रहे, लेकिन इसके बावजूद वह पेइचिंग के प्रति अमेरिकी नीति की रूपरेखा फिर से तैयार करने में सफल रहे। इसका परिणाम चीन के साथ बाकायदा टेक्नॉलजी वॉर और ट्रेड वॉर के रूप में सामने आया। ट्रंप के उत्तराधिकारी जो बाइडन ने भी ट्रंप के आकलन से दूरी नहीं बरती।

किन बातों पर है ज़ोर

- युद्ध के लिए यूक्रेन को मदद देने पर एतराज
- यूरोप अपनी रक्षा पर खर्च बढ़ाए, एशिया पर ध्यान
- चीन पर मुख्य फोकस, सीमा शुल्क बढ़ा सकते हैं

पेइचिंग की चिंता | डॉनल्ड ट्रंप ने एक अमेरिकी अखबार को दिए हालिया इंटरव्यू में यहां तक कह दिया कि वह चीनी उत्पादों पर सीमा शुल्क 50% तक बढ़ाने में भी संकोच नहीं करेंगे क्योंकि इससे अमेरिकी कंपनियां चीन से हटने और अमेरिका में उत्पादन शुरू करने के लिए प्रोत्साहित होंगी। जैसे-जैसे ट्रंप दोबारा वाइट हाउस में दाखिल होने के अपने लक्ष्य के करीब होते दिख रहे हैं, पेइचिंग की चिंताएं अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही हैं।

नीतियों में फर्क | बाइडन ताइवान के समर्थन में मजबूती से खड़े रहे हैं, वहीं ट्रंप का कहना है कि 'ताइवान को अपनी रक्षा के लिए हमें (अमेरिका को) भुगतान करना चाहिए'। उनकी दलील है कि 'ताइवान अमेरिका से 9,500 मील दूर है, जबकि चीन से मात्र 68 मील पर है।' मतलब यह कि अमेरिका के लिए ताइवान की रक्षा करना आसान नहीं होगा। इस बीच ट्रंप के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार वेंस का कहना है कि अमेरिका अगर यूक्रेन को हथियारों की आपूर्ति करता रहा तो चीन द्वारा हमले की स्थिति में ताइवान का समर्थन करने की उसकी क्षमता प्रभावित हो सकती है।

यूक्रेन की सहायता पर एतराज | कुल मिलाकर ट्रंप-वेंस की बातों का मतलब यह है कि यूक्रेन युद्ध का जल्द से जल्द समाप्त होना जरूरी है ताकि अमेरिका अपनी ऊर्जा वास्तविक खतरे यानी चीन से निपटने में लगा सके। वेंस यूक्रेन को दी जाने वाली अमेरिकी सहायता की कड़ी आलोचना करते रहे हैं। उन्होंने यहां तक कह दिया है कि 'यूक्रेन का क्या होता है इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।'

मुफ्त सवारी की छूट नहीं | ट्रंप और वेंस रक्षा पर पर्याप्त खर्च न करने के लिए यूरोप पर निशाना साध रहे हैं। सम्मेलन में वेंस ने स्पष्ट शब्दों में कहा, 'अमेरिकी करदाताओं की उदारता के साथ धोखा करने वाले देशों को अब और मुफ्त सवारी नहीं मिलेगी।' बकौल वेंस, 'हम यह नहीं कहते कि अमेरिका को नैटो से बाहर निकल आना चाहिए या यूरोप को छोड़ देना चाहिए, लेकिन हमें एशिया की ओर घूमना चाहिए। यह भी कहा कि अमेरिका को पूर्वी एशिया पर अधिक ध्यान केंद्रित करना होगा।'

दुनिया के लिए चेतावनी | सबकी चिंता छोड़कर अपने हितों पर फोकस रखने का अमेरिकी राजनीति में बढ़ता यह रुझान दुनिया के लिए चेतावनी है जो अमेरिका को वैश्विक शांति का मुख्य गारंटर माने बैठी है। डॉनल्ड ट्रंप वाइट हाउस में दोबारा दाखिल होने में सफल हों या न हों अमेरिकी राजनीति को आकार देने वाले इस रुझान का अमेरिकी नीतियों पर प्रभाव पड़ना तय है।

(लेखक इंग्लैंड के किंग्स कॉलेज में प्रफेसर हैं)

चांद से कैसी ख़बर

पृथ्वी के बाहर किसी दूसरे ग्रह, उपग्रह पर बसने की इंसानी चाहत बहुत पुरानी है। यह ख्वाहिश ही हमें खींच ले गई है मंगल तक। ऐसे में चांद पर मिली एक गुफा क्यों अंतरिक्ष विज्ञानियों को लुभा रही, जानते हैं :

किसने और कहां खोजा

NASA के लूनर ऑर्बिटर LRA ने चांद पर उसी जगह के पास इस गुफा का पता लगाया है, जहां 20 जुलाई 1969 को अमेरिका का अपोलो 11 मिशन उतरा था। यह गुफा एक गहरे गड्ढे में है। इस इलाके को Sea of Tranquility कहा जाता है।

कितनी बड़ी है गुफा

गुफा करीब 80 मीटर लंबी और 45 मीटर चौड़ी हो सकती है। यह गड्ढे में 135 मीटर की गहराई पर मौजूद है। यह एक lava tube है। चांद पर कभी सक्रिय ज्वालामुखी हुआ करते थे। इनका लावा जब ठंडा हुआ तो ऐसी गुफाएं बन गईं।

AI image

इतनी उम्मीदें किसलिए

इस खोज को चांद पर पैर जमाने के एक मौके के रूप में देखा जा रहा है। चांद पर धरती जैसा घना वातावरण और मैग्नेटिक फील्ड नहीं है। ऐसे में भयंकर सौर तूफान सीधे सतह से टकराते हैं, जिसके कारण किसी तरह का जीवन नहीं पनप सकता। साथ ही, अधिकतम और न्यूनतम तापमान में सैकड़ों डिग्री का अंतर होता है। ऐसे में ये गुफाएं इंसानों के लिए ठिकाना बन सकती हैं।

क्या गुफाओं में बसेगी बस्ती

पृथ्वी पर इंसानी सभ्यता का विकासक्रम गुफाओं से ही शुरू होता है। जटिल मौसमी परिस्थितियों में गुफाओं ने इंसानों को सहारा दिया, दूसरों खतरों से सुरक्षा दी। यही बात चांद पर मिली गुफा के हक में कही जा रही है। इससे हमें चांद के इतिहास को समझने में भी काफी मदद मिल सकती है।

अब अगली चुनौती क्या

अभी यही पता है कि गुफा है, लेकिन अब इसके आगे की जानकारी चाहिए। माना जा रहा है कि चांद की सतह के नीचे लावा ट्यूब का पूरा जाल हो सकता है, जैसा कि हमारी धरती पर भी कई जगह है। यह उम्मीद भी है कि शायद इन गुफाओं में पानी या बर्फ भी मिल जाए।

प्रस्तुति : **शैलेंद्र पांडेय**

अब कविताएं दो कौड़ी की हो रही हैं

*हिंदी साहित्य के युग पुरुष रामदरश मिश्र 15 अगस्त को 100 साल के हो जाएंगे। भारतीय साहित्य के इतिहास के वह केवल तीसरे साहित्यकार हैं जो अपना जन्म शताब्दी वर्ष मना रहे हैं। उनकी अब तक की साहित्य यात्रा पर बातचीत की **रौशन झा** ने। पेश हैं अहम अंश :*

सप्ताह का इंटरव्यू

रामदरश मिश्र

■ आपने साहित्य में सभी वाद देखे। छायावाद, प्रगतिवाद वगैरह। इनमें से आपको सबसे अच्छा कौन सा लगा?

प्रगतिवाद। ऐसा इसलिए कि इसमें प्रगतिशीलता रही। यह प्रगति मार्क्सवाद से जुड़ी हुई है। मैं कई वर्षों तक मार्क्सवादी रहा। लेकिन मुझे धीरे-धीरे लगने लगा कि साहित्यकार को किसी भी वाद से नहीं जुड़ना चाहिए। ऐसा इसलिए कि वह पूरे संसार को देखता है, पूरी दुनिया और समाज को देखता है। जहां कहीं भी मनुष्यता है, अच्छाई है, सुंदरता है वह उसको ग्रहण करता है और उसे अपने साहित्य में रूपांतरित करता है। अगर वह किसी वाद से जुड़ जाएगा तो ऐसा नहीं कर पाएगा। हालांकि साहित्य एक खुला हुआ प्रतिरोध मंच है और वह किसी भी वाद से बचकर नहीं रह सकता है।

■ कविता और कहानियां आजकल वैसी नहीं रहीं। लेखक पाठक को शब्दों के जाल में उलझा देते हैं। क्या कहेंगे?

प्रेषणीयता का संकट पहले भी रहा है। कुछ ऐसे कवि पहले भी रहे हैं जो बहुत ही क्लिष्ट लिखते थे। जैसे आप कविता नहीं, गणित पढ़ रहे हों। कविता तो बड़ी सहजता से बहती चलती है। आज के संदर्भ में कहूं तो मैं अब पढ़ता नहीं हूं। इसलिए मैं नहीं कह सकता कि कौन अच्छा लिख रहा है, कौन बुरा। लेकिन यह जरूर कहूंगा कि कविताएं दो कौड़ी की हो रही हैं। फेसबुक पर जो कविताएं आ रही हैं वे फेंकी हुई लगती हैं। पहले आप कविता-कहानी लिखते थे, पत्रिकाओं को भेजते थे। पत्रिकाएं देखती थीं, वापस करती थीं। फिर आप धीरे-धीरे छपना शुरू होते थे। आज फेसबुक है। खुद लिखें, खुद छापें, अपने कहे को खुद मनवाएं। वैसे तो अब मंच भी नहीं रह गए। आज जो मंच है, उसमें मसखरे जाते हैं। वे तालियों के लिए लिखते हैं। साहित्य तालियां नहीं होता है। वह हमारे हृदय के भीतर हंसता है, हमको आंदोलित करता है।

■ तो क्या आप मानते हैं कि सोशल मीडिया से साहित्य को नुकसान हो रहा है?

साहित्य के नाम पर जो आ रहा है वह साहित्य होता ही नहीं है। हालांकि ऐसे भी कवि हैं जो कि वास्तव में कवि हैं, सही कविता लिखते हैं। जैसा कि मैंने कहा कि मैं आजकल पढ़ता नहीं हूं लेकिन मेरे मित्र हैं जो बहुत पढ़ते हैं और उसकी चर्चा करते हैं। उनके जरिए मालूम होता है कि जो नए कवि आ रहे हैं उनमें कौन अच्छा लिख रहा है। तो ऐसा नहीं है कि साहित्य आज खत्म हो गया है। हां, फेसबुक और अखबारों से वैसे कवि भी सामने आ रहे हैं जो कि तालियां बजवाने के लिए वाहियात लिखते रहते हैं।

■ क्या यही वजह है कि आज की कविता या कहानियों में बिंब नहीं दिखते?

बिंब तो अपने आप बनते हैं। जैसे कि आप कोई कविता लिख रहे हैं- सुबह हुई है/चारों ओर उजाला छा गया है/प्रकृति उन्मुक्त हो गई है। तो कवि अपने बिंब के माध्यम से कहेगा कि सुबह कितनी सुंदर होती है। कवि चीजों का, प्रकृति का, मन का एक बिंब तैयार करता है। आज भी कई कविताएं बिंब वाली होती हैं और ऐसी कविताएं भी जो सीधे-सीधे बात कहती हैं।

■ हिंदी अब हिंग्लिश हो रही है। हिंदी के भविष्य को आप कैसा देख रहे हैं?

ऐसा नहीं है, जो हिंदी कविताएं लिखी जा रही हैं वे हिंदी में ही लिखी जाती हैं। बोलचाल में अंग्रेजी आती है, लेकिन अगर आप कविता में इंग्लिश घुसेड़ देंगे तो कविता नहीं बनेगी। हर कोई जानता है कि मैं जिस भाषा में लिख रहा हूं उसी भाषा में हमें बोलना चाहिए। बहुत से शब्द उर्दू के हैं जो बड़े कॉमन हो गए हैं। इंग्लिश के बहुत सारे शब्द भी घिसपिट कर के हिंदी में आ गए हैं।

> “ मेरा एक संग्रह आया था। काफी प्रचार हुआ, समीक्षाएं छपीं। हरिवंश राय बच्चन ने मुझे लिखा कि वह कॉपी चाहिए। हालांकि उस दौरान मैं नया था। आज मामला बिल्कुल अलग है। लोग यह देखते हैं कि यह किसका आदमी है। हमारा आदमी है कि नहीं। पत्र-पत्रिकाएं भी देखती हैं कि इनको छापना चाहिए कि नहीं

■ लेखक संघों के बारे में आप क्या सोचते हैं?

यह सही बात है कि पहले का साहित्यिक परिवेश बहुत अच्छा था। लोगों की जमात होती थी। लोग यहां-वहां मिलते थे। टी हाउस में मोहन सिंह और मोहन प्रेस में विष्णु प्रभाकर के साथ तमाम लोग बैठते थे। तमाम गोष्ठियां होती थीं। पत्र-पत्रिकाएं भी बहुत होती थीं और आलोचना खूब होती थी। अब तो हालत यह है कि लोग साथ बैठते नहीं हैं। मेरा एक संग्रह आया, उसका काफी प्रचार हुआ और समीक्षाएं छपीं। हरिवंश राय बच्चन ने मुझे लिखा कि उन्हें वह कॉपी चाहिए। हालांकि उस दौरान मैं नया था। आज मामला बिल्कुल अलग है। लोग आजकल सबसे पहले यह देखते हैं कि यह किसका आदमी है। हमारा आदमी है कि नहीं। पत्र-पत्रिकाएं भी देखती हैं कि इनको छापना चाहिए कि नहीं?

■ साहित्य में गुटबाजी पहले भी थी क्या?

हां, गुटबाजी तो थी। मैं जब वाराणसी में था तो इलाहाबाद में परिमल था। परिमल की चाल कुछ अलग थी। बनारस में थे तो उसमें मार्क्सवादी भी थे और मेरे जैसे लोग भी थे। लेकिन सब प्रगतिशील थे। हालांकि एक तनाव रहता था कि ये प्रगतिशील हैं और ये लोहियावादी हैं या दक्षिणपंथी हैं। फिर भी एक-दूसरे के यहां आते-जाते थे। मैं जब साहित्यिक संघ का मंत्री था तो मैंने एक समारोह कराया। नागार्जुन आए, शमशेर आए। इलाहाबाद से कमलेश्वर आए, मार्कंडेय आए, रामविलास शर्मा आए। केदारनाथ अग्रवाल ने लिखा कि भाई मैं आना चाहता हूं, लेकिन कुछ तकलीफ है। हजारीप्रसाद द्विवेदी भी आए। उस वक्त भले ही मन में कुछ रहता हो, एक-दूसरे के यहां आना-जाना लगा रहता था। वो बहुत अच्छी दुनिया थी। अब नहीं पता कि गोष्ठियां होती हैं कि नहीं होती हैं। एक-दूसरे के बारे में खुलकर बोलते हैं कि नहीं बोलते।

www.nbt.in

देश के सबसे बड़े महादेव

पिछले दिनों भोपाल के एक साहित्यिक कार्यक्रम में जाना हुआ। कार्यक्रम के पहले वक्त था तो सुबह भोजपुर में स्थापित भोजेश्वर महादेव मंदिर देखने निकल पड़ा। एक ऑटो वाले से पूछा तो उसने बैठा तो लिया, लेकिन आगे नहीं बढ़ा। बोला, ऑटो पूरा भरकर ही चलूंगा। उसके दो साथी वहीं बैठे बीड़ी फूंक रहे थे। उन्होंने बताया कि वे आस-पास के गांवों के हैं। खेती-किसानी के साथ ऑटो भी चलाते हैं। उन्हीं में एक ने कहा, 'कोई परिचित बाइक वाला दिखेगा, हम उसी में तुम्हें बैठा देंगे, वह मंदिर छोड़ देगा।' काफी देर तक उसे कोई सवारी नहीं मिलीं तो वह मुझे अकेला लेकर चल पड़ा। रास्ते में बोला, 'किसानों की बुरी स्थिति हो गई है।' उसने एक बड़े भूभाग में फैले सूखे क्षेत्र को दिखाया, 'यह कभी झील हुआ करती थी।' फिर वह मुसलमानों के नॉनवेज खाने का जिक्र करने लगा। इन बातों के बीच ही रास्ता तय हो गया।

मंदिर के पास इत्तेफाक से चंद्र बहादुर से भेंट हो गई। उन्होंने बताया कि वह 45 वर्षों तक शिव मंदिर की चौकीदारी में रहे हैं। अब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से रिटायर्ड हैं। वैसे वह नेपाल के रहने वाले हैं। उन्होंने बताया, शिव मंदिर बेतवा नदी की दाहिनी ओर एक पहाड़ी पर है। मंदिर से जुड़ी किंवदंतियां भी हैं, जैसे पांडवों के अज्ञातवास के दौरान उन्होंने अपनी माता कुंती के लिए इसका निर्माण एक रात में किया। इसलिए यह अधूरा है। इतिहास के मुताबिक इसे परमार वंश के राजा भोजदेव प्रथम ने सन 1010-1055 ई. में बनाया था। मंदिर कला और स्थापत्य का अद्भुत नमूना है।

खुद अपनी आंख से

सैयद परवेज़

भोजेश्वर मंदिर में स्थापित शिवलिंग की ऊंचाई 21.5 फीट है, जो भारत का सबसे बड़ा शिवलिंग है। 14 फुट ऊंचे चबूतरे के ऊपरी भाग से 7.5 फीट ऊपर शिवलिंग के दर्शन होते हैं। यह मंदिर 16 स्तंभों पर टिका है जिनकी ऊंचाई 40 फीट है। हरेक कोने पर चार-चार स्तंभ हैं। उनके शीर्ष पर शिव, पार्वती, लक्ष्मीनारायण, ब्रह्मा-सावित्री और राम-जानकी की मूर्तियों को देखा जा सकता है। मंदिर का प्रवेश द्वार खुला हुआ है, जिसकी पत्र-सज्जा, 'कुबेर', 'शैव', 'द्वारपाल', 'परिचारिकाओं', 'गंगा', 'यमुना' की मूर्तियों से अलंकृत है। मंदिर के दरवाजे के सामने दो समाधियां हैं, जो गुंबदाकार शैली में बनी हैं। ये समाधियां राजा भोजदेव के बहुत बाद में बनाई गई हैं।

मंदिर के सामने से कुछ हटकर 'नंदी' की भी एक प्रतिमा स्थापित है। श्रद्धालु उस पर हाथ फेरकर, उसके कान में कुछ मन्नतें कहते और घंटी बजाते। मैंने भी वही किया। वहां के पुजारी माखन गिरी मिले। वह भोजपुर गांव के हैं, और पीढ़ियों से मंदिर की सेवा में लगे हैं। श्रद्धालुओं को देखा। उन्हीं में एक बच्ची ने बड़ी ही मासूमियत से अपना माथा महादेव की चौखट पर टिका दिया, बिलकुल समर्पित। उसकी मनोकामनाओं का तो नहीं पता, पर उसकी श्रद्धा और विश्वास दिख रहा था। बाहर निकला तो वही ऑटो वाला मिला। वह खाना खाकर आ गया था। उसी के साथ मैं वापस लौटा। उतरने पर भाड़ा देते हुए मैंने कहा, 'कुछ मुसलमान नॉनवेज नहीं खाते। जैसे हिंदू होते हैं अलग-अलग तरह के, वैसे ही मुसलमान भी हैं। मेरा नाम परवेज है।' अब वह मुझे अपलक ताकने लगा था।

चलते-चलते...

उन न्यूरॉन्स की पहचान कर ली गई है, जो मां और बच्चे में जुड़ाव महसूस कराते हैं। येल स्कूल ऑफ मेडिसिन के वैज्ञानिकों ने अध्ययन में पाया है ये न्यूरॉन्स जब सक्रिय होते हैं, तो उससे निकलने वाला हॉर्मोन somatostatin बच्चों को मां के प्रति अपनेपन का अहसास कराता है। इसी वजह से मां को करीब पाकर सुरक्षित और राहत महसूस करते हैं बच्चे।

रीडर्स मेल

▸ विकास की राह खुलेगी

26 जुलाई का संपादकीय 'राज्यों की जीत' पढ़ा। गुरुवार को आए सुप्रीम कोर्ट के फैसले से यह साफ हो गया है कि अब राज्यों को खदानों (माइंस) और खनिज वाली जमीन पर टैक्स लगाने का अधिकार है। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला माइंस एंड मिनरल्स डिवेलपमेंट एंड रेगुलेशन (MMDR) एक्ट, 1957 के तहत रॉयल्टी से जुड़े एक अहम मामलें में आया है। माननीय कोर्ट के इस फैसले से ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश को लाभ मिलेगा, क्योंकि इन राज्यों में खनिज संसाधनों के अधिक भंडार हैं। करों में केंद्र सरकार का हस्तक्षेप हटने से खनिज संपदा से संपन्न इन राज्यों को अब राजस्व के तौर पर अतिरिक्त धन की प्राप्ति होगी। इससे राज्य की केंद्र पर आर्थिक निर्भरता कुछ कम होगी। इसके साथ ही अब ये राज्य स्वतंत्र होकर खनिज संपदा से मिले टैक्स का उपयोग अपने-अपने यहां विकास कार्यों के लिए कर सकेंगे। इससे देश को प्रगति की नई दिशा मिलेगी, जिससे समूल रूप से एक विकसित भारत के सपने का मार्ग प्रशस्त होगा।

हितेंद्र डेढ़ा, चिल्ला गांव

▸ पाक के नापाक इरादे

यह पत्र 26 जुलाई के लेख 'क्या करगिल का सबक याद रखा हमने' से संबंधित है। 25 वर्ष पहले भारतीय जवानों ने पाकिस्तान को उसकी नापाक हरकतों के लिए सबक सिखाते हुए करगिल युद्ध में धूल चटाई थी। भारत ने हमेशा पड़ोसियों के साथ अच्छे रिश्ते के लिए पहल की है। फिर चाहे वह पाकिस्तान हो या चीन। जम्मू-कश्मीर को लेकर पाकिस्तानी साजिशों के बावजूद हिंदुस्तान ने पड़ोसी धर्म निभाया और कई बार बातचीत के जरिये शांति बहाल करने का प्रयास किया। लेकिन, पाकिस्तान ऐसा मुल्क नहीं जिसे बात शांति से समझ आ जाए। मौका मिलने पर वह अपना असली रंग दिखाने से बाज नहीं आया और भारत ने भी उसे तगड़ा जवाब दिया। हर युद्ध में पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ी है। लेकिन, लगता है कि वह अब भी नहीं सुधरा है। भारत को सतर्क रहना होगा।

राजेश कुमार चौहान, ईमेल से

आर.एन.आई. नं. 510/57© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद** और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्स: 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु. ; रविवार : नेपाली 6 रु. संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

https://t.me/AllNewsPaperPaid

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

ओलंपिक पर निशाना

पेरिस में ओलंपिक उद्घाटन समारोह से कुछ घंटे पहले फ्रांस में रेल सेवा जिस तरह से प्रभावित हुई है, वह चिंताजनक है। शायद किसी सोची-समझी कारस्तानी के तहत वहां सामान्य परिवहन को बाधित करने की साजिश की गई है। फ्रांसीसी रेलवे कंपनी एसएनसीएफ के मुताबिक, उसके हाई स्पीड नेटवर्क को पंगु बनाने के इरादे से इस कृत्य को अंजाम दिया गया है। शुरुआती खबरों से पता चलता है कि कुछ जगहों पर उपद्रवियों ने आगजनी की है, जिससे रेलवे को नुकसान हुआ है। स्थिति इतनी चिंताजनक है कि प्रभावित रेल सेवा कंपनी ने यात्रियों से अपनी यात्रा स्थगित करने का आग्रह किया है। मरम्मती का कार्य चल रहा है, पर वहां परिवहन के सामान्य होने में कम से कम दो दिन का समय लग जाएगा। रेलवे कंपनी शुरुआती रूप से यही मान रही है कि आग जान-बूझकर लगाई गई है। अब खुफिया सेवाओं व कानून लागू करने वाली तमाम एजेंसियों को लामबंद कर दिया गया है। दुनिया के सबसे बड़े खेल आयोजन के ठीक पहले ऐसा होना, वाकई, सुरक्षा एजेंसियों के लिए बहुत बड़ा विषय होना चाहिए। यह दुनिया की दूसरी सुरक्षा एजेंसियों के लिए भी कान खोले रखने का समय है।

फ्रांस के पश्चिम, उत्तर और पूर्व में रेल लाइनें ज्यादा प्रभावित हुई हैं, तो इसका क्या संकेत है? पड़ोसी देश बेल्जियम और इंग्लिश चैनल के तहत लंदन जाने वाली ट्रेनें भी प्रभावित हुई हैं। हालांकि, उपद्रवियों की साजिश से ऐसा लगता है कि उनका निशाना पेरिस को रेल नेटवर्क से काटना था। ध्यान रहे, फ्रांस ने ओलंपिक के सुरक्षित आयोजन के लिए मजबूत पहरा बिठा रखा है। 45,000 से भी अधिक पुलिस, 10,000 सैनिक और 2,000 निजी सुरक्षा एजेंट तैनात हैं। स्नाइपर छतों पर हैं और ड्रोन से भी निगरानी की जा रही है। इसके बावजूद अगर रेल सेवा को बाधित करने की साजिश कामयाब हो गई है, तो यह पहली नजर में सुरक्षा या खुफिया चूक है। अब हमले के बाद सुरक्षा को और चाक-चौबंद कर दिया गया है, लेकिन सबसे जरूरी है, ऐसी कायरतापूर्ण साजिश करने वालों का पता लगाना। फ्रांस के अनेक नेता इसे ओलंपिक ही नहीं, बल्कि फ्रांस पर हमला मान रहे हैं, मगर वास्तव में यह फ्रांस पर ही नहीं, बल्कि खेलों की दुनिया और अमन-चैन के सकारात्मक प्रयासों पर हमला है।

पेरिस, फ्रांस में दुनिया के सबसे बड़े खेल आयोजन के ठीक पहले किसी भी तरह का उपद्रव सुरक्षा एजेंसियों के लिए बड़ी चिंता का विषय होना चाहिए।

जब दुनिया में जगह-जगह युद्ध लड़े जा रहे हैं, अनेक जगहों पर आतंकवाद और उपद्रव की स्थिति है, तब भी ओलंपिक दुनिया को जोड़ रहा है। दुनिया के 206 से ज्यादा देशों के 10,714 से ज्यादा खिलाड़ी इस ओलंपिक में भाग ले रहे हैं। 32 खेलों में 329 आयोजन होंगे, पर इतने बड़े आयोजन को भी जो लोग निशाना बना रहे हैं, वे बेशक मानवता विरोधी हैं। अराजक तत्वों के प्रति तमाम देशों को सतर्क हो जाना चाहिए। ऐसे घटिया तत्व या समूह पहले लोकतंत्र की दुहाई देकर अपनी जगह बनाते हैं और उसके बाद अपनी मनमानी पर उतर आते हैं। ऐसे तत्वों के खिलाफ दुनिया को समान रूप से ईमानदार होना पड़ेगा। दुनिया के हर रंग, हर नस्ल को गले लगाने वाला कला और साहित्य से सराबोर शहर पेरिस आज संसार के करीब दो अरब लोगों की निगाह में है। उसके आस-पास के 16 शहर सद्भाव और उल्लास से विभोर हो रहे हैं। लोकतांत्रिक और विकसित फ्रांस की अच्छी छवि निस्संदेह दुनिया को ज्यादा उदार और समझदार बनाने में मददगार होगी, लेकिन जिन अराजक तत्वों ने उसकी चमक पर दाग लगाने की साजिश रची है, उन्हें कतई बख्शा न जाए।

हिन्दुस्तान Hindustan | **75 साल पहले** 27 जुलाई, 1949

प्रकट विरोध

रूस और अमेरिका संसार की दो मुख्य शक्तियां हैं। उनके बीच प्रकट विरोध है, यह अब किसी से छिपा नहीं रह गया है। उनकी युद्धकालीन मित्रता अब भूतकाल की वस्तु बन चुकी है। अमेरिका के शासकों का यह विश्वास पक्का हो गया है कि रूस संसार के स्वतंत्र देशों के लिए गम्भीर खतरा प्रस्तुत करता है। उस खतरे का सामना करने के लिए अमेरिका योजनायें बनाने में व्यस्त है। वह दुनिया के उन देशों को संगठित और मजबूत बना देना चाहता है, जो रूस के प्रभाव में नहीं चले गये हैं और समान राजनीतिक और सामाजिक आदर्शों में विश्वास करते हैं। इसी उद्देश्य से उत्तरी अटलांटिक संधि की योजना की गई। इस संधि द्वारा पश्चिमी यूरोप के देश, जिनमें ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम, हालैण्ड, लक्ष्मबर्ग आदि शामिल हैं, अमेरिका और कनाडा के साथ एक रक्षा-योजना में आबद्ध हो गये हैं। उनमें से यदि किसी एक पर आक्रमण किया गया तो दूसरे साथी देश उसे खुद उनके विरुद्ध किया गया आक्रमण मानने और आक्रान्त देश की फौजी और दूसरी प्रकार की सहायता करने के लिए बंध गये हैं। इस संधि पर अमेरिका की सीनेट ने हाल ही में अपनी मुहर लगा दी है। मुहर तो लगने ही वाली थी, किन्तु यह काम सरलता से सम्पादित नहीं हुआ। अमेरिका में ऐसे लोग हैं, हालांकि उनकी संख्या ज्यादा नहीं है, जो यह मानते हैं कि अमेरिका को यूरोप के मामले में इस प्रकार उलझना नहीं चाहिए। उनके विरोध के कारण ही अटलांटिक संधि के स्वीकृत होने में इतना समय लग गया।

अब अमरीकी शासन ने दूसरा कदम उठाया है। उसने अमरीकी कांग्रेस के सामने एक बिल पेश किया है जिसमें उत्तरी अटलांटिक संधि पर हस्ताक्षर करने वाले देशों और कुछ अन्य देशों की हथियारों से सहायता करने के लिए १ अरब ४५ करोड़ डालर मंजूर करने का प्रस्ताव किया गया है। अटलांटिक संधि का यह तर्कसंगत परिणाम है। आग लगने पर कुआं खोदने में तो कोई बुद्धिमानी नहीं हो सकती। अमेरिका समझता है कि किसी संभावित आक्रमण या आक्रमण के खतरे का मुकाबला करने का सबसे अच्छा तरीका यही हो सकता है कि आक्रमणकारी देश को यह अनुभव करा दिया जाये कि यदि उसने दुस्साहस किया तो उसका डटकर सामना होगा और उसको लेने के देने पड़ जायेंगे।

अठारहवीं लोकसभा में पहला आम बजट पेश हो गया और अब उस पर बहस जारी है। बजट से जहां ज्यादातर विपक्षी दल नाखुश हैं, वहीं सत्ता पक्ष बजट की अच्छाइयां गिनाने में लगा है। रोजगार बढ़ाने की कोशिश और राज्यों के बीच भेदभाव की चर्चा सबसे ज्यादा हो रही है।

आमने-सामने

बजट में अनेक खोट और अधूरी कोशिशें

यहां स्कैन करें

सुप्रिया श्रीनेत | सोशल मीडिया व डिजिटल प्रमुख, कांग्रेस

- नौकरियां किसको, कहां, कब, कैसे दी गईं, इसका कोई विवरण नहीं।
- सोच की कमी है। टुकड़ों में किए गए फैसलों से रोजगार सृजन नहीं होगा।
- युवा, किसान और मध्यम वर्ग की अपेक्षाओं पर पानी फेर दिया गया।

बजट 2024-25 पर लोकसभा चुनाव परिणाम की स्पष्ट छाप है। जहां मोदी सरकार ने अपनी कुर्सी और गठबंधन बचाने के लिए सिर्फ दो राज्यों को लुभाने की कोशिश की, वहीं 10 साल बाद पहली बार नौकरी की बात प्रमुखता से की गई है। बजट भाषण में आठ बार जॉब (नौकरी), 32 बार एम्प्लॉयमेंट (रोजगार) शब्द बोला गया। केंद्र सरकार ने बेरोजगार युवाओं का आक्रोश समझकर उन्हें अपने पाले में करने की कोशिश की है, मगर इस कोशिश में भी खोट है।

असलियत यह है कि जिस देश में 60 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है, वहां प्रधानमंत्री बेरोजगारी की महामारी को स्वीकारना ही नहीं चाहते हैं। बजट से दो दिन पहले तक प्रधानमंत्री कह रहे थे कि हमने आठ करोड़ नौकरियां दे दीं। ये नौकरियां किसको, कहां, कब और कैसे दी गईं, इसका कोई विवरण तो है नहीं। यही नहीं, सरकार रोजगार सृजन को लेकर कितनी गंभीर है, इसका प्रमाण बार-बार पीएलएफएस के आंकड़े से बेरोजगारी कम सिद्ध करने की विफल कोशिश से भी मिलता है। 9.2 प्रतिशत बेरोजगारी दर को 3.2 प्रतिशत सिद्ध करने से अपने मन को तो बहलाया जा सकता है, पर समस्या का समाधान नहीं हो सकता।

वित्त मंत्री ने कांग्रेस की 'पहली नौकरी पक्की' स्कीम को कॉपी पेस्ट करने का अधूरा प्रयास तो किया, मगर स्कीम को 5,000 रुपये प्रति महीना, 500 टॉप कंपनियों और एक करोड़ लोगों तक सीमित रखा। बजट में युवाओं को लेकर घोषणा की गई कि सरकार पहली बार नौकरी करने वाले लोगों का एक महीने का वेतन देगी, पर यह सुविधा सिर्फ नए कर्मचारियों के लिए है। विशेषज्ञों का मानना है कि कंपनियों को ईपीएफओ योगदान के लिए 2 साल तक प्रतिमाह 3,000 रुपये मिलने वाली रकम से युवाओं को प्रत्यक्ष कोई फायदा नहीं होगा। इन योजनाओं में व्यापक सोच की कमी है। टुकड़ों में किए गए फैसलों से रोजगार सृजन नहीं होगा।

आखिर रोजगार का चक्र टूटा क्यों और उसे दोबारा पटरी पर कैसे लाया जा सकता है? 8.2 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि की दर में अगर उपभोग वृद्धि मात्र चार प्रतिशत के पास है, कृषि वृद्धि 1.4 प्रतिशत है और मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर शिथिल रहेगा, तो नौकरियां कहां से बनेंगी? जब उपभोग और मांग बढ़ेगी, तभी उत्पादन व निवेश बढ़ेगा, जिसके बाद ही रोजगार सृजन होगा। सरकार को हवा-हवाई दावों के बजाय सबसे पहले खपत बढ़ानी होगी।

इस बार अपनी सरकार बचाने के लिए सरकार ने बजट को आंध्र प्रदेश और बिहार पर केंद्रित कर दिया। बिहार को करीब 60 हजार करोड़ और आंध्र प्रदेश को 15 हजार करोड़ रुपये दिए गए हैं। सहकारी संघवाद का राग अलापने वालों ने देश के बड़े राज्यों, जैसे उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल के लिए इस बजट में कुछ भी खास नहीं दिया है। क्या इन राज्यों की देखभाल की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की नहीं है? हिमाचल प्रदेश के आपदाग्रस्त लोगों को ऋण के अतिरिक्त क्या और सहायता मिलेगी इस केंद्रीय बजट से?

कृषि का बजट कुल बजट के अनुपात में घटाकर 3.15 प्रतिशत कर दिया गया है। शिक्षा पर खर्च कम किया जा रहा है। सरकार ने कोरोना जैसी महामारी से भी कुछ नहीं सीखा। स्वास्थ्य बजट लगातार घटाया जा रहा है। रक्षा बजट जो पूरे बजट का पिछले साल 9.6 प्रतिशत था, उसे इस साल 9.4 प्रतिशत कर दिया गया है। देश में आए दिन हो रहे रेल हादसों के बावजूद बजट में रेलवे की सुरक्षा और कवच का कोई जिक्र नहीं है।

कुल मिलाकर, इस कुर्सी बचाओ बजट से युवा, किसान, मध्यम वर्ग की अपेक्षाओं पर पानी फेरने का ही काम हुआ है। खोखले दावों से रोजगार नहीं पैदा होगा, इसे समझने के लिए बेरोजगारी की समस्या को स्वीकारना होगा, पर सरकार ऐसा करने के मूड में नहीं है।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

विकास को देख पाने में नाकाम विपक्ष

यहां स्कैन करें

गौरव वल्लभ | वित्त के प्रोफेसर व भाजपा नेता

- बेरोजगारी दर 6.0 प्रतिशत से गिरकर 3.2 प्रतिशत पर आ गई।
- केंद्रीय बजट रोजगार और कौशल बढ़ाने की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।
- विपक्ष के दावे निराधार, विकास विरोधी और संकीर्ण सोच वाले हैं।

भारत सबसे अधिक आबादी वाला देश है, साल 2041 के आसपास अपनी कामकाजी आयु वाली आबादी के चरम पर पहुंचने की उम्मीद के साथ एक निर्णायक दौर से गुजर रहा है। हाल के वर्षों में रोजगार संकेतकों में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया है, जो एक लचीली और विस्तारित अर्थव्यवस्था को दर्शाता है। विशेष रूप से श्रमिक जनसंख्या अनुपात 2017-18 में 46.8 प्रतिशत से बढ़कर 2022-23 में 56 प्रतिशत हो गया, जबकि श्रम बल भागीदारी दर 49.8 प्रतिशत से बढ़कर 57.9 प्रतिशत हो गई। इसी अवधि में बेरोजगारी दर छह प्रतिशत से गिरकर 3.2 प्रतिशत के न्यूनतम स्तर पर आ गई। ईपीएफओ ने पिछले वर्ष की तुलना में मई 2024 में शुद्ध सदस्य वृद्धि में 19.62 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत 2024-25 का केंद्रीय बजट भारत में रोजगार को बढ़ावा देने और कौशल विकास के लिए एक व्यापक प्रोत्साहन रणनीति की रूपरेखा पेश करता है। बजट विकसित भारत थीम के तहत, रोजगार, कौशल, एमएसएमई और मध्यम वर्ग पर केंद्रित है। 4.1 करोड़ युवाओं के कौशल विकास और रोजगार पर पांच वर्ष में दो लाख करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। बजट एक मजबूत और समावेशी रोजगार तंत्र को बढ़ावा देने के लिए एक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

यह सब प्रधानमंत्री इंटर्नशिप कार्यक्रम से शुरू होता है। नौकरी बाजार में कदम रखने के लिए एक युवा स्नातक को शीर्ष कंपनियों में से एक के साथ बारह महीने की इंटर्नशिप मिलेगी। पांच वर्ष में एक करोड़ युवाओं को कुशल बनाने के लिए तैयार यह कार्यक्रम 5,000 रुपये का मासिक भत्ता प्रदान करता है। इंटर्नशिप पूरी करने के बाद युवा स्कीम ए के माध्यम से कार्यबल में प्रवेश करता है, जो पहली बार नौकरी चाहने वालों पर केंद्रित है। उन्हें 15,000 रुपये तक की एक महीने की वेतन सब्सिडी मिलेगी, जो तीन किस्तों में वितरित की जाएगी। स्कीम बी के तहत आई योजना विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन को लक्षित करती है। नियोक्ता और कर्मचारियों, दोनों की चिंता करती है। केंद्रीय बजट मजबूत रोजगार और कौशल को बढ़ावा देने की सरकार की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। बजट में उठाए गए कदमों से समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

विपक्ष का यह दावा है कि केंद्रीय बजट 2024 बिहार और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों के पक्ष में है, यह देश की जनता को गुमराह करने की कोशिश है। केंद्रीय करों और शुल्कों का राज्यवार आवंटन के कुल 12.47 लाख करोड़ रुपये में से पश्चिम बंगाल को 94,000 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। पश्चिम बंगाल को कुल आवंटन का 7.5 प्रतिशत के साथ चौथा सबसे बड़ा हिस्सा मिला है। इसमें भेदभाव कहां है? उनका यह तर्क कि बजट में जिन राज्यों का उल्लेख नहीं किया गया है, उन्हें नजरअंदाज किया जा रहा है, यह तर्क पूरी तरह से गलत है। साल 2017 में अलग रेल बजट की प्रथा बंद कर दी गई है, पर क्या इसका मतलब यह है कि सरकार ने नई पटरियां, रेलगाड़ियां बनाना या रेलवे आधुनिकीकरण का काम बंद कर दिया है? यही तर्क अन्य राज्यों के आवंटन पर भी लागू होता है। हिमाचल प्रदेश में रेलवे विस्तार के लिए 2,698 करोड़ रुपये, केरल के लिए 3,011 करोड़ रुपये, जम्मू-कश्मीर के लिए 3,694 करोड़ रुपये, दिल्ली के लिए 2,582 करोड़ रुपये और पूर्वोत्तर के लिए 10,376 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। क्या विपक्ष यह नहीं देख रहा है?

विपक्ष के दावे निराधार, विकास विरोधी और संकीर्ण सोच वाले हैं, जो सरकार की व्यापक और न्यायसंगत विकास रणनीति को पहचानने में विफल हैं। यह राष्ट्रीय प्रगति के प्रति उनकी वास्तविक चिंता की कमी और राजनीतिक दिखावे के रूप में उनकी विभाजनकारी बयानबाजी को उजागर करता है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

बुध पर हीरे की मोटी परत से उम्मीदों को लगे पंख

यहां स्कैन करें

निरंकार सिंह | पूर्व सहायक संपादक, हिंदी विश्वकोश

दुनिया के खगोल विज्ञानियों ने बुध ग्रह की सतह के नीचे भारी मात्रा में हीरे होने का पता लगाया है। उनका आकलन है कि वहां लगभग नौ मील मोटी हीरे की परत हो सकती है।

हीरे की गिनती देश के सबसे महंगे रत्नों में होती है। अगर करीब 15 किलोमीटर क्षेत्रफल में हीरे ही हीरे बिछे हुए मिल जाएं, तो क्या होगा? वैज्ञानिकों को बुध ग्रह की सतह के नीचे भारी मात्रा में हीरे मिले हैं। उनका आकलन है कि वहां लगभग नौ मील, यानी 14.48 किलोमीटर मोटी हीरे की परत है। इसका खुलासा हाल ही में *नेचर कम्युनिकेशन्स* जर्नल में प्रकाशित रिपोर्ट से हुआ है। जाहिर है, इतनी मात्रा में मौजूद हीरे को धरती पर नहीं लाया जा सकता, पर इसके अध्ययन से बुध ग्रह के बनने और उसके मैग्नेटिक फील्ड की जानकारी जरूर हासिल की जा सकती है।

बीजिंग में 'सेंटर फॉर हाई प्रेशर साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी एडवांस्ड रिसर्च' के वैज्ञानिक और सह-लेखक यानहाओ ली की मानें, तो बुध भी शायद अन्य ग्रहों की तरह मैग्मा महासागर के ठंडा होने से बना। यह महासागर कार्बन और सिलिकेट से समृद्ध था। शोधकर्ताओं ने कंप्यूटर मॉडल की मदद से बुध की कोर-मेंटल सीमा का अध्ययन किया और उस पर दबाव व तापमान का माप हासिल किया। उन्होंने उन भौतिक दशाओं का सूक्ष्म विश्लेषण किया, जिनसे ग्रेफाइट या हीरा स्थिर होता है। इसके अलावा बुध पर इससे पहले खोजी गई धातुओं का रासायनिक सूप तैयार किया गया। इसके कंप्यूटर सिमुलेशन से यह पता चला कि अत्यधिक तापमान पर ये धातुएं क्रिस्टलाइज्ड होकर हीरा बन जाती हैं। इससे पहले अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के मैसेंजर मिशन ने बुध की सतह पर काले धब्बे देखे थे, जो ग्रेफाइट के थे। यह कार्बन का ही एक रूप है। बुध पर कार्बन की मौजूदगी ने वैज्ञानिकों को आगे शोध के लिए प्रेरित किया। शोधकर्ताओं का कहना है कि हीरे की परत बुध की सतह से करीब 485 किमी नीचे है। इस ग्रह का तापमान दिन के समय 430 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है।

दो साल पहले टेक्सास के वुडलैंड्स में चंद्र और ग्रह विज्ञान सम्मेलन में कोलोराडो स्कूल ऑफ माइन्स के डॉ केविन कैनन ने बुध ग्रह की संरचना के बारे में काफी आश्चर्यजनक ब्योरे प्रस्तुत किए थे। कैनन ने उनमें बताया था कि बुध के उल्का पिंडों से भरे होने और इसके कुछ अनोखे गुणों के कारण यह ग्रह 'हीरों से जड़ा हुआ' हो सकता है। बुध की अनोखी संरचना की कहानी तब शुरू हुई, जब इसका निर्माण हुआ। कई चट्टानी ग्रहों की तरह बुध की पपड़ी मैग्मा महासागर से क्रिस्टलीकृत होकर बनी। हालांकि, बुध पर यह खोल हमारे सौरमंडल के अन्य चट्टानी ग्रहों से अलग मिला था : यह कार्बन से बना था, जो एक ग्रेफाइट 'खोल' बनाता था। हम अपने सौरमंडल में कहीं और कार्बन खोल नहीं देखते हैं, क्योंकि बुध के कुछ अनोखे गुण हैं, यानी यह तथ्य कि इसमें वायुमंडल नहीं है। अरबों वर्षों से इसका वायुमंडल न होने के कारण यह ग्रह उल्का पिंडों से होने वाले नुकसान से नहीं बच पाया।

पृथ्वी पर हीरे भूमिगत रूप से बहुत गहराई में बनते हैं। मेंटल के भीतर, लगभग 150 किलोमीटर की गहराई में हीरे बनाने के लिए दबाव और तापमान काफी अधिक होता है। यही हीरे बाद में ज्वालामुखी विस्फोट के दौरान सतह पर आ जाते हैं। बहरहाल, जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, बुध की सतह पर उथल-पुथल मचेगी। टकराव से कार्बन की ऊपरी परतें फेल्डस्पार या पाइरोक्सिन जैसे खनिजों में सिलिकॉन की निचली परतों के साथ मिल जाएंगी। लावा प्रवाह ग्रेफाइट को भी ढक देगा। लेकिन हीरे के तब भी वहां बने रहने की संभावना है, भले ही वे दबे हुए रहें। दरअसल, हीरे 4,027 डिग्री सेल्सियस (7,281 डिग्री फॉरेनहाइट) पर पिघलते हैं, इसलिए एक बार बनने के बाद उन्हें नष्ट होने में बहुत समय लगता है।

बुध ग्रह चट्टानी ग्रहों में अद्वितीय है, क्योंकि इसके इतिहास के आरंभ में ही इसमें ग्रेफाइट का आवरण बन गया था। कार्बन की यह उच्च सांद्रता अरबों वर्षों के दौरान उल्का पिंडों के प्रभाव से हीरे में परिवर्तित हो गई होगी। बेपीकोलंबो मिशन के साथ बुध की सतह पर हीरे की पुष्टि कुछ वर्षों में हो सकती है। नासा के मैसेंजर, जिसने चार साल तक बुध की परिक्रमा की, इन हीरों का पता नहीं लगा सका। हालांकि, ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि मैसेंजर ने सतह की तस्वीर इन्फ्रारेड में ली थी, जहां हीरे का कोई वर्णक्रमीय हस्ताक्षर नहीं होता है। अगले साल जब बेपीकोलंबो मिशन बुध पर पहुंचेगा, तो वह उसे पहचान सकेगा। बहरहाल, इस नए उद्घाटन से खगोल वैज्ञानिक इस ग्रह के और अध्ययन में जुटेंगे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

डर की कभी मत सुनिए

पिछले दिनों मेरे पास एक ई-मेल आया, जिसमें यह दर्ज था कि 'मेरा एक बड़ा सपना है, जिसे मैं पूरा करना चाहता हूं, लेकिन बात यह है कि... मैं डरा हुआ हूं। भय मुझे रोक रहा है। मेरा दिल इस सपने में है और अगर मैं टालता रहा, तो इसे कभी हासिल नहीं कर पाऊंगा। मुझे क्या करना चाहिए?'

दरअसल, आपका डर आपको बता रहा है कि यदि आप कार्य करते हैं, तो आप असफल हो जाएंगे या निर्ममता से आपको आंका जाएगा। इसलिए आप सोचते हैं कि सपने की दिशा में कदम उठाने से बचकर विफलता और अस्वीकृति की पीड़ा से बचना बेहतर है। मगर सच तो यह है कि आप नहीं जानते कि भविष्य क्या होगा और आपका डर आपसे झूठ बोल रहा है कि वह भविष्य जानता है! आपके लिए यही जानना अपने आप में पर्याप्त होना चाहिए कि डर कभी एक विश्वसनीय मार्गदर्शक नहीं होता, खासकर तब, जब बात अपने सपनों को साकार करने की हो।

दूसरे, उस चिंता, बेचैनी और भावनात्मक उथल-पुथल पर विचार कीजिए, जिसमें डर की यह स्थिति आपको बनाए रखती है। गौर कीजिए, इसने आपको तकलीफ से कतई नहीं बचाया है। भविष्य के कथित कष्ट से बचने में मदद करने के बजाय इसने आपको वर्तमान में गतिहीन बना दिया है। इस बात से ही आपको यह पता चल जाना चाहिए कि डर की सुनना हमेशा बुरी सलाह होती है। स्वीकार कीजिए कि आप वास्तव में नहीं जानते, आपका आगे का रास्ता क्या होगा, मगर आप यह अवश्य जानते हैं कि आपका वर्तमान क्या है, इसलिए भविष्य से बेखौफ होकर आगे बढ़िए!

दीपक चोपड़ा

नीरज चोपड़ा | प्रसिद्ध ओलंपियन

जब आपका जोश बढ़ाने के लिए पूरा देश आपके साथ हो, तो कोई भी चुनौती बहुत बड़ी नहीं लगती। आप सबके प्यार से मैं ओलंपिक गेम्स पेरिस-2024 में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए तैयार हूं।

कमला ने भारतीय ज्ञान से कराया था परिचय

पिछले दिनों मीडिया में जो बाइडन की बड़ी-बड़ी तस्वीरों के साथ विश्व के सबसे ताकतवर देश अमेरिका के राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी छोड़ने की खबर प्रकाशित-प्रसारित हुई। मगर मेरे लिए वह महत्वपूर्ण खबर नहीं थी, मेरे लिए तो इस चुनाव की सबसे बड़ी खबर है, कमला हैरिस का राष्ट्रपति की उम्मीदवारी में मजबूती से उभरना और जल्द ही दावेदारी भी हासिल कर लेना। अगर ऐसा हुआ, तो अमेरिका के 244 साल के इतिहास में यह पहली बार होगा। कमला हैरिस अमेरिकी इतिहास में पहली महिला अश्वेत राष्ट्रपति बन सकती हैं। पिछले राष्ट्रपति चुनाव को याद करिए। उसमें कमला हैरिस को उप-राष्ट्रपति का उम्मीदवार बनाने से पहले जो बाइडन का चुनाव अभियान ढीला-ढाला चल रहा था, लेकिन कमला हैरिस के उम्मीदवार बनने के बाद पूरे एशियाई और अफ्रीकी समुदाय का समर्थन बाइडन को मिल गया। दरअसल, यहां अफ्रीकी मूल के अश्वेतों की संख्या 13 फीसदी है, जिसके 87 फीसदी मत डेमोक्रेटिक पार्टी को मिल गए। कैलिफोर्निया 55 इलेक्टोरल वोट के साथ सबसे बड़ा राज्य है, जहां से कमला खुद सांसद हैं। उस कैलिफोर्निया में बाइडन को लगभग 65 फीसदी वोट मिले, जो पिछली बार हिलेरी क्लिंटन को भी नहीं मिला था, कमला हैरिस ने इस चुनाव की दिशा बदल दी थी।

कमला हैरिस कमाल की नेता हैं। उन्होंने अश्वेत जॉर्ज फ्लॉयड की मौत के बाद 'ब्लैक लाइव्स मैटर्स' जैसा अभियान चलाया और पूरे अमेरिका को बताया कि किसी देश का लोकतंत्र तभी आदर्श है, जब उसके नागरिकों के बीच नस्ल, भाषा, प्रांत और धर्म के नाम पर कोई भेदभाव न हो और उसके नेता मानवीय मूल्यों की रक्षा करने से कभी पीछे न हटें। भारतीय मूल की मां और अफ्रीकी मूल के पिता की इस संतान ने पूरे विश्व के सामने भारत की ज्ञान व नेतृत्व-शक्ति का परिचय कराया था।

कमला हैरिस ने अपने एक भाषण में बेकर मोटले, फैनी लू हैमर और शिरीष चिशोल्म जैसी अमेरिकी महिलाओं का जिक्र करते हुए यह कहा था कि मैं यहां तक पहुंच सकी हूं, तो उसके पीछे इन महान हस्तियों का संघर्ष है। महिलाओं और पुरुषों में समानता, स्वतंत्रता और सभी के लिए न्याय होना चाहिए। अमेरिका के राष्ट्रपति का वह चुनाव कोई सामान्य चुनाव नहीं था। वह दरअसल अमेरिका में लोकतंत्र को बचाने की जंग थी, जो लोकतांत्रिक ताकतों ने जीत ली थी। एक महिला ने अमेरिका के लोकतंत्र को तब बचा लिया था। कमला हैरिस ने सचमुच कमाल कर दिया था। उम्मीद है, वह फिर एक बार कमाल करेंगी!

अपूर्व भारद्वाज, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

कमला हैरिस

भारत उनसे अपने लिए ज्यादा उम्मीदें न पाले

अमेरिकी राष्ट्रपति पद की दौड़ से जो बाइडन के हटने के बाद यह लगभग तय-सा लगता है कि डेमोक्रेटिक पार्टी उप-राष्ट्रपति कमला हैरिस को ही अपना उम्मीदवार बनाएगी। उनके पास महज सौ दिन का समय है, अपने तगड़े प्रतिद्वंद्वी डोनाल्ड ट्रंप से चुनावी मुकाबला करने के लिए। अब जो भी कमाल है, उन्हें इसी समय दिखाना होगा। अगर वह यह चुनाव जीत जाती हैं, तो यह बराक ओबामा की जीत से भी कहीं अधिक ऐतिहासिक विजय होगी, क्योंकि अमेरिका अपने दो सौ साल के इतिहास में पहली बार किसी महिला, और वह भी एक अश्वेत महिला को राष्ट्रपति बनाना स्वीकार करेगा। अच्छी बात यह है कि कमला हैरिस की दावेदारी आने के बाद जो नया सर्वे आया है, उसमें दिखाया गया है कि वह डोनाल्ड ट्रंप पर भारी पड़ती दिख रही हैं। नए सर्वे के मुताबिक, उन्होंने ट्रंप के ऊपर दो प्रतिशत की बढ़त हासिल कर ली है।

बहरहाल, हमें बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना होने की जरूरत नहीं है। चूंकि कमला हैरिस की मां तमिल मूल की हैं, महज इस कारण वह अगर राष्ट्रपति बन जाती हैं, तो भारतीयों के लिए न तो यह गर्व की बात होगी, और न इससे भारत को अधिक रियायत मिलने की संभावना है। वह अमेरिकी हैं और अगर उस देश के सर्वोच्च पद पर बैठती हैं, तो वह एक अमेरिकी की तरह ही सोचेंगी और उसी के अनुरूप नीतियां तय करेंगी। उस देश का हित उनकी पार्टी और उनकी खुद की नजर में जो भी है, उसी की नजर से देखेंगी। उसमें भारत के प्रति अतिरिक्त भावुकता की जगह नहीं होगी।

जहां तक गर्व करने की बात है, तो हम इसके अधिकारी हो भी नहीं सकते। इसकी स्वाभाविक वजह है। क्या भारत की राजनीति एक तमिल महिला को- चाहे वह कितनी ही पढ़ी-लिखी और तेजतर्रार हो- यह अवसर देती? उसे भारत का प्रधानमंत्री बनने देती? जहां की राजनीति हिंदू-मुस्लिम से ऊपर नहीं उठ पा रही है, वहां एक साधारण पृष्ठभूमि से आई तमिल महिला के लिए कोई अवसर होता? इसलिए व्यर्थ का गर्व और फालतू की अपेक्षा का कोई अर्थ नहीं।

याद कीजिए, जब साल 2004 में कांग्रेस की विजय के बाद पार्टी में सोनिया गांधी को प्रधानमंत्री बनाने की मांग पुरजोर तरीके से उठी थी, तब की विरोधी पार्टी की एक नेत्री ने कितना बड़ा हंगामा खड़ा किया था और सोनिया गांधी ने डॉ मनमोहन सिंह के नाम पर सहमति बनाई थी। मान लीजिए, कल राहुल गांधी को प्रधानमंत्री बनने का मौका मिलता है, तो क्या बेहूदगियां नहीं होंगी, जो अभी भी कम नहीं हो रही हैं?

विष्णु नागर, टिप्पणीकार

https://t.me/AllNewsPaperPaid

दैनिक जागरण
जिज्ञासा ज्ञान की पहली सीढ़ी है

पाकिस्तान को चेतावनी

कारगिल विजय दिवस के अवसर पर भारतीय सेना के रणबांकुरों और बलिदानियों का स्मरण करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से सीधे-सीधे पाकिस्तान का नाम लेकर यह जो दो टूक ढंग से कहा गया कि आतंक के आकाओं के नापाक मंसूबों को सफल नहीं होने दिया जाएगा, वह समय की मांग था। पाकिस्तान को ऐसा कोई कठोर संदेश देना इसलिए आवश्यक हो गया था, क्योंकि पिछले कुछ समय से वह जम्मू-कश्मीर में नए सिरे से आतंकवाद को खाद-पानी देने में जुट गया है। इसका प्रमाण जम्मू संभाग में हाल के आतंकी हमले हैं। इन हमलों में भारतीय सेना को जो क्षति उठानी पड़ी है, उसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। यह अच्छा हुआ कि प्रधानमंत्री ने एक ओर जहां कारगिल संघर्ष में भारत की विजय को याद किया, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान की धोखेबाजी को भी विस्तार से रेखांकित किया। कारगिल में घुसपैठ पाकिस्तान के विश्वासघात का ही परिचायक थी। कारगिल में भारतीय सेना ने पाकिस्तान को न केवल धूल चटाई थी, बल्कि अपनी कूटनीति से विश्व स्तर पर उसे शर्मसार भी किया था, लेकिन यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि उसने अपनी पराजय और शर्मिंदगी से कोई सबक नहीं सीखा।

पाकिस्तान ने भारत को धोखा देने की अपनी नीति का परित्याग अभी भी नहीं किया है। वह न तो भारत से व्यापार कर रहा है और न ही उच्चायुक्त स्तर के संबंध बहाल कर रहा है, लेकिन यह चाह रहा है कि भारतीय क्रिकेट टीम चैंपियंस ट्राफी खेलने उसके यहां आए। इस चाहत का कोई अर्थ नहीं। सच्चाई यह है कि वह भारत से संबंध सुधारने का इच्छुक नहीं और दुनिया को भरमाने के लिए दोस्ती कायम करने का दिखावा कर रहा है। धोखेबाज पाकिस्तान से सतर्क रहने में ही समझदारी है। वह भले ही आर्थिक रूप से बदहाल हो, लेकिन भारत के लिए खतरा बने आतंकी समूहों को पालने-पोसने का काम पहले की तरह ही कर रहा है। प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान को कठोर चेतावनी देकर बिल्कुल सही किया, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि उसने जम्मू-कश्मीर में जो छद्म युद्ध छेड़ रखा है, उस पर अभी विजय पाना शेष है। यह समझा जाना चाहिए कि पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद फैलाने से तब तक बाज आने वाला नहीं है, जब तक उसे इसकी कीमत नहीं चुकानी पड़ती। पाकिस्तान आतंकियों को प्रशिक्षित कर भारत में उनकी घुसपैठ करने की अपनी हरकतें इसीलिए जारी रखे है, क्योंकि उसे उसके किए की उचित सजा नहीं दी जा रही है। उसके खिलाफ वैसी कोई कार्रवाई करने पर विचार किया जाना चाहिए, जैसी सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के माध्यम से की गई थी। पाकिस्तान केवल जम्मू-कश्मीर को अशांत एवं अस्थिर रखने का ही प्रयास नहीं कर रहा है, बल्कि यहां के साथ पंजाब और राजस्थान में ड्रोन के जरिये नशीले पदार्थ भी भेज रहा है।

सुखद संकेत

बिहार सरकार स्कूली शिक्षा के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा पर भी काफी ध्यान दे रही है। इसी कड़ी में राज्य में इंजीनियरिंग तथा मेडिकल कालेज खोले गए। शुरुआती दिनों में भले ही आशाजनक परिणाम परिलक्षित नहीं हुए, किंतु धीरे-धीरे प्रयास रंग लाने लगा है। राज्य के 23 सरकारी इंजीनियरिंग कालेजों के छात्र-छात्राओं का टीएसएस कंपनी में विभिन्न श्रेणियों में नियोजन हुआ है। जाहिर है, ऐसे परिणामों से विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन तो होता ही है, अभिभावकों का मनोबल भी बढ़ता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि नियोजन की गारंटी नहीं होने के कारण काफी संख्या में यहां के विद्यार्थी दूसरे राज्यों के संस्थानों में दाखिला लेते हैं और फिर पढ़ाई पूरी करने के बाद दूसरे राज्यों में ही नौकरी भी करते हैं। इस वजह से यहां पढ़ाई का बेहतर माहौल भी नहीं बन पाता है तथा भारी मात्रा में यहां की धनराशि दूसरे प्रदेशों में चली जाती है। अगर उन्हें यहीं बेहतर माहौल और उसके बाद नौकरी के अच्छे अवसर दिखेंगे तो वे कतई बाहर जाना नहीं पसंद करेंगे। अच्छी बात है कि सरकार इस पर ध्यान दे रही है। तकनीकी संस्थानों में आधारभूत संरचना, सुरक्षा तथा मानव संसाधन की उपलब्धता तो सुनिश्चित की ही जानी चाहिए, इसके साथ ही समय-समय यह भी देखा जाना चाहिए कि फैकल्टी उन्हें जिस तरह पढ़ा रहे, वह मानक के अनुरूप है या नहीं। सरकारी संस्थानों में वे सभी प्रयास किए जाने चाहिए जो एक निजी कालेज करते हैं, ताकि कैंपस का बेहतर अनुभव उन्हें हो सके।

बिहार के तकनीकी संस्थानों में शैक्षणिक स्तर को राष्ट्रीय मानक के अनुरूप करने की दिशा में और प्रयास करने की जरूरत है। इससे और बेहतर परिणाम मिलेंगे

कमजोर प्रदर्शन के कारण समझे भाजपा

डा. एके वर्मा

यदि भाजपा ने उत्तर प्रदेश के परिणामों को समझे बिना संगठन या सरकार में किसी बड़े बदलाव का निर्णय लिया तो वह उसके लिए आत्मघाती हो सकता है

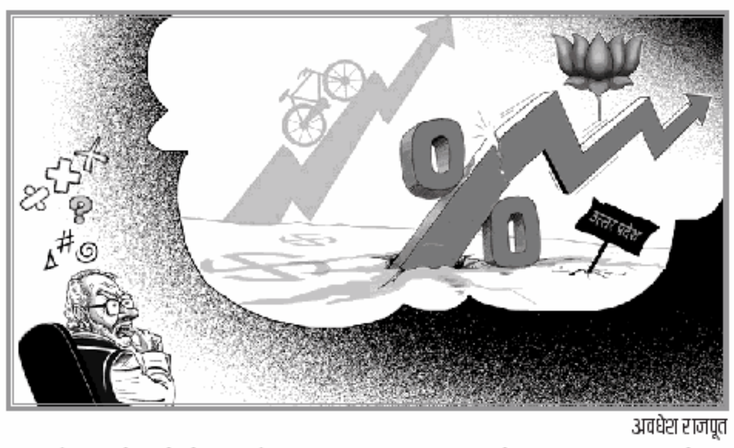

हाल के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में अपेक्षा से कमतर प्रदर्शन को लेकर भाजपा ने गहन मंथन शुरू किया है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने केंद्रीय नेतृत्व को हार के 15 प्रमुख कारणों से अवगत कराया। भाजपा के ऐसे प्रदर्शन के कई कारण हो सकते हैं, किंतु पार्टी को मूल कारण पर ध्यान देना चाहिए। यहां दो प्रश्न महत्वपूर्ण हैं। एक, क्या चुनाव प्रचार के दौरान विपक्षी नैरेटिव ने नतीजों की तस्वीर पलट दी? दूसरा, क्या समग्र विकास और समावेशी राजनीति के मोदी माडल को दरकिनार कर प्रदेश में अस्मिता राजनीति की वापसी हो रही है?

'सेंटर फार द स्टडी आफ सोसायटी एंड पालिटिक्स' में हमने लोकसभा चुनावों के संदर्भ में उत्तर प्रदेश को लेकर दो अध्ययन किए। पहला अध्ययन जनवरी-मार्च में चुनाव पूर्व तथा दूसरा अप्रैल-जून में प्रत्येक चरण के मतदान के बाद किया गया। चुनाव पूर्व अध्ययन में 61 प्रतिशत उत्तरदाता भाजपा-राजग सरकार और 62 प्रतिशत नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में चाहते थे। इसमें 59 प्रतिशत शहरी और 60 प्रतिशत ग्रामीण मतदाता, 66 प्रतिशत युवा और बेरोजगार, 76 प्रतिशत ओबीसी, 43 प्रतिशत दलित और 21 प्रतिशत पसमांदा मुस्लिम भी मोदी के पक्ष में थे। केवल 14 प्रतिशत मतदाता सपा-कांग्रेस के साथ थे। हालांकि चुनाव प्रचार के दौरान विपक्षी दलों के नैरेटिव ने तस्वीर को काफी बदल दिया। मतदान पश्चात के आंकड़ों में जहां भाजपा-राजग के समर्थन में 12.5 प्रतिशत की गिरावट आई, वहीं सपा-कांग्रेस के समर्थन में 29.2 प्रतिशत की जबरदस्त वृद्धि हुई, जो 14 प्रतिशत से बढ़कर 43.2 प्रतिशत हो गया। मोदी की स्वीकार्यता भी 62 प्रतिशत से घटकर 43 प्रतिशत रह गई। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में भाजपा-राजग की लोकप्रियता में 10 से 12 प्रतिशत और बेरोजगार युवाओं में उसके समर्थन में 20 प्रतिशत की गिरावट आई। यह प्रमाण है कि चुनाव प्रचार के दौरान कुछ ऐसा अप्रत्याशित हुआ, जिसने संभावित परिणाम उलट दिया। यदि भाजपा ने इसे समझे बिना संगठन या सरकार के स्तर पर परिवर्तन हेतु कोई निर्णय लिया तो आगामी चुनावों में वह पार्टी के लिए आत्मघाती हो सकता है।

मतदाता की मानसिकता में ऐसा बदलाव हुआ कैसे? कमजोर प्रदर्शन के जिन कारणों का उल्लेख भूपेन्द्र चौधरी कर रहे हैं, उनका मार्च तक तो प्रभाव नहीं दिख रहा था। फिर चुनाव प्रचार में ऐसा क्या हुआ, जिसने मतदाता का मतदान व्यवहार बदल दिया? चुनाव प्रचार की शुरुआत प्रधानमंत्री मोदी ने 'अबकी बार, चार सौ पार' के नारे से की और संभवतः ऐसा होता भी। कई राज्यों में भाजपा के शानदार प्रदर्शन से इस नारे के साकार होने के आसार बढ़ते दिखे, मगर कुछ राज्यों समेत उत्तर प्रदेश में यह नारा क्यों पिट गया? यदि भाजपा यूपी में पिछला प्रदर्शन ही दोहरा लेती तो उसे लोकसभा में अपने दम पर ही पूर्ण बहुमत मिल गया होता। प्रतीत होता है कि प्रदेश में चार सौ पार वाले नारे के नाकाम होने के दो कारण रहे। पहला, मोदी या भाजपा नेता जनता को समझाना भूल गए कि उन्हें इतनी सीटें चाहिए क्यों? दूसरा, अखिलेश और राहुल ने इस नारे पर भ्रम फैलाया कि 400 पार करके मोदी बाबा साहेब का संविधान बदल देंगे तथा आरक्षण समाप्त कर देंगे। इसने आरक्षण समर्थक दलितों और पिछड़ों को एक मंच पर लाकर अखिलेश के मृतप्राय 'पिछड़ा-दलित-अल्पसंख्यक यानी पीडीए वाले प्रयोग को संजीवनी दे दी। भाजपा का संकल्प-पत्र 'मोदी की गारंटियों' से पटा पड़ा था, लेकिन मोदी यह गारंटी न दे सके कि 'न संविधान बदला जाएगा, न आरक्षण समाप्त होगा।'

अवधेश राजपूत

वर्ष 2019 के लोकसभा चुनावों में भी एक गठबंधन के तहत मायावती और अखिलेश साथ आए थे, लेकिन कोई जादू नहीं कर सके। संभव है कि दलित-पिछड़ों को साधने का अखिलेश का नया प्रयोग आगे सिरे न चढ़ पाए, क्योंकि समय के साथ स्थितियां स्पष्ट होती जाएंगी और यह भी किसी से छिपा नहीं कि दलित समाज ओबीसी को भी अपना शोषक मानता है। इसी कारण कांशीराम का 1978 वाला 'बामसेफ' प्रयोग असफल हुआ और सपा-बसपा दो 'सबाल्टर्न' सामाजिक धड़ों की अस्मिता का राजनीतिक प्रतिनिधित्व करने लगे। इसी कारण मायावती और दलित समाज स्वयं को सपा से ज्यादा भाजपा के निकट पाता है। अतः भाजपा को उत्तर प्रदेश में कमजोर प्रदर्शन को अपवादस्वरूप लेते हुए अपनी समावेशी नीति से पीछे नहीं हटना चाहिए। भाजपा के कुछ नेता प्रदेश में पार्टी की हार को आधार बनाकर अस्मिता की राजनीति पर लौटना चाहते हैं, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 से ही अस्मिता केंद्रित राजनीति को दरकिनार कर 'सबका-साथ, सबका विकास' वाली समावेशी राजनीति शुरू की। इसके चलते उत्तर प्रदेश में एक समय 15 से 17 प्रतिशत वोटों तक सिमटी भाजपा को 50 प्रतिशत तक वोट मिल सके। यह किसी चमत्कार से कम नहीं था। सबका-साथ, सबका-विकास एक हकीकत बन गया और समावेशी विकास अंतिम कतार में खड़े गरीबों तक पहुंचा।

उत्तर प्रदेश में पूर्ववर्ती सरकारों की अस्मिता वाली राजनीति के चलते भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और अपराधीकरण पूरे 'सिस्टम' में इतना गहरी पैठ बना चुका है कि आज भी शासन-प्रशासन में अनेक विसंगतियां देखी जा सकती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि 2017 से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सख्त प्रशासन से जनता को राहत मिली और लोगों ने उनके विकास माडल को पसंद किया। फिर प्रधानमंत्री मोदी ने अथक प्रयासों से प्रदेश को जातिवादी राजनीति से वर्ग-राजनीति की दिशा में मोड़ा। उन्होंने महिला, सीमांत किसान, युवा और गरीब के रूप में चार वर्गों को चिह्नित किया तथा जाति-धर्म से ऊपर उठकर सभी के लिए काम किया। यूपी जैसे राज्य में जातिवादी राजनीति के ऊपर वर्गीय राजनीति का उभरना लोकतांत्रिक एवं समावेशी समाज के लिए शुभ संकेत है। यदि भाजपा नेतृत्व अपने किसी निर्णय से पुनः जातिवादी केंद्रित अस्मिता वाली राजनीति की ओर लौटता है तो वह प्रतिगामी कदम होगा, जो पीएम की समावेशी राजनीति की उस पहल को पलट देगा, जिसे उन्होंने व्यावहारिक स्वरूप देने का प्रयास किया है। (लेखक सेंटर फार द स्टडी आफ सोसायटी एंड पालिटिक्स के निदेशक एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

बजट के जरिये विपक्ष को जवाब

उमेश चतुर्वेदी

आम बजट बता रहा है कि मोदी सरकार के कामकाज के तरीके में कोई बदलाव नहीं आने जा रहा है

कांग्रेस दावा कर रही है कि मोदी सरकार का आम बजट उसके न्याय पत्र की कापी है। यह सही है कि कांग्रेस सहित पूरा विपक्ष लोकसभा चुनाव में बेरोजगारी और अग्निवीर को एक मुद्दा बनाए था। युवाओं को लुभाने के लिए कांग्रेस ने डिप्लोमाधारी बेरोजगार युवाओं को सालाना एक लाख रुपये की वृत्ति पर इंटर्नशिप देने का वादा किया था, वहीं खाली पड़े तीस लाख पदों को जल्द भरने की भी बात कही थी। तेजस्वी यादव भी बिहार में सरकारी नौकरियों में बहाली का वादा और अखिलेश यादव उत्तर प्रदेश की सरकारी भर्तियों में बार-बार पर्चा लीक होने का सवाल उठाते रहे। माना जा रहा है कि इससे प्रभावित होकर युवाओं ने कांग्रेस की अगुआई में विपक्षी दलों को भाजपा की तुलना में ज्यादा वोट दिया। ऐसे में कोई नासमझ सरकार ही होगी, जो नाराज युवा वोटरों को साधने की कोशिश नहीं करेगी। मोदी सरकार ने बजट को इसका जरिया बनाया है। बजट में युवाओं के लिए इंटर्नशिप कार्यक्रम की घोषणा कांग्रेस की कथित युवा केंद्रित राजनीति का जवाब है। इसके तहत सरकार ने हर साल एक करोड़ युवाओं को पांच सौ कंपनियों में पांच हजार रुपये महीने की वृत्ति पर इंटर्नशिप देने का वादा किया है। उनको एकमुश्त छह हजार रुपये भी दिए जाएंगे। इसके साथ ही सालाना बीस लाख युवाओं को कुशल बनाने और उन्हें रोजगार दिलाने का प्रस्ताव किया गया है।

इंटर्नशिप और कौशल विकास के अलावा सरकार पहली नौकरी पाने वाले युवाओं को पहली सैलरी भी तीन किश्तों में देगी। हां, इसकी एक सीमा 15 हजार रुपये की होगी। सरकार का मानना है कि इस योजना का फायदा दो करोड़ 10 लाख युवाओं को मिलेगा। उच्च शिक्षा के लिए दस लाख रुपये तक का कर्ज लेने वाले उन छात्रों को भी सरकारी मदद दी जाएगी, जिन्हें कोई सरकारी फायदा नहीं मिल रहा है। इसके तहत हर साल एक लाख छात्रों को फायदा देने की कोशिश का प्रविधान किया गया है। इसके साथ ही रोजगार बढ़ाने के लिए केंद्र की ओर से हर नियोक्ता को हर अतिरिक्त कर्मचारी के पीएफ में योगदान के लिए दो साल तक प्रति माह 3000 रुपये तक की मदद देने का एलान मामूली नहीं कहा जाएगा। साफ है कि सरकार बेरोजगारी को लेकर गंभीर है और विपक्षी सवालों के जवाब देने की कोशिश कर रही है। बजट इस दिशा में एक पहल है। संभव है ऐसे प्रयास आगे भी जारी रहेंगे।

बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते प्रधानमंत्री। प्रेट्र

मोदी सरकार के शपथ लेने के दिन से ही विपक्ष उसके गिरने की घोषणा कर रहा है। विपक्षी खेमा सरकार को समर्थन दे रहे दो प्रमुख दलों टीडीपी और जदयू को लगातार उकसाने की भी कोशिश कर रहा है। अल्पमत सरकार में अपनी अहमियत को जानते हुए दोनों दल भी परोक्ष दबाव बनाकर कुछ राजनीतिक सौदेबाजी कर रहे हैं। दोनों ही दल एक लंबे अर्से से अपने-अपने राज्यों को विशेष दर्जा देने की मांग कर रहे हैं, लेकिन सरकारी मानदंडों के लिहाज से यह संभव नहीं था, तो सरकार ने नया रास्ता निकाल लिया। उसने बिहार को जहां 58 हजार 900 करोड़ का एकमुश्त पैकेज दिया, वहीं आंध्र प्रदेश को नई राजधानी के लिए 15 हजार करोड़ रुपये और दूसरी योजनाओं के लिए करीब 63 हजार करोड़ रुपये के बड़े बजट का एलान कर दिया। इन घोषणाओं के बाद नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू की खुशी देखते ही बन रही है। इन घोषणाओं के जरिये केंद्र सरकार ने उकसावे के विपक्षी बारूद पर एक तरह से बर्फ डाल दिया है।

आजादी के बाद से अब तक हर चुनाव में गांवों का विकास और किसानों की बेहतरी राजनीतिक मुद्दा रहा है। वोट बैंक की राजनीति में किसान बड़े आधार रहे हैं। शायद यही वजह रही कि किसान संगठनों ने बीते चुनाव से ठीक पहले विपक्ष के लिए पिच तैयार करने की कोशिश की। इसका पंजाब और हरियाणा में असर भी दिखा। तीन कृषि कानूनों के खिलाफ शुरू हुए आंदोलन के बाद से ही भाजपा के लिए खेती-किसानी चिंता का विषय रही है। इस बार किसानों का बजट पिछली बार की तुलना में 27 हजार करोड़ बढ़ाकर एक लाख 52 हजार करोड़ कर दिया गया है। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और देश के चार सौ जिलों के छह करोड़ किसानों की जमीनों का रिकार्ड तैयार करने का फैसला ऐसा है, जिसे अगर ईमानदारी से लागू कर दिया गया तो किसानों की स्थिति बदलने में बड़ी मदद मिलेगी। गांवों की बड़ी समस्या जमीनी विवाद हैं। जमीनों का रिकार्ड तैयार होने के बाद ये विवाद भी थमेंगे। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिला तो रासायनिक खादों और बीजों पर होने वाला खर्च कम होगा, सिंचाई खर्च भी बचेगा। उत्पाद बाजार में महंगी कीमत पर बिकेगा, जिसका फायदा आखिर में किसानों को मिलेगा। इसके साथ ही खेती, खासकर सब्जी और फलों की खेती में कारपोरेट और आधुनिकता को बढ़ावा देने के लिए खेती से जुड़े उपकरणों के आयात पर पांच प्रतिशत की छूट दी गई है। इन प्रविधानों के जरिये किसानों को लुभाने की भी कोशिश की गई है।

भाजपा के अल्पमत में आने के बाद भी मोदी सरकार के कामकाज के तरीके में कोई बदलाव नहीं दिख रहा है। अतीत के दो कार्यकाल की तरह इस बार भी सरकार की छवि दबंग जैसी ही है। जिस तरह बजट प्रस्तावों के जरिये विपक्ष को जवाब दिया है, उसे लेकर कहा जा सकता है कि नई परिस्थिति में सरकार नई चाल भी चल रही है और अपने सियासी मकसद को हासिल करने की कोशिश भी कर रही है। सरकार ने कांग्रेस के न्याय पत्र की कापी की हो या नहीं, पर यह तय है कि उसी के हथियार से उसी को मात देने की कोशिश अवश्य की है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

बुद्धिमत्ता

मानव जीवन को सार्थक बनाने में बुद्धिमत्ता की बड़ी महत्ता है। वैसे तो बुद्धिमत्ता को किसी पारिभाषिक दायरे में समेटना पूर्णतः संभव नहीं, किंतु सामान्य रूप से व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता ही बुद्धिमत्ता कहलाती है। बुद्धिमत्ता से ही विवेक की क्षमता प्राप्त होती है। जो व्यक्ति अपनी परिस्थितियों के माध्यम से सीखने, समझने, तर्क करने और उसे अपने जीवन में उपयोग करने की क्षमता रखता है, उसे बुद्धिमान की श्रेणी में रखा जाता है। बायरन पल्सिफर ने कहा है, 'बहुत से लोग समृद्धि को केवल धन से जोड़ते हैं और भूल जाते हैं कि सच्ची समृद्धि बुद्धि की होती है।'

बुद्धिमत्ता हासिल करने के लिए हम सिर्फ किताबों पर आश्रित नहीं रह सकते हैं। बुद्धिमत्ता का विकास हमारे अध्ययन के साथ ही अर्जित अनुभवों के मिश्रण से होता है। अनुभव एवं कौशल दो ऐसी सीढ़ी हैं, जिसके सहारे हम अपने व्यक्तित्व में बुद्धिमत्ता को बढ़ाकर और निखार ला सकते हैं। यही अनुभव और ज्ञान हमें जीवन की विपरीत परिस्थितियों में चुनौतियों से पार पाने में सहायक बनता है। बुद्धि जीवन के अनुभव का मिश्रण है, जिसमें विनम्रता एक महत्वपूर्ण अवयव है। बुद्धिमान व्यक्ति में संवेदनशीलता का भी समावेश होता है और वह केवल यह ध्यान में नहीं रखता कि उसके लिए क्या उपयुक्त क्या होगा, बल्कि वह उसका भी उतना ही ध्यान रखता है कि अन्य लोगों के लिए क्या हितकारी है।

संप्रति, वैज्ञानिक युग में जीवन को सफल और सरल बनाने के लिए किसी भी प्रकार के उपायों का सहारा लेने से भी कोई संकोच नहीं किया जा रहा है। ऐसे उपायों से तात्कालिक सफलता मिल सकती है, किंतु बुद्धिमत्ता से उपजा विवेक सदैव ऐसी सफलता को कचोटता रहेगा। चूंकि ज्ञान, बुद्धि, कौशल, तर्क और अनुभव से ही हमारी बुद्धिमत्ता बढ़ती है तो हमें सदैव इन तत्वों को प्रखर करते रहना चाहिए।

नृपेंद्र अभिषेक नृप

जीन एडिटिंग से प्रभाव बढ़ने की आस

प्रदीप

टीबी का टीका

अभी टीबी का एकमात्र टीका उपलब्ध है, लिहाजा इसका दायरा बढ़ने से इसके रोगियों को काफी लाभ हो सकता है

टीबी या तपेदिक के इकलौते टीके 'बीसीजी' (बैसिलस कैलमेट-गुएरिन) को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए जीन एडिटिंग तकनीक के उपयोग की दिशा में एक अहम सफलता मिली है। यह सफलता दुनिया के सबसे अधिक संक्रामक जीवाणुजनित रोगों में से एक के खिलाफ लड़ाई की अग्रिम पंक्ति में एक पहले से ज्यादा प्रभावी हथियार को जोड़ने की आशा प्रदान करती है। टीबी के कारण हर साल पूरी दुनिया में लगभग 15 लाख लोगों की असमय मृत्यु हो जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में ही हर दो मिनट में एक व्यक्ति की मौत इस बीमारी से होती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इतने विकास के बावजूद टीबी के विरुद्ध हमारे पास सिर्फ एक ही वैक्सीन उपलब्ध है, जो मुख्य रूप से नवजात शिशुओं और 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों पर ही प्रभावी है और टीकाकरण से मिलने वाली प्रतिरक्षा दस वर्षों के बाद कम भी होने लगती है। बीसीजी फेफड़ों की टीबी में ज्यादा प्रभावी नहीं है। बीसीजी का टीका वयस्कों पर ज्यादा असरदार नहीं रहता, क्योंकि वयस्कों में फेफड़ों की टीबी के मामले अधिक होते हैं। ऐसे में जोहान्सबर्ग स्थित यूनिवर्सिटी आफ विटवाटरसैंड स्कूल आफ पैथोलाजी के शोधकर्ताओं ने नई उम्मीद जगाई है। जीन एडिटिंग तकनीक के जरिए हालिया संशोधित बीसीजी के टीके को लेकर यह अनुमान लगाया जा रहा है कि यह फेफड़ों और फेफड़ों से बाहर दोनों ही टीबी के खिलाफ कारगर साबित होगी।

टीबी के टीके को विकसित करना चुनौतीपूर्ण काम है। रोग का कारण बनने वाला जीवाणु जटिल हैं। यह मानव प्रतिरक्षा तंत्र से बचने में कुशल है, यही वजह है कि 100 वर्षों में इस बीमारी के खिलाफ केवल एक ही टीका विकसित किया जा सका है। जीवाणुओं की कोशिका भित्ति में एक छोटी सी रासायनिक संरचना होती है और वह बैक्टीरिया को प्रतिरक्षा तंत्र से एक महत्वपूर्ण मार्कर (पीएएमपी), जिसे एनओडी-1 लिगैंड कहा जाता है, उसे छिपाने की क्षमता प्रदान करती है।

बीसीजी टीके में इस्तेमाल किए जाने वाले जीवाणु प्रतिरक्षा तंत्र से एनओडी-1 लिगैंड को छिपाने में माहिर हैं, जिससे शरीर के लिए उनका पता लगाना मुश्किल हो जाता है। शोधकर्ताओं ने सोचा कि बीसीजी जीवाणु को जीन एडिटिंग तकनीक 'क्रिस्पर' की मदद से संशोधित किया जाए, ताकि वह एनओडी-1 लिगैंड को छिपा न सके, जिससे एक नया और ज्यादा असरदार टीका विकसित हो सकता है। फिलहाल चूहों पर यह युक्ति काम आई है। लिहाजा शोधकर्ता अब मानव परीक्षण के लिए टीके को संशोधित करने के काम में जुटे हुए हैं।

(लेखक विज्ञान संचारक हैं)

नकारात्मक राजनीति से बचें

'लेफ्ट-लिबरल समूह का नफरती अभियान' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में बलबीर पुंज ने लिखा है कि 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद से विश्व भर में इस वर्ग का उदय तेजी से हुआ है और ये लोग वामपंथ के सिद्धांतों की व्यावहारिक उपादेयता के खत्म होने से खीझे हुए हैं। नतीजतन वे छद्म रूप धारण कर उदारवाद का सहारा लेकर जनकल्याण की भावना को नकार रहे हैं। वे ऐसे तत्वों को बढ़ावा देने की कोशिश में लगे रहते हैं, जो लोकतंत्र को कमजोर करने पर आमादा हैं। विभिन्न उदाहरणों के जरिये लेखक ने ऐसे तत्वों पर प्रहार करते हुए देशवासियों को उनसे सतर्क रहने की नसीहत दी है। दुखद है कि कांग्रेस जैसी पार्टी में भी ऐसे तत्व सक्रिय हैं, जबकि इंदिरा गांधी, राजीव गांधी एवं पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह जैसे कांग्रेस नेता आतंकी हिंसा के शिकार हुए। तब विपक्ष में रही भाजपा ने इन मामलों को कांग्रेस की साजिश नहीं बताया था। ऐसी नकारात्मक राजनीति से बचा जाना चाहिए, लेकिन लगता नहीं कि कांग्रेस ऐसा कर पाएगी। उसके सांसद चरणजीत सिंह चन्नी संसद में खालिस्तान के एक समर्थक की पैरवी करते दिखे। वैसे पार्टी ने उनके बयान से किनारा तो कर लिया, लेकिन उन पर कोई कार्रवाई नहीं की।

मुकेश मनन, पटना

नई पीढ़ी को मिलेगी प्रेरणा

कल यानी शुक्रवार को प्रकाशित समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख- सेनाओं के शौर्य की गाथा कारगिल युद्ध, में लेखक ओम प्रकाश सिंह राणा ने पाठकों को नौसेना के योगदान की ओर ध्यान दिलाकर एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। आवश्यकता इस बात की है कि भारत सरकार अपनी सेना के विभिन्न अंगों के योगदान के बारे में छोटी-छोटी पुस्तिकाएं प्रकाशित करे और उन्हें जनता के मध्य विशेषकर स्कूलों में निशुल्क वितरित करे। मालूम हो कि वर्ष 1965 के युद्ध के बाद इस तरह की पुस्तिकाएं वितरित की गई थीं। इन पुस्तिकाओं को भविष्य के लिए भी संभाल कर रखा जा सकता है। इससे नई पीढ़ी को सेना की ओर आकर्षित करने और उन्हें सेना की सेवा को ज्वाइन करने के लिए भी प्रेरित करेगा।

सतीश चंद्र रस्तोगी, नोएडा

मेलबाक्स

गौरवान्वित होने का अवसर

यह सच है कि कारगिल युद्ध में हमारी सेना ने अदम्य साहस का परिचय दिया। साथ ही भारतीय भूभाग की रक्षा करते हुए देशवासियों को गौरवान्वित होने का भी अवसर प्रदान किया। ओम प्रकाश सिंह राणा ने हमें यह बताया कि नौसेना ने किस तरह कारगिल विजय में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मेरा मानना है कि अधिकांश लोगों को यही पता होगा कि कारगिल युद्ध में थल और वायु सेना ने ही लड़ाई लड़ी थी। नौसेना की ऐसी नाकेबंदी के बिना कारगिल युद्ध जीत पाना थोड़ा मुश्किल होता या फिर यह भी कह सकते हैं कि नौसेना के सहयोग से इस युद्ध को जीतने में थल और वायु सेना को काफी हद तक मदद मिली।

अमित सिंह, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश

कमला हैरिस पर सबकी नजर

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर पूरी दुनिया की नजर रहती है। यह केवल अमेरिकी राष्ट्रपति का चुनाव नहीं, दुनिया के सबसे शक्तिशाली व प्रभावशाली राजनीतिक हस्ती का चुनाव होता है। अमेरिकी चुनाव में रोज नए मोड़ आ रहे हैं। जो बाइडन के अधिक उम्र व बीमारी के कारण चुनावी रेस से हट जाने के बाद अब विश्व के सबसे प्रभावशाली पद के लिए सीधा मुकाबला पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और निवर्तमान उपराष्ट्रपति कमला हैरिस के बीच दिखाई देगा। कमला हैरिस, डोनाल्ड ट्रंप की तुलना में युवा हैं, इसलिए उन्हें व्यापक तौर पर युवा, खासकर महिलाओं का समर्थन मिल सकता है। इसके अलावा उन्हें अश्वेत, एशिया एवं अफ्रीकी मूल के नागरिकों के भी मत बड़े स्तर पर मिलने की उम्मीद है। कमला हैरिस का जुड़ाव भारत से रहा है। इस कारण कमला को भारतीय मूल के लोगों के वोट तो मिलेंगे ही, साथ में उन्हें यहूदी वोट भी प्राप्त होंगे, क्योंकि उनके पति यहूदी हैं।

विजय किशोर तिवारी, नई दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

जिज्ञासा ज्ञान की पहली सीढ़ी है

पाकिस्तान को चेतावनी

कारगिल विजय दिवस के अवसर पर भारतीय सेना के रणबांकुरों और बलिदानियों का स्मरण करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से सीधे-सीधे पाकिस्तान का नाम लेकर यह जो दो टूक ढंग से कहा गया कि आतंक के आकाओं के नापाक मंसूबों को सफल नहीं होने दिया जाएगा, वह समय की मांग था। पाकिस्तान को ऐसा कोई कठोर संदेश देना इसलिए आवश्यक हो गया था, क्योंकि पिछले कुछ समय से वह जम्मू-कश्मीर में नए सिरे से आतंकवाद को खाद-पानी देने में जुट गया है। इसका प्रमाण जम्मू संभाग में हाल के आतंकी हमले हैं। इन हमलों में भारतीय सेना को जो क्षति उठानी पड़ी है, उसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। यह अच्छा हुआ कि प्रधानमंत्री ने एक ओर जहां कारगिल संघर्ष में भारत की विजय को याद किया, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान की धोखेबाजी को भी विस्तार से रेखांकित किया। कारगिल में घुसपैठ पाकिस्तान के विश्वासघात का ही परिचायक थी। कारगिल में भारतीय सेना ने पाकिस्तान को न केवल धूल चटाई थी, बल्कि अपनी कूटनीति से विश्व स्तर पर उसे शर्मसार भी किया था, लेकिन यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि उसने अपनी पराजय और शर्मिंदगी से कोई सबक नहीं सीखा।पाकिस्तान ने भारत को धोखा देने की अपनी नीति का परित्याग अभी भी नहीं किया है। वह न तो भारत से व्यापार कर रहा है और न ही उच्चायुक्त स्तर के संबंध बहाल कर रहा है, लेकिन यह चाह रहा है कि भारतीय क्रिकेट टीम चैंपियंस ट्राफी खेलने उसके यहां आए। इस चाहत का कोई अर्थ नहीं। सच्चाई यह है कि वह भारत से संबंध सुधारने का इच्छुक नहीं और दुनिया को भरमाने के लिए दोस्ती कायम करने का दिखावा कर रहा है। धोखेबाज पाकिस्तान से सतर्क रहने में ही समझदारी है। वह भले ही आर्थिक रूप से बदहाल हो, लेकिन भारत के लिए खतरा बने आतंकी समूहों को पालने-पोसने का काम पहले की तरह ही कर रहा है। प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान को कठोर चेतावनी देकर बिल्कुल सही किया, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि उसने जम्मू-कश्मीर में जो छद्म युद्ध छेड़ रखा है, उस पर अभी विजय पाना शेष है। यह समझा जाना चाहिए कि पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद फैलाने से तब तक बाज आने वाला नहीं है, जब तक उसे इसकी कीमत नहीं चुकानी पड़ती। पाकिस्तान आतंकियों को प्रशिक्षित कर भारत में उनकी घुसपैठ करने की अपनी हरकतें इसीलिए जारी रखे है, क्योंकि उसे उसके किए की उचित सजा नहीं दी जा रही है। उसके खिलाफ वैसी कोई कार्रवाई करने पर विचार किया जाना चाहिए, जैसी सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक के माध्यम से की गई थी। पाकिस्तान केवल जम्मू-कश्मीर को अशांत एवं अस्थिर रखने का ही प्रयास नहीं कर रहा है, बल्कि यहां के साथ-साथ पंजाब और राजस्थान में ड्रोन के जरिये नशीले पदार्थ भी भेज रहा है।

हिसाब देने में देरी क्यों?

यह बुरी बात है कि आप सरकारी धन खर्च करें और समय पर उसका हिसाब न दें। भारत के महालेखा परीक्षक की आडिट रिपोर्ट में वर्षों से राज्य सरकार के विभागों की इस प्रवृत्ति पर प्रश्न खड़ा किया जाता है। लेकिन, अगले साल जब आडिट रिपोर्ट आती है तो पता चलता है कि पिछली आपत्तियों की किसी ने नोटिस ही नहीं ली। आडिट रिपोर्ट में इसे घपला नहीं कहा जाता है। गड़बड़ी मानी जाती है और विभागों से अपेक्षा की जाती है कि वह आपत्तियों का जवाब दे। बताए कि कोई गड़बड़ी नहीं हुई है। हमारे पास आना पाई का हिसाब है। यह नहीं होता है तो गड़बड़ी की आशंका होने लगती है। इन्हीं आशंकाओं ने कभी पशुपालन घोटाले को जन्म दिया था, जिसकी चपेट से बिहार की राजनीति आज तक बाहर नहीं निकल पाई है। रिपोर्ट में कई जानकारी ऐसी है, जिनसे पता चलता है कि सरकारी विभागों को आडिट की आपत्तियों का जरा भी डर नहीं है। सोचिए, 2003-04 में पंचायती राज संस्थाओं को जो धन दिया गया, उसका उपयोगिता प्रमाण पत्र आज तक जमा नहीं हुआ है। रकम खर्च करने वाले सरकारी सेवा से मुक्त हो गए होंगे। कुछ तो दुनिया से भी चले गए होंगे। कागज-पत्तर भी गुम हो गया होगा। इसे क्या माना जाए। असल में हिसाब देने में गड़बड़ी तब होती है, जब खर्च में गड़बड़ी होती है। सही जगह पर धन खर्च नहीं किया जाता है। आप कैसे कोई सामान खरीदते हैं और उसकी रसीद लेकर रख लेते हैं। यही कायदा सरकारी खरीद का भी होता है। मगर, जब सौ के सामान के लिए दो सौ की रसीद मांगेगे तो यही होगा। दुकानदार तो रसीद देगा नहीं। फर्जीवाड़ा किया जाएगा। इसमें देरी भी होती है। डर भी लगा रहता है कि ताजा मामला है। रसीद दें तो पकड़े न जाएं। सो, देरी लगती है।

हिसाब देने में देरी तब होती है, जब खर्च में गड़बड़ी होती है।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों में सरकारी कर्मियों के शामिल होने पर प्रतिबंध हटाने का फैसला सही है?

आज का सवाल

क्या अमृतपाल का समर्थन करने पर कांग्रेस को चरणजीत सिंह चन्नी के खिलाफ कार्रवाई करनी चाहिए?

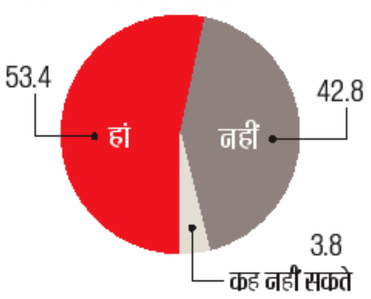

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

कमजोर प्रदर्शन के कारण समझे भाजपा

डा. एके वर्मा

यदि भाजपा ने उत्तर प्रदेश के परिणामों को समझे बिना संगठन या सरकार में किसी बड़े बदलाव का निर्णय लिया तो वह उसके लिए आत्मघाती हो सकता है

हाल के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में अपेक्षा से कमतर प्रदर्शन को लेकर भाजपा ने गहन मंथन शुरू किया है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने केंद्रीय नेतृत्व को हार के 15 प्रमुख कारणों से अवगत कराया। भाजपा के ऐसे प्रदर्शन के कई कारण हो सकते हैं, किंतु पार्टी को मूल कारण पर ध्यान देना चाहिए। यहां दो प्रश्न महत्वपूर्ण हैं। एक, क्या चुनाव प्रचार के दौरान विपक्षी नैरेटिव ने नतीजों की तस्वीर पलट दी? दूसरा, क्या समग्र विकास और समावेशी राजनीति के मोदी माडल को दरकिनार कर प्रदेश में अस्मिता राजनीति की वापसी हो रही है?

'सेंटर फार द स्टडी आफ सोसायटी एंड पालिटिक्स' में हमने लोकसभा चुनावों के संदर्भ में उत्तर प्रदेश को लेकर दो अध्ययन किए। पहला अध्ययन जनवरी-मार्च में चुनाव पूर्व तथा दूसरा अप्रैल-जून में प्रत्येक चरण के मतदान के बाद किया गया। चुनाव पूर्व अध्ययन में 61 प्रतिशत उत्तरदाता भाजपा-राजग सरकार और 62 प्रतिशत नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में चाहते थे। इसमें 59 प्रतिशत शहरी और 60 प्रतिशत ग्रामीण मतदाता, 66 प्रतिशत युवा और बेरोजगार, 76 प्रतिशत ओबीसी, 43 प्रतिशत दलित और 21 प्रतिशत पसमांदा मुस्लिम भी मोदी के पक्ष में थे। केवल 14 प्रतिशत मतदाता सपा-कांग्रेस के साथ थे। हालांकि चुनाव प्रचार के दौरान विपक्षी दलों के नैरेटिव ने तस्वीर को काफी बदल दिया। मतदान पश्चात के आंकड़ों में जहां भाजपा-राजग के समर्थन में 12.5 प्रतिशत की गिरावट आई, वहीं सपा-कांग्रेस के समर्थन में 29.2 प्रतिशत की जबरदस्त वृद्धि हुई, जो 14 प्रतिशत से बढ़कर 43.2 प्रतिशत हो गया। प्रधानमंत्री मोदी की स्वीकार्यता भी 62 प्रतिशत से घटकर 43 प्रतिशत रह गई। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में भाजपा-राजग की लोकप्रियता में 10 से 12 प्रतिशत और बेरोजगार युवाओं में उसके समर्थन में 20 प्रतिशत की गिरावट आई। यह प्रमाण है कि चुनाव प्रचार के दौरान कुछ ऐसा अप्रत्याशित हुआ, जिसने संभावित परिणाम उलट दिया। यदि भाजपा ने इसे समझे बिना संगठन या सरकार के स्तर पर परिवर्तन हेतु कोई निर्णय लिया तो आगामी चुनावों में वह पार्टी के लिए आत्मघाती हो सकता है।

सवाल है कि मतदाता की मानसिकता में ऐसा बदलाव हुआ कैसे? कमजोर प्रदर्शन के जिन कारणों का उल्लेख भूपेन्द्र चौधरी कर रहे हैं, उनका मार्च तक तो प्रभाव नहीं दिख रहा था। फिर चुनाव प्रचार में ऐसा क्या हुआ, जिसने मतदाता का मतदान व्यवहार बदल दिया? चुनाव प्रचार की शुरुआत प्रधानमंत्री मोदी ने 'अबकी बार, चार सौ पार' के नारे से की और संभवतः ऐसा होता भी। कई राज्यों में भाजपा के शानदार प्रदर्शन से इस नारे के साकार होने के आसार बढ़ते दिखे, मगर कुछ राज्यों समेत उत्तर प्रदेश में यह नारा क्यों पिट गया? यदि भाजपा यूपी में पिछला प्रदर्शन ही दोहरा लेती तो उसे लोकसभा में अपने दम पर ही पूर्ण बहुमत मिल गया होता। प्रतीत होता है कि प्रदेश में चार सौ पार वाले नारे के नाकाम होने के दो कारण रहे। पहला, मोदी या भाजपा नेता जनता को समझाना भूल गए कि उन्हें इतनी सीटें चाहिए क्यों? दूसरा, अखिलेश यादव और राहुल गांधी ने इस नारे को लपक कर भ्रम फैलाया कि 400 पार करके मोदी बाबा साहेब का संविधान बदल देंगे तथा आरक्षण समाप्त कर देंगे। इसने आरक्षण समर्थक दलितों और पिछड़ों को एक मंच पर लाकर अखिलेश के मृतप्राय 'पिछड़ा-दलित-अल्पसंख्यक यानी पीडीए वाले प्रयोग को संजीवनी दे दी। भाजपा का संकल्प-पत्र 'मोदी की गारंटियों' से पटा पड़ा था, लेकिन मोदी यह गारंटी न दे सके कि 'न संविधान बदला जाएगा, न आरक्षण समाप्त होगा।'

अवधेश राजपूत

वर्ष 2019 के लोकसभा चुनावों में भी एक गठबंधन के तहत मायावती और अखिलेश साथ आए थे, लेकिन कोई जादू नहीं कर सके। संभव है कि दलित-पिछड़ों को साधने का अखिलेश का नया प्रयोग आगे सिरे न चढ़ पाए, क्योंकि समय के साथ स्थितियां स्पष्ट होती जाएंगी और यह भी किसी से छिपा नहीं कि दलित समाज ओबीसी को भी अपना शोषक मानता है। इसी कारण कांशीराम का 1978 वाला 'बामसेफ' प्रयोग असफल हुआ और सपा-बसपा दो 'सबाल्टर्न' सामाजिक धड़ों की अस्मिता का राजनीतिक प्रतिनिधित्व करने लगे। इसी कारण मायावती और दलित समाज स्वयं को सपा से ज्यादा भाजपा के निकट पाता है। अतः भाजपा को उत्तर प्रदेश में कमजोर प्रदर्शन को अपवादस्वरूप लेते हुए अपनी समावेशी नीति से पीछे नहीं हटना चाहिए। भाजपा के कुछ नेता प्रदेश में पार्टी की हार को आधार बनाकर अस्मिता की राजनीति पर लौटना चाहते हैं, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 से ही अस्मिता केंद्रित राजनीति को दरकिनार कर 'सबका-साथ, सबका विकास' वाली समावेशी राजनीति शुरू की। इसके चलते उत्तर प्रदेश में एक समय 15 से 17 प्रतिशत वोटों तक सिमटी भाजपा को 50 प्रतिशत तक वोट मिल सके। यह किसी चमत्कार से कम नहीं था। सबका-साथ, सबका-विकास एक हकीकत बन गया और समावेशी विकास अंतिम कतार में खड़े गरीबों तक पहुंचा।

उत्तर प्रदेश में पूर्ववर्ती सरकारों की अस्मिता वाली राजनीति के चलते भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और अपराधीकरण पूरे 'सिस्टम' में इतना गहरी पैठ बना चुका है कि आज भी शासन-प्रशासन में अनेक विसंगतियां देखी जा सकती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि 2017 से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सख्त प्रशासन से जनता को राहत मिली और लोगों ने उनके विकास माडल को पसंद किया। फिर प्रधानमंत्री मोदी ने अथक प्रयासों से प्रदेश को जातिवादी राजनीति से वर्ग-राजनीति की दिशा में मोड़ा। उन्होंने महिला, सीमांत किसान, युवा और गरीब के रूप में चार वर्गों को चिह्नित किया तथा जाति-धर्म से ऊपर उठकर सभी के लिए काम किया। यूपी जैसे राज्य में जातिवादी राजनीति के ऊपर वर्गीय राजनीति का उभरना लोकतांत्रिक एवं समावेशी समाज के लिए शुभ संकेत है। यदि भाजपा नेतृत्व अपने किसी निर्णय से पुनः जातिवादी केंद्रित अस्मिता वाली राजनीति की ओर लौटता है तो वह एक प्रतिगामी कदम होगा, जो प्रधानमंत्री की समावेशी राजनीति की उस पहल को पलट देगा, जिसे उन्होंने बड़ी मेहनत से व्यावहारिक स्वरूप देने का प्रयास किया है।

(लेखक सेंटर फार द स्टडी आफ सोसायटी एंड पालिटिक्स के निदेशक एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

बजट के जरिये विपक्ष को जवाब

उमेश चतुर्वेदी

आम बजट बता रहा है कि मोदी सरकार के कामकाज के तरीके में कोई बदलाव नहीं आने जा रहा है

कांग्रेस दावा कर रही है कि मोदी सरकार का आम बजट उसके न्याय पत्र की कापी है। यह सही है कि कांग्रेस सहित पूरा विपक्ष लोकसभा चुनाव में बेरोजगारी और अग्निवीर को एक मुद्दा बनाए था। युवाओं को लुभाने के लिए कांग्रेस ने डिप्लोमाधारी बेरोजगार युवाओं को सालाना एक लाख रुपये की वृत्ति पर इंटर्नशिप देने का वादा किया था, वहीं खाली पड़े तीस लाख पदों को जल्द भरने की भी बात कही थी। तेजस्वी यादव भी बिहार में सरकारी नौकरियों में बहाली का वादा और अखिलेश यादव उत्तर प्रदेश की सरकारी भर्तियों में बार-बार पर्चा लीक होने का सवाल उठाते रहे। माना जा रहा है कि इससे प्रभावित होकर युवाओं ने कांग्रेस की अगुआई में विपक्षी दलों को भाजपा की तुलना में ज्यादा वोट दिया। ऐसे में कोई नासमझ सरकार ही होगी, जो नाराज युवा वोटरों को साधने की कोशिश नहीं करेगी। मोदी सरकार ने बजट को इसका जरिया बनाया है। बजट में युवाओं के लिए इंटर्नशिप कार्यक्रम की घोषणा कांग्रेस की कथित युवा केंद्रित राजनीति का जवाब है। इसके तहत सरकार ने हर साल एक करोड़ युवाओं को पांच सौ कंपनियों में पांच हजार रुपये महीने की वृत्ति पर इंटर्नशिप देने का वादा किया है। उनको एकमुश्त छह हजार रुपये भी दिए जाएंगे। इसके साथ ही सालाना बीस लाख युवाओं को कुशल बनाने और उन्हें रोजगार दिलाने का प्रस्ताव किया गया है।

इंटर्नशिप और कौशल विकास के अलावा सरकार पहली नौकरी पाने वाले युवाओं को पहली सैलरी भी तीन किस्तों में देगी। हां, इसकी एक सीमा 15 हजार रुपये की होगी। सरकार का मानना है कि इस योजना का फायदा दो करोड़ 10 लाख युवाओं को मिलेगा। उच्च शिक्षा के लिए दस लाख रुपये तक का कर्ज लेने वाले उन छात्रों को भी सरकारी मदद दी जाएगी, जिन्हें कोई सरकारी फायदा नहीं मिल रहा है। इसके तहत हर साल एक लाख छात्रों को फायदा देने की कोशिश का प्रविधान किया गया है। इसके साथ ही रोजगार बढ़ाने के लिए केंद्र की ओर से हर नियोक्ता को हर अतिरिक्त कर्मचारी के पीएफ में योगदान के लिए दो साल तक प्रति माह 3000 रुपये तक की मदद देने का एलान मामूली नहीं कहा जाएगा। साफ है कि सरकार बेरोजगारी को लेकर गंभीर है और विपक्षी सवालों के जवाब देने की कोशिश कर रही है। बजट इस दिशा में एक पहल है। संभव है ऐसे प्रयास आगे भी जारी रहेंगे।

बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते प्रधानमंत्री ● प्रेट्र

मोदी सरकार के शपथ लेने के दिन से ही विपक्ष उसके गिरने की घोषणा कर रहा है। विपक्षी खेमा सरकार को समर्थन दे रहे दो प्रमुख दलों टीडीपी और जदयू को लगातार उकसाने की भी कोशिश कर रहा है। अल्पमत सरकार में अपनी अहमियत को जानते हुए दोनों दल भी परोक्ष दबाव बनाकर कुछ राजनीतिक सौदेबाजी कर रहे हैं। दोनों ही दल एक लंबे अर्से से अपने-अपने राज्यों को विशेष दर्जा देने की मांग कर रहे हैं, लेकिन सरकारी मानदंडों के लिहाज से यह संभव नहीं था, तो सरकार ने नया रास्ता निकाल लिया। उसने बिहार को जहां 58 हजार 900 करोड़ का एकमुश्त पैकेज दिया, वहीं आंध्र प्रदेश को नई राजधानी के लिए 15 हजार करोड़ रुपये और दूसरी योजनाओं के लिए करीब 63 हजार करोड़ रुपये के बड़े बजट का एलान कर दिया। इन घोषणाओं के बाद नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू की खुशी देखते ही बन रही है। इन घोषणाओं के जरिये केंद्र सरकार ने उकसावे के विपक्षी बारूद पर एक तरह से बर्फ डाल दिया है।

आजादी के बाद से अब तक हर चुनाव में गांवों का विकास और किसानों की बेहतरी राजनीतिक मुद्दा रहा है। वोट बैंक की राजनीति में किसान बड़े आधार रहे हैं। शायद यही वजह रही कि किसान संगठनों ने बीते चुनाव से ठीक पहले विपक्ष के लिए पिच तैयार करने की कोशिश की। इसका पंजाब और हरियाणा में असर भी दिखा। तीन कृषि कानूनों के खिलाफ शुरू हुए आंदोलन के बाद से ही भाजपा के लिए खेती-किसानी चिंता का विषय रही है। इस बार किसानों का बजट पिछली बार की तुलना में 27 हजार करोड़ बढ़ाकर एक लाख 52 हजार करोड़ कर दिया गया है। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और देश के चार सौ जिलों के छह करोड़ किसानों की जमीनों का रिकार्ड तैयार करने का फैसला ऐसा है, जिसे अगर ईमानदारी से लागू कर दिया गया तो किसानों की स्थिति बदलने में बड़ी मदद मिलेगी। गांवों की बड़ी समस्या जमीनी विवाद हैं। जमीनों का रिकार्ड तैयार होने के बाद ये विवाद भी थमेंगे। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिला तो रासायनिक खादों और बीजों पर होने वाला खर्च कम होगा, सिंचाई खर्च भी बचेगा। उत्पाद बाजार में महंगी कीमत पर बिकेगा, जिसका फायदा आखिर में किसानों को मिलेगा। इसके साथ ही खेती, खासकर सब्जी और फलों की खेती में कारपोरेट और आधुनिकता को बढ़ावा देने के लिए खेती से जुड़े उपकरणों के आयात पर पांच प्रतिशत की छूट दी गई है। इन प्रविधानों के जरिये किसानों को लुभाने की भी कोशिश की गई है।

वास्तव में, भाजपा के अल्पमत में आने के बाद भी मोदी सरकार के कामकाज के तरीके में कोई बदलाव नहीं दिख रहा है। अतीत के दो कार्यकाल की तरह इस बार भी सरकार की छवि दबंग जैसी ही है। जिस तरह उसने बजट प्रस्तावों के जरिये विपक्ष को जवाब दिया है, उसे लेकर कहा जा सकता है कि नई परिस्थिति में सरकार नई चाल भी चल रही है और अपने सियासी मकसद को हासिल करने की कोशिश भी कर रही है। सरकार ने कांग्रेस के न्याय पत्र की कापी की हो या नहीं, लेकिन यह तय है कि उसी के हथियार से उसी को मात देने की कोशिश अवश्य की है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

बुद्धिमत्ता

मानव जीवन को सार्थक बनाने में बुद्धिमत्ता की बड़ी महत्ता है। वैसे तो बुद्धिमत्ता को किसी पारिभाषिक दायरे में समेटना पूर्णतः संभव नहीं, किंतु सामान्य रूप से व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता ही बुद्धिमत्ता कहलाती है। बुद्धिमत्ता से ही विवेक की क्षमता प्राप्त होती है। जो व्यक्ति अपनी परिस्थितियों के माध्यम से सीखने, समझने, तर्क करने और उसे अपने व्यावहारिक जीवन में उपयोग करने की क्षमता रखता है, उसे बुद्धिमान की श्रेणी में रखा जाता है। बायरन पल्सिफर ने कहा है, 'बहुत से लोग समृद्धि को केवल धन से जोड़ते हैं और भूल जाते हैं कि सच्ची समृद्धि बुद्धि की होती है।'

बुद्धिमत्ता हासिल करने के लिए हम सिर्फ किताबों पर आश्रित नहीं रह सकते हैं। बुद्धिमत्ता का विकास हमारे अध्ययन के साथ ही अर्जित एवं व्यावहारिक अनुभवों के मिश्रण से होता है। अनुभव एवं कौशल दो ऐसी सीढ़ी हैं, जिसके सहारे हम अपने व्यक्तित्व में बुद्धिमत्ता को बढ़ाकर और निखार ला सकते हैं। यही अनुभव और ज्ञान हमें जीवन की विपरीत परिस्थितियों में चुनौतियों से पार पाने में सहायक बनता है। बुद्धि जीवन के अनुभव का मिश्रण है, जिसमें विनम्रता एक महत्वपूर्ण अवयव है। बुद्धिमान व्यक्ति में संवेदनशीलता का भी समावेश होता है और वह केवल यह ध्यान में नहीं रखता कि उसके लिए क्या उपयुक्त क्या होगा, बल्कि वह उसका भी उतना ही ध्यान रखता है कि अन्य लोगों के लिए क्या हितकारी है।

संप्रति, वैज्ञानिक युग में जीवन को सफल और सरल बनाने के लिए किसी भी प्रकार के उपायों का सहारा लेने से भी कोई संकोच नहीं किया जा रहा है। ऐसे उपायों से तात्कालिक सफलता मिल सकती है, किंतु बुद्धिमत्ता से उपजा विवेक सदैव ऐसी सफलता को कचोटता रहेगा। बुद्धिमत्ता ही अंतरात्मा से संवाद में सेतु की भूमिका निभाती है। चूंकि ज्ञान, बुद्धि, कौशल, तर्क और अनुभव से ही हमारी बुद्धिमत्ता बढ़ती है तो हमें सदैव इन तत्वों को प्रखर करते रहना चाहिए।

नृपेंद्र अभिषेक नृप

पाठकनामा

pathaknama@pat.jagran.com

नकारात्मक राजनीति से बचें

'लेफ्ट-लिबरल समूह का नफरती अभियान' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में बलबीर पुंज ने लिखा है कि 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद से विश्व भर में इस वर्ग का उदय तेजी से हुआ है और ये लोग वामपंथ के सिद्धांतों की व्यावहारिक उपादेयता के खत्म होने से खीझे हुए हैं। नतीजतन वे छद्म रूप धारण कर उदारवाद का सहारा लेकर जनकल्याण की भावना को नकार रहे हैं। वे ऐसे तत्वों को बढ़ावा देने की कोशिश में लगे रहते हैं, जो लोकतंत्र को कमजोर करने पर आमादा हैं। विभिन्न उदाहरणों के जरिये लेखक ने ऐसे तत्वों पर प्रहार करते हुए देशवासियों को उनसे सतर्क रहने की नसीहत दी है। दुखद है कि कांग्रेस जैसी पार्टी में भी ऐसे तत्व सक्रिय हैं, जबकि इंदिरा गांधी, राजीव गांधी एवं पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह जैसे कांग्रेस नेता आतंकी हिंसा के शिकार हुए। तब विपक्ष में रही भाजपा ने इन मामलों को कांग्रेस की साजिश नहीं बताया था। ऐसी नकारात्मक राजनीति से बचा जाना चाहिए, लेकिन लगता नहीं कि कांग्रेस ऐसा कर पाएगी। उसके सांसद चरणजीत सिंह चन्नी बीते दिनों संसद में खालिस्तान के एक समर्थक की पुरजोर पैरवी करते दिखे। हालांकि पार्टी ने उनके बयान से किनारा तो कर लिया, लेकिन उन पर कोई कार्रवाई नहीं की।

मुकेश मनन, पटना

कारगिल के समान दूसरा युद्ध नहीं

26 जुलाई 1999 में कारगिल की चोटी पर विजय प्राप्त करने के उपरांत प्रतिवर्ष उस दिन को कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिवस भारतीय सेना के पराक्रम की कभी न भूलने वाली विजय गाथा है। विश्व के इतिहास में अनेक युद्ध का वर्णन है, लेकिन कारगिल युद्ध के समान दूसरा कोई युद्ध नहीं है। भारतीय सेना ने असीम विपरीत परिस्थितियों में चोटियों पर छिपे हुए दुश्मनों पर अद्भुत वीरता की मिसाल प्रस्तुत करते हुए जीत हासिल की। दुश्मन 14229 फीट की ऊंचाई पर छिपा हुआ था, फिर भी भारतीय जवानों ने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए। यह युद्ध भारतीय सेना की बहादुरी, शौर्य, धैर्य, हिम्मत और हार न मानने के हौसले के लिए हमेशा याद किया जाएगा। भारतीय सेना ने जो अदम्य साहस का परिचय दिया, उसकी जितनी भी सराहना की जाए कम है। दुनिया में शायद ही ऐसा कोई युद्ध लड़ा गया हो, जिसमें दुश्मन इतनी ऊंचाई पर था और नीचे से हमारी सेना ने जाकर उन्हें मारकर कब्जा जमाया। कारगिल के बलिदानियों की वजह से आज सीमाएं सुरक्षित हैं।

ई हिमांशु शेखर, केसपा, गया

अद्भुत समन्वयक नीतीश

निश्छल व्यक्ति बेबाक प्रकृति का होता है, बिना लाग लपेट के अपनी बात कह देता है। ऐसे ही हैं नीतीश कुमार। सात बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ ले चुके हैं। 19 वर्ष से लगभग निरंतर शासन कर रहे हैं। इतने लंबे शासनकाल में भी उन पर भ्रष्टाचार का एक भी आरोप नहीं लग सका। पूरे देश में राजनीति परिवारवाद से ग्रस्त है, नीतीश इससे भी अछूते हैं। विभिन्न दलों से सामंजस्य बिठाकर शासन चलाने की उनकी क्षमता अद्भुत है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण वह बिहार के लिए इस बार के केंद्रीय बजट में 60,000 करोड़ रुपये पाने में सफल रहे।

धर्मेन्द्र नाथ रस्तोगी, दुर्गादेवी मंदिर मार्ग, चौक, पटना

अपराधी घोषित करने की साजिश

'लेफ्ट-लिबरल समूह का नफरती अभियान' शीर्षक आलेख में बलबीर पुंज ने भारत सहित पूरी दुनिया को लेफ्ट-लिबरल समूह के नफरती अभियान से सतर्क रहने का आह्वान किया है। इस समूह की मुख्य साजिश यह है कि हिंसा-घृणा के वास्तविक पीड़ितों को ही अपराधी घोषित कर दिया जाए। यह काम टूलकिट के माध्यम से कराया जाता है। इस टूलकिट का दंश भारत, अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैंड आदि देश झेल रहे हैं। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में जो भी आंदोलन होते हैं, चाहे वो 'ब्लैक लाइव्स मैटर' हो, अमेरिका का 'एंटी-लाकडाउन प्रोटेस्ट' हो, पर्यावरण से जुड़ा 'क्लाइमेट स्ट्राइक कैंपेन' हो या फिर कोई दूसरा आंदोलन, सभी जगह आंदोलन से जुड़े लोग कुछ 'एक्शन प्वाइंट्स' तैयार करते हैं, यानी कुछ ऐसी चीजें प्लान करते हैं, जो आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए की जा सकती हैं। इसे तैयार करने में लेफ्ट-लिबरल समूह का दिमाग होता है। दिल्ली पुलिस का कहना है कि लगभग 300 इंटरनेट मीडिया हैंडल ऐसे पाए गए हैं, जिनका इस्तेमाल घृणित और निंदनीय कंटेंट फैलाने के लिए किया जा रहा था। कुछ वेस्टर्न इंटरेस्ट आर्गनाइजेशन इनका इस्तेमाल कर रहे थे। ये किसान आंदोलन के नाम पर भारत सरकार के विरुद्ध गलत प्रचार कर रहे थे। भारत सरकार के एक मंत्री ने इसे विदेशी साज़िश बताया है। टूलकिट का मामला गंभीर है। इससे स्पष्ट है कि कुछ विदेशी ताकतें भारत को बदनाम करने की साज़िश कर रही हैं।

युगल किशोर राही, छपरा, बिहार

पोस्ट

जब आर्थिक मामलों की बात आती है तो लगभग सभी पार्टियां थोड़ा वामपंथी राह अपना लेती हैं।

कमलेश सिंह@kamleshksingh

भारत को तोड़ने की मांग करने वाले अमृतपाल की चरणजीत सिंह चन्नी ने संसद में जिस प्रकार से पुरजोर पैरवी की, उसे कांग्रेस पार्टी उनकी निजी राय कहकर कैसे किनारा कर सकती है। यह शर्मनाक अपराध है। भिंडरांवाले का वजूद इसी तरह बना था।

आलोक मेहता@alokmehtaeditor

बार-बार यह याद दिलाया जाता है कि भाजपा अयोध्या में चुनाव हार गई, जबकि लोकसभा सीट तो फैजाबाद है। असल में अयोध्या का इस संदर्भ में इस्तेमाल केवल हिंदुओं को नीचा दिखाने के लिए किया जाता है।

सुशांत झा@jhasushant

पेरिस ओलिंपिक का आगाज हो गया है, लेकिन भारत में अभी भी टी-20 चैंपियन बनने की खुमारी छाई हुई है। क्रिकेट खेल से बढ़कर जुनून बने तो ठीक है, मगर लत बन जाए तो अन्य खेलों के लिए हानिकारक होता है। हम पदक तो खूब जीतना चाहते हैं, मगर मोहब्बत एवं धन दौलत क्रिकेट को देते हैं। पदक पाने हैं तो सोच बदलना होगा।

सुशील दोशी@RealSushilDoshi

जनपथ

संजय भाई आपसे सहमत सारा देश,
होना चहिए जेल हित बजट अलग से पेश।
बजट अलग से पेश वहाँ हों सब सुविधाएं,
ताकी नेता बैठ वहीं से देश चलाएं!
वो क्या जाने दर्द न जिसके फटी बिवाई,
खुद आए हैं झेल दर्द वो संजय भाई!!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व.पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त

जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प. बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073

E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 25 अंक 106

****

कल्पमेधा

जब बोलना चाहिए उस वक्त चुप रहना घातक हो सकता है, जबकि जब चुप रहना चाहिए, उस वक्त बोलना फिजूल है।

– कन्फ्यूशियस

खनिज पर हक

केंद्र और राज्यों के बीच करों के बंटवारे को लेकर कई बार विवाद उठ चुके हैं। केंद्रीय कर प्रणाली जीएसटी लागू होने के बाद भी कुछ चीजों पर करों और उपकरों के बंटवारे को लेकर सवाल उठते रहे हैं। खनिजों के स्वामित्व का प्रश्न भी उनमें एक है। केंद्र सरकार ने खनिजों पर कर और उपकर लगाना शुरू किया, तो कुछ कंपनियों और राज्य सरकारों ने इस पर सवाल उठाए। आखिरकार सर्वोच्च न्यायालय ने अब स्पष्ट कर दिया है खनिजों पर राज्य सरकारों का हक होता है। वे उनका पट्टा देने को स्वतंत्र हैं। इसके लिए किए गए करार की एवज में वे जो शुल्क प्राप्त करती हैं, उसे कर नहीं कहा जा सकता। वह रायल्टी की श्रेणी में आता है। रायल्टी को कर नहीं कहा जा सकता। इस फैसले से खासकर ओड़ीशा और झारखंड को बड़ी राहत मिली है। हालांकि करीब पैंतीस वर्ष पहले भी एक सीमेंट कंपनी ने सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष यह मामला उठाया था कि केंद्र सरकार उससे उपकर नहीं वसूल सकती। तब अदालत ने कहा था कि खनिजों पर कर लगाने का अधिकार केंद्र सरकार को है। मगर दूसरे मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने करीब बीस वर्ष पहले उस फैसले को पलटते हुए कहा कि पुराना फैसला छापे की गलती से भ्रामक हो गया था। केंद्र को खनिजों पर कर लगाने का अधिकार नहीं है।

अब नौ न्यायाधीशों की पीठ ने इस मामले पर बहुमत से फैसला दिया है कि खनिजों पर राज्य सरकारों का अधिकार है। दरअसल, यह मामला इसलिए उलझा हुआ था कि संविधान में केंद्र को खदानों के आबंटन से संबंधित सीमाएं तय करने का अधिकार केंद्र सरकार को दिया गया है। मगर जमीन, भवन आदि पर शुल्क लगाने का अधिकार राज्य सरकारों को है। इसलिए केंद्र सरकार खनिजों पर कर लगाने लगी थी। अब सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया है कि खनिज राज्य सरकार की संपदा हैं, इसलिए वह उसके पट्टे की कीमत तय कर सकती है। अगर खनिजों पर भी केंद्र सरकार कर वसूलने लगेगी, तो राज्यों को अपनी विकास परियोजनाओं के लिए धन जुटाना मुश्किल हो जाएगा। इस फैसले के बाद राज्य सरकारें केंद्र द्वारा वसूला गया कर वापस दिलाने की गुहार लगा रही हैं। हालांकि इसका निपटारा किस प्रकार होगा, देखने की बात है।

राज्य सरकारों में अक्सर इस बात को लेकर असंतोष देखा जाता है कि केंद्र को जिस अनुपात में उनसे राजस्व प्राप्त होता है, उस अनुपात में उन्हें बजटीय आबंटन नहीं मिलता। जबसे जीएसटी लागू हुआ है, राज्यों में अपने हिस्से का राजस्व प्राप्त करने के लिए संघर्ष उभरता रहा है। इस तरह कई राज्यों में विकास परियोजनाएं ठहर जाती हैं। जाहिर है, सर्वोच्च न्यायालय के ताजा फैसले के बाद उन राज्यों को अपना राजस्व जुटाने में काफी मदद मिलेगी, जहां खनिज पदार्थों की बहुलता है। ओड़ीशा, मध्यप्रदेश, झारखंड आदि राज्यों में कोयला, सीमेंट, लौह अयस्क, पेट्रोलियम आदि पदार्थों की खदानें हैं, मगर वे उनका पूरा लाभ नहीं ले पातीं, क्योंकि उन पर अभी तक केंद्र सरकार भी अपना हक जताती आ रही थी। यह ठीक है कि राज्यों से प्राप्त राजस्व से ही केंद्र सरकार पूरे देश की विकास परियोजनाओं में संतुलन कायम करती है, मगर उनकी आय के निजी स्रोत नहीं होंगे, तो वे केंद्र के सामने हर वक्त याचक की मुद्रा में ही होंगी। इसलिए खनिज संपन्न राज्यों में कुछ बेहतरी की उम्मीद जगी है। मगर केंद्र को खनिजों के मनमाने दोहन पर नजर तो रखनी ही होगी।

जानलेवा रफ्तार

सड़क हादसों में ज्यादातर की वजह कुछ वाहन चालकों की ऐसी लापरवाही होती है, जिसमें इस बात का खयाल रखना जरूरी नहीं समझा जाता कि अन्य व्यक्ति के जीवन का भी कोई मोल है। यह सही है कि बहुत सारे लोग सड़क पर सावधानी और जिम्मेदारी से वाहन चलाते हैं और इस तरह वे सड़क पर सफर कर रहे अन्य लोगों के साथ-साथ अपनी जिंदगी की भी सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। मगर ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है, जो शायद यह मान कर चलते हैं कि उनके लिए दूसरों के जीवन की कोई अहमियत नहीं है। दिल्ली से सटे नोएडा में बुधवार की रात तीन लोग सड़क के किनारे सो रहे थे, तब एक वाहन चालक उन तीनों को बुरी तरह कुचल कर फरार हो गया। उनमें से दो की मौत हो गई, तीसरा बुरी तरह घायल हो गया। इतना तय है कि हादसे के शिकार लोगों के पास शायद फिलहाल वही ठिकाना था और वे सड़क किनारे की किसी जगह को सुरक्षित मान कर वहां सो रहे थे। अगर किसी बेलगाम वाहन ने उन्हें कुचल डाला, तो इसे चालक की आपराधिक लापरवाही ही कहा जाना चाहिए।

निश्चित रूप से सड़कों के किनारे आसपास की जगहें सोने के लिए नहीं होती हैं और वहां हमेशा जोखिम बना रहता है। मगर एक समस्या यह है कि महानगरों में रोजी-रोटी की तलाश में आए किसी व्यक्ति के पास अगर पैसे का अभाव या किसी मजबूरी की वजह से रहने का ठिकाना नहीं है, तो उसे कई बार सड़कों के किनारे या फुटपाथों पर सोना पड़ जाता है। सरकार की ओर से घोषित तौर पर रैन बसेरे जैसी व्यवस्था है, लेकिन या तो वह बेघर लोगों की संख्या के लिहाज से अपर्याप्त है या फिर इस कदर कुव्यवस्था का शिकार है कि वहां ज्यादातर लोग नहीं जाना चाहते। अक्सर ऐसे हादसों की खबरें आती रहती हैं, जिनमें किसी वाहन चालक की लापरवाही की वजह से फुटपाथ पर सो रहे लोगों की कुचल कर मौत हो गई। यह समझना मुश्किल है कि इस तरह वाहन चला रहे किसी व्यक्ति को कितनी हड़बड़ी और कैसी बेफिक्री होती है कि उसे सड़क पर मौजूद अन्य लोगों की जिंदगी और हालात की अहमियत समझना जरूरी नहीं लगता।

खेती में मुनाफे की नई पहल

दुनिया में वैज्ञानिक तथा तकनीक पद्धति से खेती करना समझदारी और लाभकर समझा जाता है। इसी के जरिए केंद्र सरकार की नई पहल होगी, जिसमें किसानों को कृषि तकनीकों और वैज्ञानिक विधियों से परिचित कराना और उन्हें अधिक मुनाफा दिलाना है।

अखिलेश आर्येंदु

एक बार फिर केंद्र सरकार किसानों की माली हालात सुधारने की पहल करती दिख रही है। सरकारी तौर पर कहा जा रहा है कि किसानों को किसानी के जरिए ही अब उद्यमी बनाया जाएगा, इससे किसानों की माली हालात में सुधार होगा। आमतौर पर भारतीय खेती को परंपरा से की जाने वाली देसी खेती माना जाता है। मगर यह महज मान्यता है, क्योंकि देसी खेती में रसायनों, रासायनिक उर्वरकों और विदेशी बीज का इस्तेमाल नहीं होता। नई तकनीक तथा वैज्ञानिक ढंग से की जाने वाली खेती में रसायनों और महंगे उर्वरकों का इस्तेमाल उत्पादन बढ़ाने के लिए किया जाता है। केंद्र सरकार की नई पहल आधुनिक खेती के जरिए किसानों को उद्यमी बनाने की है।

दुनिया में वैज्ञानिक तथा तकनीक पद्धति से खेती करना समझदारी और लाभकर समझा जाता है। इसी के जरिए केंद्र सरकार की नई पहल होगी, जिसमें किसानों को कृषि तकनीकों और वैज्ञानिक विधियों से परिचित कराना और उन्हें अधिक मुनाफा दिलाना है। इसके बाबत देश के हर जिले में ऐसी टीम बनाई जाएगी, जिसमें खेती से ताल्लुक रखने वाले सभी क्षेत्रों के लोग होंगे। केंद्र सरकार के जरिए मुहैया कराई गई सूचना या जानकारी के मुताबिक बनाई जाने वाली टीम में किसानों के अलावा कृषि वैज्ञानिक, कारखानों के विशेषज्ञ, कृषि विभाग और प्रशासन के अधिकारियों को शामिल किया जाना है। इसके अलावा, किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) कृषि सखी, ड्रोन दीदी और स्वयं सहायता समूह में बेहतर कार्य करने वाले किसानों और महिलाओं को भी इससे जोड़ने की बात कही गई है।

केंद्र सरकार की इस पहल में राज्य सरकार और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) के आधीन आने वाले सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक मिलकर काम करेंगे। फिलहाल देश में 731 कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) हैं। इन केंद्रों पर कार्यरत कृषि वैज्ञानिकों की मदद से किसानों को उद्यमी बनाने और फसलों को बर्बाद होने से बचाने का खाका तैयार किया जा रहा है। अगर केंद्र सरकार की यह योजना कारगर हुई, तो इससे उन करोड़ों किसानों को फायदा हो सकता है, जो खेती को घाटे का सौदा बताकर छोड़ चुके या बदहाली की जिंदगी गुजार रहे हैं।

अभी किसान अपने उत्पाद को औने-पौने दाम पर बेचने को मजबूर रहते हैं। इस पहल के मुताबिक हर जिले में टीम के गठन से पिछले आंकड़ों का अध्ययन कर फसल का जनपद में मांग और खपत का पता करना आसान हो सकता है। जानकारी के मुताबिक टीम के जरिए यह पता किया जाएगा कि आगामी सीजन में किस फसल की कितनी बुवाई करनी चाहिए और किस किस्म की फसल लेना बेहतर होगा। किसानों को अभी तक बाजार की जरूरत के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पाती थी। इस टीम के जरिए किसानों तक यह बात पहुंचाई जाएगी कि किस फसल को उगाने से फायदा होगा और किससे नुकसान। इतना ही नहीं, फसल तैयार होने के बाद जिले भर की खपत के बाद जो अन्न या उत्पाद बच जाएगा, उसमें से बढ़िया उत्पाद को निर्यात या बीज के

रूप में इस्तेमाल के लिए सुनिश्चित किया जा सकेगा। ऐसे किसानों का चयन टीम करेगी, जो बेहतर उत्पाद और जलवायु परिवर्तन के अनुरूप खेती कर दूसरे किसानों के लिए नजीर बन सकते हैं।

केंद्र सरकार ने पिछले शासन के दौरान किसानों के लिए कई

तजुर्बेकारों का कहना है कि केंद्र सरकार अगर राज्य सरकारों के साथ मिलकर रासायनिक खेती मुक्त भारत का अभियान चलाए तो जलवायु परिवर्तन, बढ़ती बीमारियों, प्रदूषणों तथा अन्य समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है। इसलिए किसानों को उद्यमी बनाने का बेहतर तरीका अपनाया जाना चाहिए। किसानों को जलवायु अनुकूल खेती, जिसे प्राकृतिक या जैविक खेती कहा जा रहा है, अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है। इससे उर्वरकों, बीजों और छिड़काव करने वाले यंत्रों पर दी जाने वाली अरबों रुपए की सबसिडी की बचत होगी और देश की सेहत सुधारने में मदद मिलेगी।

योजनाएं चलाई थीं, जिनमें पशुपालन, मधुमक्खी, मछली पालन, सुअर पालन जैसी व्यावसायिक योजनाएं शामिल हैं। गौरतलब है कि केंद्र सरकार और राज्य सरकारों की तमाम योजनाएं किसानों के लिए चलाई जा रही हैं, वे किसानों के लिए बहुत मुफीद नहीं हो पा रही हैं। उसकी पहली वजह पानी के कमी है। देश में सिंचाई की समस्या आज भी बहुत बड़ी है। जिन इलाकों में नहरों के जरिए सिंचाई होती है वहां खेती के समय नहर में पानी न आना बहुत बड़ी समस्या है। इसका सीधा असर फसल के उत्पादन पर पड़ता है। इसी तरह उत्तम किस्म के बीजों की अनुपलब्धता, मेड़बंदी और वर्षा जल का संरक्षण न होने की वजह से अपेक्षित परिणाम नहीं आ पाए।

तजुर्बेकारों का कहना है कि केंद्र सरकार अगर राज्य सरकारों के साथ मिलकर रासायनिक खेती मुक्त भारत का अभियान चलाए तो जलवायु परिवर्तन, बढ़ती बीमारियों, प्रदूषणों तथा अन्य समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है। इसलिए किसानों को उद्यमी बनाने का बेहतर तरीका अपनाया जाना चाहिए। किसानों को जलवायु अनुकूल खेती, जिसे प्राकृतिक या जैविक खेती कहा जा रहा है, अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है। इससे उर्वरकों, बीजों और छिड़काव करने वाले यंत्रों पर दी जाने वाली अरबों रुपए की सबसिडी की बचत होगी और देश की सेहत सुधारने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, गांवों की गरीबी दूर होगी, भुखमरी, कुपोषण, अशिक्षा, बेरोजगारी और पलायन जैसी समस्याओं से धीरे-धीरे छुटकारा मिलने लगेगा।

भारत उर्वरक उत्पादन में दुनिया के शीर्ष दस देशों में शामिल है। निर्यात के नजरिए से उर्वरकों का उत्पादन लगातार बढ़ाया जाना चाहिए, लेकिन भारतीय खेती के लिए यह घाटे का सौदा है। जाहिर तौर पर केंद्र सरकार के जरिए उर्वरकों पर छूट के बावजूद किसानों के लिए यह घाटे का सौदा है। इससे उपजाऊ जमीन और वायुमंडल पर जो विपरीत असर पड़ता है, उसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। केंद्र सरकार की यह नई पहल तभी कारगर हो सकेगी जब फसल के लिए लागत कम से कम हो। बाजार को समझना और उसके अनुकूल फसल बोने को निश्चित करना ठीक है, लेकिन लागत में कमी करके किसानों का ज्यादा भला किया जा सकता है।

गौरतलब है कि वित्तवर्ष 2022-23 में 123 अरब भारतीय रुपए से अधिक मूल्य के उर्वरकों का आयात किया गया। केंद्र सरकार की नई पहल को कारगर बनाने के लिए जरूरी है कि गांवों से पलायन रोका जाए। जाहिर तौर पर पलायन रोकने में रासायनिक खेती कारगर नहीं रही है। इसलिए रासायनिक खेती की उपयोगिता और प्रासंगिकता पर भी गौर करने की जरूरत है। नाममात्र की लागत में अधिक उत्पादन और जलवायु परिवर्तन के असर को कम करने में प्राकृतिक खेती ही सबसे ज्यादा फायदेमंद और उपयोगी है, इस हकीकत को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

इस वक्त जो खेती की जा रही है उससे किसानों को फायदा नहीं मिलता और न यह सेहत के लिए ही मुफीद मानी जाती है। इसमें लागत बहुत ज्यादा और उत्पादन बहुत कम है। जरूरी है कि कम लागत में बेहतर उत्पाद देने वाली प्राकृतिक खेती को हर तरह से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जिस तरह कारखानों के घाटे की भरपाई सरकार करती है, इसी तरह किसानों की खेती में घाटा होने पर भरपाई की जानी चाहिए। एमएस स्वामीनाथन की न्यूनतम समर्थन मूल्य संबंधी सिफारशें हूबहू लागू होनी चाहिए। इससे देश का किसान ही खुशहाल नहीं होगा, बल्कि समाज से भी अनेक तरह की समस्याओं, दुश्वारियों और बीमारियों से छुटकारा मिल सकता है।

पूर्वाग्रहों की जंजीरें

खुशी श्रीवास्तव

हमारी दुनिया में पूर्वाग्रहों का जाल इतनी बारीकी से बुना हुआ है कि हममें से अधिकतर लोग इसके प्रभाव से अनजान रहते हैं। यह जाल हमारे जीवन में सोचने, समझने और प्रतिक्रिया देने के ढंग को आकार देता है। पूर्वाग्रह का अर्थ है किसी भी व्यक्ति, वस्तु, समूह या स्थिति के प्रति पहले से बनी हुई मानसिक धारणा, जो अक्सर बिना किसी साक्ष्य के होती है, यह हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहरा असर डालती है। पूर्वाग्रहों का उद्भव अक्सर हमारे सांस्कृतिक, पारिवारिक, और सामाजिक अनुभवों से होता है। उदाहरण के लिए, किसी विशेष वस्तु, जाति, व्यक्ति या समुदाय के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण का विकास बचपन में सुनी या देखी गई कहानियों, अनुभवों और सामाजिक मान्यताओं से हो सकता है। यह पूर्वाग्रह किसी विषय के बारे में तथ्यों के स्थान पर भावनाओं और धारणाओं पर आधारित होता है। इसके विकास में तर्क और विवेक का कोई विशेष महत्त्व नहीं होता। आमतौर पर व्यक्ति पूर्वाग्रहों को अपने परिवार या निकट संबंधी रहे लोगों की राय के अनुकरण के आधार पर सीखता है। इनको वह अक्सर अपने व्यवहार का अंग इसलिए बना लेता है कि उसके निकट के लोग इस प्रकार की धारणाएं रखते हैं। जाहिर है, इस तरह की धारणाओं के निर्माण में विवेक आधारित विचार की जगह नहीं होती। इन पूर्वाग्रहों का आधार समय के साथ इतना गहरा हो जाता है कि व्यक्ति उसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन स्वीकार नहीं करता।

दुनिया मेरे आगे

इस तरह पूर्वाग्रहों के प्रभाव बहुआयामी होते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर यह हमारे निर्णय लेने और सोचने-समझने की क्षमता पर अतिक्रमण कर लेता है, जिससे हम अपने ही हितों के विरुद्ध निर्णय ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक कार्यस्थल पर महिला कर्मचारियों के प्रति पूर्वाग्रह उन्हें महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं में पदोन्नति देने से रोक सकता है, चाहे उनके पास आवश्यक योग्यता और अनुभव हो। सामाजिक स्तर पर यह असमानता और विभाजन को बढ़ावा देता है, जो समाज की प्रगति को बाधित करता है। आधुनिक जीवन में बढ़ रहे नए-नए संचार माध्यम भी पूर्वाग्रहों के प्रसार और पोषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है। फिल्मों और प्रचार माध्यमों में अक्सर ऐसी छवियां और कथाएं प्रस्तुत की जाती हैं जो किसी विशेष समूह, व्यक्ति और विषय के प्रति हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं।

आज जिसे सोशल मीडिया कहा जाता है, वैसे डिजिटल मंचों के आगमन ने इस समस्या को और अधिक जटिल बना दिया है। अब हमारे पास ऐसे तंत्र हैं, जो हमारे पूर्वाग्रहों को सुदृढ़ करने वाली सामग्री को प्राथमिकता देते हैं, जिससे हम और भी गहराई से पूर्वाग्रह में फंस जाते हैं। यह न केवल व्यक्तिगत सोच को प्रभावित करता है, बल्कि सामूहिक विचारधारा को भी विकृत करता है। वर्तमान समय में पूर्वाग्रह, पक्षपात और पूर्वधारणाएं समाज के विभिन्न वर्गों और व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डाल रहे हैं।

जब किसी व्यक्ति के खिलाफ पूर्वाग्रह या पक्षपात किया जाता है, तो उसे अपने आत्मसम्मान और आत्मविश्वास में कमी महसूस होती है। इससे उसकी मानसिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लगातार पूर्वाग्रह और पक्षपात का सामना करने से व्यक्ति में चिंता और अवसाद जैसी मानसिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। यह उसे अपने जीवन में नकारात्मक सोच और उदासी की ओर धकेल सकती हैं। अक्सर व्यक्ति की छोटी से बड़ी मानसिक समस्याओं का कारण उसकी ही धारणाओं और पूर्वाग्रहों में छिपा होता है जिनसे वह अनजान होता है।

सही शिक्षा पूर्वाग्रहों को चुनौती देने और उनसे मुक्त होने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। जब हम विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और परंपराओं के बारे में विस्तार से सीखते हैं, तो हम अपने पूर्वाग्रहों को समझने और उन पर सवाल उठाने की क्षमता विकसित कर पाते हैं। ऐसी समावेशी शिक्षा प्रणाली, जो विविधता का सम्मान करती है और विभिन्न दृष्टिकोणों को महत्त्व देती है, हमें पूर्वाग्रहों के जाल से बाहर निकलने में मदद कर सकती है। इसके अलावा, चिंतन और आत्म-जागरूकता का विकास हमें हमारे अपने पूर्वाग्रहों को पहचानने और उन्हें दूर करने की दिशा में कदम बढ़ाने में सक्षम बनाता है।

संवाद, सहानुभूति और सम्मान का अभ्यास समाज को पूर्वाग्रहों के जाल से मुक्त कर सकता है। समाज के विभिन्न संस्थानों का भी यह दायित्व है कि वे पूर्वाग्रहों को कम करने के प्रयास करें। पूर्वाग्रहों का जाल अत्यंत व्यापक है, जो हमारी सोच, व्यवहार और सामाजिक संरचना को प्रभावित करता है।

यह न केवल हमारे व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि एक न्यायसंगत और समतावादी समाज के निर्माण के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। पूर्वाग्रहों का मुकाबला करने के लिए सबसे पहले हमें आत्म-जागरूकता की आवश्यकता है। हमें यह पहचानने की जरूरत है कि हमारे पास भी पूर्वाग्रह हो सकते हैं और उन्हें स्वीकार करना ही उनके प्रभाव को कम करने का पहला कदम है। इसके लिए हमें अपने दृष्टिकोण और व्यवहार की नियमित समीक्षा करनी चाहिए और उनके पीछे के कारणों की जांच करनी चाहिए। हमें दूसरों के अनुभवों और दृष्टिकोणों को समझने का प्रयास करना चाहिए।

संवाद, सहानुभूति और सम्मान का अभ्यास हमारे समाज को पूर्वाग्रहों के जाल से मुक्त कर सकता है। समाज के विभिन्न संस्थानों का भी यह दायित्व है कि वे पूर्वाग्रहों को कम करने के प्रयास करें। पूर्वाग्रहों का जाल अत्यंत व्यापक है, जो हमारी सोच, व्यवहार और सामाजिक संरचना को प्रभावित करता है। इसे तोड़ने के लिए हमें व्यक्तिगत, सामाजिक और संस्थागत स्तर पर निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है। इस दिशा में उठाए गए हर छोटे कदम का प्रभाव व्यापक हो सकता है, जिससे हम एक अधिक न्यायपूर्ण और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

ओलंपिक से आस

खेलों का महाकुंभ ओलंपिक फ्रांस की राजधानी पेरिस में शुरू हो गया। इस बार विभिन्न खेलों में भारत के कुल 117 खिलाड़ी मैदान पर उतरेंगे। ओलंपिक के इतिहास में यह भारत की दूसरी सबसे बड़ी टीम है। इससे पहले 2020 के तोक्यो ओलंपिक में एक सौ उन्नीस खिलाड़ियों ने भारत का प्रतिनिधित्व किया था। गत ओलंपिक में भारत ने कुल सात पदक अपने नाम किए थे। इनमें एक स्वर्ण पदक, दो रजत पदक और चार कांस्य पदक शामिल थे। भाला फेंक में नीरज चोपड़ा ने स्वर्ण पदक जीत कर इतिहास रच दिया था। इनके अलावा, मीराबाई चानू ने भारोत्तोलन में और रवि कुमार दहिया ने कुश्ती में रजत पदक जीता था। महिलाओं की मुक्केबाजी में लवलिना, महिला बैडमिंटन में पीवी सिंधु और पुरुष हाकी में भारत को एक-एक कांस्य पदक प्राप्त हुआ था। उम्मीद है कि नीरज चोपड़ा की अगुआई में भारतीय ओलंपिक टीम इस बार पिछली बार की तुलना में अधिक पदक हासिल करके देश का मान बढ़ाएगी।

– अनित कुमार राय टिंकू, धनबाद

बदलता परिदृश्य

भारत आज दुनिया में न केवल अपनी सशक्त पहचान बना चुका है, बल्कि प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में भी उभर रहा है। विश्व के अनेक देश भारत में हो रहे सुधारों को बारीकी से देख रहे हैं। हाल ही में मैकेंजी एंड कंपनी के सीईओ बाब स्टर्नफेल्स ने अपने साक्षात्कार में कहा कि भारत परस्पर जुड़ी अर्थव्यवस्थाओं के नेटवर्क का केंद्र बन सकता है। यह विचार पश्चिमी देशों का भारत के प्रति बदलते नजरिए का उदाहरण है। हाल ही में बांग्लादेश द्वारा चीन के बजाय भारत के साथ किया तीस्ता नदी समझौता इसका एक उदाहरण है। अमेरिका भी भारत को एक रणनीतिक भागीदार के रूप में देखता है। यूरोपीय संघ भारत के साथ अपने व्यापार और निवेश संबंधों को मजबूत करने के लिए उत्सुक है। जापान भी भारत में बुनियादी ढांचे के विकास में निवेश करने में अपनी रुचि दिखा रहा है। घरेलू चुनौतियों के बावजूद भारत आने वाले वर्षों में वैश्विक मंच पर एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने को तैयार है।

– पुनीत अरोड़ा, मेरठ

कमजोर मानसून

विशेषज्ञों के मुताबिक, देश के कुछ राज्यों, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और अन्य राज्यों, में इस बार मानसून में अब तक बहुत कम बारिश हुई। इन राज्यों में लोग उमस भरी गर्मी से परेशान हैं। विचार करने और चिंता का विषय तो यह है कि पंजाब या अन्य राज्यों में मानसून आखिर क्यों कमजोर पड़ रहा है? कहीं इसका कारण वृक्षों पर चलती कुल्हाड़ी तो नहीं है? घटती हरियाली और बढ़ते कंक्रीट के जंगल बारिश कम होने के कारण तो नहीं हैं? कम बारिश बहुत बड़ी चिंता का विषय है, क्योंकि इससे देश के बहुत से हिस्से सूखे की चपेट में आ सकते हैं। इसका नकारात्मक असर फसलों पर भी पड़ेगा, खासतौर पर जहां कृषि बारिश पर ही निर्भर है। अगर देश में कृषि कम होगी तो इसका असर देश की जीडीपी और महंगाई पर भी जरूर पड़ेगा। यह स्थिति देश में रेगिस्तानों की संख्या बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभा सकता है।

– राजेश कुमार चौहान, जलंधर

भूजल की फिक्र

भूमिगत जल का अंधाधुंध दोहन होने के कारण जलस्तर तेजी से गिरता जा रहा है, जिसके कारण कुओं का पानी सूखना, जलापूर्ति की समस्या, सिंचाई की समस्या, जल की विषाक्तता, लवणीकरण और पम्पिंग सेट लगवाने की लागत बढ़ना जैसे गंभीर समस्या उत्पन्न हो रही है। आजादी के सत्तर साल बाद अगर आबादी के एक बड़े हिस्से को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं है तो यह चिंता का विषय है। वर्तमान परिवेश में बढ़ते शहरीकरण आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, कृषि मशीनीकरण और वैज्ञानिक प्रगति की वजह से भू-जल पर दवाब बढ़ता जा रहा है। वैज्ञानिकों को भूजल संरक्षण और अनुसंधान में नयापन पर जोर देने और विकसित तकनीक को आम जनता और किसानों तक पहुंचाने पर जोर देना चाहिए, ताकि लोग भूजल संसाधनों का प्रबंधन और प्रभावी संरक्षण कर सकें और भविष्य को इस संकट से बचा सकें।

– समराज चौहान, कार्बी आंग्लांग, असम

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

www.readwhere.com

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। –वाल्तेयर

राजस्थान पत्रिका
संस्थापक
कर्पूर चन्द्र कुलिश

सजगता रखनी होगी दवाइयों की जांच में

दवा कारोबार से जुड़ी यह जानकारी सचमुच चिंताजनक है कि भारत की सौ से अधिक कंपनियों के कफ सिरप गुणवत्ता की जांच में खारिज कर दिए गए हैं। बताया जा रहा है कि कुछ सिरप में डाइएथिलीन ग्लाइकोल (डीईजी) और एथिलीन ग्लाइकोल (ईजी) की मात्रा तय मानकों से इतनी ज्यादा थी कि वे जहरीले बन गए। दवा जब जहर बन जाए तो मरीजों पर क्या बीतती होगी इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। डीईजी और ईजी वे केमिकल हैं जो खांसी के सिरप में मिलाए जाते हैं। इनकी एक निश्चित मात्रा सिरप में मिलाने के लिए तय की गई है। ज्यादा मात्रा होने के कारण सिरप जहरीला हो जाता है, जिससे इसे इस्तेमाल करने वाले शख्स की मौत हो सकती है।

सेंट्रल ड्रग स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गेनाइजेशन (सीडीएससीओ) की रिपोर्ट के ये तथ्य तो और भी चिंताजनक हैं जिनमें कहा गया है कि गांबिया, उज्बेकिस्तान व कैमरून देशों में बच्चों की मौत के लिए जिम्मेदार बताई गई कफ सिरप में मौजूद टॉक्सिन इन फार्मा कंपनियों की कफ सिरप में भी मौजूद थे। हैरत की बात यह है कि फार्मा कंपनियों की इस लापरवाही का पहले किसी ने संज्ञान तक नहीं लिया। जहर बने ये कफ सिरप देश की धरती से बाहर भी पहुंच गए। जाहिर है जिन पर दवाओं को प्रमाणित करने की जिम्मेदारी थी उन्होंने अपने काम को ठीक ढंग से अंजाम नहीं दिया। दवा उद्योग को पहले ही संदेह की नजर से देखा जाता रहा है। पिछले दिनों ही एक रिपोर्ट आई थी जिसमें कहा गया था कि भारत में बने कफ सिरप से दो साल में दुनिया भर में 141 लोगों की मौत हो गई। इनमें अफ्रीकी देश गांबिया में मौत के मुंह में समाए 70 बच्चे भी शामिल हैं। ऐसी रिपोर्ट न केवल भारतीय दवा बाजार की बदनामी का कारण बनती हैं बल्कि दुनिया में भारत की छवि खराब भी करती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन तक ने भारत में बने कफ सिरप पर सवाल उठाए थे। सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि जो फार्मा कंपनियां विदेशों में भारत की छवि की परवाह नहीं कर रहीं, वे देश में किस तरह की दवाइयां तैयार कर रही होंगी?

सीडीएससीओ ने राज्यों के ड्रग कंट्रोल आयुक्तों को निर्यात के लिए बनने वाले कफ सिरप की जांच करते रहने को कहा है। लेकिन देश में बिकने वाले कफ सिरप के लिए कोई ठोस व्यवस्था नहीं की गई है। दवा कारोबार में जरा-सी भी हेराफेरी का खेल लोगों की जान का दुश्मन बन सकता है। ऐसे में न केवल कफ सिरप बल्कि सभी तरह की दवाओं के परीक्षण में किसी तरह की लापरवाही अक्षम्य ही कही जाएगी।

पुरुष भीतर सौम्य होता है अतः उसका मन संकल्पित नहीं रहता है। बुद्धि पर मन का आच्छादन होने से मन चंचल ही बना रहता है। यह उसके भीतर की निर्बलता का द्योतक है। स्त्री शरीर भीतर आग्नेय है। उसके मन का संकल्प दृढ़ होता है। बुद्धि में बृहस्पति और शुक्राचार्य की युति है।

प्रकृति-पुरुष ही क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ

गुलाब कोठारी
प्रधान संपादक
पत्रिका समूह
@patrika.com

शरीर ही ब्रह्माण्ड

शरीर तो मात्र दर्पण है। मन भाव प्रधान है, संवेदनशील एवं शीतल होता है। बुद्धि स्थितिपरक, कठोर एवं उष्ण होती है। पुरुष भीतर भावप्रधान है तथा स्त्री भीतर उष्ण है। उष्णता मिठास की शत्रु है। किन्तु पुरुष की भीतरी शक्ति भी यही है। अग्नि को सोम नहीं उपलब्ध हो तो शान्त हो जाएगा।

यूं तो कहने को शरीर स्त्री-पुरुष है, किन्तु यह बात इतनी सहज नहीं है। गीता कह रही है–

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः।। (13.2)
महाभूतान्यहङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः।। (13.6)
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं सङ्घातश्चेतनाधृतिः।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम्।। (13.7)

पंच महाभूत, अहंकार, बुद्धि, मूल प्रकृति, दस इन्द्रियां, मन, पांच इन्द्रियों के विषय, इच्छा, द्वेष, सुख-दुःख, स्थूल शरीर, चेतना और धृति। यह क्षेत्र कहलाता है। इसी का स्त्री-पुरुष भेद होता है। जीवात्मा क्षेत्रज्ञ कहलाता है।

प्रकृति-पुरुष ही क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ है। क्षेत्र ही करण है। कर्म करने का साधन है। प्रकृति है। क्षेत्रज्ञ भीतर रहने वाला आत्मा है, फल भोगने वाला है। प्रकृति कामना है, कर्म में प्रवृत्त करती है। कर्मानुसार योनियों में जन्म लेने का कारण बनती है। जन्म-कर्म-फल का सारा प्रपंच देह के माध्यम से दिखाई पड़ता है, किन्तु सूक्ष्म स्तर पर यह अग्नि-यम-आदित्य, आपः-वायु-सोम, प्रकृति, वर्ण (वीर्य) एवं कर्मफल के द्वारा घटित होता है। कामना में भी योग, भोग तथा रोग की प्रधानता रहती है।

प्रकृति-पुरुष को तात्त्विक रूप में जानना ही ज्ञान है। अध्यात्म के चार अंग हैं–शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा। इनमें से बुद्धि आग्नेयी व मन सौम्य है। पुरुष में आग्नेयी बुद्धि की प्रधानता रहती है तथा स्त्री में सौम्य मन की। प्रजा की उत्पत्ति में स्थूल-सूक्ष्म व कारण तीनों शरीर काम आते हैं। स्थूल दृष्टि से पुरुष एवं स्त्री क्रमशः आग्नेय व सौम्य हैं। सूक्ष्म स्तर पर ये ही क्रमशः शुक्र व शोणित रूप में सोम और अग्नि हैं। सूक्ष्मतम कारण स्तर पर शुक्र-सोम का आग्नेय वृषा प्राण तथा आग्नेय-शोणित का सौम्य योषा प्राण संयुक्त होते हैं। इस योषा-वृषा प्राण के मिथुन भाव से ही संतति उत्पन्न होती है। पुरुष भीतर सौम्य होता है अतः उसका मन संकल्पित नहीं रहता है। बुद्धि पर मन का आच्छादन होने से मन चंचल ही बना रहता है। पुरुष शरीर का बल (शक्ति) सोम (रेत-शुक्र) में निहित होता है। चंचल मन और बल में द्वन्द्व बना रहता है। एकाग्रता का अभाव परिलक्षित होता है। दो-तीन कार्य एक साथ नहीं कर सकता। मन को बार-बार संकल्पित करना पड़ता है। यह उसके भीतर की निर्बलता का द्योतक है।

स्त्री शरीर भीतर आग्नेय है। उसके मन का संकल्प दृढ़ होता है। बुद्धि में बृहस्पति और शुक्राचार्य की युति है। स्त्री-पुरुष का भीतरी विकास ही महत्त्वपूर्ण है। वही उसका ज्ञान भाग है। पुरुष का ज्ञान सौम्य होकर साधना पथ पर अग्रसर हो पड़ता है। स्त्री में चंचलता और रजोगुण की बहुलता होती है अतः चलनात्मक स्वभाव वाला रजोगुण उसको सहजता से स्थिर भाव में नहीं रहने देता। वह स्वभाव से भी कामना का पर्याय है। अभाव ही कामना का स्रोत है। शरीर की सौम्यता भी आश्रय ढूंढ़ती है-

अग्नि का। सोम ऋत तत्त्व है। ऋत तत्त्व को प्रतिष्ठित होने के लिए सत्य का आश्रय अपेक्षित रहता है। बाल-युवा-वृद्ध तीनों ही अवस्थाओं में इसके संरक्षण का दायित्व क्रमशः पिता-पति एवं पुत्र को दिया गया है–

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥
(मनुस्मृति 9.3)

यद्यपि सोम बल है किन्तु बल को रहने के लिए, प्रतिष्ठित होने के लिए कोई आधार चाहिए। प्रतिष्ठित होकर ही बल का स्वरूप दिखाई देता है तब अग्नि को बलयुक्त होने पर बलवान कहा जाएगा। पुरुष को बलवान कहने के पीछे यही तथ्य है। स्त्री-पुरुष की शक्ति है तथा पुरुष शक्तिमान है। यही शिव-शक्ति स्वरूप अर्द्धनारीश्वर है। इसका एक अभिप्राय यह भी है कि प्रत्येक पुरुष व स्त्री में अग्नि व सोम दोनों विद्यमान रहते हैं। **स्त्रियः सतीस्तां उ मे पुंस आहुः...** ऋग्वेद का मंत्र भी यही प्रतिपादित करता है कि स्त्री ही पुरुष की प्रतिष्ठा है। जिन्हें हम पुरुष कहते हैं वे अग्निप्रधान आत्मदृष्टि से स्त्रियां ही हैं। आत्मदृष्टि से स्त्रियां आग्नेयी हैं–शोणिताग्नि के कारण। शरीर दृष्टि से वे सौम्य हैं।

ज्ञान के साधन क्या हैं, इसके अर्थ गीता में हैं। श्रेष्ठता के अभिमान का अभाव, दम्भाचरण का अभाव, क्षमा, अहिंसा, सरलता, श्रद्धा, शुद्धता, स्थिर अन्तःकरण, इन्द्रिय निग्रह, आसक्ति का अभाव, दुःख और दोषों का बार-बार विचार। ममता-आसक्ति का अभाव, प्रिय-अप्रिय में समभाव, ईश्वर भक्ति, वातावरण के प्रति जागरूकता, अध्यात्म ज्ञान में स्थिति, तत्त्व ज्ञान रूप परमेश्वर को देखना ही ज्ञान है। (13/7-11)

यह सारा ज्ञान युक्त आचरण है जो व्यक्ति के व्यवहार में दिखाई पड़ता है। अर्थात् आत्मसात किए गए ज्ञान का ही प्रभाव व्यवहार में परिलक्षित होता है। इसमें मन-बुद्धि का योग रहता है। शरीर तो मात्र दर्पण है। मन भाव प्रधान है, संवेदनशील एवं शीतल होता है। बुद्धि स्थितिपरक, कठोर एवं उष्ण होती है। पुरुष भीतर भावप्रधान है तथा स्त्री भीतर उष्ण है। उष्णता मिठास की शत्रु है। किन्तु पुरुष की भीतरी शक्ति भी यही है। अग्नि को सोम नहीं उपलब्ध हो तो शान्त हो जाएगा।

शुक्र ही रेत को लेकर शरीर में प्रवाहित होता है। इसी शुक्र की तीन अवस्थाएं आपः, वायु, सोम हैं। पुरुष शरीर में शुक्र (रेत) का पोषण होता है, स्त्री शरीर में शुक्र (शोणित) पल्लवित होता है। शुक्र व शोणित के शुक्राणु व अण्डाणु के मेल से ही संतति होती है। आज जिस प्रकार का जंक-फूड चल पड़ा है उसमें सौम्यता सिमट गई। सात्विक भाव पूर्ण रूप से विकृत हो गया। स्नेहन-मधुरता का अंश अन्न से सिमट गया। ये दोनों रेत के सौम्यता प्रधान तत्त्व हैं। इनके सिमटने से पुरुष शुक्र में निर्बलता रहेगी। कन्या सन्तान की संभावना अधिक होगी।

स्त्री शोणित पर तो आज कई ओर से आक्रमण हो रहे हैं। समय पर विवाह नहीं करना भी शोणित की उष्णता को कम करता है। प्रजनन संस्थान को शिथिल करता है। जीव के लिए जिस शरीर का निर्माण करेगी, वह तो निर्बल होगा। प्रजनन क्रम ठहर भी सकता है। यदि इसी अवधि में गर्भनिरोधक गोलियों का प्रयोग हुआ है तो शरीर की रोग-निरोधक क्षमता का ह्रास ही होगा। ऐसे शोणित में आहूत हुआ सोम सन्तान में विकृति का कारण बनेगा। कुछ रसायनों का प्रभाव कारण शरीर तक पहुंच जाता है। कैन्सर की आशंका बढ़ जाती है।

स्त्री को शोणित को पुष्ट रखना है तो पुरुष को शुक्र (रेत) को। इसी से नए पुरुष शरीर में नई सन्तान पैदा करने की शक्ति बनी रहेगी। पेड़ के पोषण में पंचमहाभूतों का संतुलन, ऋतु के अनुचार चर्या (आचरण) एवं पथ्य (आहार) रखना अनिवार्य हो जाता है। स्त्री को गर्भ में संतान का शरीर निर्मित करना है। वही शरीर आगे भी उम्र के साथ बढ़े, यह तत्त्व भी उसमें हों। पचास वर्ष के बाद, उतार पर भी स्वस्थ बना रहे। पिता ही सन्तान रूप में जन्म लेता है। संतति परम्परा से पिता द्वारा प्रदत्त बीज अगली पीढ़ी के निर्माण में लग जाता है। इस प्रकार पिता का सम्बन्ध अक्षर रूप में रहता है जबकि मां तो क्षर शरीर के निर्माण में सहयोग देती है। मृत्युपर्यन्त वह क्षर शरीर रहता ही है। अतः जब तक शरीर है, मां के तत्त्व कार्य करते हैं। स्त्री शरीर में एक अवस्था के बाद प्रजनन क्षमता ठहर जाती है। जबकि पुरुष शरीर में बीज प्रवाहित होता रहता है। **क्रमशः**

gulabkothari@epatrika.com

क्यूआर कोड को स्कैन कर आप आलेख सुन भी सकते हैं।

आर्ट एंड कल्चर

शहनाई की छोटी बहन सुंदरी भी है अनोखी

मंदिर की कलाकृतियों में भी सुंदरी-सा कोई वाद्य यंत्र बजता दिखता है

बरखा की बूंदें आनंद 'रस' की सृष्टि करती हैं। इस बार जब वर्षा हो रही हो तो बूंदों पर गौर करें। उन्हें देखें नहीं, सुनें भी। टप-टप स्वरों में कविता होता मन जैसे गाने लगेगा। कभी ऐसे ही बरसती बरखा बूंदों को सुन-गुन कर ही तो स्वाति ऋषि ने मृदंग जैसे विरल वाद्य का आविष्कार किया था। कथा है, स्वाति ऋषि आश्रम में बैठे थे। मेघ गर्जन सुन उनकी नजर औचक रीते जल पात्र पर गई। खाली घड़ा देख वह उसे भरने निकट के सरोवर पहुंचे। तभी तेज हवा के साथ आकाश से बूंदें गिरने लगीं। सरोवर के कमल पत्रों पर बूंदों की बौछार से स्वरों का मधुर नाद होने लगा। स्वाति ऋषि ने अनुभूत किया कि कभी तेज तो कभी धीरे होती बूंदें कमल पत्रों पर आरोह–अवरोह का अनूठा स्वर रच रही हैं। सरोवर-जल पर बरखा बूंदें पड़ती तो वह तरंगित होता। पवन के झोंकों की सरसराहट, वर्षा बूंदों का घुंघरू सा स्वर और सरोवर के कमल-पत्र पर कंपन! स्वाति ऋषि भूल गए कि बरखा हो रही है। वे भीगते रहे और नृत्य के आद्य गुरु शिव की नृत्य मुद्राओं की अनुभूत छवियों के अनुरूप उन्होंने वाद्य यंत्र मृदंग का आविष्कार कर दिया। यही होता है। सुनने के साथ उसे गुनें तो बहुत कुछ महती हम पा सकते हैं। प्रकृति में घुली लय सदा ही अनूठा सृजन करवाती है।

डॉ. राजेश कुमार व्यास
संस्कृतिकर्मी, कवि और कला समीक्षक
@patrika.com

याद है, अरसा पहले तानसेन समारोह में जाना हुआ था। तब पहली बार शहनाई जैसा पर उससे आकार में बहुत छोटा एक वाद्य यंत्र सुना था। कलाकार भीमन्ना जाधव उसे साध रहे थे। पूछने पर पता चला यह सुंदरी है। शहनाई की छोटी बहन! उस्ताद बिस्मिल्लाह खां ने इसे यही नाम दिया। कहते हैं, अक्कलकोटला के महाराजा फतेहसिंह भोसले ने जब अपना भव्य महल बनवाया तब पहली बार सुंदरी की मंगल ध्वनि सार्वजनिक हुई। सबने इसे बहुत सराहा। बाबूलाल जाधव ने हथकरघा कपड़ा बुनाई के लिए धागे को लपेटने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली लकड़ी के पाइप-बॉबिन से इसे बनाया। उन्होंने बॉबिन में आठ छेद कर ताड़ के पेड़ों की पत्तियां डालकर उसका परीक्षण किया। ध्वनि बड़ी आनंददायक थी। बस उन्होंने और प्रयोग किए और शहनाई सी मीठी धुन का वाद्य यंत्र तैयार हो गया। हीराबाई बडोदकर के संरक्षण में पंडित सिद्धराम जाधव ने इस वाद्य में शास्त्रीय रागों का मधुर घोल किया। हाल के वर्षों में भीमन्ना जाधव ने इसमें बढ़त कर इसे लोकप्रिय किया है। याद है, पंडित जसराज के साथ एक दफा सुंदरी सुन रहा था तो उन्होंने इसे शहनाई बहन 'मधुरा' कहा था। सच है, सुंदरी कानों में शहद सा रस घोलती है। सुनेंगे तो मंगल और शुभता के महीन स्वरों से साक्षात होंगे। कभी मध्यप्रदेश स्थित भारत भवन ने तीन दिवसीय सुंदरी समारोह आयोजित किया था। इसमें इस लोक वाद्य की जो शास्त्रीय छटाएं बिखरी थीं, अभी भी लोग उसे कहां भुला पाए हैं! हमारे यहां मंदिर की दीवारों पर उत्कीर्ण कलाकृतियों में भी मंगल वाद्यों में सुंदरी सा कोई वाद्य यंत्र बजता दिखता है। सोचता हूं, कई बार परम्पराएं संरक्षण के अभाव में लुप्त हो जाती हैं। पर काल के अंतराल में फिर से कोई हवा का झोंका आता है, मानव-मन आंखों से देखे, अनुभूत किए वाद्यों का पुनराविष्कार कर देता है। सुंदरी ऐसा ही वाद्य यंत्र है। भीमन्ना जाधव निरंतर सुंदरी में माधुर्य की छटा बिखेरते रहे हैं। वह बहुत सारी रागों में विलंबित एक ताल की बंदिशें और मिश्र पहाड़ी धुनों का इसमें प्रवाह करते हैं तो मन करता है, सुनें और बस सुनते रहें।

ओलंपिक: आगंतुकों का स्वागत चर्चित कलाकृतियों की प्रतिकृतियों से

2024 ग्रीष्मकालीन ओलंपिक के उद्घाटन समारोह से एक दिन पहले गुरुवार को फ्रांस की राजधानी पेरिस में सीन नदी के एक तट पर सुसज्जित प्रसिद्ध कलाकृति की प्रतिकृति। तट के साथ-साथ करीब 6 विशाल आकार के आर्ट इंस्टॉलेशन स्थापित किए गए हैं। चित्र में इस प्रतिकृति के बाईं ओर एक तकनीशियन को गाड़ी में जाते हुए देखा जा सकता है। दरअसल, चित्र में जो पोर्ट्रेट नजर आ रहा है, उसका मूल पोर्ट्रेट लूव्र संग्रहालय में प्रदर्शित है। मूल पोर्ट्रेट में फ्रांस के हेनरी चतुर्थ की विश्वासपात्र और सलाहकार गैब्रिएल डी 'एस्ट्रीस और उसकी एक बहन का चित्र है, जबकि प्रतिकृति में गैब्रिएल डी 'एस्ट्रीस ही है। यह पोर्ट्रेट 1594 ईस्वी के आसपास तैयार किया गया था, पर किसने बनाया था यह ज्ञात नहीं है। लूव्र संग्रहालय के अनुसार, पोर्ट्रेट का श्रेय फॉन्तेनब्लियू स्कूल को दिया जाता है। फॉन्तेनब्लियू स्कूल पुनर्जागरण के अंतिम दो कालखंडों में अस्तित्व में आया और इसने फ्रांस में मैनरिज्म की शुरुआत की।

आपकी बात

छोटे बच्चों को रखें मोबाइल से दूर

आजकल मोबाइल एक अवश्यक वस्तु है, लेकिन इसका दुष्प्रभाव भी बहुत ज्यादा हो रहा है। सोशल मीडिया के जरिए अश्लील वीडियो एवं क्रिमिनल वीडियो फैलाए जा रहे हैं। बच्चे भी मोबाइल पर गेम खेलते रहते हैं। इससे उनकी सेहत पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। छोटे बच्चों को तो मोबाइल से दूर रखना चाहिए।

-सोमकुमार नायर, धार, मध्यप्रदेश

बच्चों को खेल से जोड़ें

मोबाइल फोन की वजह से बच्चों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से आंखों पर दुष्प्रभाव, नींद संबंधी समस्या के साथ सामाजिक संबंधों में कमी आती है। खेलों और पत्र-पत्रिकाओं से जोड़कर बच्चों को मोबाइल से कुछ हद तक दूर किया जा सकता है।

-हरदीप गाल्ला, हनुमानगढ़

बच्चे से बनाए रखें संवाद

अभिभावकों को जरूरत के हिसाब से ही बच्चों को मोबाइल देना चाहिए। उनका इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि बच्चा मोबाइल पर क्या कर रहा है, उसकी निगरानी करनी चाहिए। बालक की दिनचर्या पर ध्यान देना चाहिए। बच्चे से संवाद बनाए रखना भी आवश्यक है, जिससे बच्चे में मोबाइल की लत नहीं लग सके।

-वीरभान गुर्जर, ब्यावर

रचनात्मक क्षमता को पहचानें

बालकों से लगातार बातचीत करनी चाहिए जिससे वे अपनी समस्या के बारे में बताने से हिचकेंगे नहीं। उनकी रचनात्मक क्षमता को पहचान कर उन्हें खेलकूद, नृत्य, गायन, वादन, लेखन, चित्रकला इत्यादि से जोड़ना चाहिए। इससे बच्चों की मोबाइल से दूरी बढ़ेगी और वे ज्यादा उत्साहित महसूस करेंगे।

-मंजुला शर्मा, केशवरायपाटन, बूंदी

आज का सवाल

ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन कैसे अच्छा हो सकता है?

ईमेल करें: edit@epatrika.com

कल का सवाल था: बच्चों को मोबाइल के जाल से कैसे बचाया जा सकता है?

विश्व व्यापार: मुक्त व्यापार समझौते के लिए बाध्यकारी हैं यूरोपीय संघ की कई सामाजिक व पर्यावरणीय धाराएं

एफटीए पर उलझ रहे भारत-यूरोप संबंधों के तार

विनय कौड़ा
अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ
@patrika.com

चीन को लेकर यूरोप में असहजता लगातार बढ़ रही है। यूरोप को यह अहसास हो गया है कि उसने अपने सभी फल एक ही टोकरी में रखकर गड़बड़ कर दी है और उसे अपने बाजारों व आपूर्ति स्रोतों में विविधता लाने की जरूरत है। तेजी से बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य में यूरोपीय संघ भारत को एक भागीदार के रूप में देखने लगा है।

अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की सक्रियता बढ़ने के साथ यूरोपीय संघ (ईयू) से बेहतर रिश्ते की इच्छा और आस भी बढ़ रही है। पिछले साल, अमरीका को पीछे धकेलते हुए ईयू, 132 बिलियन डॉलर (भारत और अमरीका के बीच 128 बिलियन डॉलर की तुलना में) की कुल व्यापार मात्रा के साथ भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया है। यूरोपीय देशों का भारत से संबंध प्रगाढ़ करने में रुचि का आरंभिक कारण चीन रहा है। हालांकि सहयोग का दायरा अब चीन से कहीं अधिक व्यापक हो गया है। रिश्तों की दिशा क्या होगी, यह बहुत हद तक इस पर निर्भर करेगा कि भारत अपनी राष्ट्रीय क्षमताओं के निर्माण पर कितना ध्यान देता है और ईयू कितने यथार्थवादी एजेंडे अपनाता है।

भारत और यूरोप के बीच राजनयिक और सुरक्षा संबंधों में बड़े पैमाने पर निकटता आई है। जब हम भारत-यूरोप सहयोग के किसी भी हालिया समझौते पर नजर डालते हैं - चाहे वह जर्मनी, इटली, फ्रांस या यूरोपीय संघ के साथ हो - सर्वोच्च प्राथमिकता इस बात को दी जाने लगी है कि उससे भारत की क्षमताओं के निर्माण में किस प्रकार मदद मिलेगी।

वर्ष 2020 में ईयू ने 'ईयू-इंडिया स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिपः ए रोडमैप टु 2025' की शुरुआत की थी। हाल ही में यूरोपीय संसद ने यह कहा है कि ईयू और भारत के द्विपक्षीय रिश्ते 'अभी तक अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुंच पाए हैं।' पिछले सप्ताह जर्मनी में यूरोपीय संघ की रणनीतिक सोच से जुड़ी एक शोध कार्यशाला के ईयू-भारत संबंधों पर आयोजित विशेष सत्र में यूरोप के थिंकटैंक का ज्यादा फोकस इस बात पर रहा कि भारत किसी तरह ईयू से मुक्त व्यापार समझौते पर जल्द हस्ताक्षर कर दे। दरअसल, ईयू ने भारत को लेकर अपनी अधिकांश ऊर्जा फिलहाल एफटीए पर केंद्रित कर रखी है क्योंकि दोनों पक्षों के बीच व्यापारिक समझौते की संभावना बहुत अधिक बढ़ गई है। एफटीए के अगले दौर की वार्ता सितंबर में प्रस्तावित है। पर मुक्त व्यापार से जुड़ी उलझनें दूर किए बिना भारत आगे नहीं बढ़ सकता। ईयू चाहता है कि एफटीए के जरिए भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में और गहराई से जोड़ा जाए। भारत में प्रवेश के लिए खासकर यूरोपीय कारों व कृषि उत्पादों पर टैरिफ कम करने की मांग की जा रही है। ईयू चाहता है कि भारत के मानक ईयू के अनुरूप हों। ईयू अक्सर भारतीय फार्मास्यूटिकल्स व कृषि वस्तुओं को अपने बाजारों में प्रवेश करने से रोकता है, पर उन सामाजिक और पर्यावरणीय धाराओं को भारत स्वीकार नहीं कर पाएगा जो एफटीए के लिए किसी भी प्रकार की शर्तों के रूप में कानूनी रूप से बाध्यकारी हैं। जीवाश्म ईंधन की शीघ्र समाप्ति व विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत अपनाने के लिए पश्चिम के दबाव को भारत ने हमेशा अस्वीकार किया है। बड़ी वजह यह है कि भारत हरित ऊर्जा में वैश्विक खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है। भारत का तर्क जायज है कि विकासशील देश के रूप में उसके पास रातों-रात जीवाश्म ईंधन त्यागने के लिए जरूरी संसाधनों की कमी है। कोयला अभी भारतीय अर्थव्यवस्था के केंद्र में है, पर हरित प्रौद्योगिकियां अपनाना भी जारी है और चीन-अमरीका सहित अधिकांश देशों की तुलना में सौर ऊर्जा को बढ़-चढ़ कर विकसित कर रहा है। भारत 'मेड इन इंडिया' ब्रांड को बढ़ावा देकर एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरने की पुरजोर कोशिश कर रहा है। 6-7 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ती अर्थव्यवस्था व अपने मध्यम वर्ग की जरूरतों का ध्यान रखते हुए भारत स्वयं को एक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने का इच्छुक है। इस रणनीति में घरेलू कृषि की रक्षा और तैयार माल के आयात के बजाए भारत में ही यूरोपीय विनिर्माण को प्रोत्साहन शामिल है। इस बात पर तो भारत में आम सहमति है कि कृषि क्षेत्र की रक्षा आवश्यक है। कुछ रूढ़िवादी समीक्षक इस आधार पर एफटीए को नकार देते हैं कि इसका छोटे उत्पादकों पर बुरा असर होगा। इसलिए एफटीए को फलीभूत करने के लिए ईयू को भारतीय कृषि को समुचित संरक्षण देना होगा।

ईयू के पास दो विकल्प हैं- एक बिना बाध्यकारी कानूनी प्रतिबद्धताओं वाले संयमित व्यापारिक समझौते के माध्यम से दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के साथ संबंध मजबूत करने के लक्ष्य की पूर्ति या एक अव्यावहारिक एवं अति-महत्त्वाकांक्षी सोच के कारण कोई व्यापारिक समझौता नहीं। देखना यह है कि ईयू दुनिया को 'ग्लोबल साउथ' के नजरिए से देखने की कितनी ईमानदार कोशिश करता है।

प्रवाह

महोत्सव विश्वास का
75
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

राष्ट्र को सशक्त बनाने के लिए सामाजिक परिवर्तन के साथ तीव्र आर्थिक विकास भी जरूरी है। -अटल बिहारी वाजपेयी

पांच अंतरराष्ट्रीय संगठनों की संयुक्त रिपोर्ट का यह कहना बेहद गंभीर है कि दुनिया का हर ग्यारहवां व्यक्ति भुखमरी से जूझ रहा है। चरम मौसमी घटनाएं जिस तरह उत्पादन पर असर डाल रही हैं, उसे देखते हुए सतत कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक समुदाय के मिलकर काम करने की जरूरत ज्यादा बढ़ गई है।

ताकि कोई भूखा न रहे

दुनिया में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र की नवीनतम रिपोर्ट ने हमारे सामने पुनः एक कठोर सच्चाई को उजागर किया है कि दुनिया का हर ग्यारहवां शख्स भुखमरी से जूझ रहा है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन, अंतरराष्ट्रीय कृषि विकास कोष, यूनिसेफ, विश्व खाद्य कार्यक्रम और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा संयुक्त रूप से जारी रिपोर्ट 'द स्टेट ऑफ फूड सिक्योरिटी ऐंड न्यूट्रिशन इन द वर्ल्ड 2024' बताती है कि वर्ष 2023 में करीब 73.3 करोड़ लोग खाली पेट सोने को मजबूर थे। चिंता की बात है कि 2019 की तुलना में इस संख्या में 15.2 करोड़ की बढ़ोतरी हुई है, लेकिन बड़ी चिंता इस तथ्य को लेकर होनी चाहिए कि पिछले तीन वर्षों से यह आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। रिपोर्ट की इस चेतावनी को भी गंभीरता से लिए जाने की जरूरत है कि दुनिया 2030 तक भूख को शून्य के स्तर पर ले जाने के सतत विकास लक्ष्य से काफी पीछे रह गई है। अफ्रीका या लैटिन अमेरिका के मुकाबले एशिया में भूख का सामना करने वाली आबादी का प्रतिशत बेशक स्थिर है, लेकिन यह दुनिया भर में भूख का सामना करने वाले आधे से ज्यादा लोगों का घर है, इसलिए यह चिंताजनक है। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा को लेकर हमारी नीतियां और योजनाएं अब तक पर्याप्त साबित तो नहीं ही हुई हैं, कोरोना महामारी, जलवायु परिवर्तन और क्षेत्रीय संघर्ष जैसे कारणों ने इस संकट को और भी गहरा कर दिया है। रिपोर्ट के अनुसार, स्वस्थ आहार तक आर्थिक पहुंच की कमी भी एक गंभीर मुद्दा है, जिससे वैश्विक आबादी का करीब एक-तिहाई से ज्यादा हिस्सा प्रभावित हो रहा है। जाहिर है कि भुखमरी केवल भोजन की कमी का ही नहीं, बल्कि असमानता से जुड़ा मुद्दा भी है, जो कम आय वाले देशों में ज्यादा स्पष्ट दिखती है। इन देशों की 71.5 फीसदी आबादी स्वस्थ आहार का खर्च वहन नहीं कर सकती है, जबकि उच्च आय वाले देशों में यह आंकड़ा मात्र 6.3 फीसदी है।

इसके अतिरिक्त, बढ़ती खाद्य महंगाई, जलवायु परिवर्तन और आर्थिक मंदी भी खाद्य असुरक्षा व कुपोषण के बढ़ने की बड़ी वजह बनी हुई हैं। चरम मौसमी घटनाएं जिस तरह उत्पादन पर असर डाल रही हैं, उसे देखते हुए पर्यावरण संरक्षण और सतत कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक समुदाय के मिलकर काम करने की जरूरत ज्यादा बढ़ गई है। विश्वव्यापी समस्या बन चुकी भुखमरी से निपटने के लिए विकसित और विकासशील देशों के बीच सहयोग व संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण महत्वपूर्ण है, साथ ही, खाद्य उत्पादन और वितरण की प्रणाली में सुधार की भी जरूरत है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भोजन हर जरूरतमंद तक पहुंचे।

आखिर द्रमुक की समस्या क्या है

द्रमुक अलगाववादी संस्कृति को बढ़ावा देती है। यदि वित्त मंत्री ने बजट भाषण में तमिलनाडु का उल्लेख नहीं किया है, तो इसका यह मतलब नहीं कि द्रमुक अन्य दक्षिणी राज्यों को नीति आयोग की बैठक में भाग लेने से रोके। 2004 से 2014 के बीच यूपीए के छह बजट भाषणों में तमिलनाडु का उल्लेख नहीं हुआ था।

द्रमुक, वाईएसआर कांग्रेस और माकपा जैसे दक्षिणी राजनीतिक दल केंद्रीय बजट को तोड़-मरोड़कर उसका विश्लेषण कर रहे हैं और संकीर्णतावाद तथा क्षेत्रीयतावाद को भड़का रहे हैं। इंडिया गठबंधन में शामिल सभी राजनीतिक दलों ने प्रभावी ढंग से एक आख्यान पेश किया कि मोदी सरकार का बजट अपने सहयोगी नेताओं-नीतीश कुमार (बिहार) और चंद्रबाबू नायडू (आंध्र प्रदेश) को खुश करने के लिए था। पिछले दो दिनों से लोकसभा और राज्यसभा में विपक्ष की बहस 'कुर्सी बचाओ बजट' के नारे पर ही टिकी रही। लेकिन टीवी बहसों और प्रिंट मीडिया में बजट के सकारात्मक विश्लेषण ने प्रधानमंत्री मोदी और वित्त मंत्री को जरूर खुश किया होगा।

आर राजगोपालन

वरिष्ठ पत्रकार

हालांकि समाजवादी पार्टी की प्रतिक्रिया में थोड़ी स्पष्टता है। इसका कारण यह है कि अखिलेश यादव जानते हैं कि बिहार उत्तर प्रदेश से सटा हुआ राज्य है।

जाने-माने अर्थशास्त्री स्वामीनाथन अय्यर ने अपनी टिप्पणी में कहा कि जब कोई अर्थव्यवस्था आगे बढ़ती है, तो उसका वित्त मंत्री भी बजटीय आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकता है। 8.2 फीसदी जीडीपी वृद्धि, कर प्राप्तियों में निरंतर उछाल और रिजर्व बैंक से बंपर लाभांश के बल पर निर्मला सीतारमण ने एक ही तीर से राजनीतिक और आर्थिक निशाने साधे हैं। आलोचकों ने पहले ही अनुमान लगाया था कि अगर बिहार के नीतीश कुमार और आंध्र प्रदेश के चंद्रबाबू नायडू को भाजपा ने शांत नहीं किया, तो वे सरकार के लिए परेशानियां खड़ी कर सकते हैं। भले ही विशेष दर्जे की उनकी मांग पूरी न हुई हो, लेकिन बजट में दोनों राज्यों को भारी मात्रा में धन दिया गया है, जिससे फिलहाल उन्हें संतुष्ट होना चाहिए।

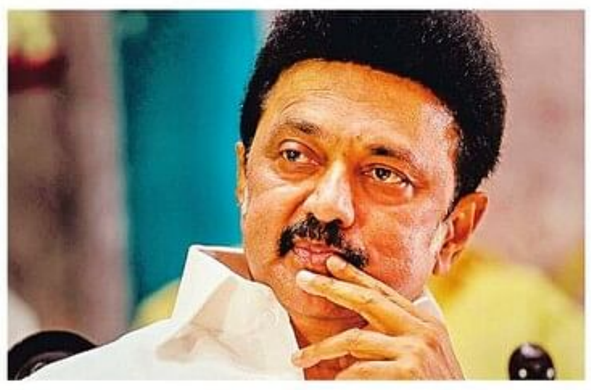

30 जुलाई को जब निर्मला सीतारमण बजट पर हो रही बहस का जवाब देंगी, तो निश्चित रूप से वह द्रमुक द्वारा फैलाए गए झूठ का खंडन करेंगी। आखिर द्रमुक के इतना नाराज होने की वजह क्या है? दरअसल, पड़ोसी राज्य आंध्र प्रदेश के नायडू के पास केवल 18 सांसद हैं, लेकिन उस राज्य को 15 हजार करोड़ रुपये मिले, मगर 39 सांसदों

वाले तमिलनाडु को कुछ भी नहीं मिला। इस हीन भावना ने द्रमुक को केंद्र सरकार के खिलाफ जाने के लिए मजबूर किया। द्रमुक नेता एमके स्टालिन ने प्रधानमंत्री मोदी को धमकी दी है कि यदि केंद्र सरकार शासन पर ध्यान देने के बजाय लगातार विरोधी पार्टियों के नेताओं को निशाना बनाती रहेगी, तो वह अलग-थलग पड़ जाएगी। जबकि नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार करके द्रमुक खुद को अलग-थलग महसूस कर रही है। धमकी देकर वह अपना और ज्यादा नुकसान कर रही है।

द्रमुक कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडिया गठबंधन का हिस्सा है, जिसने भाजपा के अबकी बार 400 पार के नारे को भारी झटका दिया और दक्षिणी राज्य में भाजपा को लगातार दूसरी बार हार का सामना करना पड़ा। स्टालिन की टिप्पणी ऐसे वक्त में आई है, जब विपक्षी नेताओं ने केंद्र सरकार और बजट पर हमला बोला है। द्रमुक हमेशा रोती रहती है और अलगाववादी संस्कृति को बढ़ावा देती है। द्रमुक ने न केवल नीति आयोग का बहिष्कार करने का आह्वान किया, बल्कि तेलंगाना कांग्रेस के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी, माकपा के मुख्यमंत्री पी विजयन और कर्नाटक के कांग्रेसी मुख्यमंत्री सिद्धरमैया को नीति आयोग का बहिष्कार करने के लिए इकट्ठा किया। दिलचस्प बात यह है कि इन राज्यों में कावेरी जल संकट, सीमा विवाद और तमिल-तेलुगू-कन्नड़ भाषा अवरोध जैसे अंतरराज्यीय विवाद हैं। ये राज्य तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) के चंद्रबाबू नायडू को भारी रकम मिलने से ईर्ष्या करते हैं।

तमिलनाडु के भाजपा प्रमुख के अन्नामलाई ने स्टालिन को बहुत अच्छा जवाब दिया है-यदि निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में तमिलनाडु शब्द का उल्लेख नहीं किया है, तो इसका मतलब यह नहीं कि नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार किया जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा, 2004 से 2014 के बीच यूपीए सरकार के दौरान छह बजट भाषण ऐसे थे, जिनमें पी चिदंबरम ने तमिलनाडु या तिरुवल्लुवर का उल्लेख नहीं किया था। कम से कम भाजपा के घोषणापत्र में यह आश्वासन तो है कि तिरुक्कुरल और इसके लेखक तिरुवल्लुवर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी। द्रमुक भाजपा के ऐसे सकारात्मक पहलुओं को क्यों नजरअंदाज करती है? तमिलनाडु के पूरी तरह बहिष्कार संबंधी मुख्यमंत्री स्टालिन के आरोप का जवाब देते हुए अन्नामलाई ने कहा, 'तमिलनाडु के मुख्यमंत्री लोगों को बरगलाने की कोशिश कर रहे हैं कि बजट भाषण में जिन राज्यों का उल्लेख है, केवल उन्हीं को लाभ मिलेगा, जबकि पिछली यूपीए सरकार ने 2 जी घोटाले जैसे भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया था, जिसमें द्रमुक भी शामिल थी।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट पेश करने के अगले दिन संसद में अपनी बात को अच्छी तरह से रखा। उन्होंने इस दावे को 'अपमानजनक' बताते हुए खारिज किया कि 'आंध्र प्रदेश और बिहार ने बजटीय आवंटन का बड़ा हिस्सा हड़प लिया है'। दिलचस्प बात यह है कि ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस संसद में बहुत आक्रामक थी, लेकिन वह खुद नीति आयोग की बैठक में भाग ले रही हैं। इस तरह वह दक्षिणी सहयोगियों के बहिष्कार के आह्वान के खिलाफ जा रही हैं। यह सही है कि निर्मला सीतारमण बजट पर राजनीतिक आक्रोश का पूर्वानुमान लगाने में विफल रही हैं और इससे कांग्रेस को बजट को उत्तर प्रदेश विरोधी बताने का मौका मिल गया। यह संवेदनशील मुद्दों पर विचार करने के लिए भाजपा के लिए एक सबक है। मोदी एक चतुर राजनीतिज्ञ हैं और वह जरूर सुधार करेंगे।

क्या द्रमुक 2026 के विधानसभा चुनाव की तैयारी कर रही है? जाहिर है कि केंद्र और मोदी विरोधी कोई भी बात अल्पसंख्यक वोट बैंक के लिए मुफीद है। एमके स्टालिन ने मोदी के खिलाफ नकारात्मक अभियान चलाकर 2021 का विधानसभा चुनाव जीता, स्टालिन ने 2024 में भी यही पैंतरा दोहराया, और उन्हें 40 सांसदों का फायदा मिला। इसलिए स्टालिन केंद्र एवं मोदी की आलोचना करके 2026 के तमिलनाडु विधानसभा में भारी जीत की उम्मीद कर रहे हैं। अफसोस की बात है कि दक्षिण के चार राज्यों-तमिलनाडु, तेलंगाना, केरल एवं कर्नाटक उत्तरी राज्यों को चेतावनी दे रहे हैं, जबकि राहुल गांधी जैसे नेता वायनाड लोकसभा से इस्तीफा देकर कह रहे हैं कि दक्षिण भारतीयों का दिमाग उत्तर भारतीयों से बड़ा है।

edit@amarujala.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

जीवन धारा

राल्फ वाल्डो इमर्सन

अपने अतीत का गुलाम मत बनें। उदात्त समुद्र की गहराई में डुबकी लगाएं, और दूर तक तैरें, ताकि आप नए आत्म-सम्मान, नई शक्ति और उन्नत अनुभव के साथ लौट सकें।

प्रकृति व पुस्तकें उन आंखों के लिए हैं, जो उन्हें देखती हैं

इस दुनिया में दुनिया की राय के अनुसार जीना आसान है; एकांत में अपनी राय के अनुसार जीना भी आसान है; लेकिन वह व्यक्ति महान है, जो भीड़ के बीच में भी एकांत की स्वतंत्रता को मधुरता के साथ बनाए रखता है। अपने लिए हमने जो सपना देखा है, उसे जीने का साहस करना चाहिए और आगे बढ़कर उन सपनों को साकार करना चाहिए। एक ऐसी दुनिया में स्वयं बने रहना, जो लगातार आपको कुछ और बनाने की कोशिश कर रही है, सबसे बड़ी उपलब्धि है। हमेशा याद रखें, जीवन की लंबाई नहीं, बल्कि गहराई मायने रखती है। और जब कभी काफी अंधेरा हो जाए, तो आप सितारों को देख सकते हैं। और अपने दिल पर यह लिख लें कि हर दिन साल का सबसे अच्छा दिन है। आपने वह कर लिया है, जो आप कर सकते थे। कुछ गलतियां जरूर हुई होंगी, जितनी जल्दी हो सके उन्हें भूल जाना ही बेहतर है। कल एक नया दिन आएगा, जिसकी शुरुआत शांति से और बहुत ऊंचे मनोबल के साथ करनी चाहिए, ताकि पुरानी बकवास से परेशान न हों।

हर मिनट जब आप गुस्से में होते हैं, तो आप खुशी के साठ सेकंड खो देते हैं। आपको साहस की आवश्यकता है। आप जो भी रास्ता चुनें, हमेशा कोई न कोई आपको यह बताने के लिए मौजूद होता है कि आप गलत हैं। हमेशा ऐसी कठिनाइयां आती रहती हैं, जो आपको यह विश्वास दिलाने के लिए प्रेरित करती हैं कि आपके आलोचक सही हैं। शांति की अपनी जीत होती है, लेकिन उन्हें जीतने के लिए बहादुर पुरुषों और महिलाओं की आवश्यकता होती है। हमेशा वही करें, जिसे करने से आप डरते हैं। धूप में जिएं, समुद्र में तैरें, जंगली हवा पिएं और हमेशा प्रकृति से जुड़े रहें। प्रकृति की गति को अपनाएं : उसका रहस्य धैर्य है। अपने हिस्से में आने वाली हर अच्छी चीज के लिए आभारी होने और लगातार धन्यवाद देने की आदत डालें। अपने कामों को लेकर बहुत ज्यादा डरपोक और संकोची न बनें। सारी जिंदगी एक प्रयोग है। आप जितने ज्यादा प्रयोग करेंगे, उतना ही बेहतर होगा। आप वही बन जाते हैं, जिसके बारे में आप दिन भर सोचते रहते हैं। अपने अतीत का गुलाम मत बनें-उदात्त समुद्र में डुबकी लगाएं, गहरे गोते लगाएं, और दूर तक तैरें, ताकि आप नए आत्म-सम्मान, नई शक्ति और उन्नत अनुभव के साथ वापस लौट सकें, जो पुराने को समझेगा और अनदेखा करेगा। जिस काम को हम लगातार करते रहते हैं, उसे करना आसान हो जाता है। ऐसा नहीं है कि उस काम की प्रकृति बदल गई है, बल्कि ऐसा है कि करने की हमारी शक्ति बढ़ गई है। प्रकृति और पुस्तकें उन आंखों के लिए हैं, जो उन्हें देखती हैं। बहुत सी आंखें घास के मैदान से गुजरती हैं, लेकिन बहुत कम लोग इसमें फूल देख पाते हैं। अपनी समस्याओं से प्रेरित मत होइए। अपने सपनों के नेतृत्व में आगे बढ़िए। महानता से अधिक सरल कुछ भी नहीं है; वास्तव में, सरल होना ही महान होना है।

सितारों को देखें

सूत्र

अगर कोई व्यक्ति अकेला रहना चाहता है, तो उसे सितारों को देखना चाहिए। इस बात को लेकर सावधान रहिए कि आप किस पर अपना दिल लगाते हैं, क्योंकि यह निश्चित रूप से आपका होगा। दुनिया उस आदमी के लिए रास्ता बनाती है, जो जानता है कि वह कहां जा रहा है। खुशी बिखेरिए, क्योंकि जीवन एक यात्रा है, कोई मंजिल नहीं।

दूसरा पहलू

म्यूनिख ओलंपिक की आतंकी घटना के बाद भारत के पूर्व पुलिस अधिकारी अश्विनी कुमार को ओलंपिक की सुरक्षा सौंपी गई थी।

वह भारतीय जिसने किया ओलंपिक खेलों को सुरक्षित

पेरिस ओलंपिक खेलों का आगाज हो गया है, लेकिन इन खेलों से साउथ दिल्ली की फ्रेंड्स कॉलोनी का सीधा रिश्ता है। इस कॉलोनी में कुछ बरस पहले तक एक सज्जन रहते थे, जिनकी वजह से ओलंपिक खेलों का आयोजन सुरक्षित हुआ। अगर 1972 के म्यूनिख ओलंपिक खेलों में हुए इस्राइली खिलाड़ियों के कत्लेआम के बाद फिर ओलंपिक खेलों में कभी उस तरह का भयानक हादसा नहीं हुआ, तो उसका श्रेय जाता है भारत के पूर्व पुलिस अधिकारी अश्विनी कुमार को। म्यूनिख घटना के बाद अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने अश्विनी कुमार से गुजारिश की कि वह आगामी शीतकालीन और ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों की सुरक्षा व्यवस्था को मेजबान देश के साथ मिलकर देखें। अश्विनी कुमार आजादी से पहले इंपीरियल पुलिस सर्विस के अधिकारी थे। स्वतंत्रता के बाद वह भारतीय पुलिस सेवा में शामिल कर लिए गए थे। वह भारतीय ओलंपिक संघ से भी सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे।

विवेक शुक्ला

अश्विनी ने मांट्रियल, मास्को, लॉस एंजिलिस, सिओल, बार्सिलोना, अटलांटा तथा सिडनी के ओलंपिक खेलों की सुरक्षा को देखा था।

अश्विनी कुमार को देश ने पहली बार तब जाना था, जब उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों के हत्यारे सुच्चा सिंह को नेपाल में पकड़ा था। उन्होंने 1951 में सौराष्ट्र के खूंखार डाकू भूपत गिरोह को भी खत्म किया था।

उन्होंने मॉन्ट्रियल (1976), मास्को (1980), लॉस एंजिलिसि (1984), सिओल (1988), बार्सिलोना (1992), अटलांटा (1996) व सिडनी (2000) के ओलंपिक खेलों की सुरक्षा व्यवस्था को देखा और मेजबान देश की सुरक्षा एजेंसियों को जरूरी इनपुट्स दिए। उन्होंने सिडनी ओलंपिक के बाद बढ़ती उम्र के कारण अपनी जिम्मेदारी छोड़ दी थी। उनका मुख्य फोकस खेलों के पहले दिन और अंतिम दिन की सुरक्षा पर रहता था। वह मानते थे कि इन्हीं दोनों दिनों में आतंकी हमला करने की फिराक रहते हैं। अश्विनी कुमार आईओसी के दो अध्यक्षों क्रमशः लॉर्ड किलिनन और जेए समारांच के विश्वासपात्र थे। उनको देश ने पहली बार तब जाना था, जब उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों के हत्यारे सुच्चा सिंह को नेपाल में जाकर पकड़ा था। इससे पहले भारत सरकार ने उन्हें 1951 में सौराष्ट्र के खूंखार डाकू भूपत गिरोह को खत्म करने के लिए भेजा था। वहां पर भी वह सफल हुए थे। हॉकी में तो मानो उनकी जान बसती थी। उन्होंने अपनी एक बेटी का नाम ही हॉकी रख दिया था। पंजाब पुलिस के महानिदेशक रहते हुए वह भारतीय हॉकी संघ के अध्यक्ष बने। उन्होंने पंजाब पुलिस और बीएसएफ में दर्जनों खिलाड़ियों को नौकरी दी। उनमें बलबीर सिंह सीनियर, अजीतपाल सिंह, उधम सिंह आदि शामिल हैं। पूर्व रॉ प्रमुख एएस दुलत कहते हैं कि अश्विनी कुमार पुलिस अफसर होने के साथ ही संगीत, कला, साहित्य में भी दखल रखते थे।

आंकड़े

व्यस्ततम एयरपोर्ट

भारत के सबसे ज्यादा व्यस्त एयरपोर्ट की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, घरेलू यात्री अब विमान से बड़े स्तर पर यात्रा कर रहे हैं।

दिल्ली	5.37
मुंबई	3.79
बंगलूरु	3.25
हैदराबाद	2.02
कोलकाता	1.71

संबंधित एयरपोर्ट की यात्री संख्या, आंकड़े करोड़ में हैं। | स्रोत : MoCA

रंतिदेव ने दूसरों के दुख दूर करने के लिए अपने राज्य की पूरी संपत्ति दान कर दी थी। यहां तक कि 48 दिन भूखे रहने के बाद जो भोजन मिला, वह भी दूसरों को दे दिया।

भगवान ने ली रंतिदेव की परीक्षा

रघुवंश में रंतिदेव नाम के बड़े ही दानी राजा हुए। उन्होंने दूसरों के दुख दूर करने के लिए अपने राज्य की सारी संपत्ति दान कर दी। वह और उनका परिवार जंगल में चला गया। उनका पूरा परिवार 48 दिन तक भूखा रहा। 49वें दिन भगवान ने उनके धैर्य और दानवीरता की परीक्षा लेने के लिए स्वादिष्ट पकवान भेजे। वह और उनका परिवार भोजन करने ही वाला था कि एक ब्राह्मण उनके पास पहुंचा और कहा कि राजन! मैं भूखा हूं। उन्होंने पहले ब्राह्मण को भोजन कराया।

फिर बचा हुआ भोजन परिवार वालों को बांट दिया। इसके बाद जो बचा था, उसे वह खुद खाना चाहते थे, लेकिन तभी एक व्यक्ति वहां पहुंचा और उसने कहा, मुझे बहुत भूख लगी है। राजा ने अपने हिस्से का भोजन भी उसको दे दिया। राजा अब पानी पीकर रहना चाहते थे। इतने में ही एक व्यक्ति और पहुंचा और उसने पानी भी पी लिया। राजा अपनी भूख-प्यास मिटाने के बजाय दूसरों की मदद करने से संतुष्ट थे।

अंतर्यात्रा

संकलित

दरअसल ये ब्रह्मा, विष्णु और महेश, तीनों ही भगवान थे। उन्होंने प्रकट होकर रंतिदेव को वर मांगने के लिए कहा। रंतिदेव ने कहा कि प्रभु आप अंतर्यामी हैं। मैं यही चाहता हूं कि किसी को भी मेरे द्वारा दुख न हो। रंतिदेव की ऐसी निष्ठा देखकर भगवान काफी प्रसन्न हुए। उन्होंने रंतिदेव और उनके परिवार को वह गति प्रदान की, जो योगियों को भी दुर्लभ है।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 10 सितंबर, 1956

औद्योगीकरण के लिए पश्चिमी देशों का अनुकरण न हो

औद्योगीकरण के लिये पश्चिमी देशों का अनुकरण न हो

मेरठ में दफा १४४

लोकसभा में द्वितीय पंचवर्षीय योजना पर बहस के दौरान समाजवादी नेता आचार कृपलानी ने मांग की कि देश की बेकारी दूर करने के लिए उद्योगों का विकेंद्रीकरण किया जाए और पश्चिमी देशों की तरह औद्योगीकरण न हो।

विरासत ही हमारी पहचान है

विरासत अतीत की कहानी बताने के साथ भविष्य को आकार देती है। यह सामूहिक स्मृति का संग्रह है, जो हमें एक राष्ट्र के रूप में परिभाषित करता है।

सच्चिदानंद जोशी | संरक्षण

भारत, एक सांस्कृतिक चेतना, महान परंपराओं और समृद्ध विरासत का देश, 42 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों का घर है। इनमें से 34 सांस्कृतिक, सात प्राकृतिक और एक, कंचनजंघा राष्ट्रीय उद्यान, मिश्रित प्रकार का है। यूनेस्को द्वारा विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त विरासत स्थलों की संख्या के मामले में भारत छठे स्थान पर है। ये विरासत स्थल मानव सभ्यता में भारत के योगदान के जीवंत प्रतीक हैं, जो पर्यटन, शिक्षा और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

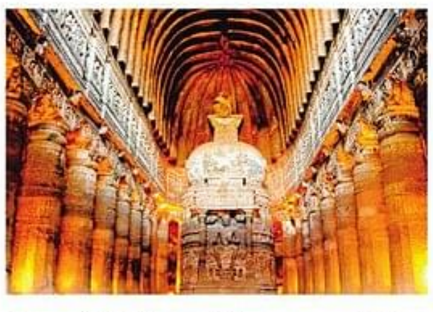

जैसा कि भारत पहली बार 46वें विश्व विरासत सत्र की मेजबानी कर रहा है, वैश्विक ध्यान विरासत के संरक्षण पर केंद्रित है। यह आयोजन विश्व मंच पर भारत की पहचान और विरासत के संरक्षण और प्रचार के महत्व को रेखांकित करता है। इन प्रयासों को टिकाऊ बनाने के लिए युवा पीढ़ी में विरासत संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी और जागरूकता की भावना पैदा करना अत्यंत आवश्यक है, जो स्कूल से शुरू होकर विश्वविद्यालय

शिक्षा तक फैली हो। भारत में विरासत स्थल, भीमबेटका की प्रागैतिहासिक गुफाओं से लेकर ताजमहल तक और अजंता व एलोरा से लेकर सुंदरबन की प्राकृतिक भव्यता तक, भारत के समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक इतिहास को समेटे हुए हैं। ये स्थल हर साल लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जो अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन विरासत स्थलों से उत्पन्न पर्यटन स्थानीय व्यवसायों का समर्थन करता है, रोजगार पैदा करता है, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, ये स्थल शैक्षिक संसाधनों के रूप में काम करते हैं, जो भारत के इतिहास, वास्तुकला और प्राकृतिक सौंदर्य के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। वे अतीत से मूर्त संबंध प्रदान करते हैं, जो मानव सभ्यता की यात्रा को समझने में मदद करते हैं।

भारत में कई कम ज्ञात स्थल भी हैं, जिनका अपार ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यात्मक मूल्य है। ये स्थल, हालांकि अभी तक यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं हैं, लेकिन संरक्षण के योग्य हैं। इनमें से एक है कोटुमसर गुफा, जो छत्तीसगढ़ के जगदलपुर के पास स्थित एक चूना पत्थर की गुफा है, जो पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। ओडिशा के खुर्दा जिले में स्थित शिशुपालगढ़, जो कभी राजा खारवेल की राजधानी थी, प्राचीन भारत के शहरी नियोजन और वास्तुकला कौशल को प्रदर्शित करता है। महाराष्ट्र के रायगढ़ में कोंकण तट के पास एक छोटे से द्वीप पर स्थित मुरुद जंजीरा किला भारत के सबसे मजबूत किलों में से एक है, जिसने कई हमलों को विफल कर दिया था। मध्य प्रदेश का एरण कई ऐतिहासिक कलाकृतियों का घर है, जिसमें विशाल वराह प्रतिमा और भगवान विष्णु को समर्पित एक मंदिर शामिल है। झारखंड के दुमका में स्थित मालुटी के टेराकोटा मंदिर अपनी उत्कृष्ट नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है, जो विभिन्न पौराणिक दृश्यों और स्थानीय परंपराओं को चित्रित करते हैं।

युवा पीढ़ी को इन स्थलों के महत्व के बारे में शिक्षित करना और संवेदनशील बनाना आवश्यक है। स्कूली स्तर पर शैक्षिक कार्यक्रमों में विरासत स्थलों की यात्राएं, संरक्षण विशेषज्ञों के साथ इंटरैक्टिव सत्र और ऐसी परियोजनाएं शामिल होनी चाहिए, जो छात्रों को विरासत के विभिन्न पहलुओं पर शोध करने के लिए प्रोत्साहित करें। विश्वविद्यालय स्तर पर, विरासत संरक्षण को सभी विषयों में आधार पाठ्यक्रमों में शामिल किया जा सकता है। इतिहास, पुरातत्व, वास्तुकला और पर्यावरण विज्ञान के पाठ्यक्रम विरासत संरक्षण पर विशेष मॉड्यूल प्रदान कर सकते हैं। साथ ही युवाओं को इस क्षेत्र में कॅरिअर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। सरकार को इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाने चाहिए और युवाओं को इनकी ओर आकर्षित करना चाहिए।

भारत में 46वीं विश्व धरोहर सत्र पीएम मोदी की धरोहर को संरक्षित करने की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। इन प्रयासों को वास्तव में प्रभावी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि युवा पीढ़ी को धरोहर संरक्षण के महत्व के बारे में शिक्षित और संवेदनशील बनाया जाए। अकादमिक पाठ्यक्रमों में कम प्रसिद्ध स्थलों को शामिल करना और स्थानीय समुदायों को इन स्थलों के संरक्षण में शामिल करना धरोहर संरक्षण के प्रति जागरूकता और समर्थन बढ़ाने में मदद करेगा। हमारी विरासत हमारी पहचान है। यह हमारे अतीत की कहानी कहती है और हमारे भविष्य को आकार देती है। यह हमारी सामूहिक स्मृति का संग्रह है, जो हमें एक राष्ट्र के रूप में परिभाषित करता है। इसे संरक्षित करना केवल सरकार या कुछ विशेषज्ञों का नहीं, हम सभी का दायित्व है। ये स्थान केवल अतीत के अवशेष नहीं, देश के समृद्ध इतिहास और संस्कृति के जीवंत प्रतीक हैं। वे हमारी सतत सभ्यता का प्रमाण हैं।

-लेखक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव हैं।

चिंतन

कारगिल युद्ध के शहीदों व वीरों को राष्ट्र का नमन

कारगिल विजय दिवस भारतीय सेना के शौर्य व पराक्रम को याद करने का दिन है, सलाम करने का दिन है। यह दिन यह भी याद दिलाता है कि पड़ोसी पाकिस्तान किस तरह कारगिल में भारत की पीठ में खंजर घोंपा था। पाक फौज चोरी छिपे कारगिल की चोटी तक पहुंच गई थी, लेकिन भारतीय जवानों ने जान की बाजी लगाकर पाक फौज को धूल चटाई थी। पाकिस्तान कारगिल से पहले भारत से तीन युद्ध हार चुका है, फिर भी कारगिल की चोटी पर अपनी फौज को अवैध अड्डा बनाने के लिए भेजा, जहां पाक फौज को मुंह की खानी पड़ी। यह पाकिस्तान की चौथी सैन्य हार थी। इसके बाद भी पाक फौज ने सबक नहीं लिया है, अभी भी कश्मीर में आतंकवाद व छद्म युद्ध का सहारा ले रहा है। कारगिल में भारत की जीत की 25वीं वर्षगांठ पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस्लामाबाद को चेताया है कि पाकिस्तान आतंकवाद और छद्म युद्ध का इस्तेमाल कर अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने की कोशिश कर रहा है, लेकिन भारतीय सैनिक उसके सभी आतंकवादी प्रयासों को पूरी ताकत से कुचल रहे हैं। पाकिस्तान के तत्कालीन सैन्य जनरल परवेज मुशर्रफ के दिमाग का फितुर था कारगिल की चोटी पर पाक फौज का भेजना, लेकिन उन्हें अपने सैन्य जीवनकाल की सबसे बड़ी हार का सामना करना पड़ा। वर्ष 1999 के कारगिल युद्ध में करारी शिकस्त से पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेइज्जती हुई, दुनिया को पता लगा कि पाकिस्तान की फौज किस तरह भारत के खिलाफ षड्यंत्र करता रहती है। खास बात है कि आज भी पाकिस्तान ने अपने अतीत से कुछ नहीं सीखा है, उसकी फौज व खुफिया एजेंसी आईएसआई भारत के खिलाफ आतंकवाद का को बढ़ावा देने में मशगूल हैं। पीएम मोदी ने द्रास में कारगिल विजय दिवस पर पाकिस्तान को ललकारा है कि वह प्रासंगिक बने रहने के लिए आतंकवाद और छद्म युद्ध की आड़ में युद्ध जारी रखे हुए है, लगातार शिकस्त के बावजूद दुस्साहस करता रहता है। हमारी सेना ने लद्दाख में स्थित कारगिल की बर्फीली चोटियों पर लगभग तीन महीने तक चले युद्ध में जीत हासिल करते हुए 26 जुलाई 1999 को 'ऑपरेशन विजय' की सफल समाप्ति की घोषणा की थी। कारगिल युद्ध के समय केन्द्र में अटल बिहारी बाजपेयी की राजग गठबंधन की सरकार थी। पाक पर भारत की जीत के उपलक्ष्य में इस दिन को 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाया जाता है। हालांकि पाकिस्तान नहीं सुधरा है, जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को शह देने में लिप्त है। आतंकवाद को पालने-पोसने के चलते अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग-थलग हो जाने के बावजूद पाकिस्तान कश्मीर में दहशतगर्दी से बाज नहीं आ रहा है। हाल के महीनों में कई पाक आतंकी भारतीय जवानों के शिकार हुए हैं। अब समय है आतंकवाद के सफाये के साथ-साथ पाक को कड़ा सबक सिखाने का। कारगिल विजय दिवस पर भारत को पाक प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ आर-पार करने का संकल्प लेना चाहिए। कारगिल युद्ध में सर्वोच्च बलिदान देने वाले सैनिकों को आज राष्ट्र नमन कर रहा है। देश के सैनिकों द्वारा दिया गया बलिदान अमर है। भले ही महीने, साल, दशक और सदियां बीत जाएं, देश की सीमाओं की रक्षा के लिए कुर्बान हुए लोगों के बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। राष्ट्र हमारे सशस्त्र बलों के पराक्रमी महानायकों का सदैव ऋणी और कृतज्ञ रहेगा।

रक्षा बजट
डा. एल.एस. यादव

चुनौतियों के मुकाबले बजट कम

अपने छिले वर्ष की तुलना में भारत की रक्षा चुनौतियां काफी बढ़ गई हैं। भारत के पुराने प्रतिद्वन्दी चीन के साथ एलएसी पर तनाव चलते हुए काफी दिन हो चुके हैं। पूर्वी लद्दाख से लेकर अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में सीमाओं पर चीनी सैन्य अतिक्रमण और रोबोट सेना की तैनाती के प्रयास इसके प्रमुख उदाहरण हैं। पाकिस्तान की तरफ से लगातार अघोषित युद्ध जारी है। समुद्र की तरफ से भी भारत को चुनौतियां मिल रही हैं। चीन की समुद्री क्षेत्र में बढ़ती आक्रामकता को देखते हुए भारतीय नौसेना के सामने हिन्द महासागर से लेकर अरब सागर तक चुनौतियां काफी बढ़ गई हैं। उभरते खतरों को देखते हुए नौसेना, वायु सेना तथा थल सेना के लिए आवंटित धनराशि कम ही कही जाएगी।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए 23 जुलाई को आम बजट पेश करते हुए रक्षा बजट का कुल हिस्सा 621940.85 करोड़ रुपये दिए जाने का प्रावधान किया है। यह धनराशि 2024-25 के कुल वित्त बजट का 12.90 प्रतिशत के लगभग है। इससे पहले 2023-24 के आम बजट में रक्षा क्षेत्र के लिए 593537.64 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे, जो 2022-23 की तुलना में 69000 करोड़ रुपये ज्यादा थे। इस हिसाब से यह वृद्धि 13 प्रतिशत के लगभग थी। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष मात्र 28403.21 करोड़ रुपये की वृद्धि की गई। यह बढ़ोत्तरी 4.78 प्रतिशत है जो कि काफी कम है क्योंकि रक्षा चुनौतियां ज्यादा हैं। इसके साथ ही सीमा पर चल रही सामरिक चुनौतियों का दीर्घकालिक समाधान निकालने के लिए सैन्य साजो सामान के निर्माण में आत्मनिर्भरता सुनिषश्चित करने के लिए विशेष जोर दिया गया है। तीनों सेनाओं के हथियार एवं अन्य उपकरणों में आत्मनिर्भर होने का प्रोत्साहन देने की प्रतिबद्धता जता कर घरेलू रक्षा उद्योग से खरीद के लिए आगे बढ़ना है।

रक्षा बजट में आवंटित धनराशि को चार भागों में विभक्त किया जाता है। इसमें नागरिक, राजस्व, पूंजीगत खर्च और पेंशन निर्धारित है। नागरिक बजट के हिस्से में 25963 करोड़ रुपये दिए गए हैं जिसमें बार्डर रोड आर्गनाइजेशन, ट्रिब्यूनल सहित सड़क व अन्य विकास कार्य किए जाते हैं। रेवेन्यू बजट के लिए 282772 करोड़ रुपये रखे गए हैं। रेवेन्यू बजट से तीनों सेनाओं का वेतन बांटा जाता है जो बजट का बड़ा हिस्सा होता है। इसके अलावा एक्स सर्विसमैन की हेल्थ स्कीम, मेंटिनेंस व रिपेयरिंग का खर्च भी इसी बजट से किया जाता है। इसलिए रेवेन्यू बजट का हिस्सा कुल रक्षा बजट का लगभग 45 प्रतिशत है। यह पिछले साल के मुकाबले 12652 करोड़ रुपये ज्यादा है।

रक्षा बजट में पूंजीगत व्यय के लिए 1,72,000 करोड़ रुपये अलग रखे हैं जिनमें नए हथियार, विमान, युद्धपोत और अन्य साजो सामान की खरीद शामिल हैं। यह पिछले साल के मुकाबले 9400 करोड़ रुपये ज्यादा है यानि कि 5.7 प्रतिशत का इजाफा किया गया है। यह धनराशि कुल रक्षा बजट का 27.6 प्रतिशत है। इस धनराशि से एयरक्राफ्ट, एयरोइंजन उपकरण, भारी और मध्यम श्रेणी के सैन्य वाहन, नए आधुनिक हथियार तथा गोला-बारूद खरीदा जाएगा। यही नहीं अन्य तकनीकी सैन्य उपकरणों की खरीद से सेनाओं को सुसज्जित किया जाएगा। इस साल सेना के लिए स्पेशल रेलवे वैगन खरीदे जाने की योजना है। वायु सेना के लिए आधुनिक लड़ाकू विमानों व नए अन्य उपकरणों के खरीदे जाने की संभावना है। इसी तरह नौसेना को मजबूती प्रदान करने के लिए नए नेवल डॉकयार्ड प्रोजेक्ट शुरू किए जाने की योजना है। पेंशन के लिए बजट में 141205 करोड़ रुपये रखे गए हैं। यह धनराशि कुल रक्षा बजट का 22.7 प्रतिशत है। वर्ष 2023-24 में यह धनराशि 1.38 करोड़ रुपये थी। इस तरह इस मद में लगभग 3000 करोड़ रुपये की बढ़ोत्तरी की गई है। इस बजट में तीनों सेनाओं के सेवानिवृत्त सैनिकों की पेंशन व अन्य मिलने वाले लाभ

शामिल होते है। विदित हो कि देश में तीनों सेनाओं के सेवानिवृत्त सैनिकों की संख्या तकरीबन 26 लाख है जिसमें सबसे ज्यादा जवान थलसेना के हैं।

पिछले वर्ष की तुलना में भारत की रक्षा चुनौतियां काफी बढ़ गई हैं। भारत के पुराने प्रतिद्वन्द्वी चीन के साथ एलएसी पर तनाव चलते हुए काफी दिन हो चुके हैं। पूर्वी लद्दाख से लेकर अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम में सीमाओं पर चीनी सैन्य अतिक्रमण और रोबोट सेना की तैनाती के प्रयास इसके प्रमुख उदाहरण हैं। लद्दाख में चीन की चुनौती को देखते हुए तकरीबन 50000 सैनिकों की तैनाती की जा चुकी है। इसके अलावा वहां पर टैंकों, विमानों एवं मिसाइलों की तैनाती कर दी गई है, जिससे कभी भी युद्ध की स्थिति से निपटा जा सके। ऐसे में और अधिक रक्षा बजट की आवश्यकता थी।

पाकिस्तान की तरफ से लगातार अघोषित युद्ध जारी है। वह आतंकवादियों को सुरक्षित पनाहगाह मुहैया कराता है तथा आतंकवादियों को पाल पोसकर उन्हें भारत भेजता है ताकि भारत की तरक्की की रफ्तार को रोका जा सके। इसके अलावा समुद्र की तरफ से भी भारत को चुनौतियां मिल रही हैं। चीन की समुद्री क्षेत्र में बढ़ती आक्रामकता को देखते हुए भारतीय नौसेना के सामने हिन्द महासागर से लेकर अरब सागर तक चुनौतियां काफी बढ़ गई हैं। जिसके लिए नौसेना युद्ध समूहों के गठन और नौसेना की एयर विंग को मजबूत करना परम आवश्यक हो गया है। हिन्द महासागर में उभरते खतरों को देखते हुए तथा पाक व चीन सीमा पर चुनौतियों के मद्देनजर नौसेना, वायुसेना तथा थल सेना के लिए आवंटित धनराशि कम ही है।

पाकिस्तान व चीन सहित विश्व के अनेक देश भारत की तुलना में सुरक्षा पर अधिक धन खर्च कर रहे हैं। ऐसे में सीमा पर तनाव को देखते हुए सैन्य साजो सामान की विषेश आवश्यकता थी। चीन सीमा के नजदीक आवागमन सुलभ बनाने हेतु सड़कों के विकास के लिए सीमा सड़क संगठन को 6500 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं जो पिछले बजट की तुलना में 30 प्रतिशत ज्यादा है। सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचागत विकास कार्यों में तेजी आएगी। स्टार्टअप, नवाचार और छोटी इकाइयों को तकनीकी मदद के लिए आईडेक्स योजना के तहत 518 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है जिससे विकास कार्यों में मदद मिलेगी और देश उत्कृष्टता व आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ सकेगा।

रक्षा क्षेत्र में तकनीकी विकास के लिए भी अधिक धन की जरूरत थी। वर्तमान सैन्य चुनौतियों को देखते हुए पुराने हो चुके हथियारों एवं उपकरणों से सेनाओं को छुटकारा दिलाकर आवश्यक नवीनतम हथियारों से सेनाओं को लैस करना, सैन्य आधुनिकीकरण व नवीनतम युद्ध कला से सेनाओं को सुसज्जित करना हमारी प्राथमिकता हो चुकी है। इन सबके अलावा साइबर, हाईटेक युद्ध पद्धति एवं नेटवर्क केन्द्रित युद्ध पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। यहां गौरतलब बात यह है कि हमें नये परिवेश को ध्यान में रखकर परम्परागत लड़ाई के साथ-साथ साइबर युद्धों की भी तैयारियां कर लेनी चाहिए। जो देश इसमें पीछे रह गए वे नुकसान भी उठा सकते हैं, क्योंकि हम जिन हथियारों की तैयारी में लगे हैं भविष्य में शायद उनकी जरूरत कम ही पड़े और यौद्धिक संक्रियाओं का रुख नवीन युद्ध प्रणालियों की तरफ बढ़ जाए। ऐसे मे रक्षा बजट में इन तैयारियों के लिए भी बजट निर्धारित किया जाना चाहिए था।

यद्यपि हमारी सेनाएं इन युद्धों के प्रति तैयार हैं लेकिन अलग से तैयारी करना इस क्षेत्र में हमें और मजबूती प्रदान करेगा। सेनाओं की आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में एक प्रमुख महत्वाकांक्षी योजना एकीकृत कमान की है, जो अभी पूरी नहीं हुई है। सरकार थल सेना, नौसेना एवं वायु सेना की क्षमताओं को एकीकृत करना चाहती है। इसे वर्तमान 17 एकल सेवा इकाइयों को पांच थियेटर कमांड के तहत लाया जाना है जिससे युद्धों से निपटने में एकीकृत समन्वय स्थापित किया जा सके।

(लेखक सैन्य विज्ञान के प्रोफेसर रहे हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

पुण्यतिथि

हर्षवर्धन पाण्डे

जनता के राष्ट्रपति थे कलाम

सपने वो नहीं होते जो आपको रात में नींद में आएं लेकिन सपने वे होते हैं जो रात में सोने ना दें। ऐसी बुलंद सोच और अग्नि सरीखी ऊंची उड़ान रखने वाले मिसाइलमैन एपीजे कलाम ही थे जिन्हें जनता का राष्ट्रपति यूं ही नहीं कहा जाता था। अपने कार्यकाल में डॉ. अवुल पकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम ने अन्य राष्ट्रपति के कार्यकालों के मुकाबले न केवल अमिट छाप छोड़ी, बल्कि ऐसी मिसाल भारतीय राजनीति में देखने को नहीं मिलती। डॉ. कलाम ने अपनी सादगी से उन्होंने पूरे देश की जनता का दिल जीता। राष्ट्रपति पद पर रहते हुए भी वह आम इंसान की तरह रहते थे। वह देश के सम्मानित व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने एक वैज्ञानिक और एक राष्ट्रपति के रूप में अपना अतुल्य योगदान देकर देश सेवा की। अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद से डॉ. कलाम शिलांग, अहमदाबाद और इंदौर के भारतीय प्रबंधन संस्थानों तथा देश एवं विदेश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में अतिथि प्रोफेसर के रूप में कार्यरत थे। डॉ. कलाम ने राष्ट्राध्यक्ष रहते हुए राष्ट्रपति भवन के दरवाजे आम जन के लिए खोल दिए जहां बच्चे उनके विशेष अतिथि होते थे।

15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में पैदा हुए कलाम ने मद्रास इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलोजी से स्नातक करने के बाद भौतिकी और एयरोस्पेस इंजीनियरिंग का अध्ययन किया और फिर उसके बाद रक्षा शोध

एवं विकास संगठन से जुड़ गए। उनका बचपन भी बड़ा संघर्ष पूर्ण रहा। कलाम की इच्छा थी कि वे वायु सेना में भर्ती हों तथा देश की सेवा करें। यह इच्छा पूरी न हो पाने पर उन्होंने बे-मन से रक्षा मंत्रालय के तकनीकी विकास एवं उत्पाद का चुनाव किया। वहां उन्होंने 1958 में तकनीकी केन्द्र सिविल विमानन में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक का कार्यभार संभाला। उन्हीं दिनों इसरो में स्वदेशी क्षमता विकसित करने के लिए उपग्रह प्रक्षेपण यान कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कलाम को प्रोजेक्ट डायरेक्टर नियुक्त किया गया जिसे उन्होंने अंजाम तक पहुंचाया। जुलाई 1980 में रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित करके भारत को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब के सदस्य के रूप में स्थापित कर दिया। डॉ. कलाम ने भारत को रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से रक्षा मंत्री के तत्कालीन वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. वीएस अरुणाचलम के मार्गदर्शन में इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम की शुरुआत की। इस योजना के अंतर्गत त्रिशूल आकाश, नाग, अग्नि एवं ब्रह्मोस मिसाइलें विकसित हुई। डॉ. कलाम ने जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहकार तथा डीआरडीओ के सचिव के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कीं। उन्होंने भारत को सुपर पॉवर बनाने के लिए 11 मई और 13 मई 1998 को सफल परमाणु परीक्षण किया। इस प्रकार भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण सफलता अर्जित की और पोकरण विस्फोटों की भनक अमेरिका तक को नहीं लगी और परीक्षण सफल हुआ। डॉ. कलाम नवम्बर 1999 में भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार रहे और फिर 25 जुलाई 2002 को भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित हुए। वे 25 जुलाई 2007 तक इस पद पर रहे और उनको राष्ट्रपति बनाने में नेताजी ने मास्टर स्ट्रोक उस दौर में चला जब वामपंथी और विपक्ष एनडीए के इस फैसले के साथ गया था। 2012 में सबसे पहले तृणमूल कांग्रेस की नेता ममता बनर्जी के साथ कलाम को राष्ट्रपति बनाने की बात सामने रखी थी, कांग्रेस की पसंद प्रणब मुखर्जी थे और वह कलाम के साथ नहीं थी। डॉ कलाम को कार्यकाल की कोई चाह नहीं थी लेकिन करोड़ों प्रशंसकों का दिल उन्होंने नहीं तोड़ा और दूसरे कार्यकाल के चयन पर सभी दलों की सहमति चाही।

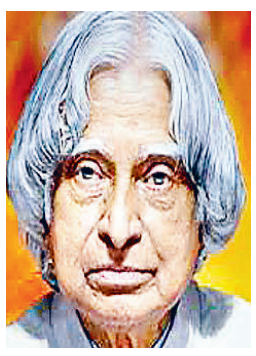

उनकी जीवनी विंग्स ऑ फायर भारतीय युवाओं और बच्चों के बीच बेहद लोकप्रिय है। डॉ. कलाम की लिखी पुस्तकों में गाइडिंग सोल्सः डायलॉग्स ऑन द पर्पज ऑफ लाइफ एक गंभीर कृति है। उनकी कविताओं का एक संग्रह द लाइफ ट्री के नाम से अंग्रेजी में भी प्रकाशित हुआ है। राष्ट्रपति के रूप में कलाम की पहचान अलहदा थी। अपनी अनोखी संवाद शैली के चलते कलाम अपने भाषणों में बच्चों को हमेशा शामिल करते थे। व्याख्यान के बाद वह अक्सर छात्रों से उन्हें पत्र लिखने को कहते थे और प्राप्त होने वाले संदेशों का हमेशा तुरंत जवाब देते थे।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

प्रसन्नता बन जाए परमात्मा

संकलित
दर्शन

व्यक्ति का चित्त प्रसन्न रहे तो परमात्मा के दर्शन हो जाएं। यह प्रसन्नता ही परमात्मा बन जाए। मगर आज के भागदौड़ भरे और तनाव के दौर में यह प्रसन्नता आए कैसे? तमाम लोग पैसा कमाने की भागदौड़ में लगे हैं। कोई भी ग्रंथ हो, धर्म हो, अध्यात्म हो, पैसा कमाने के लिए मना नहीं करता, लेकिन धन कमाते हुए भी यदि प्रसन्नता नहीं है तो कहीं पर ठहर कर कुछ विचार तो करना ही चाहिए। कथाओं में एक बात मैं अक्सर कहता रहता हूं। हमारे ग्रंथों में अपनी कुल आय का दशांश निकालने पर बल दिया गया। दशांश यानी जो भी आप महीने में कमा रहे हैं, उसका दस प्रतिशत हिस्सा समाज के लिए, जरूरतमंद लोगों के लिए खर्च किया जाना चाहिए। आप दो लाख रुपये कमा रहे हैं तो 20 हजार निकाल दें। आपको लगता है कि 20 हज़ार ज्यादा हैं, आप नहीं निकाल पाएंगे तो एक लाख ही कमाएं। फिर दस हजार ही निकालने होंगे। आपाधापी में लोग प्रसन्न रहना तो जैसे भूलते जा रहे हैं। अध्यात्म में प्रसन्न रहने का बहुत महत्व बताया गया है। हर व्यक्ति को प्रसन्न रहना चाहिए, क्योंकि प्रसन्नता परमात्मा तक पहुंचने का द्वार है। हमें प्रसन्न रहते हुए स्वयं की खोज करनी चाहिए। हम दूसरों को ढूंढ़ने और उनमें कमियां व खूबियाँ खोजने में लगे रहते हैं। एक नजर हमें खुद पर भी डालनी चाहिए। व्यक्ति स्वयं की खोज करें, समाज की सेवा करे और परमात्मा से प्रेम करे, उसका भजन करें, आज के समय में प्रसन्न रहने के लिए यह पर्याप्त है।

सुदर्शन रूप में भक्त की प्रेत से रक्षा

संकलित
प्रेरणा

संत अनंतकृष्ण बाबा जी के पास एक लड़का सत्संग सुनने के लिए आया करता था। संत से प्रभावित होकर बालक द्वारा दीक्षा के लिए प्रार्थना करने पर बाबा जी ने कहा कि महामंत्र का 11 लाख जप करके आओ उसके बाद विचार करेंगे। लगभग कुछ महीनों के पश्चात जप की संख्या पूरी करने के बाद वह बाबा के पास पुनः आया। बाबा ने बालक को कहा 11 लाख और जप करके आना। अभी 3-4 वर्ष ही बीते थे साधक जीवन में प्रवेश किए हुए, उसके मन में श्रद्धा की कमी होने लगी । वह एक दिन कहीं जा रहा था रास्ते में एक तांत्रिक को कुछ सिद्धियों का प्रदर्शन करते हुए देखा। तांत्रिक ने उससे अपने बारे में पूछा, उसने अपनी उपासना के बारे में बताया । तांत्रिक ने पूछा कि तुम इतने वर्षों से इतनी संख्या में जप करते हो, साधना करते हो उससे तुम्हे कुछ अनुभूति हुई? हमारी तरह प्रेत सिद्ध कर लो, तुम्हारे सब काम प्रेत कर दिया करेगा, बालक ने तांत्रिक से साधन की विधि जानी और शीघ्र ही थोडे मंत्रो के जप से ही सिद्ध प्राप्ति कर ली। उसने तांत्रिक से कहा कि मुझे तो कोई प्रेत सिद्ध हुआ नहीं। तांत्रिक ने कहा पुनः प्रयास करो। इस बार भी प्रेत प्रकट नहीं हुआ। तांत्रिक ने प्रेत को बुलाकर पूछा कि तुम इसके सामने क्यों नहीं प्रकट होते हो? उस प्रेत ने कहा मैं तो जैसे ही इसके थोड़े निकट जाता हूँ, इसके पीछे एक सुदर्शन चक्र प्रकट हो जाता है। मैं महान बलवान होने पर भी उस चक्र के तेज के सामने टिक नही सकता। अवश्य ही कोई शक्ति इसकी रक्षा करती है।

अंतर्मन

आज की पाती

कारगिल के योद्धाओं को नमन

25 वर्ष पहले हमारे देश के सैनिकों ने पाकिस्तान को उसकी नापाक हरकतों के लिए कारगिल युद्ध में धूल चटाई थी। 26 जुलाई हमारे देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण दिन है, क्योंकि इस दिन हमारे देश के जांबाज सैनिकों ने देश के दुश्मन पाकिस्तान को कारगिल युद्ध में करारी शिकस्त देकर, कारगिल की चोटियों पर भारत का तिरंगा फहराया था। भारत हमेशा ही पाकिस्तान को प्यार और अहिंसा से आतंकवाद और कश्मीर समस्या के लिए बातों और समझौतों की राह चलते हुए समझाने की कोशिश करता आया है, लेकिन हमारे देश के प्रति नापाक पाकिस्तान ने जब-जब भी अपनी नापाक हरकतों की लक्ष्मण रेखा पार की है, तब-तब हमारे देश ने इसे सुधारने के लिए बातों से नहीं, बल्कि लातों से भी काम लिया है। - **ब्रिजेश ठाकुर**, दुर्ग

ट्रेंड

कोई कसर नहीं छोड़ेंगे

किसानों के नाम पर विपक्ष सिर्फ राजनीति कर रहा है। स्वामीनाथन कमेटी ने लागत पर 50 फीसदी मुनाफा देकर समर्थन मूल्य की सिफारिश की, लेकिन यूपीए सरकार ने इसे खारिज किया। हम किसानों की आमदनी दोगुनी करने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। हम दिन-रात काम करेंगे।

-शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय मंत्री

रिहाई की मांग गलत

अमृतपाल सिंह की रिहाई की मांग करना सरासर गलत है। अमृतपाल ने श्री गुरुग्रंथ साहिब को आगे करके थाने पर हमला बोला था। पंजाब का कोई भी नागरिक श्री गुरुग्रंथ साहिब का दुरुपयोग करने का समर्थन नहीं करेगा।

-संजय सिंह, आप सांसद

शानदार राष्ट्रपति

हमें लगता है कि कमला हैरिस संयुक्त राज्य अमेरिका की एक शानदार राष्ट्रपति बनेंगी और उन्हें हमारा पूरा समर्थन है। हमारे देश के लिए इस महत्वपूर्ण क्षण है, हम यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे कि वह नवंबर में जीत हासिल करें।

-बराक ओबामा, पूर्व राष्ट्रपति यूएस

सड़कें विकसित कीं

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने हिमाचल की सड़कें विकसित कीं। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमें ट्रिपल आईआईटी, अटल टनल, वंदे भारत, एम्स, विश्व स्तरीय मनाली हाईवे और कई अन्य परियोजनाएं दी हैं।

-कंगना रनौत, सांसद

करंट अफेयर

द.अफ्रीका में पहली महिला प्रधान न्यायाधीश नियुक्त

दक्षिण अफ्रीका में पहली बार किसी महिला को प्रधान न्यायाधीश के पद पर नियुक्त किया गया है। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा ने वर्तमान उप प्रधान न्यायाधीश मंडिसा माया को बृहस्पतिवार को देश की प्रधान न्यायाधीश नियुक्त किया। दक्षिण अफ्रीका की प्रधान न्यायाधीश के पद पर माया का कार्यकाल एक सितंबर से प्रारंभ होगा। वह मौजूदा प्रधान न्यायाधीश रेमंड जोंडो के सेवानिवृत्त होने के बाद उनका स्थान लेंगी। देश के शीर्ष 'संवैधानिक न्यायालय' में पदोन्नति से पहले 60 वर्षीय माया दक्षिण अफ्रीका की दूसरी सबसे बड़ी अदालत 'सुप्रीम कोर्ट ऑफ अपील' में 'जज प्रेसिडेंट' के पद पर सेवाएं दे चुकी हैं। वह 'सुप्रीम कोर्ट ऑफ अपील' की न्यायाधीश नियुक्त होने वाली पहली अश्वेत महिला थीं तथा उस अदालत की उप-अध्यक्ष और फिर अध्यक्ष नियुक्त होने वाली पहली महिला थीं। रामाफोसा ने फरवरी में माया को प्रधान न्यायाधीश पद के लिए नामित किया था और मई में न्यायिक सेवा आयोग ने उनका साक्षात्कार लिया था। रामाफोसा ने एक बयान में कहा कि आयोग ने उनके नाम की सिफारिश की है और कहा है कि उनकी नियुक्ति 'देश के लिए मील का पत्थर साबित होगी।' माया दक्षिण अफ्रीका के पूर्वी केप प्रांत के एक ग्रामीण इलाके में पली-बढ़ी हैं।

ऑफ बीट

माइग्रेन सिर्फ सिरदर्द नहीं कई समस्याएं हैं वजह

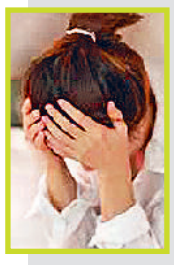

माइग्रेन 'सिर्फ सिरदर्द' नहीं बल्कि कई समस्याओं की वजह है। 'माइग्रेन' ग्रीक शब्द 'हेमीक्रानिया' से आया है, जो माइग्रेन के मुख्य रूप से एकतरफा होने के सामान्य अनुभव को संदर्भित करता है। कुछ लोगों को सिरदर्द शुरू होने से पहले एक 'चमक' का अनुभव होता है - आमतौर पर एक दृश्य या संवेदी अनुभव जो पांच से 60 मिनट तक विकसित होता है। इस आभा में भाषा, गंध और अंग कार्य जैसे अन्य डोमेन भी शामिल हो सकते हैं। माइग्रेन एक बड़ी व्यक्तिगत और सामाजिक प्रभाव वाली बीमारी है। माइग्रेन के दौरान अधिकांश लोग अपने सामान्य स्तर पर काम नहीं कर पाते हैं और अगले हमले की आशंका व्यक्ति की उत्पादकता, रिश्तों और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। मेरे दिमाग में क्या हो रहा है? माइग्रेन का जैविक आधार जटिल है, और माइग्रेन के चरण के अनुसार बदलता रहता है। सीधे शब्दों में कहें: प्रारंभिक चरण को प्रोड्रोम कहा जाता है। यह मस्तिष्क के हाइपोथैलेमस नामक हिस्से की सक्रियता से जुड़ा है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह मतली, भूख में बदलाव और धुंधली दृष्टि जैसे कई लक्षणों में योगदान देता है। अगला आभा चरण है, जब मस्तिष्क की सतह (कॉर्टेक्स) में 3-4 मिलीमीटर प्रति मिनट की दर से न्यूरोकेमिकल परिवर्तनों की एक लहर होती है।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-42422221 पर या सीधे मेल से **aapkepatra.haribhoomi@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid